CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय ज्ञानपीठ
प्रकाशन

891.43
प प

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY
Acc. No. 2666
Book No. 891143
ग ग

491.46
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

BOOK-LAND
65, Haiwasiya Market,
HAZRATGANJ, LUCKNOW.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला : ६

प्रतिनिधि रचनाएँ

मराठी साहित्य : २

[लेखकका स्वसंकलन]

लेखक

पद्मभूषण प्रो० ना० सी० फड़के

भाषान्तरकर्त्ता

माणिकलाल परदेशी

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला : ६

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक २०४

सम्पादक एवं नियामक :

लक्ष्मीचन्द्र जैन

891.43
प प

State Museum, Library, Lko.
२६६६६
२५.५.६५

Rashtrabharati Series
PRATINIDHI RACHNAYEN
Miscellany of
Representative Writings
Padmabhushan
Prof. N. S. PHADKE
Bharatiya Jnanpith
Publication
First Edition 1965
Price Rs. 4.50
©

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
प्रधान कार्यालय
९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रथम संस्करण १९६५
मूल्य चार रुपये पचास पैसे

सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी ५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला

भारतीय ज्ञानपीठके समस्त प्रकाशनोंसे और संस्थाकी गतिविधिसे जो परिचित हैं वे जानते हैं कि ज्ञानपीठने हिन्दी-प्रकाशनके क्षेत्रमें एक व्यापक साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणको निष्ठापूर्वक अपनाया है।

पालीमें 'जातकट्ठकथा', तमिलमें 'थिरुकुरल', हिन्दीमें 'वैदिक साहित्य', और नागरी लिपिमें उर्दूके समूचे संकलनीय काव्य-साहित्यको प्रस्तुत करनेके मूलमें देशकी सांस्कृतिक उपलब्धिको समग्र और अखण्ड रूपसे जानने-माननेकी दृष्टि है। अब 'लोकोदय ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत 'राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला'की योजना इस दिशामें ज्ञानपीठका अगला पग है।

'राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत ज्ञानपीठकी योजना है कि भारतीय भाषाओंके सभी प्रमुख लेखकोंकी रचनाओंके अलग-अलग ऐसे संकलन प्रकाशित किये जाँये जिनमें स्वयं लेखकोंके द्वारा चुनी हुई उनकी विविध शैली-शिल्पोंमें लिखी सर्जनात्मक साहित्यकी 'प्रतिनिधि रचनाएँ' हिन्दी अनुवादके रूपमें संग्रहीत हों। इनके अतिरिक्त इसी ग्रन्थमालामें ऐसे 'प्रतिनिधि संकलन' भी प्रकाशित करनेकी योजना है जो समग्र भारतीय साहित्यमें कहानी, कविता, एकांकी आदि प्रत्येक विधाकी साहित्यिक उपलब्धिको दरशा सकें और, इस दृष्टिसे, जिनमें विभिन्न भारतीय भाषाओंके लेखकोंकी श्रेष्ठ रचनाएँ सम्मिलित होंगी। प्रसन्नता-की बात है कि इस योजनाके लिए भारतके सभी मूर्धन्य साहित्यकारोंका सहयोग ज्ञानपीठको प्राप्त हुआ है।

Bookland, Lucknow Rs. 6.50

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस ग्रन्थमालाके माध्यमसे देशके साहित्यकार स्वयं तो एक मंचपर आयेंगे ही, पाठकोंको विशेष लाभ यह होगा कि सभी ख्यातिप्राप्त लेखकोंकी बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभासे परिचित होंगे और कुछ अनुमान लगा पायेंगे कि देशमें समसामयिक साहित्यका स्वर क्या है, स्तर क्या है, उपलब्धि क्या है, और यह कि देशके साहित्य-समीक्षक इस प्रकारकी रचनाओंको विश्व साहित्यकी समान शैली-शिल्पवाली रचनाओंकी तुलनामें क्या स्थान देते हैं, या कमसे कम यह कि भारतीय भाषाओंमें इस प्रकारके साहित्यका तुलनात्मक मूल्यांकन क्या जानकारी प्रस्तुत करता है। यह अवश्य है कि किसी निष्कर्षपर पहुँचने-से पहले पाठकों और समीक्षकोंको यह बात ध्यानमें रखनी होगी कि इस प्रकारके स्फुट संकलनोंके आधारपर तुलनात्मक मूल्यांकनकी अपनी सीमाएँ होंगी।

इस ग्रन्थमालाका एक पक्ष यह भी है कि जो हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और अन्ततोगत्वा जिसे इस रूपमें देशमें सभी प्रकारसे समादृत होना है, उसका साहित्य-कोश इस प्रयत्न-द्वारा समृद्ध हो। हमारी भावना है कि इसे हिन्दीकी ओरसे अन्य सहोदरी भारतीय भाषाओंका अभिनन्दन-आयोजन भी माना जाये।

इस ग्रन्थमालाके द्वारा अनुवादके सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्षोंपर विचार करनेका अवसर भी पाठकों और समीक्षकोंको मिलेगा। यह स्वयं एक राष्ट्रीय उपलब्धि होगी। इसका अर्थ यह कि अनुवादके रूप और प्रकृतिके सम्बन्धमें हम कोई विशेष आग्रह लेकर नहीं चलते – केवल इतना ही कि मूलका भाव सुरक्षित रहे और अनुवाद सुबोध हो। मुहावरों, शब्द-बन्धों और भाषा-प्रयोगोंके क्षेत्रमें हिन्दीको अन्य भारतीय भाषाओंसे कुछ लेना है, लेना चाहिए, इस दृष्टिकोणको सामने रखनेके परिणाम-स्वरूप अनुवादमें यदि कहीं कुछ अप्रचलित या अटपटा-सा लगे तो वह इस दृष्टिसे विचारणीय है कि इसमें क्या ग्राह्य है क्या अग्राह्य यह निर्णय भाषाविद् दें – विशेषकर वे जिनकी मातृभाषा वही है जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूल लेखककी और साथ ही जो हिन्दीको राष्ट्रभाषाके रूपमें समृद्ध करने-की क्षमता रखते हैं।

अबतक इस ग्रन्थमालाके अन्तर्गत पाँच संकलन प्रकाशित हो चुके हैं : चार 'प्रतिनिधि रचनाएँ' वर्गमें और एक 'प्रतिनिधि संकलन' वर्गमें। 'प्रतिनिधि संकलन' एकांकियोंका है और इसमें तो भारतीय भाषाओंका एक-एक प्रतिनिधि एकांकी सम्मिलित किया गया है। 'प्रतिनिधि रचनाएँ' नार्ल वेंकटेश्वर राव (तेलुगु), परशुराम (बँगला), व्य० दि० माड-गूलकर (मराठी) और कर्तारसिंह दुग्गल (पंजाबी) की प्रकाशित हुई हैं। यह अब इसी वर्गमें एक और प्रस्तुत है : मराठीके वरिष्ठ साहित्यकार पद्मभूषण' प्रो० ना० सी० फड़केकी 'प्रतिनिधि रचनाएँ'।

ग्रन्थमालामें किस संकलनका प्रकाशन पहले हुआ और किसका बादमें, यह केवल संयोगकी बात है। इसे मात्र मुद्रण-क्रमकी बात माना जाये। जिन अन्य साहित्यकारोंकी कृतियाँ इस ग्रन्थमालामें आयोजित हैं वे सब मूर्धन्य लेखक और कवि हैं। साहित्यमें किसका क्रम कहाँ है, यह निश्चित करना समीक्षकोंका कार्य है।

भारतीय भाषाओंमें साहित्यिक कृतित्वकी श्रेष्ठताका प्रश्न भारतीय साहित्यके मानदण्डका प्रश्न है। उसके लिए भारतीय ज्ञानपीठकी एक अलग योजना है जिसके अनुसार प्रतिवर्ष भारतीय साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ कृतिको एक लाख रुपयेके पुरस्कार-द्वारा सम्मानित किया जायेगा : कृतिकारके प्रति कृतज्ञता ज्ञापनार्थ।

— लक्ष्मीचन्द्र जैन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रम

* कहानी

सात रुपये दस आने ३

धूप और छाँह १८

पार्वती ३६

कश्मीरकी कहानी ५४

* उपन्यास

इशारा ७७

* एकांकिका

आग ९३

* ललित निबन्ध

सर्कसका खेमा ११५

अलगनीपर सूखनेवाले कपड़े १२१

ताला चाभीऽ ! १२७

* शब्दचित्र

सिक्सरोंके बादशाह : सी०के० .... १३७

* यात्रा

कथाकलीके नैहरमें १४९

सारनाथ १५७

* प्रबन्ध

प्रतिमा साधना १६९

कहानी लेखन : मन्त्र और तन्त्र २०३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहानी

●

सात रुपये दस आने

धूप और छाँह

पार्वती

कश्मीरकी कहानी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सात रुपये दस आने

पे-शीट में अपने नामके सामने जुगल बाबूने दस्तख़त किये और क़लम मेज़पर रख दी। वे मेज़के एक ओर इस ख़यालसे चुपचाप खड़े रहे कि हमेशाकी तरह तनख्वाह देनेवाला क्लर्क उनके सामने एक सौ बीस रुपयेके नोट रख देगा और वे चुपचाप उठा लेंगे। उँगलियोंमें पानी लगाकर तनख्वाह देनेवाले मुन्शीने दस-दसके बारह नोट एक बार इस ओरके कोनेसे मोड़कर और एक बार उस ओरके कोनेसे मोड़कर गिनकर देखे और उनके सामने रख दिये। इसके बाद एक-एक रुपयेके सात नोट और दस आने उन नोटोंपर रख दिये और जुगल बाबूकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "लीजिए।"

पल-भरको जुगल बाबू हैरान-से रह गये। एक सौ बीसके बदले एक सौ सत्ताईस रुपये दस आने ? तनख्वाहमें ये सात रुपये दस आने इस बार ज़्यादा किसलिए मिले ? कहीं उन्हें तरक़्क़ी तो नहीं मिली ? लेकिन तरक़्क़ी मिलती तो उसका पता पहले ही न चलता ? हटाओ जी, तरक़्क़ी क्यों मिलने लगी ! तब ये सात रुपये ज़्यादा क्यों ? उन्होंने ग़ौरसे पे-शीट-की ओर देखा। उनके नामके सामनेवाले कॉलममें लिखा हुआ था : 'अतिरिक्त कामके सात रुपये दस आने।' सहसा उन्हें स्मरण हो आया कि इस महीनेमें उन्होंने दो बार थोड़ा-थोड़ा समय ओवर टाइम काम किया था। तब ठीक ही तो है : मन-ही-मन कहकर उन्होंने सब रुपये उठाकर जेबमें डाल लिये और अपने स्थानपर आ बैठे।

बड़ी देर तक वे इस विचारके आनन्दमें लीन रहे कि आज घर पहुँच-कर एक सौ बीसकी जगह एक सौ सत्ताईस रुपये दस आने पत्नीको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देनेपर वह कितनी खुश होगी ! माना कि सात रुपये दस आने कोई बड़ी रक़म नहीं होती, लेकिन सिर्फ़ एक सौ बीस रुपया माहवारमें ग़रीबीकी गृहस्थी चलानेवाले जुगल बाबूकी नज़रमें उन रुपयोंका मूल्य बहुत अधिक था ! उस सात रुपये दस आनेमें कितना जादू भरा था ! बच्चोंके किसी चीज़के लिए ज़िद करनेपर रुपयेकी कमीके कारण कितनी ही बार उन्हें उनका दिल तोड़ना पड़ा था । हर तनख़्वाहके बाद बच्चोंके मुरझाये चेहरे उन्हें दिल मसोस कर देखने पड़ते थे । लेकिन अब इन रुपयोंसे वे बच्चोंकी कई छोटी-छोटी अतृप्त लालसाएँ पूरी कर सकते थे । बच्चोंके लिए वे कपड़े ख़रीद सकते थे । कपड़े न सही, दोनों बच्चोंके लिए जूते या क्रिकेटका छोटा-सा बैट ही, जिसके लिए दोनोंने कई बार ज़िद की थी, ख़रीद सकते थे । यह भी हो सकता है कि बच्चे कहें कि हमें नहीं चाहिए कपड़े जूते या और कोई चीज़, हम तो सिनेमा देखेंगे, हमें सिनेमा दिखाइए ।

पास-पड़ोसके बच्चोंको अपने माता-पिताके साथ सिनेमा जाते देख बच्चोंने कई बार ज़िद की थी । वे हमेशा पूछते, "बाबूजी, हम लोग सिनेमा कब चलेंगे ?" लेकिन ऐसा कौन अभागा पिता होगा जिसे बच्चोंसे साफ़-साफ़ कहना पड़े कि उनकी ज़िद पूरी करनेके लिए उसके पास पैसा नहीं है ? यह सच है कि निर्धनताका दुःख भयानक होता है; लेकिन अपनी निर्धनताको स्वीकार कर अपने मनपर क़ाबू रखनेका, अपनी सन्तानकी इच्छाओंकी उपेक्षा करनेका दुःख उससे भी भयानक होता है । सिनेमा चलनेके लिए बच्चोंके ज़िद करनेपर, जुगल बाबू यही कहते, "यह खेल अच्छा नहीं है, कोई अच्छा-सा आयेगा तो हम ज़रूर चलेंगे ।" या कभी वे कहते, "आजकल बड़ी भीड़ है, कुछ कम हो जाये तब ज़रूर चलेंगे ।" बच्चे इन बातोंपर क़तई विश्वास न करते । और उस वक़्त उनके मुरझाये चेहरोंकी ओर देखकर जुगल बाबू और उनकी पत्नीके हृदय विदीर्ण हो जाते ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन आज अचानक सात रुपये दस आने उनके हाथमें आ गये थे। आज वे आसानीसे बच्चोंको सिनेमा दिखाने ले जा सकते थे। जुगल बाबूने सोचा, आज सिनेमा जायेंगे तो अपनी पत्नीको भी अवश्य साथ ले चलेंगे। वह कितनी प्रसन्न होगी। बेचारी बहुत दिनोंसे नाटक-सिनेमा कुछ देख नहीं पायी है !

सहसा जुगल बाबूके दिलमें विचार आया कि स्वयं उन्होंने ही बहुत दिनोंसे नाटक-सिनेमा कहाँ देखा है ? उन्हें याद था कि एक बार पड़ोसी शर्मा बाबूके साथ दोनों बच्चोंको सिनेमा देखनेके लिए भेजा था। जिस चालमें वे रहते थे, वहाँकी सभी औरतें मिलकर एक बार सिनेमा देखनेके लिए निकली थीं। तब उनके साथ दोनों बच्चोंको लेकर उनकी श्रीमतीजी भी गयी थीं। इस बातका उन्हें स्मरण हो आया। लेकिन उन्हें सिनेमा देखे इतने दिन हो गये थे कि यह उन्हें स्मरण तक न आता कि उन्होंने कब कौन-सा सिनेमा या नाटक देखा था। जीवनके कौन-से सुखका उन्होंने उपभोग किया था ? अपने कौन-से अरमान पूरे किये थे ? बरसों-बरससे बिना किसी आनन्दके, बिना किसी दिलबहलावके साधनके, नौकरीके जुएमें अपनी गरदन दिये चले आते थे।

किसकी नौकरी ? दफ़्तरकी ? दफ़्तरसे वे तनख़्वाह पाते थे, सिर्फ़ इसीलिए उसे दफ़्तरको नौकरी कहनी पड़ेगी, वरना वास्तवमें तो वे अपनी स्त्री और बच्चोंकी ही नौकरी करते थे। उन्हींकी ख़ातिर तो उन्हें रोज़ तड़के ही हड़बड़ाकर उठ जाना पड़ता था, जैसे-तैसे दो निवाले गलेके नीचे उतारकर दफ़्तर भागना पड़ता था, गरदन झुकाकर लगातार आठ-आठ घण्टे काममें व्यस्त रहना पड़ता था। क्या यह सब उन्हीं लोगोंके लिए नहीं था ? कोट पुराना होकर फट गया था, पर वे अपने लिए नया कोट बनवाना नहीं चाहते थे। पैरोंके जूते फेंक देनेके लायक़ हो गये थे, पर अभीतक मरम्मत करा-कराकर उन्हें घसीट रहे थे। न कहीं सैर-सपाटेके लिए कभी जाते थे, न यार-दोस्तोंको चायके लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घर बुलाते थे, और न स्वयं किसीके घर जाते थे। धोखेसे नाटक-सिनेमा-का इश्तहार दिखाई पड़ जाता तो वे उसे पढ़ते भी न थे। किसी होटलमें जाकर तरह-तरहकी बढ़िया चीज़ें खानेकी इच्छा मनमें होती, मगर वे तुरन्त प्रयत्नपूर्वक उसे कुचल डालते थे।

एक-एक पैसेका व्यय करनेमें उन्होंने हमेशा स्त्री और बच्चोंका ही खयाल किया था। अपनी निजी इच्छाएँ पूरी करनेके विचारको वे मानो पाप समझते थे। अरमान, आमोद-प्रमोद, आनन्द – इन शब्दोंको तो जैसे उन्होंने भुला ही दिया था। जिस बातमें स्त्री और बच्चोंको आनन्द मिले, ऐसे काममें तो कभी-कभी कुछ रुपये ख़र्च हो ही जाते थे, लेकिन स्वयं अपने आनन्दके लिए इन तीन-चार वर्षोंमें उन्होंने तीन-चार पैसे भी ख़र्च नहीं किये थे। क्या उन्हें मौज़ उड़ानेकी इच्छा ही नहीं होती थी? यह कैसे सम्भव था?

आख़िर वे भी तो मनुष्य थे। अकसर वे चाहते कि सफ़र करें, आरामसे घूमें-फिरें, मित्र-मण्डलीको चायपर बुलायें और उनके साथ ताश खेलें, कुछ बाज़ी लगायें, साफ़-सुथरे और फ़ैशनके कपड़े पहनें, नाटक-सिनेमा देखें, किसी होटलमें जाकर बिरयानी पुलाव, कबाब, कोफ़्ता वग़ैरह खायें। लेकिन अपनी इच्छाओंको वे प्रयत्नपूर्वक मार डालते थे, उनका ख़ून कर देते थे। जबसे वे दो बच्चोंके पिता बने थे, उन्हें भरसक सुख और सुविधाएँ देनेके अतिरिक्त दिलमें उठनेवाली हर उमंगकी उन्होंने हत्या ही की थी। उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा था कि निरन्तर अतृप्त ही रह जानेके कारण उनके अपने सुख-चैनकी लालसा, जलके अभावमें सूख जानेवाली लताके समान, सूखकर समाप्त हो गयी थी।

लेकिन वह समाप्त नहीं हो गयी थी। वह भीतर-ही-भीतर जीवित थी, और किसीका सहारा पाकर फिर पल्लवित होनेकी प्रतीक्षामें थी। सो आज उनके हाथमें अचानक सात रुपये दस आने आ जानेपर वह फिर हरी हो उठी थी, उसे नवजीवन-सा प्राप्त हो गया था। पहले तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वे कुछ समय तक सोचते रहे कि हमेशाकी तनख्वाहके अतिरिक्त मिले इन रुपयोंसे बच्चोंके लिए वे कौन-कौन-सी चीज़ें खरीद सकेंगे। लेकिन कुछ क्षणोंमें ही उनकी विचारधारा दूसरी दिशाकी ओर प्रवाहित हो गयी और वे यह सोचने लगे कि इन रुपयोंसे अपने स्वयंके लिए वे क्या-क्या कर सकेंगे, अपने कौन-कौन-से अरमान पूरे कर सकेंगे।

हाँ, इस सात रुपये दस आनेकी रक़मका वे स्त्रीके सामने ज़िक्र ही न करेंगे – बस मामला ख़त्म। उसके हाथमें वे हमेशाकी तरह एक सौ बीस रुपयेके नोट दे देंगे और सात रुपये दस आने स्वयं उड़ायेंगे! हाँ, स्वयं—बिलकुल अकेले!

उन्होंने दस-दसके बारह नोट एक जेबमें रख लिये और सात रुपये दस आनेकी एक पुड़िया बाँधकर दूसरी जेबमें रख ली। यह कर चुकनेके बाद उन्होंने सन्तोषकी साँस ली और मनमें कहा, "चलो, आरम्भ तो ठीक हुआ।"

घरपर उन्होंने पत्नीसे कहा, "सुनो, आज मैं खाना नहीं खाऊँगा।"

पिछले चार वर्षोंमें जो शब्द पतिके मुँहसे कभी न सुने थे, उन्हें आज सुनकर उनकी स्त्री हैरान रह गयी। पूछा, "क्या बात है? तबीयत तो ठीक है न?"

"तबीयतको क्या हुआ है?" मुसकराकर जुगल बाबूने कहा, "तबीयत मेरी एकदम ठीक है। बात यह है कि आज रातको एक दोस्तने अपने यहाँ खानेपर बुलाया है।"

"कौन दोस्त?"

"उन्हें तुम नहीं जानतीं। अरे, क्या है उनका नाम?....वह....वह.... खैर, तुम उन्हें नहीं जानतीं....हाँ, मुकुट बाबू। मुकुट बाबू ही तो!" जुगल बाबूने मनमें गढ़ी हुई बात कही।

बेचारी पत्नीने उनकी बातपर विश्वास कर लिया। लगभग आधे-घण्टे बाद जुगल बाबू कपड़े पहनकर बाहर जानेको तैयार हो गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्हें बाहर जाते देख, "मुझे भी अपने साथ खाना खानेके लिए ले चलिए," कहकर उनका बड़ा लड़का ज़िद करने लगा। उसे मनानेकी उन्होंने बहुत चेष्टा की, लेकिन वह और ज़्यादा मचलता गया। "मैं तो आपके साथ चलूँगा" की रट लगाते हुए उसने रोना-चीखना शुरू कर दिया। अब जुगल बाबू अपना क्रोध दबाये न रख सके, और झल्लाकर उन्होंने उसके मुँहपर एक तमाचा दिया। पिताको ऐसे उग्र रूपमें पहले-पहल देखनेके कारण, पाँच वर्षका बेचारा बालक सकपका गया, और उसी क्षण चुप हो गया।

दूसरे ही क्षण जुगल बाबूको अपने उस बरतावपर असीम दुःख हुआ। क्रोधके आवेगमें उन्होंने अपने बेक़सूर बालकके मुँहपर तमाचा जड़ दिया था, अब उनका दिल छटपटाने लगा, उन्हें पछतावा होने लगा। अपनी कठोरताका प्रायश्चित्त करनेके विचारसे बच्चेको चूमनेके लिए आगे बढ़कर उन्होंने अपना मुँह उसके मुँहकी ओर बढ़ाया। लेकिन बच्चेने अपने छोटे-छोटे हाँथोंसे उन्हें पीछे ढकेलकर माँकी गोदमें मुँह छिपा लिया। पल-भरको जुगल बाबूके मनमें, सैकड़ों विचार कौंध गये। छिः ऐसा आनन्द लेकर क्या होगा? बच्चोंको दुःखी करके, उन्हें मार-पीटकर....नहीं, वे अकेले न जायेंगे, आमोद-प्रमोद नहीं करेंगे। लेकिन इस विचारधाराका ज़ोर कुछ ही क्षणोंमें कम हो गया। जो हो, आज वे भी जी-भर मौज करेंगे, आनन्द लेंगे – अकेले, अकेले। जेबमें रखे सात रुपये दस आनेकी पुड़िया उन्होंने आहिस्तासे टटोलकर देखी। फिर वे घरसे बाहर चल पड़े।

'मुकुट बाबू, मुकुट बाबू!' मनमें कहते, जुगल बाबू मुसकरा पड़े।

साँझ कबकी हो चुकी थी। रास्तेमें पैदल चलनेवाली और सवारियों-का ताँता लगा था। दोनों ओरकी दूकानोंमें बिजलीकी बत्तियाँ जगमगा रही थीं। ठेलोंपर चीज़ें बेचनेवालोंके गिर्द ग्राहकोंकी भीड़ थी। पटरियोंपर सब्ज़ी-तरकारीकी ख़रीद-बिक्री जारी थी, और फूलोंके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हार-गजरोंकी दूकानोंपर लगे साइनबोर्ड दूरसे चमक रहे थे। जुगल बाबू एक खास बोर्डकी तलाशमें थे। उस बोर्डको देखकर वे उस होटलमें घुस पड़ेंगे। उन्हें याद नहीं आ रहा था कि वह होटल ठीक कहाँपर है। मांस-मछली खानेवाले अपने कुछ दोस्तोंके मुँहसे उसकी तारीफ़ उन्होंने कई बार सुनी थी। एक बार उसके सामनेसे गुज़रे भी थे। दोनों ओर लगे हुए बोर्डोंको ग़ौरसे देखते हुए वे तेज़ीसे चले जा रहे थे।

कॉरोनेशन होटलके नामका बोर्ड दिखते ही जुगल बाबूके पैर सहसा ठिठक गये। उन्होंने एक बार इधर-उधर देखा और इस बातका इत-मीनान कर लेना चाहा, कि कोई परिचित व्यक्ति उन्हें देख तो नहीं रहा। फिर वे झटसे होटलमें घुस गये। ज़ायक़ेदार चीज़ें खानेके लिए वे अधीर हो उठे थे। सात रुपये दस आने उनकी जेबमें नाच-कूद रहे थे। उन्होंने उस पुड़ियाको टटोलकर देखा। उनका दिल बुरी तरह धड़क रहा था। होटलका बावर्चीख़ाना तो काफ़ी दूर था, पर बिरयानी-क़ोरमा आदि तरह-तरहकी ज़ायक़ेदार चीज़ोंकी मिली-जुली गन्धें बाहर दालान तक आ रही थीं। दालानमें सभी टेबिलोंपर लोग बैठे थे और खाने-पीनेकी चीज़ोंपर हाथ साफ़ कर रहे थे। उन टेबिलोंकी पंक्तियोंके बीचसे होकर रिज़र्व्ड कमरोंकी ओर जुगल बाबू जाने लगे तो कुछ लोगोंने मुड़कर उनकी ओर देखा। जुगल बाबू एकसे एक लज़ीज़ चीज़पर हाथ मारनेमें व्यस्त लोगोंपर एक निगाह डालते हुए और सुगन्धोंसे प्रसन्न होते हुए आगे बढ़ गये। हमेशाकी तरह इस समय होटलमें खाना खानेवालोंकी ख़ासी भीड़ हो गयी थी। सफ़ेद पैण्ट और लाल जैकेटमें वेटर लोग दोनों हाथोंमें खाने-की चीज़ोंसे भरी प्लेटें लिये यहाँ-वहाँ दौड़ रहे थे। गोआकी कोंकणी भाषामें वे आपसमें कुछ कह रहे थे और इशारे कर रहे थे।

रिज़र्व्ड कमरे सभी भोजन करनेवाले ग्राहकोंसे भरे थे। अपने लिए खाली कमरा पाना जुगल बाबूको बड़ा मुश्किल मालूम हुआ। हर कमरेके द्वारपर लगी पीतलकी छोटी-सी प्लेटपर खुदे 'एङ्गेज़्ड' शब्दकी ओर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देखते हुए वे खड़े थे। आम दालानमें एक-दो कुरसियाँ उन्हें खाली दिखाई दीं। लेकिन उनकी तबीयत नहीं हो रही थी कि वहाँ जाकर बैठें। यहाँ वे सिर्फ़ भोजन करनेके इरादेसे थोड़े ही आये थे। वे तो यह सोचते हुए आये थे कि आरामसे अलग कमरेमें बैठेंगे, जी-भरके चैन करेंगे, बिलकुल अकेले और इतमीनानके साथ बैठकर लज़ीज़ चीज़ें खायेंगे। वे चाहते थे कि उन्हें स्पेशल रूम मिले, पर यहाँ तो सभी स्पेशल रूम ग्राहकोंसे खचाखच भरे थे। इसी कशमकशमें वे कुछ देर तक जहाँके तहाँ खड़े रहे।

तभी दोनों हाथोंमें प्लेटोंका ढेर सँभाले, पीठसे दरवाज़ा खोलकर स्पेशल रूमसे एक वेटर बाहर निकला। जुगल बाबूकी ओर देखते हुए उसने पूछा,

"साब, स्पेशल रूम ?"

जुगल बाबूने शानके साथ कहा, "हाँ।"

"आपको पाँच मिनिट ठहरना होगा, साब। यह रूम अभी ख़ाली हो जायेगा।" कहकर वह चला गया।

जुगल बाबू एक ओर खड़े हो गये। तीन-चार मिनिटमें रूमका दरवाज़ा खुला और दो बूढ़े सज्जन और दो युवतियाँ पान चबाते हुए बाहर निकले। दरवाज़ा कुछ देर तक झूलता-झूमता रहा। जुगल बाबूने निश्चय कर लिया, कि वास्तवमें कमरा ख़ाली हो गया है,....खट्से भीतर घुस गये।

एक मिनिटके बाद आकर सलाम करते हुए वेटरने पूछा, "क्या खायेंगे साब ?"

कौन-कौनसी चीज़ें मँगवायी जायें, इस सम्बन्धमें जुगल बाबूने अभी-तक निश्चय नहीं किया था। वे तो सिर्फ़ यह सोचकर आये थे, कि कुछ बढ़िया-बढ़िया लज़ीज़ चीज़ें खायेंगे। इस तरहके होटलोंमें हमेशा आनेवाले ग्राहकोंमें तो वे थे नहीं, इसलिए वे झट कह नहीं सके, कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्या खाना चाहते हैं। वेटरके प्रश्नसे वे कुछ सकपका-से गये। वे क्या खाना चाहते हैं, यह बतलानेके बदले उन्होंने वेटरसे पूछा, "तुम्हारे होटलमें कौन-कौन-सी चीज़ें मिल सकती हैं ?"

हमेशा होटलमें खाना खानेके लिए आनेवाले ग्राहक और पहली ही बार आनेवाले ग्राहकमें जो फ़र्क़ होता है, उसे इस तरहके बड़े होटलके वेटर खूब पहचानते हैं। जुगल बाबूकी ओर देखकर वेटर कुछ मुसकरा दिया। और उसने झट चिली फ़्राई, चिकन फ़्राई, चिकन मसाला आदि नाम इस धड़ल्लेसे गिनाये कि जैसे पूजा-पाठके समय वह मन्त्रोच्चार कर रहा हो।

वेटरने सभी नाम ऐसी तेज़ीसे कह डाले कि उनमें-से एक चीज़का भी नाम जुगल बाबूको याद नहीं रहा। खानेके लिए क्या-क्या मँगाया जाये, इस काममें वेटरके उस मन्त्रोच्चारसे जुगल बाबूको तनिक भी सहायता नहीं मिली। वह ऐसी मुखाकृति बनाये उनके सामने खड़ा था कि जैसे कह रहा हो : बताइए, जल्द बताइए, क्या लाऊँ ? सहसा टेबिल-पर रखे हुए खाने-पीनेकी चीज़ोंकी फ़ेहरिस्त उन्हें दिखाई दी। उसे हाथमें लेकर वेटरसे उन्होंने कहा, "तुम पाँच मिनिटके बाद आना, तबतक मैं इसे पढ़ लूँ।" वेटर चला गया और वे 'मेनू' देखनेमें व्यस्त हो गये।

इस बातका निश्चय कर लेनेके बाद कि क्या मँगाना है, उन्होंने चार-पाँच मिनिट वेटरका इन्तज़ार किया। फिर उसे बुलानेके लिए दीवारसे लगा बिजलीकी घण्टीका बटन दबाया। दो मिनिट बीत गये। तब भी कोई न आया। तो उन्होंने फिर बटन दबाया, और साथ ही तेज़ स्वरमें आवाज़ दी : बॉय ! इसके बाद भी दो मिनिट और बीत गये, फिर भी कोई न आया····भगवान् जाने सभी वेटर कहाँ मर गये ! दिल-ही-दिलमें झल्लाकर जुगल बाबूने एक नज़र फिर 'मेनू'पर डाली। जिन चीज़ोंका ऑर्डर देनेका उन्होंने निश्चय कर लिया था, उनके नामों और दामोंको उन्होंने दोबारा देखा : दो रुपये बारह आने, दो रुपये आठ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आने, एक रुपया छह आने – कुल छह रुपये चौदह आने ! इतने बड़े होटलमें कमसे कम वेटरको चार आने 'टिप' भी देनी पड़ेगी, और अगर हम चाहते हों कि ख़ुश होकर वेटर हमें सलाम करे, तब तो आठ आने देने पड़ेंगे। यानी जेबमें रखे सात रुपये दस आने यहीं हो जायेंगे ! अकेले ही खानेके लिए, ज़रा-सा ज़बानके चटख़ारेके लिए ! बच्चों और पत्नीको घरपर छोड़कर सिर्फ़ अकेलेकी मौजके लिए, सिर्फ़ इस कम्बख़्त ज़बानके चोंचले पूरे करनेके लिए – हाँ चोंचले !

पल-भर उन्होंने वेटरके आनेकी आहट ली। शायद उसे अब जुगल बाबूकी कोई ख़बर ही न थी।...उसी क्षण उनके दिलमें एक अजीब-सी खलबली मच गयी। उनके विचारोंका प्रवाह सहसा भिन्न दिशाकी ओर मुड़ गया। पत्नी और बच्चोंको घरपर छोड़कर 'ओवर-टाईम' कामकी कमाई उस सात रुपये दस आनेकी उस रक़मसे अकेले ही मौज उड़ाना सहसा उन्हें लज्जास्पद जान पड़ा। लज्जाके कारण उनका दम घुटने-सा लगा। जो चीज़ें खाने-पीनेकी लालसा लेकर वे यहाँ आये थे वे सब चीज़ें उनकी आँखोंको घृणित-सी दिखाई देने लगीं। और पल-भरमें उन्हें ऐसा लगा कि वे वहाँसे भाग जायें। अबतक उन चीज़ोंकी सोंधी सुगन्धकी कल्पनासे उनके मुँहमें पानी भर आता था, अब जैसे उनकी ज़बान बदमज़ा हो गयी, लज़ीज़ चीज़ें खानेके लिए लालायित उनकी ज़बान अब ऐंठने-सी लगी।

यह बात नहीं कि उनकी भूख मर गयी थी। वे बहुत भूखे थे। जो चीज़ें मँगानेका उन्होंने निश्चय किया था, अगर वे चीज़ें उनके सामने तुरन्त रख दी जातीं तो वे उनपर टूट पड़ते। लेकिन अब अकेले छिपकर खानेकी कल्पना तक उन्हें घृणित जान पड़ने लगी। इस तरह मौज करनेके लिए मनुष्यका आदी होना ज़रूरी है। बाल-बच्चोंको, स्त्री-को, घर-गृहस्थीकी जिम्मेदारीको भुलाकर अकेले अपने मज़ेके लिए रुपये बरबाद करनेवाले व्यक्तिका निर्माण घण्टोंमें ही नहीं होता,। जुगल बाबूने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहले कभी भी ऐसा नहीं किया था, फिर अचानक आज वे ऐसा कैसे कर सकते थे ?

सात रुपये दस आने खर्च करके लजीज़ खाना खानेकी उनकी इच्छा पल-भरमें मर गयी। जो काम इसके पहले उन्होंने कभी नहीं किया था उसे करनेके इरादेसे स्त्रीसे छल-कपट करके इस होटलमें वे आये थे। एक फ़ैमिली बॉक्सकी कुरसीपर वे बैठे थे। उनकी पहली आवाज़पर ही अगर वेटर आ पहुँचता तो अबतक उनकी टेबिलपर वह सभी चीज़ें आ जातीं। लेकिन अब थोड़ी-सी ही देरमें उनके दिलमें अजीब परिवर्तन हो गया था। उस खानेसे और उस तरह मौज-मज़ा उड़ानेसे उनका दिल जैसे अचानक टूट गया। प्रबल आवेगके साथ उन्हें स्त्री और बच्चोंका खयाल हो आया। उन्होंने सोचा, यहाँ बैठकर अकेले मज़े उड़ाना तो बच्चों और स्त्रीके मुँहका कौर छीनने-जैसा है।

उन्होंने सोचा अपनी ज़बानके चोंचले पूरे करनेके लिए उनका यहाँ आना कितनी बड़ी बेहूदा बात है। "बाबूजी, मैं भी चलूँगा, मुझे भी ले चलिए,"—बच्चेका वह रोना-चिल्लाना सहसा उनके कानोंमें गूँज उठा। क्रोधमें आकर उसके मुँहपर चाँटा जड़ देनेपर लड़केका सकपकाया हुआ और भयभीत चेहरा उनकी आँखों आगे फिरने लगा। उन्हें प्रतीत हुआ कि तनख्वाहके साथ मिले हुए वे सात रुपये दस आने अकेले उनके लिए नहीं हैं, उसमें बच्चोंका भी हिस्सा है, स्त्रीका भी हिस्सा है। और जेबमें रखी रुपयोंकी पुड़िया उन्होंने दोबारा टटोलकर देखी, टेबिलपर रखे 'मेनू' को एक ओर हटा दिया। झटसे उठकर खड़े हुए और तेज़ीके साथ बाहर हो गये।

बाहर, दरवाज़ेपर ही वेटरसे मुठभेड़ हो गयी। वेटर बोला, "बतलाइए साब, क्या लाऊँ ?"

जुगल बाबूने कहा, "कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं ?" विस्मित होकर वेटरने पूछा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जुगल बाबूने उसकी ओर देखा तक नहीं। बाहरवाले हॉलसे होकर मेज़ोंकी पंक्तियोंके बीचसे तेज़ीके साथ क़दम बढ़ाते हुए वे बाहर निकल आये। पीछेसे उनकी ओर देखते हुए उस वेटरने अन्य वेटरोंका ध्यान आकर्षित करके जो इशारे किये वे उन्हें दिखाई नहीं दिये। दिखाई देते भी तो उन्हें परवाह न थी। होटलसे बाहर आकर उन्होंने सीधे घरका रास्ता पकड़ा।

अब उन्हें ख़याल आया कि इतनी जल्दी घर लौटनेका पत्नीको क्या जवाब देंगे। इसी विचारसे जान-बूझकर थोड़ा समय बितानेके लिए वे लम्बे रास्तेसे चले। इत्मीनानके साथ टहलते हुए-से और बार-बार जेबमें रखी पुड़ियाको टटोलते हुए वे जा रहे थे। कुछ आगे बढ़नेपर बिजलीकी रोशनीमें जगमगाती एक मिठाईकी दूकान दिखाई दी। वे उस दूकानमें घुस गये। एक सेर बढ़िया मिठाई ख़रीदकर वे फिर धीरे-धीरे सड़कपर चलने लगे। समय काटे नहीं कटता था। आख़िर किसी तरह एक घण्टा बिताकर वे घर पहुँचे।

उनकी स्त्रीने पूछा, "क्या-क्या खाया ?"

मुसकराकर उन्होंने कहा, "मुकुट बाबूके खानेके क्या कहने !"

"और भी किसीको बुलाया था ?"

"हाँ, और भी दस-बारह लोग थे।"

"क्या-क्या बना था ?"

जुगल बाबूने जो भी नाम मुँहपर आये, गिना दिये। इन नामोंको बताते हुए उन्हें सहसा होटलके उस वेटरका स्मरण आया जिसने धड़ल्लेके साथ बीसियों चीज़ोंके नाम सुना दिये थे। और वह मनमें हँस पड़े। आगे उन्होंने कहा, "और मुकुट बाबूने ऐसे अनुरोधके साथ खाना ख़िलाया कि कुछ न पूछो।"

मुसकराकर स्त्रीने कहा, "अच्छा !"

"हाँ, और क्या ! खाना खिलानेमें इस तरहकी ज़बरदस्ती मैंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज़िन्दगीमें कहीं नहीं देखी। सिर्फ़ एक ही बात बाक़ी रह गयी, कि मेहमानोंको मुकुट बाबू नीचे लिटा देते और उनके मुँहमें ज़बरदस्ती मिठाई ठूँसते। और खाना खानेवाला व्यक्ति जितना ही गिड़गिड़ाकर कहता कि अब और न परसें, उतना ही मुकुट बाबू परसनेवालोंसे आग्रह कर-करके और परसवाते! सच उन्होंने ग़ज़ब कर दिया। ऐसा भोजन-संग्राम मैंने कहीं न देखा था।''

उनके उस वर्णनको सुनकर मुकुट बाबूके घरके उस अनूठे भोजन-संग्रामका चित्र उनकी स्त्रीकी आँखोंके सामने खिंच गया। मारे हँसीके उसका बुरा हाल होने लगा। स्त्रीकी हँसी देखकर जुगल बाबू भी ख़ुशीसे हँसने लगे। बढ़ा-चढ़ाकर झूठ-मूठका वर्णन करनेके लिए उन्हें और बढ़ावा मिला। उन्होंने कहा, ''हमारे मुकुट बाबूका तो मानो यही ख़याल था कि उनके यहाँ खाना खानेके लिए आनेवाले लोग उनके दोस्त नहीं दुश्मन थे। वे हमें ऐसे ठूँस-ठूँसकर खिला रहे थे, जैसे मार ही डालना चाहते हों!''

हँसीके मारे लोट-पोट होती जुगल बाबूकी स्त्री दोनों हाथोंसे पेट दबाती हुई बोली, ''बस कीजिए....बस कीजिए। ओह, हँसते-हँसते तो मेरी जान ही निकल जायेगी।''

जुगल बाबू बड़ी देर तक हँसते रहे। हँसीका आवेग कम पड़नेपर मिठाईका दोना दिखाते हुए जुगल बाबूने कहा, ''ज़बरदस्ती पर और भी ज़बरदस्ती देखो। बच्चोंके लिए मुकुट बाबूने यह मिठाई थमा दी।''

''अच्छा! तब तो सचमें आपके मुकुट बाबू अद्भुत आदमी हैं। लेकिन इसकी ज़रूरत क्या थी?''

''अरे भई मैंने बहुत इन्कार किया, लेकिन वह भला आदमी माने तब न?''

''जान पड़ता है कि आपके मुकुट बाबू वास्तवमें बहुत ही भले आदमी हैं।''

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"बेशक!" कहते हुए जुगल बाबूने दोनेपर लिपटा हुआ तागा खोलना शुरू करके पूछा, "बच्चे सो तो नहीं गये ?"

उनकी स्त्रीने कहा, "हाँ, अभी कुछ देर हुई सो गये हैं। बड़ेने तो खाना तक नहीं खाया। भूखा ही सो गया, आपके जानेके बाद बड़ी देर तक सिसकियाँ भरता रहा।"

"मैं उसे अपने साथ नहीं ले गया, क्या इसीलिए ?"

"नहीं।"

"तब ?"

"बार-बार कहता था कि बाबूजीने मुझे मारा क्यों ?"

जुगल बाबूका कलेजा जैसे मुँहको आने लगा। व्यथित स्वरमें उन्होंने कहा, "उसे जगाओ तो! मिठाई खाकर वह ख़ुश हो जायेगा।"

"अरे, बच्चोंकी नाराज़ी थी क्या! आप नाहक़ चिन्ता करते हैं। वह तो नींदमें ही सब-कुछ भूल जायेगा। सवेरे उठते ही देखिएगा, 'बाबूजी, बाबूजी' पुकारता आपसे लिपट पड़ेगा। इस वक़्त क्यों उसे नींदसे जगाया जाये!"

जुगल बाबूने कहा, "भई एक शर्तपर तुम्हारी बात मान सकते हैं।"

"कौन-सी ?"

"हम बच्चोंको नींदसे नहीं उठायेंगे, सिर्फ़ इस शर्तपर कि तुम्हें थोड़ी-सी मिठाई खानी होगी।"

"अभी ? इसी वक़्त ?"

"हाँ, इसी वक़्त, अभी!"

"तो क्या आपने मुझे भी अनजान बच्चा समझ रखा है जो मिठाई खिला रहे हैं ?"

"और नहीं तो क्या, तुम बूढ़ी थोड़े ही हो गयी हो ?" जुगल बाबूने मिठाईका दोना खोलकर कलाकन्दका एक टुकड़ा उठाया और उसे पत्नीके मुँहके सामने बढ़ाते हुए कहा, "ज़रा मुँह तो खोलो।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनकी स्त्रीने मुसकराकर उनकी ओर देखा। उसका लज्जावनत चेहरा देखकर जुगल बाबूके दिलमें गुदगुदी-सी होने लगी। कलाकन्दका टुकड़ा उन्होंने अपनी स्त्रीके होंठोंपर रख दिया। लजाते-शरमाते स्त्रीने उसको स्वीकार कर लिया।

उसे खाते हुए उसने कहा, "कितना बढ़िया है यह कलाकन्द! आप भी लीजिए न ज़रा-सा!"

"मैं?" जुगल बाबूने गलेपर उँगलियाँ रखते हुए कहा, "अब कुछ खानेके लिए जगह ही कहाँ है? यहाँतक खाना जो खा लिया है।"

"लेकिन तब भी लीजिए। आपको ज़रा-सी....इतनी-सी मिठाई तो खानी ही होगी, "और उसने कलाकन्दका एक टुकड़ा उठाकर उसे जुगल बाबूके मुँहके सामने बढ़ाते हुए कहा, "लीजिए, मेरी क़सम!"

जुगल बाबूने प्रेमके साथ कलाकन्द तो खा ही लिया, साथ ही उसे अपने निकट भी खींच लिया।

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धूप और छाँह

स्पेशल वार्डके उस छोटे-से कमरेमें हाथमें हाथ डाले वे दोनों खाटपर बैठे थे। वह चुप बैठा था, वह भी ख़ामोश थी। बाहरके अहातेमें नारियलके ऊँचे-से पेड़ोंके साँवलापन लिये हुए हरे रंगके बड़े-बड़े पत्ते हवामें घूमते हुए दिखाई दे रहे थे। उस दृश्यकी ओर वे दोनों ही अपलक भावसे देख रहे थे। लगभग दो साल पहले किसी मकानकी खिड़कीके निकट खड़े हो, वहाँसे दिखाई देनेवाले नारियलके पेड़ोंके लुभावने बड़े-बड़े पत्तोंकी ओर वे दोनों इसी तरह देख रहे थे।····हवाके झोंकोंके साथ नारियलके पत्ते झूम रहे थे और उनके साथ-ही-साथ धरतीपर उनकी परछाइयाँ भी उसी तालमें झूम-झूमकर नाच रही थीं। उसकी आँखोंमें आँखें डालकर उसने पूछा था, "क्या तुम मेरी बनोगी? मुझसे ब्याह करोगी?" प्रश्न सुनकर वह पल-भरको शरमा गयी थी, उसकी आँखें चमक उठी थीं और एक हलका-सा झटका देनेसे पहले गरदनको ज़रा झुकाकर उसने एक नज़र उसकी ओर देखा था। उसकी स्वीकृति वह पहचान गया था····उसने खिड़कीसे सामने देखा। नारियलके पेड़ोंके बड़े-बड़े पत्तों और उनकी परछाइयाँ अब भी झूम-झूमकर नाच रही थीं। अस्पतालके उस कमरेमें बैठकर बाहरवाले अहातेमें झूमनेवाले नारियलके उन पेड़ोंको देखकर सहसा उसे दो साल पहलेके उस दिनकी याद हो आयी और तब उसे लगा कि बिना कुछ बातचीत किये चुपचाप बैठे ही रहें। उसने सोचा कि शायद वह भी उसी दिनकी घटनाकी यादसे ख़ामोश बैठी है, या शायद यह भी हो सकता है कि अब थोड़ी ही देरके बाद किये जानेवाले ऑपरेशनकी कल्पनासे वह भीतर-भीतर डर रही हो, घबरा रही हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसने आहिस्तासे उसका हाथ दबाया। वह कहना चाहता था, "डरो नहीं, भगवान्‌की दयासे सब अच्छा ही होगा – ऑपरेशन कामयाब होगा –" लेकिन मुँहसे वह एक शब्द न कह पाया और उसकी व्यथित नज़रोंसे ही उसने समझा कि वह क्या कहना चाहता था। उसके अधरों-पर एक हलकी-सी हँसीकी रेखा दौड़ी – मानो मुश्किलके साथ वह मुसकरायी हो। पर, कितनी भी हलकी वह क्यों न हो, उसके होंठोंपर मुसकानकी उस रेखाको खिलते देख उसे कुछ सान्त्वना मिली। एक बार उसे लगा कि नारियलके इन झूमनेवाले पत्तोंको देखकर जिस घटनाका सहसा स्मरण हो आया है वह उसे कह डाले। लेकिन उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसे सुनकर वह खुश होगी या नहीं ? पिछले दो सालमें उसने मुँहसे तो कभी यह नहीं कहा था कि, नाहक़ ही मैंने तुम्हारे साथ ब्याह किया, लेकिन तब भी उसने कई बार अनुभव किया था कि इस तरहके विचार ज़रूर उसके दिलमें उठते हैं। और उसने सोचा, दो साल पहलेकी उस घटनाकी उसे याद दिलाना इस वक़्त बेकार है। वह और कुछ देर ख़ामोश रहा। फिर उसने तय किया कि उस दिनकी याद उसे वह ज़रूर दिलायेगा। वह स्वयं जब उस यादसे इस वक़्त इतना खुश हो रहा है, तब वह क्यों न....

तभी एक नर्स वहाँ आयी। उसके साथ दो वार्ड बॉएज़ भी थे। ऑपरेशन थिएटरकी ओर ले जाते हुए मरीज़को जिस हाथ-गाड़ीपर लिटाकर ले जाया जाता है वह गाड़ी भी वे अपने साथ लाये थे।

नर्सने उससे कहा, "चलिए।"

उसके हाथमें फँसाया हुआ अपना हाथ उसने छुड़ा लिया और खाटसे उठ खड़ी हुई। नर्सका दिया हुआ पेटीकोट और एक मोटा-भद्दा-सा कुरता उसने पहन लिया। इसके बाद तुरन्त उसे गाड़ीपर लिटाकर वार्ड बॉएज़ नरम-नरम फ़र्शपर-से गाड़ीको ढकेलते हुए ले जाने लगे। वह भी गाड़ीके साथ तेज़ीसे चलने लगा। उसने अनुभव किया कि तेज़ीसे चलनेपर भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नर्सके जूतोंके रबरके बने तले तनिक भी आवाज़ नहीं कर रहे थे और सँभल-सँभलकर चलनेपर भी उसके जूतोंकी खट्-खट् कानोंको साफ़ सुनाई दे रही थी। ऑपरेशन थिएटरके दरवाज़ेपर पहुँचते ही नर्सने उससे संकेतसे कहा, "आप भीतर नहीं आ सकते।" हाथ-गाड़ीपर लिटायी हुई उस क्षीण देहकी ओर उसने देखा, पल-भरको दोनोंकी आँखें चार हो गयीं। उसे ऐसा आभास हुआ कि उसके सूखे होंठोंपर एक हलकी-सी मुसकराहट फैल गयी है....। यदि डॉक्टर इजाजत देते तो वह उसकी ओर दौड़ जाता, दोनों बाहोंमें उसे भर लेता, और बार-बार उसे चूम लेता....। लेकिन दूसरे ही क्षण वह हाथ-गाड़ी ऑपरेशन थिएटरके भीतर चली गयी....अब दरवाज़ा बन्द हो गया। वह उसकी आँखोंसे ओझल हो गयी....अब उसका जीवन सम्पूर्णतया डॉक्टरके हाथमें था, भाग्यके हाथमें। उसका दिल बैठा जा रहा था, उसके पैर बेजान-से हो गये थे। तब भी, वहाँसे हटकर वह बराण्डेके कटहरेके पास जा खड़ा हुआ।

कुछ देर पहले स्पेशल वार्डके कमरेसे दिखाई देनेवाले नारियलके पेड़ अब उसे दूसरी ओरसे दिखाई दे रहे थे। वे बड़े-बड़े पत्ते अब भी झूम रहे थे और धरतीपर उनकी परछाइयाँ भी आगे-पीछे होकर झूम-झूमकर नाच रही थीं। उसके डॉक्टरसे पूछनेपर कि "ऑपरेशनमें कितनी देर लगेगी?' उन्होंने कहा, "कौन जाने कितना वक़्त लग जाये!" उसने तब पूछा "क्या यह ऑपरेशन ख़तरनाक है?" डॉक्टरने इतना ही कहा, "यह हम कैसे बता सकते हैं?" फिर एक और डॉक्टरसे उसने पूछा, "इसे ज़्यादा तकलीफ़ तो न होगी?" वह कहते हुए चले गये, "ठीक नहीं कहा जा सकता।" डॉक्टरोंके मुँहसे इन रटे-रटाये शब्दोंको सुनकर वह बहुत झल्ला उठा था। उसे हुआ कि उन सबको जी भरकर गालियाँ देवे और कहे, कि "पाजियो, मुझसे चार-पाँच सौ रुपये वसूल करनेके बाद भी क्या तुम्हारा यही जवाब है कि कुछ नहीं बता सकते!" लेकिन तत्काल उसे ख़याल आया, और वह अच्छी तरह जानता भी था, कि गरज़मन्द

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मरीज़ डॉक्टरोंके साथ इस तरहका व्यवहार नहीं कर सकता। और वह बिना ज़रा भी ज़बान हिलाये अब खामोश हो गया। उसने सोचा, ऑपरेशनमें कितना समय लगेगा इसपर तर्क लड़ाना बेकार है....फिर उसने सोचा, कितनी ही क्यों न देर लगे, ऑपरेशन बस कामयाब हो जाये : वह बच जाये, उसके प्राणोंकी रक्षा हो जाये, वह हँसी-खुशी अपने घर लौट आये कि उसने लाखों पा लिये। नारियलके पेड़ोंपर झूमनेवाले उन बड़े-बड़े हरे पत्तोंकी ओर देखते हुए मन-ही-मन उसने भगवान्को गुहारा, "भगवान्, उसके प्राणोंकी रक्षा करो....मुझे उसकी बहुत जरूरत है....मैं उसे प्राणोंसे ज़्यादा चाहता हूँ...शायद इस बातसे वह परिचित नहीं है लेकिन तुम तो इसे अच्छी तरह जानते हो...और इसलिए उसके प्राणोंकी रक्षा करो...!"

वह उसे जी-जानसे चाहता था, फिर भी रह-रहकर उसके दिलमें एक आशंका उठती थी कि शायद इस बातको वह जानती ही न हो। कितनी अजीब बात थी ! लेकिन इसे अजीब क्यों कहें ? अकसर घर-गृहस्थियोंमें ऐसा दिखाई देता है। कमसे कम उसका तो यही खयाल था, क्योंकि ब्याहके बाद जिस ढंगसे उसके साथ वह पेश आया था उसमें अपनी ग़लती उसे कभी नहीं दिखाई दी थी। उसके कितने हठ वह पूरे नहीं कर सका था। इसलिए नहीं, कि वह पूरा नहीं करना चाहता था, उसकी इच्छाओं-भावनाओंकी वह हत्या करना चाहता था; बल्कि सिर्फ़ इसलिए कि उसके हर हठको पूरा करनेके लिए उसके पास काफ़ी पैसा न था।... वह चाहता था कि आड़े वक़्तके लिए अपने पास कुछ पैसा जमा रहे।... और हर भली गृहस्थीमें यही होता भी होगा। उसने कई बार उसे नाराज़-कर कुछ रुपये इकट्ठा कर रखे थे, और तभी तो पिछले साल उसके प्रसवकालका खर्च वह कर सका था। प्रसवके समय उसे बहुत कष्ट हुआ था। ऑपरेशन कराना पड़ा था, और न जाने किस वजहसे ऑपरेशन नाकामयाब होकर, अब एक साल बाद दोबारा यह खतरनाक ऑपरेशन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कराना पड़ रहा था। और उस समय सूझ-बूझसे काम लेनेके कारण 'अब रुपये कहाँसे आयेंगे ?' कहकर किसी साहूकारका मुँह ताकनेकी आवश्यकता भी उसे नहीं पड़ी थी।

जिस वक़्त डॉक्टरने कहा कि बिना इस ऑपरेशनके चारा हो नहीं है तब यह कहकर कि 'देखो, बचत करनेकी मेरी आदतसे तुम्हें चिढ़ होती थी; लेकिन वही रुपया इस वक़्त हमारे काम आ रहा है' उसे नाराज़ करनेका विचार उसके दिलको छू तक नहीं गया था···और न अब अस्पतालकी गैलरीमें खड़े हो, झूमने-लहरानेवाले नारियलके उन पत्तोंकी ओर और उनकी परछाइयोंकी ओर देखते हुए यह विचार ही उसके दिलमें आया कि समय-समयपर रुपये बचाकर उसने कितनी समझदारीका काम किया है। उसके दिलमें तो इसके ठीक विपरीत विचार आ रहे थे। वह सोच रहा था कि उसने आज तक न जाने कितनी बार उस बेचारीको नाराज़ किया था ? एक-एक कर अनगिनत स्मृतियाँ उसकी आँखोंके सामने आकर खड़ी हो गयीं और उनके स्मरण-मात्रसे उसका कलेजा भर आया, आँखें छलछला उठीं।

एक बार, महीनेकी तनख़्वाह लेकर वह घर लौटा, तब वह बोली, "परसों शनिवारको हम लोग नाटक देखने चलेंगे।" उसने 'हाँ' कह दिया। लेकिन दूसरे रोज़ जब वह टिकिट ख़रीदने गया तब उसने पाया कि दो रुपये दस आनेसे ज़्यादा दामवाले टिकिट ही बचे हैं। इसपर वह बिना टिकिट ख़रीदे ही घर लौट आया।

वह कहने लगी, "तब साढ़े-चारवाले टिकिट क्यों न ख़रीदे ?"

उसने कहा था, "साढ़े चारवाले ? क्या इस तरह नौ रुपये मुफ़्तमें बरबाद कर दिये जायें ?"

"क्या हर्ज़ है ?"

"तुम भी कैसी बात करती हो ? क्या हमारे पास इतना रुपया है कि फ़िज़ूल-ख़र्ची करें ?"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सहसा उसका चेहरा कुम्हला गया था।

उसे मनाते हुए उसने कहा था, "अगले शनिवारको दोबारा यही नाटक खेला जायेगा। तब हम दो चार रोज़ पहले ही टिकिट खरीद लेंगे। अभीसे कम्पनी जा थोड़े ही रही है ?"

लेकिन कम्पनी चली गयी थी। अब यह कहकर कि "स्त्रीको मामूली नाटक तक दिखा नहीं सकते और कहते हैं कि मैं तुम्हें प्राणोंसे बढ़कर चाहता हूँ" ताने-उलाहने देनेका अधिकार उसे हमेशाके लिए प्राप्त हो गया था। उसके मुँहसे इन व्यंग्य भरे-शब्दोंको सुनकर वह झुँझला पड़ता, लेकिन अपने पास कोई जवाब न होनेके कारण वह और भी ज़्यादा झल्ला पड़ता····।

उसकी किसी सहेलीके लड़का हुआ था। उसने पचीस रुपये तककी कोई चीज़ उसे उपहारमें देनेकी इच्छा प्रकट की। इसपर उसने कहा था, "तुम्हारी सहेली कोई पहलौटी तो है नहीं, यह दूसरा लड़का हुआ है। भला इस वक़्त उपहार देनेकी क्या ज़रूरत है ?"

"लेकिन जिस वक़्त उसके पहले-पहल बच्चा हुआ था, मैं स्वाधीन नहीं थी। अब मैं अपनी गृहस्थीकी मालकिन हूँ। तब····"

"लेकिन पचीस रुपये तो बहुत ज़्यादा होते हैं।"

"ज़्यादा-वादा कुछ नहीं। इस वक़्त मैं आपकी एक न सुनूँगी··· वह मेरी सबसे ज़्यादा प्रिय सहेली है।"

उसने अपनी ज़िद पूरी की थी। वह बहस बढ़ाना नहीं चाहता था और इसीसे खामोश रह गया। लेकिन इसके बाद भी कुछ दिनों तक उन पचीस रुपयोंकी चुभन उसके दिलमें बनी रही थी। 'अभी कुछ ही दिन पहले तुमने पच्चीस रुपये फ़िज़ूलमें बरबाद किये हैं, अब तो ज़रा हाथ रोको !' कहकर उसके दो-तीन इरादोंको उसने बिलकुल टाल दिया था।

एक बार वह बोली, "जब देखो, तुम्हारा एक ही तकिया-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कलाम – हाथ रोको, हाथ रोकना सीखो ! पहले तो तुम ऐसे नहीं थे। ब्याहसे पहले दिन-रात मेरे अगल-बगल मँडराते थे। तब····"

"तब क्या मैं ही मँडराया करता था? तुम भी तो शरीक रहती थीं•••।"

"····ख़ैर, यही सही। हम दोनों मँडराया करते थे, लेकिन उन दिनों तुम ऐसे मक्खीचूस नहीं थे। रुपया ख़र्च करते हुए इस तरह कंजूसी नहीं करते थे····एक रुपया पाँच आनेसे कमवाला सिनेमा-टिकिट नहीं ख़रीदते थे···दो गज़की दूरीपर जाना हो तब भी हम किसी दिन पाँव-पैदल नहीं जाते थे···मुझे ख़ुश रखनेके लिए, मेरे आराम और सुविधाके लिए तुम आठों पहर किस तरह बेचैन हुए रहते थे···उन दिनोंका तुम्हारा बरताव देखकर मैंने सोचा था····"

"···कि मैं बड़ौदाका महाराजा हूँ, क्यों न?"

वह सहसा खिलखिला पड़ी! लेकिन अगले ही क्षण उसे ध्यान आया कि वह तो उससे नाराज़ है। फ़ौरन अपनी हँसी रोककर नाराज़ीके ढंगसे उसने कहा, "बड़ौदाके महाराजाकी बात छोड़िए। लेकिन···।"

"लेकिन क्या?"

"लेकिन मैंने सोचा था कि तुम खुले हाथके और हौसलेवाले हो···।"

"हौसलेवाले?" कहकर उसने मुँह एक ओर फेर लिया था··· उसने सोचा, इसका कहना झूठ नहीं है। ब्याहके पहले उसे ख़ुश रखनेके लिए रुपये-पैसेकी उसने कभी फ़िक्र नहीं की थी। लेकिन उन दिनों उसकी हालत बहुत अच्छी थी। रुपया हाथका मैल बना हुआ था। जिस समाचारपत्रके दफ़्तरमें वह सह-सम्पादकका काम करता था उसका मालिक पैसेवाला और हौसलामन्द व्यक्ति था। सारा ठाट-बाट नया होनेके कारण उसे तनख़्वाह भी भरपूर मिलती थी। शुरूसे ही पत्र ख़ूब बिकने लगा था और आगे बिक्री और भी बढ़नेकी उम्मीद की जा सकती थी। उसकी तनख़्वाह बढ़नेवाली थी, मालिककी उसपर कृपा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थी और उसे आशा बँध गयी थी कि किसी-न-किसी दिन उस पत्रका वह प्रधान सम्पादक बनेगा। लेकिन कुछ ही दिनोंमें उसका यह ताशका महल ढह गया था। उस समाचारपत्रकी बिक्री बढ़नेके बदले कम हो गयी थी। मालिककी सारी उम्मीदोंपर पाला पड़ गया था। उसकी नज़रोंसे भी वह कुछ गिर गया था। प्रधान सम्पादक होना या तनख़्वाह बढ़ना तो दूर रहा, मालिककी बचत-योजनाका पहला शिकार उसे ही होना पड़ा। उनकी तनख़्वाहमें पचीस रुपये कटौती हो गयी थी। उसका सोचा और चाहा हुआ यदि पूरा होता तो वह ज़रूर पहले-जैसा खुले-हाथ ख़र्च करता···इसके अलावा उसने यह भी सोचा कि इनसानका ब्याहसे पहलेका बरताव और ब्याहके बादका बरताव क्या हमेशा एक-सा होता है? पुरुषके मनके भावोंको यह पगली क्या जाने! ब्याहसे पहले दाँव देखते हुए स्त्रीका दिल जीतना ज़रूरी होता है। ब्याहके साथ उसे जीत लिया जाता है, उसपर पुरुष क़ब्ज़ा कर लेता है। इसके अलावा, ब्याहसे पहलेका काल तो सीमित होता है, ब्याहके बाद अमर्याद समयके लिए स्त्रीकी ज़िम्मेदारी पुरुषको उठानी पड़ती है। हमारे हौसले तो करोड़ों होते हैं लेकिन उन्हें इस तरह बेक़ाबू छोड़कर कैसे चल सकेगा? इन तमाम बातोंको ख़यालमें रखते हुए, सूझ-बूझके साथ घर-गृहस्थी चलाना जिस तरह पतिका काम है, उसी तरह वह स्त्रीका भी परम कर्तव्य है। लेकिन यह तो बस एक ही बात जानती है – हौसला! ····और सिर्फ़ इसी बातपर बार-बार हम दोनोंमें ठन जाती है।····उसके मुँहसे हर जब-तब सुनाई देनेवाले 'हौसला' शब्दसे उसे अब नफ़रत-सी होने लगी थी।

उसने दोबारा उसकी ओर देखा और बुदबुदाया, "हौसलामन्द!" उसके स्वरमें क्रोध और व्यंग्य साफ़ झलक रहे थे।

वह कुछ देर उसकी ओर ग़ौरसे देखती रही। कुछ कहनेके लिए उसके होंठ हिलते-से दिखाई दिये, लेकिन फिर बिना कुछ कहे वह चुप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रह गयी। थोड़ी देर बाद वहाँसे वह उठ खड़ी हुई और नीचे चली गयी।

एक बारको उसे लगा कि भीतर जाये, उसे अपनी बाहोंमें भर ले और मनाकर उसकी नाराज़ी दूर कर दे। लेकिन वह उठा नहीं, जहाँ बैठा था वहीं बैठा रहा। ग़लतीपर तो सरासर वह थी! तब इसे क्या ज़रूरत थी कि अपनी हार मानकर उसे मनाने जाये? वह फ़िज़ूल-ख़र्ची नहीं करना चाहता था और तभी कुछ रुपये बचाकर रख सका था। कौन जाने गृहस्थीमें किस मुसीबतका कब सामना करना पड़ जाये? औरोंकी गृहस्थीका हाल वह अपनी आँखों देख रहा था। देखकर लगता कि वे स्त्रियाँ बड़ी ही समझदार थीं। लेकिन वे सचमुच समझदार थीं या नहीं, यह कहना बड़ा मुश्किल है। क्योंकि अपने घरका तमाशा औरोंको कौन दिखाने लगा? चुपचाप आपसमें लड़-झगड़ लेते होंगे: ऊपरसे तो सभी दाम्पत्य-प्रेम और सुखका नाटक दिखाते हैं!····उन दोनोंकी भी आठों पहरकी अनबनका हाल लोग क्या जानें?····हटाओ जी! उसीका बरताव ग़लत है···वही ग़लतीपर होती थी! रूठे तो रूठने दो, दो घड़ी रो-धोकर दिमाग़ अपने आप ठिकाने आ जायेगा, और वह जहाँका तहाँ चुपचाप बैठा रहा।

उसे यह बात बड़ी अजीब लगी कि स्त्रियोंकी निगाहमें पुरुषके प्यार-की कसौटी एक ही होती है: उनके लिए वह कितने खुले-हाथसे कितना ख़र्च कर सकता है···बस यही!···पर यह भला कोई इन्साफ़ है! रेशमी साड़ियोंकी संख्यामें पतिके प्रेमका मूल्य आँकनेवाली स्त्रियोंकी यह जाति भी कैसी बेवक़ूफ़ है!····लेकिन बिना स्त्रीके पुरुषकी चल भी तो नहीं सकती। स्त्री न हो तो पुरुषके सब काम ठप्प हो जाते हैं!···कैसी अजीब बात है!

जब भी वह भीतर-भीतर इस तरह खीजता-झल्लाता, और चुपचाप अकेले बैठा सोचता, तब अन्तमें सदा इसी निष्कर्षपर पहुँचता कि बात सचमुच बड़ी अजीब है। उसकी विश्लेषणकी शक्ति इसके आगे, दूसरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओर पहुँच ही नहीं पाती। वह दिलमें बराबर यही रटता कि उसका अपना बरताव बिलकुल ठीक है, ग़लती वही कर रही है! लेकिन फिर भी कोई ठीक निश्चय वह नहीं कर पाता। उसे वह जी-जानसे चाहता था और शायद इसीसे कभी-कभी उसे ऐसा भी लगता कि बातका एक और पहलू भी तो हो सकता है····पर बादमें इन तमाम आत्मगत विचारों-की समाप्ति करते हुए वह मनमें यही कहता कि "कैसी अजीब बात है!" इसका मतलब यह होता कि अपने जीमें वह समझ लेता था कि उसका बरताव इसे पसन्द नहीं है, न इसके बरतावसे वह सन्तुष्ट है, लेकिन तब भी यह तो हमेशा ऐसे ही चलेगा। इसके लिए और कोई चारा नहीं है। हर किसीकी गृहस्थीमें अकसर ऐसा ही दिखाई देता होगा।

और उसका यह खयाल ग़लत नहीं था। उसने मुँहसे तो एक बार भी नहीं कहा था कि 'नाहक़ ही मैंने तुमसे ब्याह किया! लेकिन दोनों-की बहस और आपसकी खटपट कई बार इस हद तक पहुँच जाती कि उस बेचारीके मुँहकी ओर देखते हुए उसे जान पड़ता मानो वह कहना चाहती हो कि 'नाहक़ ही मैंने तुमसे ब्याह किया!' लेकिन आये-दिनके इन काण्डोंके बावजूद भी दोनोंके प्रेममें कोई फ़र्क़ नहीं आया था; दोनों-में कभी ज़्यादा देर मनोमालिन्य नहीं रहा था। उनका जीवन बड़े सुखसे, आनन्दसे, बीत रहा था। उसकी नाराज़ीके बावजूद भी वह अपनी ज़िद पूरी करता, और हर महीने कुछ रुपये बचाकर बैंकमें रखता। उसे मनानेके ढंगमें, अपनी सफ़ाईमें, वह कुछ कहने लगता तो वह कहती, "अब मुझसे कुछ न कहो। तुम्हारा यह बरताव मेरी समझमें नहीं आता····।"

"लेकिन सुन लेनेमें कुछ हर्ज थोड़े ही है···?"

"हज़ार बार सुन लिया है, अब नया क्या सुनाना चाहते हो! मैं कह चुकी हूँ कि तुम्हारे बरतावका यह ढंग मुझे क़तई पसन्द नहीं। कलको कहीं ज़रूरत न पड़े इसलिए पैसा बचाकर आजके तमाम अरमानों-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का ख़ून कर दिया जाये, यह तो सरासर बेवक़ूफ़ी है।"

"तब तुम्हारा क्या ख़याल है? क्या आनेवाले कलको सोचकर हमें कुछ करना ही नहीं चाहिए?..."

"मैं कहती हूँ, ज़रूरत ही क्या है। कलकी कौन कह सकता है कि हम जीवित भी रहेंगे या नहीं! लेकिन आजका दिन तो प्रत्यक्ष अनुभूतिकी बात है...!"

"मगर समझदार आदमी ऐसा कभी न कहेगा। कलकी कोई चिन्ता न करके आज ही चैनकी बन्सी बजानेवालेको दुनिया समझदार नहीं कहती।"

"ख़ैर, तुम जो भी कहो! मैं मान लेती हूँ तुम समझदार हो, मैं बेवक़ूफ़ हूँ....जाहिल हूँ, गधी हूँ...अब तो ख़ुश?..."

उसके मुँहसे जब भी ऐसे उद्‌गार निकलते तब उसकी मुख-मुद्रा किस तरह उदास दिखाई देती, वह चित्र इस वक़्त भी उसकी आँखों-आगे घूम गया। वह अच्छी तरह जानता था कि रुपया बचाकर सूझ-बूझका काम ही उसने किया था। यदि वह पत्नीके सभी अरमान पूरे करता, समय-समयपर उसकी फ़िज़ूलख़र्चीपर पाबन्दी न लगाता तो आजकी इस भयानक मुसीबतका मुक़ाबला वह कैसे करता! इस ख़तरनाक ऑपरेशनसे उसके प्राणोंकी कैसे रक्षा कर पाता! आजकी मुसीबतने अच्छी तरह प्रमाणित कर दिया था कि उसका बरताव बिलकुल सही था, ग़लतीपर वह थी। लेकिन तब भी, सामने झूमनेवाले नारियलके पेड़ोंके सुहावने पत्तों और उनकी परछाइयोंकी ओर देखते हुए, यह विचार उसके दिलको छू तक नहीं गया। इस वक़्त तो उसके दिलमें इसके बिलकुल उलटे विचार आ रहे थे। उसे लगा, "मैं भी कितना बेवक़ूफ़ हूँ। न जाने उसे कितनी बार नाराज़ किया है। उसका मन होता था कि अच्छी-अच्छी साड़ियाँ पहने, सिनेमा देखे; कहीं घूमने-फिरने जाये, भली-भली चीज़ें ख़रीदे; लेकिन मैंने उसके सभी अरमानोंको कुचला। बहुत दिनोंसे वह अपने लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक रिस्टवॉच लेना चाहती थी। अपनी नंगी कलाईकी ओर देख-देखकर उसे ठण्डी आहें भरते हुए मेरे दिलने कई बार साफ़ सुना था। उसकी सहेलियाँ एक पहाड़ी स्थानकी यात्रा करके आयीं और वहाँका रोचक वर्णन सुनाने लगीं तब मेरी आँखोंमें वह चुपचुप किस भावसे झाँककर देखती थी यह मुझसे छिपा नहीं था। आख़िर मैंने आजतक उसके लिए क्या किया? मैंने तो सिर्फ़ कुछ रुपया जोड़कर रखा। यह सच है कि उस रुपयेसे ही आज मैं उसे मौतके मुँहसे बचा सका हूँ····लेकिन मैंने उसके हज़ार उमंगों-भरे दिलकी सदा हत्या की है····मानो उसकी उमंगोंकी नहीं, उसीकी हत्या की है····तब इतनी बार उसकी हत्या करनेके बाद आज उसके प्राणोंकी रक्षा करनेमें कौन-सा पुरुषार्थ है····!

और उसके प्राणोंकी रक्षा हो ही जायेगी, यह निश्चयपूर्वक कौन कह सकता है? इस खतरनाक ऑपरेशनमें यदि वह चल बसी तो बचा-बचाकर रखा हुआ वह रुपया तो सब निकल ही जायेगा, आगे जीवनमें उसे प्रसन्न और सन्तुष्ट करनेका अवसर भी सदाको खो बैठूँगा····यदि वह चल बसी···· हे ईश्वर! कितना भयानक खयाल है! नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता! ऐसा कदापि नहीं हो सकता। इस ऑपरेशनसे उसकी रक्षा करनी ही होगी···मैं अबसे उसके तमाम अरमानोंको पूरा करनेकी कोशिश ज़रूर करूँगा···उसे हमेशा खुश रखूँगा, प्रसन्न रखूँगा, अबसे मैं किसी बातपर उससे नहीं झगड़ूँगा, उसे भूलकर भी नाराज़ नहीं करूँगा, लेकिन आज इस ख़तरनाक ऑपरेशनसे उसके प्राणोंकी रक्षा करनी ही होगी!"

हाथ-गाड़ीपर लिटाकर जिस वक़्त उसे ऑपरेशन थिएटरमें ले जाया गया उस वक़्त छलछलाती आँखोंसे उसकी ओर देखते हुए उसने सोचा, न जाने दोबारा इसे देखना मिलेगा या नहीं···। कहीं हम दोनोंकी यह अन्तिम भेंट ही न हो। उसके अन्तरका सारा प्यार उस समय उमड़ आया था। उसे लगा कि डॉक्टर और नर्सकी परवाह न करके ऑपरेशन थिएटरमें उसकी ओर दौड़ता चला जाये, उसे अपनी बाहोंमें भर ले, और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसे खूब-खूब चूमे। लेकिन दूसरे ही क्षण दरवाज़ा बन्द हो गया था, वह उसकी आँखोंसे ओझल हो गयी थी। अब वह नारियलके पेड़ों और उनकी परछाइयोंकी ओर देख रहा था और मन-ही-मन कह रहा था, "मुझे उसकी ज़रूरत है···मैं उससे अलग नहीं रह सकता, मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकता। भगवान् उसे बचा लो! उसे बचा लो!!" उसने सोचा, "आजतक मैं ही ग़लती कर रहा था जो बात-बातमें उससे नाराज़ हुआ करता था, लेकिन अब ऐसा कभी न करूँगा। मुझे और एक अवसर दिया जाये। उसे प्राणोंसे ज़्यादा प्यार करनेका, उसकी सभी इच्छाएँ पूरी करनेका, उसके लिए रुपये-पैसेकी तनिक भी परवाह न करनेका, उसे किसी अच्छे पहाड़ी स्थानपर ले चलनेका, उसे उसकी प्रिय चीज़ें जी भरकर खिलाने-पिलानेका, उसके साथ घूमने-फिरनेका, हर बातमें उसीकी मर्ज़ी रखनेका, सुकुमार फूलोंकी तरह उसे सार-सँभार करनेका – यह मानकर कि उसकी तुलनामें दुनियाकी हर चीज़ कौड़ी क़ीमतकी है, उसे प्यार करनेका मुझे और एक बार अवसर दिया जाये! और इसके लिए उसके प्राणोंकी रक्षा करना ज़रूरी है। मैं बरबाद हो जाऊँगा, लेकिन उसे बचाऊँगा····भगवान् उसे बचा लो!"

ऑपरेशन थिएटरका दरवाज़ा खुला, तब अपनी तन्द्रासे जागकर उसने सामने देखा।

नर्सने उसे संकेत किया।

वह दरवाज़ेकी ओर लपका। उसका दिल बैठा जा रहा था। न जाने भाग्यमें क्या देखना बदा है। उसने भीतर पाँव रखा।

उसका खयाल था कि इशारेसे उसे बुलाकर नर्स उससे भीतर टेबलपर पड़े पेशेण्टके बारेमें कुछ कहेगी। लेकिन उस महामायाके मुँहपर तो जैसे किसीने ताला मारा हुआ था। उसका जी हुआ कि नर्सको कन्धोंसे पकड़कर ज़ोरसे झकझोरे और देखे कि तब भी पेड़ोंसे जिस तरह फल टपकते हैं उस तरह उसके मुँहसे कुछ बोल फूटते हैं या नहीं। शायद उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भावनाको नर्स भाँप गयी थी। उसने आँखों-आँखों इशारा किया। उस इशारेके अनुसार उसने दूर सामनेवाली मेज़की ओर देखा। मेज़पोशकी सफ़ेदी उसकी आँखोंको दिखाई दी, एक विवर्ण कुम्हलाया हुआ-सा गौर मुख दिखाई दिया, होंठ कुछ विलग हो जानेके कारण सामनेकी दन्तपंक्ति दिखाई दी, चौड़े भालप्रदेशपर चमकती बिन्दी दिखाई दी – और नज़रसे नज़र टकरा गयी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह आहिस्तासे मुसकरानेकी कोशिश कर रही है, उसकी आँखोंमें एक दीप्ति-सी झलक रही है····यह देखकर वह कितना हर्षित हुआ। उसे सान्त्वना मिली, बहुत-बहुत सान्त्वना मिली। झट वह उसके निकट गया और बिलकुल आहिस्तासे उसने उसे पुकारा। वह कुछ कहना ही चाहता था कि – उसने आँखें बन्द कर लीं।

उसने सोचा कि क्षण-भर बाद वह आँखें खोलेगी और तब उसे जो कुछ कहना है वह कह पायेगा। वह उसी तरह खड़ा रहा और उसकी बन्द आँखोंकी ओर अपलक देखता रहा।

लेकिन उसने आँखें खोली नहीं। उसके आहिस्तासे पुकारनेपर भी नहीं।

वह आँखें मूँद लेना नहीं चाहती थी। वह तो आँखें फाड़-फाड़कर देखना चाहती थी। ऑपरेशन थिएटरके दरवाज़ेसे होकर जब वह भीतर आया, तब उसे देखकर वह बेहद प्रसन्न हो उठी थी। दिल-ही-दिलमें उसने कहा था, "भगवान्‌ने मुझपर दया की, वह दोबारा मुझे दिखाई दे रहा है। जब हाथ-गाड़ीपर लिटाकर मुझे इस कमरेमें लाया गया तब मैंने तो सोचा था कि यही हमारी आख़िरी भेंट है, लेकिन जान पड़ता है कि मैं बच गयी! भगवान्, तुमने मुझपर सच ही बहुत बड़ी दया की····!"

नर्सके साथ थिएटरमें आते हुए उसे जब उसने देखा तब उसे लगा कि उसकी ओर देखती ही रहे, लगातार देखती रहे। मानो उसे देखनेके लिए ही भगवान्‌ने उसे दृष्टि दी है। अब और किसी व्यक्तिकी ओर, किसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वस्तुकी ओर, किसी दृश्यकी ओर वह देखना नहीं चाहती; उसकी आँखें तो सिर्फ़ उसे ही देखनेके लिए लालायित हैं। वह जैसे ही उसके निकट पहुँचेगा कि उसके साथ जी भरकर बातें करेगी, हाथ-गाड़ीपर लिटाकर वार्ड बॉएज़ उसे ऑपरेशन थिएटरकी ओर ले चले तबसे लेकर अबतक उसके दिलमें क्या-क्या विचार उठे यह सब उसे सुनायेगी। यह सब उसे सुनानेके लिए उसने मुँह खोला भी था लेकिन उसी क्षण उसकी सम्पूर्ण शक्ति मानो विलुप्त हो गयी थी। ज़बान हिलाने तककी ताक़त उसमें नहीं बची थी। भीतर-भीतर चीत्कार करते हुए वह पुकार रही थी, "मैं उसकी ओर देखना चाहती हूँ, मुझे जी भरकर उसे देख लेने दो, देख लेने दो!" लेकिन बिजलीका बटन ऊपरकी ओर करते ही जिस तरह सम्पूर्ण प्रकाश विलुप्त हो जाता है उसी तरह उसके लाख न चाहनेपर भी उसकी आँखें खट्से बन्द हो गयी थीं। जिसकी ओर वह जी भरकर देखना चाहती थी वह अब उसकी आँखोंको दिखाई ही नहीं दे रहा था। तब भी भीतर दिलमें विचार तो उठ ही रहे थे, जो कुछ उससे वह कहना चाहती थी और कह न पायी थी, वे सब विचार उसके मस्तिष्कमें अब भी मँडरा रहे थे – मानो शब्दोंकी सहायता बिना ही वह उसके साथ बातचीत कर रही थी।

हाथ-गाड़ी ऑपरेशन थिएटरमें पहुँची तब उसकी ओर वह बड़े व्यथित भावसे देख रही थी। उसे जैसे ही भीतर ले जाया गया, कि उसका दिल दहल उठा था – भयसे, अमंगलकी आशंकासे। उसे लगा न जाने अब यह दोबारा मेरी आँखोंको दिखाई देगा या नहीं? कहीं यही इसका अन्तिम दर्शन न हो? ऑपरेशनमें यदि मैं मर गयी तो? इसे देखनेके लिए मैं जीवित ही न रही तो? नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता। मुझे जीवित रहना ही होगा। उसके साथ जीवन बितानेके लिए, उसका संग-साथ पानेके लिए, बहुत-बहुत दिनों तक जीवनके सुख-दुःखोंका उसके साथ अनुभव करनेके लिए – और कभी भी उससे नाराज़ हुए बिना केवल उसे सुखी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनानेके लिए! पिछले दो बरसमें कई बार मैंने सोचा था कि इसका बरताव कैसा अजीब है – मेरा मन रखनेको इसे चाव ही नहीं है; कभी किसी बातपर मैं रुपया खर्च करना चाहती हूँ तो उसपर ऐसा कितना रुपया लगेगा, लेकिन इसका तो बस एक ही तकियाकलाम : इस तरहकी फ़ुज़ूल-खर्चीसे हम लोगोंका कैसे निबाह होगा, आड़े वक़्तके लिए कुछ कैसे जुटा सकेंगे ?''

इसके बावजूद भी वह उसे जी-जानसे चाहती थी; और इसमें भी उसे सन्देह नहीं था कि वह भी उसे प्राणोंसे बढ़कर चाहता है। लेकिन फिर भी वह सोचती कि प्रेमी पति खर्चकी छोटी-मोटी बातोंको लेकर पत्नीसे क्या झगड़ते हैं ? उसका बरताव देखकर वह हैरान रह जाती। 'न जाने क्यों इसके साथ ब्याह किया' – यह उद्‌गार उसके होंठों तक आता, लेकिन मुँहसे बिना कुछ कहे वह उठकर अपने कमरेमें चली जाती और वहाँ चुप-चुप रो लेती। उसे लगता, अब वह भीतर आयेगा, उसे बाँहोंमें भर लेगा, मनायेगा, और अपनी भूल मानकर उसकी हठ रखनेकी कहेगा। लेकिन उसकी सारी कल्पना ग़लत साबित होती, और उसकी पीड़ा और बढ़ जाती।

कभी किसी दिन वह अपनी बैंक-बुक उसे दिखाता और 'अब बैंकमें अपने इतने रुपये जमा हो गये !' कहता हुआ आगे कहता, ''सच पूछो तो अबतक कमसे कम हजार रुपये जमा हो जाते लेकिन···'' सुनकर उसके माथेपर बल पड़ जाते, मगर वह चुप रह जाती।

वह पूछता, ''क्यों, मेरी बात तुम्हें पसन्द नहीं ?···अरे भई, कुछ तो बोलो, – चुप क्यों हो गयीं ?''

''क्या बोलूँ, अपना सर ! तुम्हारे विचार और हैं मेरे और। ज़िन्दगी तो बस यूँ ही बीत जायेगी···''

''ओह ! तो इसका मतलब यह हुआ कि मेरी कमखर्चीकी आदत तुम्हें पसन्द नहीं। क्यों न ?''

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"बार-बार पूछकर क्या आज लड़ाई करना चाहते हो ?"

"तुम चाहो तो ज़रूर लड़ पड़ो, मुझे वह भी पसन्द होगा। लेकिन तुम्हारा यों चुप रह जाना अच्छा नहीं लगता। कुछ तो कहो !..."

"आखिर, कहकर फ़ायदा ही क्या ? तुम अपनी वही मुर्ग़ीकी एक टाँग रटोगे : 'फ़ुज़ूलख़र्ची बन्द करो, पैसा बचाओ !...हो सके तो खाओ भी एक समय, लेकिन बैंक-बुकमें ज़्यादासे ज़्यादा जमा हो जाये !...जाने किसके लिए यों जानका जंजाल करते हो। अपने आगे तो कोई बाल-बच्चा भी नहीं !....मैं पूछती हूँ कि आख़िर यह किसके लिए जमा करनेकी समझ तुम्हारे सिरपर सवार है ?"

"तुम्हारे लिए और किसके लिए !"

सुनकर वह ठठाकर हँस पड़ी। बोली, "मेरे लिए ? तब तो तुम्हारा तर्कशास्त्र ही अजीब है।"

"क्यों, यह क्या सच नहीं कि पैसा तुम्हारे ही लिए जुटा रहा हूँ ?"

"मैंने कब कहा कि झूठ है। मैंने तो यह कहा कि तुम्हारा तर्कशास्त्र ही अजीब है...."

"इसमें कौन अजीब बात दिखाई दी ?"

"तुम्हारी सारी दलील ही अजीब है। यह क्या अच्छा नहीं होता कि कलको मेरे काम आयें इसलिए रुपया जुटानेके बदले उस रुपयेसे मेरे लिए कुछ आज ही कर दिखाते ? प्यार-प्रीतका यह उधारी सौदा मुझे पसन्द नहीं। कुछ तो नक़द सौदा करते !"

वह जानती थी कि ऐसा कहते हुए वह उसपर विष-बुझा तीर छोड़ रही है....लेकिन तो भी जली-कटी सुनानेके मोहका संवरण वह न कर सकी थी। उसके आज तकके सारे बरतावपर उसका दिल बहुत खट्टा और कड़वा हो गया था....एक बार वीणा सीखनेके लिए वह मास्टर रखना चाहती थी, लेकिन उसने कह दिया कि यह तो सरासर बेकारकी बात होगी !....उसका दिल टूट गया। ब्याहसे पहले वीणा सीखनेके लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
उसने एक क्लास जॉएन कर रखा था। वार्षिक समारोहके अवसरपर उसकी वीणाको सुनकर लोग मुग्ध रह गये थे; संचालकोंने एक छोटा-सा तमग़ा देकर उसे गौरवान्वित किया था। उस समारोहमें वह भी उपस्थित था ! उसने भी मुँह-भर उसकी तारीफ़ की थी और कहा था, 'ब्याहके बाद भी इस कलाका मैं तुम्हें त्याग न करने दूँगा···अपना अभ्यास जारी रखो···कहीं अच्छी-सी सेकैण्ड हैण्ड वीणा मिल गयी तो ज़रूर लेंगे। क्लासमें रोज़ एक घण्टा अभ्यास करनेसे क्या होगा, घरपर भी रियाज़ करना ज़रूरी है····' सुनकर उसे कितना अच्छा लगा था ! उसने सोचा था ऐसा भले स्वभावका हौसलेमन्द उसका पति बनेगा यह कितने सौभाग्यकी बात होगी।····लेकिन अब उन सारी बातोंको जैसे उसने जान-बूझकर भुला दिया था। वीणा ख़रीदना तो दूर, सीखनेके लिए मास्टर रखने तकको वह राज़ी न था ! उसपर तो बस पैसा जमा करनेकी सनक सवार थी।····और किसके लिए ? पूछनेपर कह देता : तुम्हारे लिए।····ऐसे भले आदमीको कोई क्या कहे ! वह फिर ठठाकर हँस पड़ी थी। उस ठहाकेमें भयानक व्यंग्य था, धधकते शोले थे····।

उसने झल्लाकर पूछा 'इसमें हँसने-जैसी कौन बात है ?' लेकिन वह ठहाके लगाती हुई हँसती ही रही। मानो उसका मर्मभेद करनेका यही एक साधन उसके पास था। 'न जाने क्यों मैंने तुमसे ब्याह किया ?' कह-कर उसका कलेजा बींधनेकी कठोरता वह नहीं कर सकती थी। पर उस तरह आग और व्यंग्य-भरे ठहाकों-द्वारा उसे आघात पहुँचाते हुए वह एक प्रसन्नताका अनुभव कर रही थी····। दिल-ही-दिलमें वह कह रही थी कि इतनी सज़ा तो इसे मिलनी ही चाहिए। यह कहाँका इन्साफ़ कि यह ग़लती करे और उसके लिए तनिक भी सज़ा न मिले ! मेरी स्वाभाविक भावनाओंका यह कभी खयाल नहीं करता, यह इसकी पहली ग़लती; और अपनी ग़लतीपर कभी सोच नहीं करता – ग़लती दिखानेपर उसे स्वीकार नहीं करता – यह उसकी दूसरी और बहुत बड़ी ग़लती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन ऑपरेशन थिएटरके दरवाज़ेसे होकर भीतर जानेवाली हाथ-गाड़ीपर लेटे-लेटे जब उसने उसकी ओर देखा और दोनोंकी आँखें चार हुईं, उस क्षण उसके दिलमें उठनेवाला विचार उसकी ग़लतीका नहीं था। उसे सहसा कई अप्रीतिकर घटनाएँ याद हो आयी थीं लेकिन वे उसकी ज़िदकी नहीं थीं, वे उसके मनकी न होने और जी दुखनेकी न थीं। वह तो सोच रही थी आजकल न जाने कितनी बार मैंने ही उसे नाराज़ किया होगा? उसे लगा कि हर दम उसकी इच्छाओंको दबाकर और स्वयं अपने हर शौक़को तिलांजलि देकर पैसा जुटाता रहा, यह उसने कितनी समझ-दारीका काम किया था। यह अब दोबारा उसका ऑपरेशन होनेकी बात तो एकाएक ही उठ खड़ी हुई थी। डॉक्टरने देखनेके बाद जब कहा कि "डरनेकी वैसे तो कोई बात नहीं, लेकिन इन्हें अस्पताल लानेमें यदि और देर हो जाती तो ऑपरेशनके बावजूद भी हम इनके प्राणोंकी रक्षा न कर पाते।" तब वह सुनकर किस तरह दुःखी और व्यथित हो उठा था, यह सब उसने अपनी आँखोंसे अच्छी तरह देखा था। उसे याद हो आया कि आहिस्तासे उसने डॉक्टरसे पूछा था कि ऑपरेशन-फ़ीस वग़ैरहमें सब मिला-कर कितना खर्च बैठेगा तब डॉक्टरने जो रक़म बतायी थी उसे सुनकर उसकी मुरझाई मुखमुद्रा एकबारगी उल्लसित हो उठी थी। मानो वह दिल-ही-दिलमें कह रहा था, 'तब तो कोई हर्ज नहीं, इतना पैसा मेरे पास है।…इसीके लिए तो बैंकमें जमा करता था!' इस बातकी याद आते ही उसका गला रुँध गया! उसके मनको मार-मार उसने रुपया बचाकर रखा, कई बार उसे दुःखी और नाराज़ तक किया था, लेकिन ऐसा किया उसने तभी तो आज उसके प्राणोंकी रक्षा होनेवाली थी! अपने दिलमें वह कहने लगी, "सच मैं कितनी बेवक़ूफ़ हूँ, और वह कितना समझदार! मुझे वह कितना चाहता है! जब भी वह कहता कि मैं तो सिर्फ़ तुम्हारे लिए पैसा जमा करके रखता हूँ, तब व्यंग्य-भरे शब्दोंमें मैंने हर बार उसे जली-कटी सुनायी और उसे ज़लील किया, लेकिन उसका कहना बिलकुल सच था!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किसीको बिलकुल आहिस्तासे कहते हुए उसने सुना, ''तीन तक गिनती तो कहिए'' और उसके नाक और मुँहके सामने किसीने क्लोरोफ़ॉर्मकी कटोरी रख दी। एक····दो···इस तरह मुँहसे गिनती बोलनेके बदले दिल-ही-दिलमें वह कहने लगी : मैं जीवित रहना चाहती हूँ····मैं जीवित रहना चाहती हूँ····उसका जीवन सुखी बनानेके लिए जीवित रहना चाहती हूँ···उसे'' इसके बाद वह बेहोश हो गयी थी।

ऑपरेशनके बाद जैसे ही उसे होश आया, सबसे पहले उसे स्मरण आया उस क्षणका जब उसने हाथ-गाड़ीपर लेटे-लेटे उसकी ओर देखा था, उस क्षण जिन विचारोंकी एक आँधी-सी उसके अन्तरमें उठी थी उन सबका जब उसने दिल-ही-दिलमें क्रन्दन किया था कि 'मैं जीवित रहना चाहती हूँ····मैं जीवित रहना चाहती हूँ····उसका जीवन सुखी बनानेके लिए मैं जीवित रहना चाहती हूँ····' इसका! और तभी भारी डगोंसे थिएटरमें भीतर आते हुए उसने कहा था, 'ईश्वरने मुझपर असीम दया की जो इसे दोबारा प्राणदान दिया!' उसके दिलमें प्रबल लालसा उठी थी कि टकटकी बाँधे उसकी ओर देखती रहे, जी भरकर उससे सुख-दुःखकी बातें करे; लेकिन तभी कमज़ोरीने उसे अपनी लपेटमें ले लिया, आँखें तक खुली रखना उसके लिए मुश्किल हो गया। उसने आँखें मूँद लीं।

वह देर तक उसकी ओर ग़ौरसे देखता रहा। लेकिन तब भी उसने आँखें नहीं खोलीं। भय और दुःशंकासे उसका दिल दहल गया। उसने फिर धीरेसे पुकारा। उसकी आँखें तब भी मुँदी ही रहीं। उसका कलेजा मुँहको आने लगा। उसने सोचा, ज़ोरोंसे चीखकर उधर खड़े डॉक्टरको···· लेकिन तभी मन्द वायु वीचियोंके साथ हलके-से झूम-झूम जाती फूलोंकी पंखड़ियोंके समान उसकी पलकें कम्पायमान हो उठीं। उसने दोबारा आवाज़ दी, बिलकुल आहिस्तासे, उसके कानोंके पास मुँह ले जाकर। उसने आँखें खोल दीं। उसे पहचानते ही उसकी आँखें चमक-सी उठीं और दोनों होंठ हौलेसे विलग हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसने सोचा, अब अपने दिलकी तमाम बातें वह उसे सुना देगा। लेकिन क्या इस वक़्त, जब कि वह अच्छी तरह होशमें भी नहीं आयी है, वे तमाम बातें इसकी समझमें आयेंगी ! और साथ-ही-साथ यह स्थान भी ऐसा नहीं है कि जहाँ देर तक बातें की जा सकें ! वह उससे जी भरकर बातें करना चाहता था और वह तो इस वक़्त अस्पतालमें...यह सब उसके लिए असहनीय था। अब अधिक विलम्ब वह सह न सकेगा। वह अधीर हो उठा, उसके बिलकुल पास मुँह ले जाकर हलकी आवाज़में उसने कहा, "मुझे तुमसे बहुत-कुछ कहना है।"

उसकी आँखें मुसकरा दीं। मानो चुम्बनकी मधुरिमाका अनुभव करनेके लिए प्राणोंको एकाग्र करते हुए आँखें कसकर मूँदते हुए, उसके मुँहसे सुनाई देनेवाले उन प्यार-भरे शब्दोंको वह अपने दिलकी गहराइयोंमें छिपा लेना चाहती थी। उसने फिर आँखें खोलीं, तब वही आँखें छलछलायी हुई नज़र आ रही थीं। उसकी पलकें थर्रा उठीं, आँसुओंमें उसका दिल पिघल गया...आहिस्तासे उसने उन्हें छूकर देखा तब अतीव क्षीण स्वरमें वह बोल उठी, "पहले मैं....मुझे तुमसे बहुत-कुछ कहना है....पहले मेरी सुनो...।"

वह मुसकरा दिया और उसने स्वीकृतिमें सिर हिलाया। जब नर्स उसके निकट आकर कुछ कहने लगी तब वह सहसा चौंक पड़ा और उसकी ओर नज़र उठाकर देखा। नर्सकी बात सुनते हुए उसकी निगाह उस पार, ऑपरेशन थिएटरके खुले दरवाज़ेके उस पार, बाहरवाली गैलरीके उस पार, वहाँसे अहातेका जो हिस्सा दिखाई दे रहा था उस ओर लगी थी।

अब सूरज काफ़ी ऊपर आ चुका था। चटखती धूप सबको परेशान कर रही थी, नारियलके पेड़ोंके सुहावने पत्ते वायुके साथ झूम रहे थे, और अब कुछ सिकुड़ी-सी दिखाई देनेवाली उनकी परछाइयाँ भी धरतीपर नाच रही थीं—न जाने क्यों ? लेकिन उनकी ओर देखते हुए बड़े उल्लासके साथ उसका हृदय उन्मत्त हो उठा।

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पार्वती

पहाड़की चट्टानोंपर चरनेवाले ढोरोंके पीछे-पीछे जाती पार्वती एकाएक ठिठक गयी। उसे एक झाड़ीमें छपे हुए काग़ज़का एक टुकड़ा उलझा दिखाई दिया। हाथकी लकड़ीको सँभालते हुए वह पाँच-छह डग आगे बढ़ी। झाड़ीकी कँटीली टहनियोंको उसने हाथकी लकड़ीसे अलग किया और काग़ज़के उस टुकड़ेको धीरेसे उठा लिया।

शायद किसी पुराने समाचारपत्रका वह फटा हुआ टुकड़ा था और हवाके झोंकोंसे उड़कर यहाँतक आ गया था। बारिशमें भींगकर और धूपमें झुलसकर उसका रंग कुछ साँवला कुछ पीला पड़ गया था और जगह-जगह कलछौंहे धब्बे उसपर दिखाई दे रहे थे। पार्वतीने उस टुकड़ेको इस तरह झपटकर उठाया मानो अचानक कोई अमूल्य निधि उसे प्राप्त हो गयी हो। तेज़ीके साथ धुँधले होते सन्ध्याके प्रकाशमें उसपर लिखे हुए मज़मूनको पढ़नेके लिए हाथकी लकड़ी एक ओर फेंककर वहीं एक शिला-खण्डपर वह बैठ गयी। उस काग़ज़पर छपे अक्षरोंमें-से जितने भी उसकी समझमें आ जायें उन्हें पढ़नेके लिए पार्वती वहाँ बैठ गयी, क्योंकि ऐसी पढ़ी-लिखी तो वह थी नहीं कि झट् सब-कुछ पढ़ ले, वह तो बड़ी मुश्किलसे अक्षरोंको पहचान-भर सकती थी। उसे ठीकसे पढ़ना नहीं आता था। लेकिन उसके दिलमें 'प्रबल लालसा थी कि वह पढ़ना सीखे। छपे हुए काग़ज़का कैसा भी टुकड़ा उसे जंगलमें, रास्तेमें, चौपालमें, मन्दिरके सामने, कचहरीके आगे – कहीं भी दिख जाये कि वह ललककर उसे उठा लेती और उसपर छपे अक्षरोंमें-से अधिकसे अधिकको पढ़े बिना चैन न पाती। उसने पत्थरपर बैठकर अपना प्रयत्न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आरम्भ कर दिया। इस बातका भी खयाल उसे न रहा कि वह ढोरोंसे बहुत पिछड़ गयी है।

चरवाहीके लिए रोज़ साथ आनेवाले उसके हमजोली महादेवने पुकारा, "पारु ! ओ पारबती !···आज क्या ढोरोंको घर ले चलनेकी फ़िक्र नहीं है ?"

"आती हूँ भैया, आती हूँ। तुम इतने हाँको तो !" छपे काग़ज़के उस टुकड़ेपर-से नज़र बिना हटाये पार्वतीने ऊँचे स्वरमें जवाब दिया। वह चाहती थी कि अँधेरा पड़नेसे पहले उस काग़ज़के सब अक्षर पढ़ ले।

महादेवने मन-ही-मन कहा, न जाने पारुका व्यवहार आजकल पागलों-जैसा क्यों हो गया है ? उसने पिच्-से थूका और जहाँका तहाँ ठिठका हुआ पार्वतीकी ओर ग़ौरसे देखता खड़ा रहा।

महादेवकी वह धारणा ग़लत नहीं थी। वह क्यों न उसे पागल कहे जब आजकल पार्वतीका बरताव सचमुच पागलों-जैसा ही था। महादेवके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर था। उस छोटे-से गाँवमें रहनेवाले लोगोंमें-से कोई भी लिखना-पढ़ना नहीं जानता था। तब क़ाग़ज़के छपे हुए पुराने परचे हाथमें लिये घण्टों उनकी ओर देखते रहना सरासर पागलपन नहीं तो और क्या था ? शायद एक-दो महीने पहले स्वयं पार्वती भी इस बातको पागलपन ही समझती। लेकिन अब वह पहलेकी पार्वती नहीं रही थी। अब उसमें बड़ा परिवर्तन आ गया था। पहले कोई अगर उससे पूछता कि छपे हुए काग़ज़ किस काम आते हैं तो वह बताती कि चाय-चीनी आदि चीज़ोंकी पुड़िया बाँधनेके काम आते हैं।" लेकिन अब उसकी समझमें यह बात आ गयी थी कि छपा हुआ काग़ज़ और भी किसी काम आता है। अब उसे इस बातका ज्ञान हो गया था कि उसपर छपे अक्षरोंको पढ़नेसे बड़ा आनन्द आता है। उसने कभी-कभी इस बातका भी अनुभव किया था कि अगर हम दस-बीस अक्षरोंको एक पंक्तिमें एक साथ पढ़ें तो उसमें-से कोई मतलब भी निकलकर दिमाग़ तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहुँचता है और उससे हमें असीम आनन्द प्राप्त होता है।

लगभग महीना-भर पहले ज़मींदारकी बड़ी लड़की मायके आयी थी। उसके छोटे बच्चेकी देख-भालका काम पार्वती करती थी। पार्वती रात-दिन ज़मींदारके यहाँ ही रहती थी। ज़मींदार साहबकी लड़की विद्याने उससे एक बार कहा, "पारू, जब तुम्हारा काम ख़त्म हो जाता है तो अकसर तुम यूँ ही चुपचाप बैठी रहती हो। तुम नहीं जानतीं कि इससे तुम्हारा कितना समय बेकार चला जाता है। मैं तुम्हें लिखना-पढ़ना सिखाऊँगी। बोलो, पढ़ोगी न?"

पार्वतीने झेंपकर कहा, "आप भी कैसी बात करती हैं? मेरे बड़ों तकने तो लिखना-पढ़ना सीखा नहीं, और आप कहती हैं कि मैं लिखना-पढ़ना सीखूँ! मैं औरत-ज़ात लिख-पढ़कर क्या करूँगी?"

लेकिन विद्या देवीने साक्षरताकी महत्तापर उसे एक छोटा-सा लेक्चर सुना दिया, और उसे पढ़नेको विवश कर दिया। महीने-भरमें पार्वती हिन्दीकी पहली पुस्तक आसानीसे पढ़ने लगी। पार्वती स्वभावसे ही बड़ी समझदार और तेज़ बुद्धिकी थी। विद्यादेवी चाहती थी कि वह और भी पढ़े, लेकिन एकाएक उसके पतिका तार आ जानेके कारण उसे मजबूरन ससुराल जाना पड़ा, और पार्वतीकी पढ़ाई वहीं खत्म हो गयी। जाते समय विद्या देवीने उससे बार-बार कहा, "पारु, अब तुम्हें हिन्दी अक्षरोंका बोध हो गया है। मैं यह दो किताबें तुम्हें दिये जाती हूँ, इन्हें पढ़ो और बार-बार पढ़ती रहो। तुम्हें कहीं भी कोई भी छपी पुस्तक या कोई परचा ही मिल जाये तो उसे भी पढ़नेकी कोशिश करना। तुम्हारी समझमें आये या न आये, लेकिन पढ़ना ज़रूर। धीरे-धीरे समझमें सब आने लगेगा!"

पार्वतीके बूढ़े बाप रामजीने कुछ दिन इस बातमें बढ़ावा दिया। ज़मींदारकी लड़की उसकी बेटीको पढ़ाये, इस बातसे उसे बड़े गौरवका अनुभव हुआ। लेकिन बादमें जब इधर-उधरसे लाकर पार्वतीने छपे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काग़ज़ोंको इकट्ठा करनेका काम शुरू कर दिया तब उसे यह पागलपन लगने लगा। गँवार किसानकी लड़कीको पढ़ने-लिखनेसे क्या वास्ता? पिता ब्याह कर दे, लड़की अपनी गिरस्ती सँभाले और सब माँ और नानी जिस राहको धरती आयीं उसीपर वह भी चले – इसे छोड़ क्या पार्वती-जैसी लड़कीका दूसरा भी कोई जीवन हो सकता है? पगली कहींकी! उसने एक-दो बार अपना यह वेदान्त पार्वतीको समझाया भी। लेकिन उसके सिर-पर पढ़नेकी धुन सवार थी। तब उसने सोचा कि पारूपर अब नाराज़ होना व्यर्थ है, समझाने-बुझानेसे भी कुछ होना नहीं है। आखिर कितने दिन और यह सनक उसपर सवार रहेगी? ब्याहके बाद अपने घर गयी कि गिरस्ती सँभालनेमें सब अपने-आप भूल जायेगी। और ब्याहको तो अब दिन ही कितने रह गये हैं! लड़का उसने देख रखा था, और यह भी तय कर लिया था कि इसी अगहनमें पार्वतीके हाथ पीले कर दिये जायेंगे।

और जैसा रामजीने सोचा था, अगहनमें पार्वतीका ब्याह हो गया। वह लक्खूके घर उसके पुत्रकी गिरस्ती सँभालनेके लिए चली गयी। लेकिन रामजीका हिसाब कुछ ग़लत निकला। घर-गिरस्ती, खेती-बारी आदिका काम करते हुए भी पार्वतीने अपना पढ़नेका क्रम जारी रखा। उसका पति शिब्बू एक मामूली गँवार किसान था, लिखने-पढ़नेकी ज़िन्दगीमें कभी चर्चा तक नहीं सुनी थी। रातके समय मिट्टीके तेलकी ढिबरीके क्षीण प्रकशमें पार्वतीको पढ़ते देखकर वह मनमें सोचता, 'कहीं इसका दिमाग़ तो ख़राब नहीं हो गया है?' लेकिन घर-गिरस्तीका काम पूरे मनसे करनेके कारण पार्वती जिस तरह शिकायत करनेका सास-ससुर-को अवसर नहीं देती थी उसी तरह पत्नी-धर्मका पालन भी वह ठीकसे करती थी। इसलिए शिब्बू झुँझला-झुँझलाकर, मनमें ही कहता रह जाता, 'मरने दो ससुरीको! पढ़ना चाहती है, तो पढ़े। उसकी इस सनककी ओर ध्यान न देना ही ठीक है।'

एक बार प्यारमें आकर उसने पार्वतीसे कहा, "मैं चाहता हूँ, तुम्हें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काई एक छोटा-मोटा ज़ेवर ला दूँ। बोलो क्या चीज़ पसन्द है? मैं कल बैलगाड़ी लेकर शहर जा रहा हूँ। बताओ, तुम्हारे लिए क्या ले आऊँ?"

पार्वतीने कहा, "सच बताऊँ मुझे क्या चाहिए? लाओगे?"

"वाह, क्या तुम मेरी दुल्हन नहीं हो? तुम जो कहोगी, ला दूँगा!"

"तो मेरे लिए कोई अच्छी-सी पुस्तक ले आना!"

शिब्बू खिलखिलाकर हँस पड़ा। बोला, "किताब ला दूँ? दुत् पगली! उसे लेकर तुम क्या करोगी? नाकमें पहनोगी, या कानमें लटकाओगी?"

पार्वतीने गम्भीर दृष्टिसे उसकी ओर देखा और कहा, "तुम किताब ले तो आओ!"

शिवरामने कहा, "ख़ैर लाऊँगा। ज़ेवर भी लाऊँगा, और कोई अच्छी-सी किताब भी ले आऊँगा।"

अपनी स्त्रीके लिए पुस्तक ख़रीद लानेके इरादेसे शिब्बू घरसे चला तो सही, लेकिन इसपर जैसे-जैसे वह सोचने लगा वैसे-वैसे उसे जान पड़ने लगा कि जिस कामकी उसने ज़िम्मेदारी ली है वह आसान नहीं। उसने ज़िन्दगीमें कभी कोई पुस्तक ख़रीदी नहीं थी: तब पुस्तक अच्छी है या रद्दी यह वह कैसे समझ सकता था? शहरमें पुस्तकोंकी दूकानें उसने देखी ज़रूर थीं, लेकिन वह यह कैसे कह सकता था कि दूकानदार अच्छी किताब ही उसे देगा? एक बार शहर जाकर उसने एक अच्छा बढ़िया सरौता दूकानदारसे माँगा था, और दूकानदारने क़समपर क़सम खाकर जिसे बहुत बढ़िया सरौता बताया था उसे उसने चुपचाप ख़रीद लिया था। लेकिन एक ही महीनेमें उस सरौतेकी दशा ऐसी हो गयी कि अगर उसमें हाथकी उँगलियाँ भी फँस जातीं, तो उनकी चमड़ी तक न छिलती। सरौतेका क़िस्सा सुनकर गाँवके सभी लोगोंने उसका मज़ाक़ उड़ाया था। पुस्तक ख़रीदकर फिर ऐसा ही अनुभव हो, तब तो वह गाँववालोंको मुँह दिखानेके क़ाबिल भी न रहेगा। उसने सोचा, कि बढ़िया और घटिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिठाईकी जिस तरह अलग-अलग दूकानें होती हैं उसी तरह किताबोंकी भी बढ़िया दूकानें होती होंगी, जहाँ अच्छी किताबें मिलें और कोई अन-जान बालक भी वहाँ जाये तो अच्छी ही किताब दी जाती होगी। ऐसी कोई अच्छी मशहूर किताबोंकी दूकान शहरके चौकमें ज़रूर होगी। लेकिन उसे तो ऐसी किसी दूकानका पता मालूम नहीं। तो फिर इस बातके लिए किसकी सलाह ली जाये? बैलगाड़ी तीन मीलका रास्ता तय कर चुकी, फिर भी उसकी समझमें यह नहीं आया कि अपनी समस्या कैसे हल करे।

लेकिन बादमें एकाएक उसे एक तदबीर सूझी। उसे सहसा घनश्याम पण्डित स्कूल मास्टरकी याद हो आयी। घनश्याम मास्टरकी कुछ खेती-बारी शिब्बूके गाँवके पासमें थी, इससे वे कभी-कभी वहाँपर आते थे और सब लोग उन्हें मास्टर साहबके नामसे जानते थे। मास्टर साहबकी याद आते ही शिब्बूने दिलमें कहा, 'चलो यह अच्छा हुआ, मास्टर साहबसे सलाह लेनेपर वे उसे ठीक बता देंगे कि कौन-सी दूकानसे कौन-सी पुस्तक खरीदी जाये।' इससे शिब्बूको कुछ सान्त्वना मिली, और उसने बैलोंकी पीठ हाथसे थपथपाकर उन्हें शीघ्रताके साथ चलनेका इशारा किया। शहर पहुँचते ही शिब्बूने सबसे पहले मास्टर साहबका मकान खोज निकाला और उनसे मुलाक़ात होनेपर उन्हें बताया कि किस विषयमें सलाह लेनेके लिए वह उनके पास आया है। उसके मुँहसे सारी कहानी सुनकर मास्टर साहब विस्मित हुए और साथ ही बहुत ख़ुश भी। बोले, "शिब्बू, तुम बड़े ख़ुशक़िस्मत हो भाई। ऐसी स्त्री पाकर तुम्हें अपने-आपपर गर्व होना चाहिए।"

शिब्बू उनके मुँहकी ओर देखता रहा। यह बात न थी कि पार्वतीको पाकर वह अपने-आपको ख़ुशक़िस्मत नहीं समझता था। वह घर-गिरस्ती-के सब काम और सास-ससुरकी सेवा बड़ी योग्यतासे करती थी। इसलिए किसी भी पतिको वह जितनी अच्छी लगती उतनी शिब्बूको भी लगती थी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
और शिब्बूको उसपर गर्व भी था। लेकिन उसकी समझमें नहीं आता था कि इससे ज़्यादा और किस बातपर गर्व किया जाये। उसकी समझसे तो पुस्तक पढ़नेकी पार्वतीकी लालसा एक अजीब सनक थी। चूँकि वह पार्वतीको चाहता था इसलिए उसकी इस सनकको चलने देनेको तैयार हो गया था। शिब्बूमें इतनी अक़्ल नहीं थी कि अपने इन भावोंको शब्दों-द्वारा किसीके सामने प्रकट कर सके। लेकिन यह सब विचार सहसा उसके मस्तिष्कमें आये, और एक बुद्धिहीन जानवरके समान वह मास्टर साहबकी ओर देखता रहा।

मास्टर साहबने कहा, "तुम्हारी स्त्रीने कोई अच्छी-सी किताब लानेके लिए तुमसे कहा है। अब सवाल यह है कि उसके लिए कौन-सी किताब ख़रीदनेकी तुम्हें सलाह दूं?"

कुछ देर तक वे सोचते रहे। कई पुस्तकोंके नाम उन्होंने मन-ही-मन याद किये, लेकिन उनमें-से एक भी पुस्तक उन्हें नहीं जँची। उनके चेहरे-पर झुँझलाहटका भाव दिखाई देने लगा। भौंहोंपर बल डालकर अन्तको उन्होंने शिवरामसे कहा, "लो भई शिब्बू, तुम्हारा काम बन गया। एक पुस्तकका नाम मुझे याद आ गया। तुम्हारी स्त्रीके लिए उससे अच्छी कोई किताब नहीं मिल सकती। उस पुस्तकके पढ़नेसे उसे नीति, धर्म, लौकिक आचार आदि सब बातोंका ज्ञान अच्छी तरह हो जायेगा। संसारके बड़े-बड़े विद्वानोंकी राय है कि अपने पूर्वजोंका व्यवहार तथा उनके आदर्श सामने रखने हों तो इस पुस्तक-जैसी और कोई पुस्तक दुनियामें नहीं है। पार्वतीके लिए भी तुम यही पुस्तक ख़रीद लो। क्या समझे?···जाओ, यही पुस्तक ख़रीद लो।"

शिब्बूने कहा, "लेकिन मास्टर साहब, उस पुस्तकका नाम तो आपने बताया ही नहीं?"

"हाँ ठीक! मैंने उस पुस्तकका नाम तुम्हें नहीं बताया। उसका नाम है: 'महाभारतकी कथाएँ'।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"घरवालीने कोई अच्छी-सी पुस्तक ख़रीदकर लानेको कहा है। आप जिस पुस्तकके बारेमें कह रहे हैं वह सचमुच अच्छी पुस्तक है न ?"

"हाँ भाई, हाँ ! तुम्हारी स्त्रीके पढ़नेके लिए इससे अच्छी पुस्तक संसार-भरमें कोई नहीं है ! चौक चले जाओ। वहीं नुक्कड़पर किताबों-की एक बड़ी-सी दूकान दिखाई देगी। वहाँ जाकर यह पुस्तक माँग लेना।"

"दूकानदार यही किताब देगा न ? मुझे धोखा तो न देगा ?"

मास्टर साहब हँस दिये ! कहा, "नहीं, जाओ।"

शिब्बू सीधे उस दूकानपर गया, और मास्टर साहबका दिया हुआ पुर्ज़ा दिखाकर पुस्तक ख़रीद ली। पुस्तकके मोटे कवरपर छपे रंगीन चित्रको देखते ही पुस्तकके अच्छी होनेके बारेमें उसे सन्देह नहीं रहा। उस चित्रमें पीताम्बर धारण किये हुए धनुषपर बाण चढ़ाये अर्जुन मत्स्य-वेध कर रहा था। उसने सोचा कि इतना सुन्दर चित्र जिस पुस्तककी ज़िल्दपर है वह पुस्तक ज़रूर अच्छी होगी। शिब्बूने मन-ही-मन मास्टर साहबको अनेक धन्यवाद दिये, और पार्वतीको यह पुस्तक ज़रूर पसन्द आयेगी इस विश्वासके आनन्दमें विभोर हो अपनी बैलगाड़ी गाँवकी ओर सरपट दौड़ाना शुरू कर दी।

सचमुच, पार्वतीको वह पुस्तक इतनी पसन्द आयी कि फ़ुरसतके वक़्त उसे वह एक क्षणके लिए भी हाथसे अलग न करती। पुस्तक लिखनेवालेने उन कहानियोंको बिलकुल सरल भाषामें लिखा था। फिर भी कुछ शब्द आते जिन्हें वह समझ नहीं पाती। ऐसे शब्दोंको वह कई-कई बार पढ़ती। फिर भी कुछ होते जो समझमें नहीं ही आते। पर पुस्तकमें लिखी बातोंका सारांश समझमें आ जानेके कारण, कथाको समझनेमें उसे कोई दिक़्क़त न होती। पहली बार तो उसने सिर्फ़ यह देखनेके लिए पुस्तक पढ़ी कि एक-एक परिच्छेदमें कौन-कौन-सी कहानी है। लेकिन बादमें जब उसने फिर उस पुस्तकको पढ़ना शुरू किया तब उसका मन केवल उन कथाओंके चमत्कारके कारण प्रसन्न ही नहीं हुआ,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बल्कि हरेक कहानीमें जो कुछ कहा गया था उसपर वह सोचने भी लगी। जिस ज़मानेकी वे कहानियाँ थीं उस ज़मानेमें समाज किस तरहका था, लोगोंका रहन-सहन किस प्रकारका था, स्त्रियाँ पुरुषोंके सम्पर्कमें कैसे रहती थीं, पुरुषोंकी मनोवृत्ति कैसी थी, स्त्रियोंके प्रति उनकी धारणाएँ क्या थीं – आदि बातोंका ज्ञान उसे होने लगा और वह अपने जीवन तथा अपने परिचित व्यक्तियों और परिस्थितियोंकी, उस पुस्तकमें वर्णित व्यक्तियोंके जीवन तथा परिस्थितियोंसे, मन-ही-मन तुलना करने लगी। दमयन्ती, द्रौपदी, रुक्मिणी, सुभद्रा आदि नारियोंने अपने-अपने पतिको अपनी पसन्दसे वरा था। इनमें-से किसीके साथ भी यह बात नहीं हुई थी कि लड़कीके लिए वर पिता चुने और लड़की उसे चुपचाप अपना पति मान ले। रुक्मिणीने तो बड़ा ही विचित्र षड्यन्त्र रचकर कृष्णके साथ ब्याह किया था। अर्जुनके साथ ब्याह करनेमें तो स्वयं भगवान्ने सुभद्राकी सहायता की थी। स्वयंवरकी उन कथाओंको पढ़ते-पढ़ते पार्वती अत्यधिक आन्दोलित हो उठती। जिन स्त्रियोंकी कथाएँ वह पढ़ती थी उन्होंने जिस सुखकी प्राप्ति की उस सुखकी कल्पना-मात्रसे वह रोमांचित हो उठती। उन स्त्रियोंका जिन पुरुषोंके साथ ब्याह हुआ, उनके सौन्दर्यके वर्णनको कई बार पढ़नेपर भी उसका हृदय तृप्त नहीं होता था। पढ़ते-पढ़ते वह कभी-कभी एकाएक रुक जाती। पुस्तकके संसारसे उसका मन हिचकोले खाते हुए अपने संसारमें आ गिरता, और उसके दिलको गहरी चोट पहुँचती। अपने ब्याहके विषयमें, अपने पति शिब्बूके विषयमें, और जाने किस-किस विषयमें वह सोचने लगती। शिब्बू उसका पति था। इसका क्या मतलब था? उसे पसन्द किसने किया था? क्या उसकी पसन्दका उसके पिताने कोई ख़याल किया था? कभी उससे पूछा था पिताने उस विषयमें? लक्खूके लड़का था, और रामजीके लड़की थी। लक्खूके लिए बहूकी ज़रूरत थी, और रामजीके लिए दामादकी। बस, सिर्फ़ इसी बुनियादपर उसका शिब्बूके साथ ब्याह हो गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामजीकी भोली-भाली लड़की चुपचाप शिब्बूकी गृहस्थी सँभालनेके लिए उसके घर आ गयी थी। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा कैसे हुआ? महाभारतमें वर्णित सभी कहानियाँ प्रत्यक्ष घटी हैं, यहीं – इसी देशमें घटी हैं। पुराण-कीर्तन सुननेवाले सभी लोग बड़े आदर तथा भक्ति-भावसे उन्हें सुनते हैं। उनमें-से कोई भी यह नहीं कह सकता कि उन लोगोंका व्यवहार अनुचित था। बल्कि जिन स्त्री-पुरुषोंकी ये कहानियाँ हैं उनके नाम श्रवण करते ही स्त्री-पुरुष हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं। और दुनिया कहती है कि हमें इनके आदर्श अपने सामने रखने चाहिए। फिर भी शिब्बूके साथ उसका ब्याह करते समय इस विषयमें उससे कुछ भी पूछा नहीं गया? लक्खूके जिस उजड्ड-गँवार, भद्दे-बदसूरत लड़के शिब्बूको खेतमें, कचहरीके सामने, कुएँपर सैकड़ों बार वह देख चुकी थी वही एक दिन एकाएक उसका पति बन गया। उसने भी चुपचाप बिना कुछ प्रतिवाद किये उसे अपना पति मान लिया। कोई शिकायत नहीं की उसने!

लेकिन अब उसका दिल रह-रहकर तड़पने लगा, शिकायत करने लगा। शिब्बूको अपना पति मानकर, पत्नी-धर्मका पालन करते हुए उसके मनमें अजीब-अजीब विचार आने लगे। ऊपरसे तो वह घर-गिरस्ती, खेती-बारीके काम ठीक तरह करती थी। पत्नी-धर्मका पालन भी वह पहलेकी तरह ही करती थी। लेकिन यह सब करते हुए उसका मन शिकायत करता, झल्लाता, इनकार करता, रोता, क्रोधित होता। तब अपने मनके दुःखको भुलानेके लिए वह और भी अधिक मनोयोगके साथ 'महाभारतकी कथाएँ' पढ़ती।

उन कथाओंमें पुरुष स्त्रियोंपर आसक्त हुए थे। और पुरुषोंपर अनुरक्त होकर निःसंकोच भावसे उनसे यह कहनेमें स्त्रियाँ ज़रा भी नहीं झिझकी थीं कि तुम्हारी सुन्दरताने मुझे विमोहित कर लिया है। मैं तुम्हें चाहती हूँ। यह कहनेमें उन्होंने तनिक भी लज्जाका अनुभव नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
किया था, और न इसके लिए किसीने उन्हें दोष ही दिया था। पुरुष स्त्रीकी पसन्दका ही हो, इस तत्त्वको सभी मानते थे। इन वर्णनोंसे आत्म-विस्मृत-सी हुई वह घण्टों पढ़ा करती। लेकिन एकाएक वह चौंककर रुक जाती, पुस्तकको उसी तरह हाथमें पकड़े रहती, और अपने मनमें कहती, 'क्या इस पुस्तककी कहानियाँ सिर्फ़ पढ़कर भुला देनेके लिए ही हैं ? मैंने जो पाया है उसमें और इस पुस्तककी कहानियोंमें वर्णित बातोंमें कितना अन्तर है !' उसकी नज़र धीरे-से दूसरे कोनेमें बिछे बिस्तरसे जा टकराती। मिट्टीके तेलसे जलनेवाली ढिबरीके ललाई लिये धुँधले उजालेमें लेटे शिब्बूकी आकृति और बराबरकी दीवारपर पड़ती उसकी विचित्र परछाई उसे दिखाई देती। भोरकी ठण्डी वायुका वह अनुभव करती। कभी-कभी अपना कम्बल ठीक करते हुए शिब्बू इस करवटसे उस करवट हो जाता, और जैसे कोई पशु हो इस तरह मेरी ओर लम्बी साँस छोड़ता। पार्वती सुनकर, सिरसे पैर तक सिहर जाती; उसकी समझमें न आता कि मनमें उठती तीव्र असन्तोषके ज्वारपर किस तरह क़ाबू पाया जाये।

वह पुस्तकको एक ओर डाल देती, झोंपड़ेसे निकलकर गौशालामें पहुँचती और हाथमें झाड़ू लेकर वहाँ की सफ़ाई करनेमें जुट जाती। झाड़ूकी आवाज़ सुनकर ओसारेमें सोया उसका ससुर पुकारता, "कौन ? कौन है ?"

वह जवाब देती "मैं !"

"अरे मुर्ग़ेने तो अभी बाँग दी नहीं, क्या सवेरा हो गया ?"

"नहीं, सवेरा होनेमें तो अभी देर है। आप सोइए अभी।"

जिस तरहका जीवन उसे प्राप्त हुआ है, उसमें उसे धोखा दिया गया है – यह विचार पार्वतीके दिलमें जड़ पकड़ गया और उसके कारण उत्पन्न होनेवाले असन्तोषका वह तीव्रतासे अनुभव करने लगी। वह सोचती, 'क्या यह सब मुझे बरदाश्त करना ही होगा ? आख़िर किसलिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बरदाश्त करूँ ? अपनी गरदनपर ज़बरदस्ती रखे गये इस जुएको फेंक क्यों न दूँ ? एक ओर इस तरहके विचार तेज़ीके साथ उसके मनमें उठते, और दूसरी ओर भविष्यके बारेमें सोच-सोचकर वह सिहर उठती। जिस पुस्तकके पढ़नेसे उसकी मनोवृत्तिमें परिवर्तन आया उसकी कहानियाँ पढ़नेका आकर्षण एक ओर था, और दूसरी ओर वह सोचती कि अब ऐसी कहानियाँ कभी न पढ़ेगी, क्योंकि उन्हें पढ़नेसे दिलको अपने वशमें रखना उसके लिए बहुत मुश्किल हो जाता। शुरू-शुरूमें सिर्फ़ मनोरंजनके विचारसे वह पुस्तक उसे पसन्द आयी थी। बादमें धीरे-धीरे उस पुस्तकने उसे नयी दृष्टि प्रदान की। आगे चलकर अपनी दशाको भूलनेके लिए उस पुस्तकके पढ़नेमें उसने अपने-आपको व्यस्त रखा था, अब अन्तमें वह ऐसी दशामें आ पहुँची थी कि उस पुस्तकके प्रति उसे जितना आकर्षण अनुभव होता उतना ही उससे भय भी लगने लगा। वह चाहती कि पुस्तकको पढ़े, और यह भी चाहती कि उसे आँखोंके सामने तक न आने दे। उसे डर लगने लगा कि जिस पुस्तकके पढ़नेके कारण उसे दिव्य-दृष्टि प्राप्त हुई है, उसीके कारण उसपर संकट आनेकी भी आशंका है। शिब्बूके साथ पत्नी-धर्मका पालन करते हुए उसे सुखके बदले अनुभव होता मानो उसका शरीर और मन दोनों एक दुःखकी ज्वालामें झुलस रहे हैं। उस समय वह सोचने लगती कि ये सब बातें उसमें उन कथाओंसे ही आयीं जो उसने महाभारतमें पढ़ी हैं; और वह अपने मनसे कहती कि ये कथाएँ निरी कपोल-कल्पित होंगी, या सत्य होंगी भी तो बस पढ़ने-भरके लिए, उनका हमारे वास्तविक जीवनसे कोई सम्बन्ध नहीं। लेकिन इन दोनों बातोंमें-से किसीको भी स्वीकार करनेके लिए उसकी आत्मा तैयार न होती। वह सोचती कि उस पुस्तकमें वर्णित सभी बातें यथार्थ जीवनमें घट चुकी हैं, और अगर उन बातोंका आदर्श अपने सामने रखा जाये तो प्रत्यक्ष जीवनमें घटनेवाली बातोंको घोर प्रवंचना ही मानना पड़ेगा। लेकिन फिर उसे ख़याल आता कि इस प्रवंचनाका ज्ञान हो गया, इसीसे उसे इतना दुःख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
उठाना पड़ रहा है। विचार-शून्य, भोली-भाली पार्वती बेज़बान पशुके समान शिव्वूके साथ गिरस्ती चला रही थी। काश जीवनके अन्तिम क्षण तक वह अपनी गिरस्तीमें सन्तोष अनुभव करती! लेकिन उसे सहसा दिव्य-दृष्टिकी प्राप्ति हो गयी थी। हर बातपर वह अब सोचने लगी थी, और यही बात अब सब दुःखोंकी जड़ हो गयी। इस नयी दृष्टिसे शिव्वूकी ओर देखते ही उसका मन और शरीर दोनों विद्रोह कर उठते। शिव्वूके उसे अपने पास खींचते ही उसका मन क्रोध और घृणासे भर जाता, और वह उसकी बाँहोंमें-से जोर करके फ़ौरन अलग हो जाती।

शिव्वू बिलकुल बुद्धिहीन और गँवार था, लेकिन उसे भी उसके शरीरकी शिकायतका ज्ञान होने लगा। दिनपर दिन यह बात उसे अधिकाधिक स्पष्ट दिखाई देने लगी कि पार्वतीसे वह जो चाहता है उसकी प्राप्ति उसे बलात्कारके द्वारा ही करनी पड़ती है। उसका व्यवहार अब उन्मत्त जानवरके जैसा होने लगा। उसके इस तरहके व्यवहारके कारण पार्वतीके दिल और दिमाग़में उसके प्रति और भी ज़्यादा कड़ुवाहट भर चली।

एक दिन दोपहरके वक़्त पानी लानेके लिए पार्वती पनघटपर गयी थी। वहाँ उसे एक युवक दिखाई दिया। उसने उसे पहले कभी न देखा था। वह कौन था, कहाँका था, इस गाँवमें किस कामसे आया था – यह कुछ भी वह नहीं जानती थी। लेकिन उसे देखते ही उसका हृदय बुरी तरह धड़कने लगा। महाभारतमें वर्णित सभी सुन्दर पुरुषोंके वर्णन उसे सहसा याद हो आये। उसने सोचा कि इस पुरुषको ध्यानमें रखकर ही लिखनेवालेने उन पुरुषोंकी सुन्दरताका वर्णन किया होगा। जलसे भरी गगरी धरतीपर रखकर पेड़की ओटसे वह उस व्यक्तिकी ओर आँख भरकर देखने लगी। पर दिखाई देनेके साथ ही उसकी आँखोंसे वह ओझल भी हो गया। बादमें दिन-भर उसीकी सुन्दर आकृति पार्वतीकी आँखों आगे फिरती रही।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रात हुई। पहले उसका ससुर घर आया। फिर कुछ देर बाद शिव्बू भी आ पहुँचा। पार्वतीके दिलको धक्का-सा लगा। सब कामोंसे निबटनेके बाद अपनी कोठरीकी ओर जाने लगी तो उसका समूचा शरीर थर-थर काँप रहा था।

भीतर जाकर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। लेकिन तभी मूर्च्छित-सी होकर वह धरतीपर धम्-से गिर पड़ी। एक-एक डग बढ़ाते हुए शिव्बूके निकट आनेकी आहट पाते ही वह खट्-से उठ खड़ी हुई। फिर इस तरह झपटकर और व्याकुलताके साथ उसने द्वारकी साँकलपर हाथ लगाया मानो अपने प्राण ही बचानेके लिए कहीं दूर भाग जाना चाहती हो। लेकिन शिव्बूके बलिष्ठ हाथोंने उसे कसकर पकड़ लिया और वह उसे अपनी चारपाई तक खींचते हुए ले गया। पार्वतीकी अन्तरात्मा हाहाकार कर उठी। छुटकारा पानेके लिए उसने बेहद चेष्टा की। शिव्बूका क्रोध भड़क उठा। उसने पार्वतीके मुँहपर एक तमाचा दिया। पार्वती पछाड़ खाकर नीचे गिरी और फिर मूर्च्छित हो गयी।

जब वह होशमें आयी तो सवेरेको ठण्डी-ठण्ढी हवा चल रही थी। समूची कोठरी जैसे अँधेरेमें डूबी हुई थी। धीरे-धीरे रातकी सारी घटना उसे याद हो आयी। कुछ देर तक अँधेरेमें खुली आँखों देखते हुए वह चुपचाप पड़ी रही। किसी तरहका कोई विचार इस समय उसके मन-में नहीं आ रहा था। मानो मन ही अपने स्थानपर नहीं था, या विचार-क्रिया ही सहसा ठप हो गयी थी। फिर जैसे आहत पंछीकी देहमें धीरे-धीरे प्राणोंका संचार होता है और उसके कोमल पंख कुछ-कुछ फड़-फड़ाने लगते हैं, उसी तरह उसकी विचार-शक्ति भी धीरे-धीरे सक्रिय होने लगी। अपने विचारोंकी आवाज़ उसे यों अधिकाधिक स्पष्ट सुनाई देने लगी जैसे निकटसे निकटतर आनेवाले आदमीकी आहट स्पष्टसे स्पष्टतर सुनाई देती हो। उसे सुनते हुए बड़ी देर तक वह उसी दशामें पड़ी रही। फिर एकदमसे वह उठी। उसने मनमें कुछ निश्चय कर लिया था। वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सामनेवाले कोनेमें गयी। उसने ढिबरी जलायी। नाजके बोरेपर रखी महाभारतकी पुस्तक उसने हाथमें उठायी। उसकी सुनहरी जिल्दको चर्रसे फाड़ डाला। फिर चार-पाँच पन्ने एक साथ फाड़कर दियेकी लौ-से छुआ-कर जलाये। उन जलते हुए पन्नोंपर पुस्तकसे और पन्ने फाड़कर उसने डाल दिये। फिर और पन्ने, और पन्ने····

पूरी पुस्तक जला डालनेके बाद उसने बत्ती बुझा दी। अब कोई पुस्तक पढ़नेके लिए वह फिर कभी बत्ती नहीं जलायेगी। ज्ञानका ज़हर उसने पिया था। उसे वह उगल देना चाहती थी। उसे दिव्य-चक्षु प्राप्त हुए थे, लेकिन उन आँखोंको उसने अपने हाथोंसे फोड़ डाला। वह फिर अन्धी हो जाना चाहती थी।

कोठरीमें फिर अँधेरा भर गया था। उस अँधेरेमें उसने दीवारका सहारा लिया और आँखें बन्द कर लीं।

बाहर गौशालामें ढोरोंकी आवाज सुनाई दे रही थी। वे अपनी पूँछें फटकार रहे थे, लम्बी-लम्बी साँसें छोड़ रहे थे, जुगाली कर रहे थे। पार्वती अपने दिलको समझा रही थी — कि उनके और उसके जीवनमें कोई फ़र्क़ नहीं है, फ़र्क़ रहना भी नहीं चाहिए। उन्हींका-सा जीवन बिताने-के लिए ही तो उसने जन्म लिया है। रस्सी तुड़ानेकी चेष्टा व्यर्थ है।

सवेरे शिब्बू जागा। अनाजके बोरेके पास उसे मुट्ठी-भर राख और पुस्तककी उस सुनहरी जिल्दके सौ टुकड़े दिखाई दिये। एक टुकड़ेपर पीताम्बर पहने अर्जुनका चित्र था। उसकी ओर वह कुछ देर तक देखता रहा। कितनी उमंगके साथ वह इस अच्छी-सी पुस्तकको पार्वतीके लिए शहरसे खरीदकर लाया था! उसके हाथमें यह हमेशा दिखाई देती थी, और वही पुस्तक···शिब्बू सकपकाया रह गया। कोनेमें रखी झाड़ू उसने उठायी और जिल्दके टुकड़ोंके साथ पुस्तककी राखको समेटकर एक कोनेमें लगा दिया।

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कश्मीरकी कहानी

बारहमूला शहर नज़दीक आते देख जीप चलातेसे कर्नल साहबने मेरी ओर देखकर कहा, "आप यहीं उतरेंगे न ?"

इसके पहले कि मैं कुछ कह सकूँ, उन्होंने खट्से ब्रेक लगाया। अब-तक रास्तेके दोनों तरफ़के ललौंही लिये हर रंगके पत्तोंसे लदे सफ़ेताके ऊँचे-ऊँचे पेड़ तेज़ीसे पीछे छूट रहे थे, अब वे मद्धिम गतिसे दौड़ते नज़र आने लगे। मानो उन्हें किसीने 'आहिस्ता क़दम' का हुक्म दिया हो। उस सुहावने दृश्यकी ओर देखते हुए कर्नल साहबसे मैंने कहा, "हाँ, बारहमूलामें एक दिन ठहरकर, बादमें उड़ी आनेका मैंने तय किया है।"

"ओह, तब तो परसों उड़ीके मोरचेपर ही हम लोगोंकी दोबारा मुलाक़ात होगी" कर्नल साहबने मुसकराकर कहा।

उनकी आँखोंपर लगी मोटे शीशोंवाली ऐनकके गहरे रंगके शीशोंमें मेरी छोटी-सी प्रतिच्छाया दिखाई दे रही थी। उसकी ओर देखते हुए मैंने कहा, "ज़रूर, ज़रूर !" जीप खड़ी हो गयी। जैसे ही मैं नीचे उतरने लगा कि गाड़ीमें पीछे बैठा एक जवान मेरा सूटकेस लेकर नीचे कूद पड़ा।

"आपको यहाँ पहुँचानेमें ज़्यादा देरी तो नहीं हुई ?" कर्नल साहब-ने पूछा।

मैंने हँसकर कहा, "नहीं; बल्कि हम कुछ जल्दी ही आ पहुँचे। हम लोग जब श्रीनगरसे चले तब साढ़े पाँच बज चुके थे और अब बज रहे हैं सवा छह। पौन घण्टेमें हमने बयालीस मीलका रास्ता तय किया। क्यों न ? और इसके लिए मुझे आपका शुकरिया अदा करना चाहिए।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"लेकिन साथ ही आपको इस सड़कका भी शुक्रिया अदा करना चाहिए !" कर्नल साहबने कहा, "उड़ीके फ्रण्टकी ओर जानेवाले इस ख़ूबसूरत रास्तेसे मैं निहायत ख़ुश हूँ। आँखें मूँदकर इस रास्तेसे साठ-सत्तर मीलकी रफ़्तारसे कोई भी गाड़ी चला सकता है। मानो रास्तेसे प्यार-भरी गुफ़्तगू करते हुए गाड़ी सरपट चालसे दौड़ती है – "

मैंने मुसकराकर कहा, "ख़ूब, कर्नल साहब ख़ूब ! आप तो शायरी करने लगे – "

"अरे नहीं साहब, मैं तो इन बातोंसे कोसों दूर रहता हूँ। यह काम तो आप-जैसे साहित्यकारोंका ही है !" बायें हाथका पंजा हिलाते हुए कर्नल साहबने कहा। तभी बारहमूलाकी सरहदपर पहरा देनेवाले सन्तरियोंमें-से कुछ गाड़ीके निकट आये, अटेन्शनमें खड़े होकर कर्नल-साहबको उन्होंने सलाम किया, जीपका नम्बर और यहाँ पहुँचनेका वक़्त नोटबुकमें दर्ज किया और रास्तेपर लगी अरगलाको एक ओर हटा दिया। यह सोचकर कि अब कर्नल साहब गाड़ी स्टार्ट कर ही रहे हैं, मैंने कहा, "अच्छा नमस्ते··· !"

पर जीपका ब्रेक खोलकर, पेट्रोलपर पैर रखनेके बदले कर्नल साहबने कहा, "ज़रा ठहरिए भी ! आरामसे एक सिगरेट तो पी लें।" सुनहरी रंगवाला अपना सिगरेट केस खोलकर उन्होंने मेरे सामने बढ़ा दिया।

उसमें-से एक सिगरेट निकालकर उसे जलानेके लिए कर्नल साहबकी जलायी हुई दियासलाईपर मैं झुक ही रहा था कि मेरे पीछेकी तरफ़से कोमल स्वरमें कोई बोला, " हुज़ूर, कुछ अण्डे लेंगे ?" मैंने मुड़कर देखा। एक छोटी-सी झोली फैलाये, जिसमें कुछ अण्डे रखे हुए थे, एक लड़का हमारे सामने खड़ा था। उसके मुँहपर मुसकराहट थिरक रही थी। हलकी लाली लिये साँझके उजालेमें उसकी नीली-सी आँखें जगमगा रही थीं। मैं उसकी ओर देखता रह गया।

"वाह दोस्त, तुम दोबारा आ गये !" कहते हुए कर्नल साहब उस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लड़केकी तरफ़ देखकर मुसकरा दिये और फिर मेरी ओर देखकर वह बोले, "यह साहब कौन हैं, जानते हैं आप ? आप एक रोज बारहमूला ठहरेंगे इसीसे इनसे आपका परिचय करा देना बेहतर होगा। मेरा ख़याल है कि यह यहींका, बारहमूला ही का, रहनेवाला है। क्योंकि जब मैं इस रास्ते होकर उड़ी जाता हूँ, या वहाँसे वापस लौटता हूँ, तब इसी चौकीपर यह और इसका भाई उबले हुए ताज़े अण्डे बेचते हुए हमेशा नज़र आते हैं।"

"ओह !" कहकर उस बालककी ओर मैं ग़ौरसे देखने लगा। उम्र उसकी चौदह सालकी होगी, मगर दिखता इससे ज़्यादाका था। छरहरे बदनका था ! उसके घुटनों और टाँगोंकी हड्डियाँ भी उम्रके लिहाज़से अब लम्बी और तगड़ी लगती थीं। उसके माथेपर सुर्ख़ जुल्फ़ें लहरा रही थीं, उसकी आँखोंमें एक अजीब-सी रौनक़ थी और जैसे वे आसपासकी दुनियाको थाह लेना ख़ूब जानती थीं, दूसरोंके दिलमें झाँककर देखना चाहती थीं और दिलकी गहराई तक आसानीसे पहुँच जाती थीं ! उसे ग़ौरसे देखते हुए मैं अपने-आपसे पूछ रहा था कि इस लड़केमें ऐसी कौन-सी विशेषता है जिसने इसे इस तरह ग़ज़बकी ख़ूबसूरती प्रदान की है। उसके इन सुर्ख़ सुनहले बालोंमें कोई ख़ास बात है, या बड़ी-बड़ी, नीली आँखोंमें ? या जिस तर्ज़से अपनी लम्बी टाँगोंके बल यह खड़ा है उसमें ?

तभी कर्नल साहबने उससे पूछा, "अरे, लेकिन आज तेरा भाई नहीं दिखाई दे रहा ?"

"वह तो आज हुज़ूर घरपर ही है।" उस लड़केने कहा। "उसे आज काम है। अपनी दूकानके लिए हम एक छोटा-सा झोंपड़ा बना रहे हैं उसी काममें आज सवेरेसे मेरा भाई जुटा हुआ है···"

"तुम्हारी दूकानके काममें ?" कर्नल साहबने कहा, "तब तो तुम और तुम्हारा भाई जल्दी ही बड़े दूकानदार बन जाओगे···मोटे सेठ बन जाओगे ! बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब ! लेकिन यह तो बताओ, कि आज तुमने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कितने अण्डे बेचे ?''

''आजका दिन तो बड़ा मनहूस निकला हुज़ूर,'' उस लड़केका चेहरा सहसा रुआँसा-सा दिखाई देने लगा । ''जवानोंकी लारियोंके आने-जानेपर अण्डे ज़्यादा बिकते हैं । मिलिटरीके ये जवान बड़े ही भले लोग होते हैं हुज़ूर, और उन्हें हमारे अण्डे भी बेहद पसन्द आते हैं । लेकिन आज तो हुज़ूर, जवानोंसे लदी लारियोंकी एक भी टोली सवेरेसे अबतक इस रास्ते-से नहीं गुज़री; इसीसे अण्डोंकी मेरी यह झोली अबतक ज्योंकी त्यों भरी है । देखिए न ?''

उसने झोली आगे बढ़ायी । भरी झोली अपने हाथमें लेकर कर्नल साहबने उसको अण्डोंसे भरी झोली हाथमें लेते हुए कहा, ''अच्छा, तुम फ़िक्र न करो । तुम्हारी पूरी झोली मैं खरीद लूँगा । अब तो खुश ? यह लो इसका दाम ।'' उन्होंने जेबसे पाँचका एक नोट निकाला और उसे उस लड़केके सामने बढ़ाकर कहा, 'यह लो' –

उस नोटकी ओर देखते हुए, 'नहीं' में सिर हिलाकर उसने कहा, ''नहीं हुज़ूर ! इतने पैसे मैं न ले सकूँगा । मेरी झोलीमें सिर्फ़ बाईस अण्डे हैं'' यह कहते हुए उसके चेहरेपर गम्भीरता छा गयी थी ।

कर्नल साहबने पूछा, ''बाईस अण्डोंके कितने पैसे हुए ?''

''एक अण्डेके तीन आने हुज़ूर ! यानी छियासठ आने हुए । उतने ही मुझे दीजिए । एक पैसा भी मैं ज़्यादा न लूँगा । हम लोग भिखारी नहीं हैं हुज़ूर'' इन अन्तिम शब्दको मुँहसे निकालते हुए उसका समूचा आत्म-गौरव उसके चेहरेपर जगमगा रहा था ।

''अच्छा अच्छा ! तुम बड़े अच्छे लड़के हो !'' कर्नल साहबने मुस-कराकर कहा, ''तब ऐसा करो, मैं अबकी बार इसी रास्तेसे गुज़रूँगा, तब तुमसे बकाया अण्डे ले लूँगा । तबतक इस नोटके बचे पैसे अपने ही पास जमा रखो । तुम बड़े दूकानदार होना चाहते हो न ?''

वह लड़का तनिक मुसकरा दिया । कर्नल साहबके सामने एक पुड़िया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बढ़ाते हुए उसने कहा, "नमक और गोलमिर्च लीजिए न हुज़ूर !"

शरारत-भरी आँखोंसे कर्नल साहबने पूछा, "इस नमक और गोलमिर्चके तुम्हें कितने पैसे दिये जायें ?"

"आप तो मज़ाक़ करते हैं हुज़ूर !" लड़का हँस पड़ा। "भला नमक और गोलमिर्चके भी कभी हम लोगोंने आपसे पैसे लिये हैं ?" इन चीज़ोंकी पुड़िया तो हम लोग अण्डोंके साथ मुफ़्त ही देते हैं और हुज़ूर भी इस बातको अच्छी तरह जानते हैं।" उसने भी शरारत-भरी मुसकराहटके ढंगसे कहा।

"जानता हूँ, लेकिन मैं तो तुम्हारे साथ यों ही हँसी कर रहा था", कहकर कर्नल साहबने उसके हाथसे पुड़िया ले ली और मेरी ओर देखकर कहा, "नमक और गोलमिर्चके साथ खानेसे उबला हुआ अण्डा बड़ा ही ज़ायकेदार लगता है। ग्राहकोंको ख़ुश करनेकी यह भी एक तरक़ीब है। अब बताइए, क्या लौंडा वाक़ई होशियार नहीं है ?"

"आप बिलकुल ठीक कहते हैं" मुसकराकर मैंने कहा। 'लीजिए' कहकर कर्नल साहबने मेरे सामने झोली बढ़ा दी थी। उसमें-से मैंने दो अण्डे उठा लिये। साथ ही नमक, गोलमिर्चवाली चार पुड़िया भी। 'अच्छा, नमस्ते' कहकर, कर्नल साहबने हाथ ऊँचा उठाकर मुझसे बिदा ली और जीप स्टार्ट कर दी। दूसरे ही क्षण, तेज रफ़्तारके साथ – जीप हमारी आँखोंसे ओझल हो गयी। अब उस सड़कपर मैं और वह लड़का – दोनों ही रह गये थे।

अपना सूटकेस उठानेके लिए मैं नीचे झुकने ही वाला था कि चट्से आगे बढ़कर उस लड़केने सूटकेस उठा लिया। "आप रखिए, मैं लेकर चलता हूँ हुज़ूर" मेरी ओर देखकर उसने कहा, "आप कहाँ ठहरेंगे ?"

"डाक बँगलेमें" मैंने कहा, "मेरे आनेकी ख़बर वहाँ पहले ही पहुँच चुकी है। दोपहरके चार बजे डाक बँगलेका आदमी यहाँ आकर, मेरा इन्तज़ार करता रहा होगा। लेकिन श्रीनगरसे चल पड़नेमें ही हमें काफ़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देरी हो गयी थी।"

दूर, क्षितिजकी ओर मैंने एक नज़र देखा। पेड़ोंकी फुनगियों, बर्फ़से ढँके पहाड़ोंकी चोटियों और उस पार, दूर तक फैले बादलोंके झुण्डोंपर, डूबना चाहनेवाले सूरजने सुर्ख़, पीले और सुनहली रंग बिखेर दिये थे। 'कितना अनोखा मुल्क है। कितना सुन्दर !!' दिल-ही-दिलमें मैंने कहा; और तभी मेरी दृष्टि रास्तेकी दाहिनी ओर, कुछ फ़ासला छोड़कर दिखाई दे रहे मकानोंकी छतों और छोटे-छोटे गुम्बज़ोंकी ओर जा टकरायी··· शहरका वह नज़ारा देखकर कुछ ही महीनों पहले, पाकिस्तानी लुटेरोंने इस ख़ूबसूरत शहरको किस तरह बरबाद कर डाला था, इसके सम्बन्धके कई वाक़यात मैंने सुने थे, उन सबकी मुझे याद हो आयी। अनजाने ही मैंने एक ठण्डी आह भरी। बस्तीकी ओर उँगली उठाकर मैंने पूछा, "क्या यही है बारहमूला ?"

"जी हुज़ूर" मेरा सूटकेस कन्धेपर लेकर मेरे आगे-आगे चलते हुए पूछ रहा था, "क्या हुज़ूर बारहमूला देखने आये हैं ?"

उसकी ख़ूबसूरत, मज़बूत गरदन, मोटेसे कपड़ेसे बनी, मैली-सी रंगीन क़मीज़के भीतर छिपे चौड़ेसे कन्धों और गर्द-मिट्टीमें सने, तलुओंकी सुरख़ीकी ओर ग़ौरसे देखकर मैंने कहा, "हाँ !"

"क्या हुज़ूर बहुत दूरसे आये हैं ?"

"हाँ ! दूर ही से आया हूँ कहनेमें कोई हर्ज़ नहीं है" अण्डा खाते हुए मैंने उससे कहा, "तुम्हारे ये अण्डे वाक़ई बहुत ज़ायकेदार हैं।"

"हाँ हुज़ूर ! ताज़े अण्डे हैं न ! मेरी अम्मी रोज़, सुबह होते ही, मुर्ग़ीवालेके यहाँ जाकर अण्डे ले आती है।"

"अच्छा ! तुम्हारे माँ भी है ? बुढ़िया होगी ?"

"नहीं हुज़ूर ! बुढ़िया नहीं। वह बहुत चतुर है। ताज़े अण्डोंकी परखमें वह अपना सानी नहीं रखती। अन्धी होनेपर भी····।"

"अच्छा ?" माँके अन्धेपनका ज़िक्र कहीं उसके दिलपर चोट न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहुँचाये यह सोचकर सिर्फ़ 'अच्छा !' ही कहकर बात काटते हुए मैंने कहा, "तुमने अबतक हमें अपना नाम नहीं बताया !"

"मुझे शाबाना कहते हैं हुज़ूर····" उसने कहा और तभी डाक बंगलेकी सीढ़ीपर एक आदमीको बैठा देख, चीखकर आवाज दी—

"ओ बे आह्लादू ! देखता नहीं ? हुज़ूर आ गये····?

वह आदमी इस तरह दौड़ता हुआ हमारे निकट आ पहुँचा कि मानो उसने छलाँग ही मारी हो ! "हुज़ूर····मेरा क़ुसूर मुआफ़ हो ?" मुझसे कहकर, शाबानाके हाथसे उसने सूटकेस ले लिया "मैं तो हुज़ूर, चौकीपर लगभग एक घण्टेसे भी ज़्यादा देर तक आपका इन्तज़ार करता रहा । जब कोई मोटर गाड़ी आती नहीं दिखाई दी, तब सोचा कि – शायद हुज़ूरने आजका आना मुल्तवी कर दिया । क़ूसूरकी मुआफ़ी चाहता हूँ, हुज़ूर····"

मुआफ़ी माँगते हुए उसके गिड़गिड़ानेको रोकनेके इरादेसे मैंने कहा, "कोई बात नहीं । चलो ।" जैसे ही हम तीनों डाक बंगलेके निकट आ पहुँचे, मुझे सलाम करते हुए शाबानाने पूछा, "अब हुज़ूर, क्या मुझे इजाज़त मिल सकती है ?"

"हाँ शाबाना, अब तुम जा सकते हो । तुमने मेरी बहुत मदद की इसलिए शुकरिया" उसने दोबारा मुझे सलाम किया और वहाँसे वह चल पड़ा । कुछ देर मामूली चालसे चलनेके बाद दुल्की चालसे दौड़ते हुए मेरी आँखोंसे ओझल हो जानेवाले शाबानाकी ओर देखते हुए मुझे ऐसा जान पड़ा, मानो कोई प्यारा-सा हिरन ही छलाँगें मारता हुआ जा रहा हो ।

दूसरे दिन, सुबह होनेसे कुछ पहले ही मैं जाग पड़ा । मैंने दिलमें इरादा किया था कि बारहमूला शहरके एक-एक गली-रास्तेसे निकलूँगा और कश्मीरकी नैऋत्य सरहदको लाँघकर, अचानक हमला करनेवाले कबालियों और पाकिस्तानी लुटेरोंने आगजनी और लूट-खसोटके द्वारा इस ख़ूबसूरत शहरके जिस्मपर जितने भी जख्म किये थे, उनकी, अबतक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
नज़र आनेवाली निशानियाँ अपनी आँखोंसे देख लूँगा। मैंने चट्से नाश्ता कर लिया और सिगरेटके कश लगाता हुआ बरामदेके रेलींगसे सटकर खड़ा रहा। इस बातका अबतक मैं निश्चय नहीं कर पाया था कि शहर देखनेके लिए जाते हुए अपने साथ आहदूको ले चलूँ या अकेला ही चल दूँ। तभी जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते हुए, डाक बंगलेकी ओर आनेवाले दो लड़के मुझे दूर ही से दिखाई दिये। उनके कुछ नज़दीक आ पहुँचते ही उनमें-से एकको पहचानते मुझे देरी न लगी। वह शाबाना था। सीढ़ियोंके निकट आते ही उन दोनोंने मुझे बड़े ही प्यारे ढंगसे सलाम किया।

"कहो बच्चा लोग, अच्छे तो हो? नमस्ते!"

उस दूसरे लड़केके कन्धेपर हाथ रखकर शाबानाने कहा, "यही है मेरा भाई हुज़ूर!"

"ओह! क्या इसीका तुमने कल ज़िक्र किया था?" पल-भर ठहरकर मैंने पूछा, "क्या आज भी अण्डे बेचनेके लिए आये हो?"

मेरा मज़ाक़ समझमें आते ही वह मुसकरा दिया। कहा, "रास्तेसे गुज़रनेवाले मुसाफ़िरोंको ही हम लोग अण्डे बेचते हैं हुज़ूर!"

"तब आज क्या ले आये हो बेचनेके लिए?"

"लाया तो कुछ नहीं हुज़ूर" उसने कहा, "लेकिन मैंने सोचा कि आपके जूतोंमें पालीस लगाना होगा और इसके अलावा, मेरा भाई हुज़ूरके दर्शन करना चाहता था।"

"भई शाबाश! मेरी ज़िन्दगीमें, यह तुम्हारा भाई ही पहला आदमी है, जो मेरे दर्शनके इरादेसे आया हो" मैंने मुसकराकर कहा, और बादमें आहादूको आवाज़ देकर भीतरके कमरेसे मेरे तमाम जूते लाकर उन लड़कोंके पास देनेके लिए कहा।

वे दोनों आँगनमें पलथी मारकर बैठ गये और जूतोंमें पॉलिश लगानेके काममें लीन हो गये। उनसे कुछ बातचीत छेड़नेके इरादेसे मैंने कहा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"शाबाना, तुमने अपने भाईका नाम नहीं बताया हमें।"

वूटपर तेज़ीके साथ ब्रश मारते हुए, बिना मेरी ओर नज़र उठाकर देखे, उसने कहा, "मैं तो हुज़ूर इसे सिर्फ़ भाई ही कहता हूँ।"

'क्या तुम लोग मोची, चमारोंमें-से कोई हो?"

"तौबा! तौबा! हुज़ूर भी कैसी बात करते हैं! हम लोग चमार नहीं हैं हुज़ूर! मेरे वालिद बाग़बानीका काम करते थे....और हम लोग बूटपालीसका काम सिर्फ़ इसीलिए करते हैं कि थोड़ी मिहनतमें दो पैसे मिल जायेंगे और उतनी ही रक़म दूकानदारीके काम आयेगी। मेरी अम्मी हमेशा कहा करती है हुज़ूर, कि कोई भी काम करते हुए इनसानको शर्म नहीं लगनी चाहिए – बस, वह काम नेकी और ईमानदारीसे किया जाये।"

इतनी बढ़िया सीख जिन्हें उनकी माँने दी थी, उन दोनों बालकोंकी ओर प्यार-भरे आदरसे देखते हुए मैंने कहा, "अच्छा?"

पॉलिश कर चुकनेके बाद, उन तमाम चमचमाते जूतोंको उन्होंने बरामदेमें एक क़तारमें रख दिया और मुसकराकर सलाम करते हुए दोनों सामने खड़े हो गये। जेबसे दस रुपयेवाला एक नोट निकालकर मैं शाबानाके हाथमें थमाने लगा।

"क्या हुज़ूरके पास रेज़गारी नहीं है?" उसने कहा।

"रेज़गारीकी क्या ज़रूरत है? यह नोट ही लो" मैंने कहा।

"नहीं। इतने पैसे मैं नहीं ले सकता" उसने कहा, "बग़ैर मेहनत-मज़दूरी किये इतने रुपये कैसे ले लूँ हुज़ूर! हमें रुपयोंकी ज़रूरत है। इतनी सख्त ज़रूरत है कि बयान नहीं कर सकता। लेकिन तब भी हम लोग मुफ़्तमें किसीसे एक पाई भी नहीं लेना चाहते। ख़ैरात लेना अम्मीको बिलकुल पसन्द नहीं है। पसीना बहाकर जो कुछ भी मिल जाये हम ख़ुशीसे लेंगे।"

हैरान होकर उन दोनों लड़कोंकी ओर मैं देखता ही रह गया। एक-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दूसरेके कन्धेसे कन्धा सटाये, चिलचिलाती धूपमें वे दोनों खड़े थे। एकके सिरके बाल सुर्ख़ और आँखें नीली थीं, दूसरेके माथेके बाल कुछ हलके भूरे रंगके थे और आँखें एकदम स्याह! दोनों ही के मासूम, नाज़ुक चेहरोंपर, जाने कैसी गम्भीरताकी छाया झलक रही थी। पल-भर कुछ सोच लेनेके बाद मैंने शाबानासे कहा, "कोई हर्ज नहीं! तुम्हारी बात हमने मान ली! अब यह बताओ कि तुमसे कुछ मेहनत मज़दूरी करा लेनेके बाद तो यह नोट लेनेमें तुम्हें कोई एतराज़ न होगा?"

उसने सिर हिलाया और कहा, "नहीं! तब तो ख़ुशीसे ले लूँगा। आप हमें चाहे जो भी काम करनेका हुक्म दें।"

"तुम्हारे इस शहरमें मैं अजनबी हूँ। क्या मुझे तमाम शहर दिखाने मेरे साथ चलोगे?"

"क्यों नहीं! यह तो हुज़ूर, बहुत ही ख़ुशीका और आसान काम है! मैं ज़रूर चलूँगा।"

"तब बात पक्की रही!" मैं रेलिंगसे हटकर भीतर गया, झट् कपड़े बदले और बाहर आकर बोला, "चलो, चलें।"

मैंने भूलकर भी नहीं सोचा था कि वह दो मासूम बच्चे मुझे शहर बतानेका काम इतने अच्छे ढंगसे कर सकेंगे। शहरका चप्पा-चप्पा वे जानते थे। लुटेरोंके अत्याचारोंकी तमाम कहानियाँ उनकी ज़बाँपर थीं। शहरमें घूमते हुए, वहाँकी एक-एक जगह वे मुझे दिखाते और बारहमूला-को अचानक जिस बदक़िस्मतीका शिकार होना पड़ा था उसकी दर्दनाक कहानियाँ सुनाते! कहींपर बेचिराग़-सी बनी किसी मसजिदको आगमें जल चुकनेके बाद भी बची निशानियाँ नज़र आ रही थीं। कहींपर खण्डहर बन चुका हिन्दुओंका कोई मन्दिर दिखाई दे रहा था। इन ख़ूबसूरत, नक़्क़ाशीदार, बिना छतवाली दीवारोंकी ओर देखिए! देखिए इन टूटे-फूटे खम्भोंकी ओर! बारहमूलाके सबसे ज़्यादा अमीर, मुस्लिम ज़मीदारकी यह हवेली थी। उसे कुल्हाड़ीसे क़त्ल कर दिया गया और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसकी बीबी, लड़कियाँ अपनी इज़्ज़त बचानेके लिए जेहलमके दरियामें कूद पड़ी थीं ! यह चौराहा देखिए ! लुटेरोंके हमलेका जिसने गाँववालोंकी मददसे बड़ी ही बहादुरीसे मुक़ाबला किया, उस मक़बूल शेरवानीको लुटेरोंने बड़ी ही बेरहमीसे इसी चौराहीमें क्रूसपर लटकाकर उसके तमाम ज़िस्ममें कीलें ठोककर उसे तड़पा-तड़पाकर मार डाला। बाज़ारकी तमाम दूकानोंका, लूटखसोटके ज़रिये लूटेरोंने सफ़ाया कर दिया था। स्कूलों और अस्पतालोंकी इमारतोंमें आग लगा दी थी और औरतोंको आम रास्तेसे खींचते, घसीटते वे ले गये थे। अनाजोंके गुदामों और घासकी गंजिओंमें आग लगा दी थी – उस आगमें घोड़े, गायें, भैंसें, कोई मवेशी ज़िन्दा बच न पाया था !····

लेकिन साथ ही इस खौफ़नाक़ वाक़यातोंका दूसरा पहलू भी उन लड़कोंने मुझे दिखाया था। श्रीनगर शहरकी सरहदसे लगभग सटकर ही, लुटेरों और पाकिस्तानकी फ़ौजें इकट्ठा हुई थीं। पर तभी हिन्दुस्तान-की फ़ौजें आकर दाख़िल हो चुकी थीं। उस फ़ौजके पहले ही हमलेकी करारी चोटसे दुश्मन जान लेकर भाग निकला था और उड़ीके पहाड़के उस पार जाकर उसने मुँह छिपा लिया था····कश्मीर दोबारा ख़तरेस ख़ाली हो चुका था, मौतके मुँहसे बचा था। आफ़त टल गयी थी। बारहमूलाके लोग दोबारा अपने घरों, दूकानों, मन्दिरों और मसजिदोंकी मरम्मत करनेमें जुट गये थे। जान-पहचानवाला हर व्यक्ति एक-दूसरेका हाथ बँटा रहा था। शहरका तमाम रुपया-पैसा, क़ीमती चीज़ें लुटेरे लूट ले गये थे। लेकिन वह मुसीबत ही लोगोंको एक अनोखी दौलत दे गयी थी। लोगोंके दिलोंमें, इसके पहले कभी नहीं देखा गया था, इस तरह एकताका भाव पैदा हो गया था। मकान, गुदाम, मवेशी आदि सबको खो बैठना पड़ा था, लेकिन तब भी, सच्ची इनसानियत काश्मीरियोंके हाथ आ गयी थी। अपने पैरोंके बल हमें खड़ा रहना होगा, भरसक औरोंकी भी मदद करनी होगी, मेहनत करनी होगी, पसीना बहाना होगा – इन तमाम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बातोंसे लोग परिचित हो गये थे। यह सीख मुसीबत ही ने उन्हें दी थी और अपने उस शहरकी खूबसूरतीको दोबारा एक बार, आँखें भरकर देखनेके लिए एक-दूसरेके गलेमें गला डालकर, बारहमूलाके लोग अपना खून-पसीना एक कर रहे थे।····हुज़ूर, आप एक सालके बाद दोबारा ज़रूर यहाँ आइए'' वे दोनों लड़के मुझे कह रहे थे, ''एक सालके बाद जब आप आयेंगे और बारहमूलाको एक नज़र देखेंगे तो इस बातका आपको क़तई यक़ीन न आयेगा कि किसी ज़मानेमें लुटेरोंने बारहमूलाको बरबाद कर डाला था। हमारे इस प्यारे शहरको हम लोग बिलकुल पहले-जैसा ख़ूबसूरत बनाना चाहते हैं।''

कश्मीरपर लिखी कोई मोटी-सी पुस्तक पढ़नेसे जितनी बातें मेरी समझमें न आ पातीं, उतनी बातोंका ज्ञान मुझे इन दो बच्चोंके ज़रिये, थोड़ी ही देरमें हो गया। डाक बंगले वापस लौटनेपर मुझे लगा कि शाबानाको और एक नोट दे दूँ। लेकिन तभी मैंने सोचा कि ऐसा करनेसे कहीं वह उसे ख़ैरात न मान लें। उस स्वाभिमानी लड़केके आत्मगौरवपर मैं तनिक भी चोट नहीं पहुँचाना चाहता था और इसीसे, उन दोनोंका दोबारा सिर्फ़ शुकरिया अदा कर, मैंने उनसे विदा ली।

भोजनके समय खाना परसते हुए आहादूने मुझसे पूछा, ''उन दोनोंने ठीकसे शहर दिखाया आपको? दोनों लड़के कैसे लगे हुज़ूरको?''

''भाइयोंका ऐसा सुन्दर जोड़ा मैंने ज़िन्दगीमें कभी नहीं देखा था'' मैंने कहा, ''क्या वह दोनों जुड़वाँ भाई हैं? मेरा खयाल तो कुछ ऐसा ही है।''

''नहीं तो हुज़ूर! जुड़वाँ. कहाँसे होने लगे?'' आहादूने कहा, ''वे तो हुज़ूर, आपसमें एक दूसरेके भाई भी नहीं लगते!''

''क्या कहते हो?'' अजीब-सी हैरानीके ढंगसे मैंने कहा, ''मुझे यक़ीन नहीं आता।''

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"अब आपको कैसे यक़ीन दिलाऊँ हुज़ूर ! भला आपके पैरोंके पास बैठकर मैं झूठ कहूँगा ?" आहादूने कहा, "ये दोनों बच्चे, इतने-से नादान बच्चे थे तबसे मैं उन्हें देख रहा हूँ। शाबाना एक मुसलिम बाग़वानका लड़का है, लेकिन जिसे वह अपना भाई बताता है, वह लड़का हिन्दू है हुज़ूर ! उसका नाम है काशीनाथ। उसका पिता जंगलके महकमेमें 'राखा' था। कबालियोंने उसे क़त्ल कर डाला और उसके मकानकी तमाम चीज़-वस्तु लूटकर घरमें आग लगा दी। काशीनाथ यतीम बन गया। अब दुनियामें उसका कोई नहीं बचा था। तब तरस खाकर शाबानाकी माँ उसे अपने घर ले आयी। ग़रीबी और भूखकी टीस वह जानती थी, क्योंकि जिस वक़्त शहरपर मुसीबत टूटी, तब उस बेचारीका भी घर-बार, दूकान सब कुछ बरबाद हो गया था। लेकिन वह बड़ी दिलेर औरत है। नयेसे निकले होमगार्ड्समें उसका बड़ा लड़का भरती होना चाहता था। तब उसने ख़ुशीसे उसे इजाज़त दे डाली। इस वक़्त वह लड़का उड़ीके मोरचेपर है। ये दोनों लड़के यहीं मेहनत-मज़दूरी करते हैं····बुढ़ियाने दोबारा अपना मकान जैसे-तैसे खड़ा कर लिया है। इन दो लड़कोंने भी, मेहनत-मज़दूरीके बल कुछ रुपये जुटा लिये हैं और अब एक छोटी-सी छपरी बनाकर ये दोनों वहाँ दूकान करना चाहते हैं"

"भगवान् उन्हें इस काममें क़ामयाबी दे" मैंने कहा, "लेकिन मुझे ताज़्ज़ुब तो इस बातका हो रहा है कि शाबानाने अपना घर-बार और दूकान बरबाद हो जानेके बारेमें मेरे सामने एक लफ़्ज तक मुँहसे नहीं निकाला।"

वह बड़ा ही नेक लड़का है हुज़ूर। अपनी मायूसी और बदनसीबीका ज़िक्र वह कभी किसीके सामने न करेगा।

"लेकिन काशीनाथके पिताके बारेमें भी उसने मुझसे कुछ नहीं कहा"

"हुज़ूर, वह तो चाहता है कि दुनिया यही समझे कि काशीनाथ उसका सगा भाई है। जानते हैं, उसकी माँ हमेशा क्या कहती है ? वह कहती है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"अल्लाहका रहम ! मेरे एकसे बढ़कर एक तीन बहादुर लड़के हैं !"

इसके बाद आहादू देर तक और बातें करता रहा पर मेरा दिल शाबाना और उसकी अन्धी माँ ही के विचारोंके गिर्द चक्कर काट रहा था....खाना खा चुकनेके बाद कुछ देर आराम करनेके इरादेसे मैं बिस्तर-पर लेटा, तब, अब कुछ ही देरके बाद मैं बारहमूला छोड़कर चला जाऊँगा और इन दो लड़कोंको दोबारा कभी देख न पाऊँगा इस ख़यालसे मेरे कलेजेमें एक टीस-सी उठने लगी—

इसके बाद मुझे उड़ी ले चलनेवाली फौज़ी गाड़ी चौकीपर आ पहुँचते ही डाकबँगलेमें आकर मुझे सूचित करनेके लिए आहादूको मैंने चौकीपर भेज दिया। बादमें मैंने कपड़े बदले और बरामदेमें आया, तभी बरामदे-की सीढ़ियोंपर उन दोनों लड़कोंको खड़े देख मेरी हैरानी और खुशीकी हद न रही।

"कहो दोस्त शाबाना, कैसे हो ?" मुसकराकर मैंने कहा, "हम तो प्यारे आज उड़ी जा रहे हैं"

"हमे मालूम है हुज़ूर ?" शाबानाने कहा, "सुबह आप ही ने तो बताया था, और इसीसे हम दोनों आये हैं"

"अच्छा ! तो यह कहो न, कि तुम दोनों मुझे विदा देने आये हो...."

मेरी बातसे वह कुछ झेंप-सा गया। उसने सिर हिलाया और नज़रें झुका ली। पल-भरके बाद गरदन उठाकर उसने मेरी ओर इस तरह देखा मानो वह पशोपेशमें पड़ गया हो, कि जो कुछ मुझसे कहना चाहता है, वह कहें या न कहें ! बादमें उसने मेरी ओर एक नज़र देखा और कहा, "हुज़ूरको एक तकलीफ़ देना चाहता हूँ। अपनी अम्मीके कहने-पर....! हुज़ूर कहीं बुरा तो न मानेंगे....!"

"अरे नहीं। बुरा किसलिए मानूँगा। बताओ, तुम्हारी अम्मीका क्या हुक्म है। मैं उसे खुशीसे बजा लाऊँगा....बताओ,"

"मेरा बड़ा भाई उड़ीके मोरचेपर है। उसके लिए अम्मीने कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिठाई और समोसे बनाये हैं" यह कहते हुए अपने हाथमें-का एक छोटा-सा डिब्बा ऊपर उठाकर उसने मुझे दिखाया, "क्या यह डिब्बा हुज़ूर मेरे भाईको दे सकेंगे ? वह उड़ीमें होमगार्ड्समें काम करता है। उसका नाम है उस्मान…"

उसके हाथसे डिब्बा लेते हुए मैंने पूछा, "तुम्हारे भाईसे और भी कुछ कहना है ?"

"नहीं ! ज़्यादा कुछ नहीं हुज़ूर। अगर साइकिल मिल सकी, तो परसों इतवारके रोज़ उड़ी जाकर मैं उससे मिलूँगा। उससे कहना कि हमारी कोई फ़िक्र न करे। यहाँ हम सब ख़ैरियतसे हैं। मैं भी मज़ेमें हूँ। हमारी छपरी कुछ ही दिनोंमें तैयार हो जायेगी। माल ख़रीदनेके लिए और कुछ रुपये जुटा लेनेपर हमारी दूकान शुरू हो जायेगी" पर तुरन्त ही दातोंतले ज़ुबान चबाकर उसने गरदन हिलायी और कहा, "हुज़ूर, मैंने कहा तो सही, लेकिन इस आख़िरी बातका ज़िक्र न कीजिएगा। मैं उस्मानको नहीं बताना चाहता कि सिर्फ़ कुछ ही रुपयोंकी कमीकी वजहसे दूकानका काम रुक गया है। बेचारा हमारी फ़िक्रमें और भी ज़्यादा परेशान हो जायेगा। हम तो किसी तरह अपना काम सँभाल ही लेंगे। कुछ देरी ज़रूर लगेगी, लेकिन कोई हर्ज नहीं…हमारे लिए उसे नाहक़ परेशान किसलिए किया जाये ! आप उस्मानसे सिर्फ़ इतना ही कहिए कि यहाँ हम सब ख़ैरियतसे हैं और दूकानके लिए छपरी तैयार हो गयी है।"

"दूकानके लिए कितने रुपयोंकी ज़रूरत होगी तुम्हें ?"

"कमसे कम तीस रुपये तो ज़रूर लग जायेंगे। इतने रुपये जुटाना आसान बात नहीं है हुज़ूर ! लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता हम जुटा ही लेंगे।"

"ज़रूर ज़रूर" कहकर प्यारसे मैंने उन दोनोंकी पीठ थपथपायी और तभी, तेज़ीसे बँगलेकी ओर आनेवाले आहादूको देख कहा, "मालूम होता है चौकीपर गाड़ी आ पहुँची ! अब मुझे जाना होगा। अच्छा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सलाम ! ख़ुदा हाफ़िज़ !''

मुसकराते हुए उन दोनोंने मुझे सलाम किया और चटसे मेरा सूटकेस, बिस्तर आदि उठाकर दौड़ते हुए वे आगे चले गये। मैं चौकीपर पहुँचा ! देखा तो फौजी गाड़ी देरसे इन्तज़ारमें खड़ी थी। मैं भीतर जा बैठा और उन दोनों लड़कोंकी ओर देखकर, बिदाके लिए हाथ ऊँचा उठाया। गाड़ी चलनेवाली ही थी, कि शाबाना मेरे क़रीब आया और बिलकुल हलकी आवाज़में उसने कहा, ''हुज़ूर मैं दोबारा अर्ज़ करता हूँ कि रुपये-पैसोंका कोई ज़िक्र उस्मानसे मत कीजियेगा।''

दूसरे ही क्षण हमारी गाड़ी, तेज़ रफ़्तारके साथ चल पड़ी।

उड़ीके मुक़ामके दूसरे ही रोज़, वहाँके बड़े अफ़सरसे मैंने मुलाक़ात की। मैंने उनसे पूछा, ''मोरचेवाले होमगार्ड्समें, उस्मान नामके किसी लड़केको क्या आप जानते हैं ? मैं उससे मुलाक़ात करना चाहता हूँ।''

मेरी बात सुनकर उस अफ़सरके चेहरेपर सहसा गम्भीरता छा गयी और बिना कुछ जवाब दिये वह चुप रह गया। उसके चेहरेपर झलकने-वाली उदासीनता और उसकी ख़ामोशी देख मैं हैरान रह गया। पल-भरके बाद मैंने दोबारा पूछा, ''बताइए साहब, क्या उस्मानसे मुलाक़ात करनेकी इजाज़त मुझे मिल सकती है ?''

अफ़सरने नहींमें सिर हिलाया, दाँतोंतले अपना होंठ चबाया और बिलकुल आहिस्तासे कहा, ''मुझे अफ़सोस है कि उस्मानसे आप मुलाक़ात न कर सकेंगे।''

मैंने पूछा, ''क्यों ! क्या बात है ? किसीसे मुलाक़ात करनेके बारेमें क्या कोई ख़ास कानून हैं ?''

''अरे नहीं साहब ! ख़ास क़ानून वग़ैरह तो कुछ नहीं ! बल्कि मोरचेपर होमगार्डोंका काम कैसे चल रहा है यह आपको दिखलानेके लिए यहाँके तमाम होमगार्डोंसे, आप मुलाक़ात कर सकें इस बातका मैंने तो इन्तज़ाम भी कर दिया है।''

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस अफ़सरकी इस बातसे मेरी हैरानी और भी ज़्यादा बढ़ गयी। मैंने कहा, "तब आपने यह कैसे कहा कि मेरे लिए, उस्मानसे मुलाक़ात करना मुमकिन नहीं है ?"

"बात यह है –" सहसा उसकी आँखोंकी पलकें थर्रा उठीं और होंठों तक आ पहुँचे शब्द वहींके वहीं ठिठक गये। पल-भर ठहरकर उसने कहा, "बात यह है साहब कि उस्मान अब होमगार्डमें नहीं है। निहायत अफ़सोसके साथ आपको यह ख़बर मुझे सुनानी पड़ रही है कि कल शाम ही, हम सबको छोड़कर उस्मान चल बसा। मोरचेपर उसके मारे जाने-की खबर कल शाम ही हमें मिली है।"

हे ईश्वर ! यह मैं क्या सुन रहा हूँ। इस बातका मैं कैसे विश्वास करूँ ! भर्रायी आवाज़में मैंने कहा, "यह आप क्या कह रहे हैं !"

"हाँ ! बड़ी ही दर्दनाक और कोई यक़ीन न कर सके ऐसी ख़बर है। लेकिन बदक़िस्मतीसे वह बिलकुल सच है। हमें उसपर यक़ीन करना ही होगा" इसके बाद उन्होंने मुझको वह तमाम क़िस्सा सुनाया। पहाड़की चोटीके निकट एक बड़े ही मुश्किल स्थानपर 'पहरा' नियुक्त किया गया था। उस्मान रसद लेकर वहाँ जा रहा था। झाड़ीमें कहीं-पर दुश्मन छिपकर बैठे थे। धाँयसे फ़ायर हुआ और एक गोली आकर सीधे उस्मानके सीनेमें लगी।"

कितना भयानक समाचार मैं सुन रहा था। मैं इस तरह संज्ञाहीन-सा बैठा रहा, मानो सहसा मेरी वाचाशक्ति ही विनष्ट हो चुकी थी। मेरी नब्ज़की आवाज़ और कलेजेकी धड़कन मानो मेरे कानोंके परदे फाड़ रही थीं। मेरे मस्तिष्कपर मानो कोई कठोर प्रहार कर रहा था और उन निर्दय प्रहारोंकी आवाज़ मुझे बराबर सुनाई दे रही थी····अपने दोनों हाथोंसे मैंने माथा कसकर दबा लिया, मेरी ज़बानको जैसे लकवा मार गया था····

"क्या बताऊँ साहब ! उस्मान वाक़ई एक बड़ा ही लायक़ सिपाही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था'' उस अफ़सरने कहा, ''क्या वह आपके जान-पहचानवालोंमें-से था?''

न जाने उस वक़्त मैंने क्या जवाब दिया।

उसी शाम मैंने उड़ीसे बिदा ली। हमारी जीप बारहमूलाकी चौकी-पर कुछ देरके लिए रुकेगी और वहाँ शाबाना और उसके भाईसे मुलाक़ात होगी, इस बातकी कल्पना ही से मैं बार-बार सिहर पड़ा। वो दोनों मासूम बच्चे, दिलमें हज़ार उमंगें लिये, मोटरको देखते ही मेरे पास लपक पड़ेंगे····उस्मानके बारेमें मुझसे सैकड़ों सवाल पूछेंगे, तब मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा···किस मुँहसे उनसे कहूँगा कि अब उनका उस्मान···

कर्नल साहबसे मैंने प्रार्थना की कि यदि उन्हें कोई एतराज़ न हो, तो बारहमूलाकी चौकीपर हमारी जीप न रोकी जायें। लेकिन उन्होंने कहा कि इस चौकीपर गाड़ियोंकी बारीक़ीसे जाँच की जाती है और इस जाँचके लिए यहाँसे होकर आने-जानेवाली तमाम गाड़ियोंको किसी भी हालतमें रुकना ही पड़ता है। फौज़ी क़ानूनके खिलाफ़, हम अपने इख्तियारमें, इस चौकीसे होकर सीधे आगे नहीं जा सकते। हाँ, आपके लिए मैं इतना ज़रूर कर सकता हूँ कि बारहमूलाकी चौकीपर हमारी जीपको ज़्यादा देर न रुकने दूँगा। वहाँके सन्तरियोंसे कहकर जाँचका काम चन्द ही मिनिटोंमें निबटाकर हम लोग वहाँसे चल देंगे। ''मैंने दिल-ही-दिलमें प्रार्थना की कि हे परमात्मा, आज ऐसा कुछ करो, कि जिससे बारहमूलाकी उस चौकीपर शाबाना और उसका भाई हाज़िर हो न रह सके!''

पर परमात्माने मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। शामकी रौशनीमें, रास्तेके मोड़पर खड़े वो दोनों लड़के मुझे दूर ही से दिखाई दिये। जैसे ही जीप खड़ी हो गयी, बेतहाशा दौड़ते हुए वे मेरे निकट आये और मुझे देखकर ख़ुशीके मारे दोनोंने भी ज़ोरोंकी एक-एक किलकारी मारी।

शाबानाने मुझसे पूछा, ''क्या हुज़ूर और एक-आध रोज़के लिए बारहमूलामें नहीं ठहरेंगे?''

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"नहीं शाबाना !" मैंने कहा, "काश मैं यहाँ रुक पाता ! लेकिन आज रात किसी हालतमें मेरा श्रीनगर पहुँचना ज़रूरी है"

"हुज़ूरने उस्मानको डिब्बा दे दिया ?"

मुँहपर मुसकराहट बिखेर देनेकी कोशिश करते हुए मैंने हाँमें सिर हिलाया।

"क्या हुज़ूरने उस्मानसे यह भी बताया कि यहाँ हम सब मज़ेमें हैं ?"

मैंने दोबारा सिर हिलाया। मुसकराना मुश्किल था।

"वहाँ उस्मान खैरियतसे तो है न हुज़ूर ?"

"हाँ ! बिलकुल मज़ेमें ! फ़िक्र करनेकी कोई बात नहीं !" मेरे मुँहसे इन शब्दोंको सुनते ही, उन दोनोंके चेहरेपर बेहद खुशीकी एक लहर-सी दौड़ गयी। मैंने कर्नल साहबको इशारा किया। उन्होंने ब्रेक दबाया और जीप चल पड़ी।

"शाबाना, ज़रा यहाँ तो आना" चीखकर मेरे कहते ही वह दौड़ता हुआ गाड़ीके निकट आया। दस-दस रुपयेके तीन नोट उसको हाथमें थमाकर मैंने कहा, "यह लो ! उस्मानने दिये हैं।" मैंने उसके गालोंको छूकर और प्यारसे उसकी पीठ थपथपाकर कहा।

"लेकिन हुज़ूर – हुज़ूर, मैंने तो बार-बार आपसे अर्ज़ की थी कि रुपये-पैसोंका कोई ज़िक्र···"शाबाना कहने लगा लेकिन इसके पहले कि उसके मुँहसे निकले आगेके शब्द मेरे कानोंको सुनाई दें – तेज़ रफ़्तारसे निकलती हमारी जीप दूर तक चली गयी था।

श्रीनगरमें मैं आठ रोज़ रहा और बादमें दोबारा उड़ी जानेके लिए चल पड़ा। पिछले आठ दिनोंमें शाबाना और उसकी माँको उस्मानके मारे जानेका समाचार पहुँच गया होगा, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं था। उन दो मासूम बच्चोंके मुसकराते चेहरोंकी ओर जो अब दुःख-की परछाँहीसे स्याह पड़ गये होंगे – मैं देखना नहीं चाहता था। फिर भी उनकी सूरत दोबारा देखनेकी इच्छा मेरे दिलके किसी गहरे-से कोनेमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बार-बार उठ रही थी। मुझे लगता, दुश्मनसे उजाड़ दिये अपने प्यारे वतनकी तक़दीर दोबारा बनानेकी जो लालसा कश्मीरियोंके दिलमें जागृत हुई थी, उस लालसाका, उस एकताका, उस दुर्दम्य आशाका, उमंगोंका और हिम्मतका मधुर प्रतीक यदि कहीं होगा तो वह उन दो बालकोंकी मुखमुद्रामें है। उन दोनों लड़कोंसे मैं दोबारा एक बार मिलूँगा···ज़रूर मिलूँगा···

अब इतने दिनोंके बाद, जब भी कभी मुझे कश्मीरकी याद हो आती है, तब अलग-अलग मोरचोंपर, हिन्दुस्तानके सिपाहियोंकी जिस बहादुरीको मैंने देखा था, उसको या शेख़ अब्दुल्लाके व्याख्यानोंको उमड़ पड़नेवाली भी भीड़का मुझे अकसर स्मरण नहीं हो आता। लेकिन कश्मीर-का नाम सुनते ही, बारहमूलाकी चौकीपर अण्डे बेचनेवाले एक-दूसरे-को सगे भाईसे भी ज़्यादा चाहनेवाले, दिन-रात मेहनत-मज़दूरी कर, छपरी बनानेवाले, कुछ रुपये जुट जानेपर छोटी-सी दूकान करना चाहने-वाले, हर कामोंमें अपनी अन्धी अम्मीका हाथ बँटानेवाले वो दो मासूम लड़के मेरी आँखोंके सामने खड़े हो जाते हैं। डाकबँगलेके आहातेमें, चिलचिलाती धूपमें, पल्थी मारकर बैठे वे दोनों मुझे अब भी साफ़-साफ़ दिखाई देते हैं! "आप दोबारा एक सालके बाद यहाँ तशरीफ़ लाइए हुज़ूर! तब आप देखेंगे कि अबका बारहमूला शहर हमने किस तरह, दोबारा पहले-जैसा ही शानदार····ख़ूबसूरत····" उनके ये शब्द अब भी मेरे कानोंको साफ़-साफ़ सुनाई देते हैं···

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपन्यास

●

इशारा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इशारा

"जी, मैं बहुत कुछ कहना चाहता हूँ…"

अदालतमें दिये जानेवाले अपने बयानका प्रारम्भ इसी ढंगसे होगा इस विषयमे वासुदेवको तनिक भी सन्देह नहीं था। और इसीसे, हत्याके अभियोगपर, मुज़रिमके नाते जिस अदालतके सामने वह खड़ा रहेगा, और जब अदालत उससे पूछेगी, "क्या अपनी सफ़ाईमें तुम कुछ कहना चाहते हो?" तब अपने बयानमें वह क्या कहेगा। इसपर जब-जब वह सोचता, तब-तब यही वाक्य उसके मुँहसे अनजाने ही निकल जाता, और इसके बाद क्या कहा जाये इसपर वह दिल-ही-दिलमें सोचने लगता।

आज भी इस वाक्यके उच्चारणके अनन्तर, वह पल-भर रुक गया। एक दीवारसे दूसरी दीवार तक उसने चहलक़दमी की, और इसके बाद वहींपर ठिठककर इस ढंगसे वह आगे कहने लगा मानो अदालतमें अपना बयान दे रहा है।

"…मुझे अपराध स्वीकार है। पर हत्याके बाद मैंने भाग जानेकी चेष्टा नहीं की। पुलिसके सामने मैंने आत्मसमर्पण कर दिया था। मैं अपना अपराध किसी दशामें अस्वीकार करना नहीं चाहता था…अब भी नहीं चाहता। मैंने जो कुछ भी किया, उसके पहले उसके परिणामोंके विषयमें अच्छी तरह सोच लेनेके बाद ही किया। मुझे जो भी सज़ा दी जायेगी, उसे सहर्ष सहनेको मैं तैयार हूँ। मेरी अपनी श्रद्धा है कि ऐसा करनेसे मेरे हाथों समाजकी महान् सेवा ही होगी। मैंने हत्या महज़ इसलिए नहीं की कि मैं एक व्यक्तिके प्राण लेनेपर उतारू था। मैंने हत्या इसलिए की कि इसके द्वारा मैं समाजकी आँखें खोल सकूँ। जानता हूँ कि इस जुर्मपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुझे मृत्यु-दण्ड मिल सकता है। लेकिन मुझे इसका रंज नहीं है। मेरे तुच्छ प्राण चले जायें, पर मुझे विश्वास है कि इस मुक़दमेकी, और मेरे मृत्यु-दण्डकी कहानी समाजमें दोबारा प्राण फूँक देगी, अन्धे बने समाजकी आँखें अच्छी तरहसे खोल देगी। मेरी प्रार्थना है कि अदालत मेरा बयान ग़ौरसे सुन ले…"

वासुदेवकी विचार-श्रृंखला दोबारा टूट गयी। पल-भर वह ठिठक गया, और दोबारा कमरेमें चहलक़दमी करने लगा। एक बार अपनी परछाईंको सामनेकी दीवारपर बढ़ते, और दूसरी बार अपने एक-एक क़दमके साथ उसे छोटी होते वह देखता, तो एक बार अपनी पीठ-पीछेसे छोटे रूपसे बड़ा रूप धारण करते वह उसे दिखाई देती। बाहर मूसलधार वर्षा जारी थी। हवा भीषण रूपसे साँय-साँय कर रही थी। खिड़कियोंसे होकर वर्षाकी फुहार भीतर आ रही थी। हवाके थपेड़ोंके कारण खिड़कियोंपर लगे परदे अजीब ढंगसे लहरा रहे थे। दीवारपर कीलसे टँगा आईना डाँवाडोल हो रहा था। मेज़पर शीशेके पेपरवेटके नीचे रखे काग़ज़ फड़फड़ा रहे थे…लेकिन इन तमाम दृश्योंके बावजूद वासुदेव कल्पना कर सकता था कि इस वक़्त वह अदालतमें है! अभियुक्तके पिंजड़ेमें वह खड़ा है। उसके हाथोंमें मोटी-मोटी ठण्डी हथकड़ियाँ पड़ी हुई हैं। ऊँचे मंचपर कुरसीपर न्यायाधीश विराजमान हैं। जूरीके सदस्योंकी निगाहें उसीकी ओर लगी हैं। अदालतके उस कुछ अँधेरे-से कमरेमें लोगोंकी भीड़ उमड़ पड़ी है, और उनकी आपसमें चलनेवाली फुसफुसाहट उसे सुनाई दे रही है। उस भीड़में उसे पहचाननेवाले कई लोग उपस्थित हैं जो एक-दूसरेसे हैरानीके स्वरमें पूछ रहे हैं, "क्या इस वासुदेवने हत्या की? जो इतना ख़ुशमिज़ाज, इतना सहृदय है, जिसके चेहरेपर निरन्तर मुसकराहट थिरकती रहती है, जिसने कभी किसीसे शत्रुता करना तो दूर रहा, ईर्ष्या तक नहीं की – उसी वासुदेवने…?" उसके दोस्त उसकी ओर देख रहे हैं। उनकी निगाहोंमें हैरानी और हमदर्दी साफ़ झलक रही है। लेकिन आज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसे उनकी समवेदनाकी कोई आवश्यकता नहीं है। जिस समाजमें उसके ये मित्र और अन्य अनगिनत लोग अन्धे बनकर जोवन व्यतीत कर रहे हैं, उस समाजको घुन लगा है। इस ख़तरनाक बीमारीसे उसे बचानेके लिए उसने हत्या-जैसा नृशंस कर्म किया। वह क्या इसलिए कि लोग उसके प्रति समवेदना प्रकट करें, दया-दृष्टिसे उसकी ओर देखें, उसकी रिहाईके लिए प्रार्थना करें? मित्रोंकी निगाहोंकी ओर कृतज्ञताके भावसे देखनेकी आवश्यकता नहीं····अदालतमें वह फुसफुसाहट अबतक जारी ही है। अँधेरा बढ़ गया है, बत्तियाँ जलायी जा रही हैं। चपरासी तेज़ीके साथ इधरसे उधर दौड़ रहे हैं। अपना काला गाउन सँभालते हुए चलनेवाले वकीलोंके जूतोंकी चरमराहट अस्पष्ट-सी सुनाई दे रही है। मेज़ोंपर रखे काग़ज़ोंके पुलिन्दे उलटे-पुलटे जा रहे हैं····

अदालतका यह दृश्य वासुदेवकी आँखोंके सामने खड़ा हो गया। पिछले कई दिनोंसे यही दृश्य उसकी आँखोंको दिखाई दिया था। जब-जब दिलमें निश्चित की गयी इस हत्या और उसके परिणामोंपर वह सोचता तब-तब उसकी कल्पना अदालतके इस दृश्यको उसकी आँखोंके सामने खड़ा कर देती।

अदालतके यह पूछनेपर कि "मुज़रिम वासुदेव, क्या अपनी सफ़ाईमें तुम कुछ कहना चाहते हो?" वह कहेगा, "जी, मैं बहुत कुछ कहना चाहता हूँ।" अभियुक्तके कठघरेमें खड़ा होकर और अदालत तथा जूरीके सदस्योंको लक्ष्य कर उसे जो कुछ कहना है उसे कमरेमें चहलक़दमी करते हुए भाषणके समान दिल-ही-दिलमें वह कहता: "मेरी प्रार्थना है कि अदालत मेरा बयान ग़ौरसे सुन ले। मुझे जो कुछ कहना है उसे मैंने पहले ही लिख लिया है। नीलकण्ठकी हत्या करनेसे पहले ही मैंने यह सब लिख लिया है····मैं अदालतसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अपना लिखित बयान पढ़कर सुनानेकी इजाज़त दी जाये····" और इसके बाद उन तमाम बातोंको वह अदालतके सामने पढ़कर सुननेवाला था, जिन्हें उसने पहले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही लिपिबद्ध कर लिया है····

उसने दिलमें कई बार निश्चय कर लिया था कि उन तमाम बातोंको लिपिबद्ध कर लेना परम आवश्यक है। लेकिन अबतक वह ऐसा नहीं कर पाया था। पर आज वह उसका ज़रूर आरम्भ करेगा। लिखना शुरू कर देगा। हत्याका दिन निकट आ रहा था। सिर्फ़ दो ही दिन तो बचे हैं। नीलकण्ठ गाँव गया हुआ था। जिस दिन वह लौटनेवाला था, उसी दिन वासुदेव उसका काम तमाम कर देना चाहता था। गोली चलाकर, उसके अपराधोंकी उसे याद दिलाकर उससे अन्तिम बार भगवान्-का नाम लेनेको कहकर! बिम्बाका भी इसी तरह काम तमाम कर देनेके विचार कई बार उसके दिलमें उठे थे। परन्तु, इस विषयमें अबतक वह निश्चय नहीं कर पाया था। लेकिन नीलकण्ठकी हत्या कर डालनेका उसनें दृढ़ निश्चय कर लिया था। पापके कर्दममें लोटनेवाले और अपने साथ औरोंको भी इस मार्गका अनुसरण करनेपर मजबूर करनेवाले लोगोंके होश ठिकाने लानेका वह अन्तिम उपाय था। समाज हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, ऐसा माननेवाले लोगोंकी, और ऐसे लोगोंकी हरकतोंकी ओरसे आँखें मूँदकर बैठे रहनेवाले उदासीन समाजकी आँखें खोलनेका बस यही एक रास्ता था। नीलकण्ठकी हत्या करनेका उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था और दो ही दिनोंके बाद! जो कुछ लिखना है, इन्हीं दो दिनोंमें लिख डालना होगा! हवाके थपेड़ोंसे कैलेण्डरके काग़ज़ फड़फड़ा रहे थे, उस ओर उसका ध्यान गया····अब सिर्फ़ दो ही दिन बाक़ी थे। लेखन-कार्यमें बिलम्ब करना अब उचित नहीं था। वासुदेवने निश्चय कर लिया कि आज ही से वह अपनी दास्तान लिखने बैठ जायेगा····

सवेरेसे झड़ी-सी बँधो थी। अब रात हो चुकनेपर भी वह कम न हो पायी थी। लगातार बरसनेवाली वर्षाकी आवाज़ और हवाकी सरसराहट बराबर सुनाई दे रही थी। खिड़कियोंके परदोंमें हवा भर जानेके कारण हो जानेवाली दरारोंसे, रास्तेकी बत्तियोंके प्रकाशमें चमकनेवाली वर्षाकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बौछारें दृष्टिगोचर हो रही थीं। हलकी-हलकी फुहारें कमरेमें आ रही थीं....अब मेज़के पास बैठकर अपनी कहानी लिखनेका आरम्भ तुरन्त कर देना चाहिए। लेकिन मेज़के निकट जानेके बजाय वह खिड़कीके निकट गया। उसपर लगा परदा उसने अच्छी तरह एक ओर हटा दिया, और पानीकी फुहार और हवाके थपेड़ोंके बावजूद भी खिड़कीके जँगलेसे झुककर वह बाहर देखने लगा। उसके मुखपर ही नहीं, तमाम बदनपर पानीकी फुहारें पड़ीं। उसने हवाके तेज़ थपेड़ोंका अनुभव किया। वह स्पर्श उसे अतीव सुखद लगा। वह और भी झुका और बाहर देखने लगा....

रात काफ़ी हो चुकी थी। वर्षा अब भी कम नहीं हो पायी थी। लेकिन लोगोंके व्यवहार नित्यकी भाँति जारी थे। सामनेवाले ईरानीके होटलमें प्यालियाँ-तश्तरियाँ बज रही थीं। 'दो आना' 'छह आना' की आवाज़ें उठ रही थीं। पानीमें अध-भीगे, तथा भींगकर तर हुए लोग होटलमें घुस रहे थे, बैठ रहे थे, खा रहे थे, तेज़ स्वरमें बातचीत कर रहे थे, बीड़ियाँ फूंक रहे थे। फुटपाथपर ओलतियाँ टपक रही थीं। मुश्किलसे कमरेके नीचे हाथ-भर धोती पहने, बदनमें कुरता और उसपर रंगीन छींटकी जाकेट, सिरपर कानों तकको ढँकनेवाली अजीब-सी शक्लकी लाल बानातकी टोपी, के पहनावमें बसईकी ओरका एक बाग़वान हरे छिलकेवाले केलोंके दो बड़े-बड़े घौंद बाँसके दोनों सिरों-पर बाँधकर उसे बहँगीकी तरह कन्धेपर उठाये, फुटपाथपर, वर्षासे बचता हुआ तेज़ोसे जा रहा था। उस पारके नुक्कड़पर फ़ाउण्टेनपेन-रिपेअरकी बन्द दूकानकी तख्तीपर गडेरियाँ और मूँगफली बेचनेवाला बैठा था। उसके झाबेमें रखी ढिबरी धुँआ उगल रही थी। रास्तेसे किसी मोटरके सर्राटेसे चले जानेपर पानीकी छींटें उड़ रही थीं, और मोटरकी सामने-वाली बत्तियोंकी तेज़ रोशनीसे सड़कोंपर-के खड्डे दिखाई दे रहे थे। रातके अँधेरे और उजालेमें, वर्षा-पानीमें लोग खा-पी रहे थे, बातचीत कर रहे थे – दौड़-धूप कर रहे थे। मनुष्यकी जीवित रहनेकी चेष्टा जारी थी....

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जीवित रहनेकी क्रियाके इस अजीब रूपको देखते हुए वासुदेवको नीलकण्ठ-का स्मरण हो आया। नीलकण्ठके जीवनका अब वह अन्त कर देगा। दो ही दिनोंके बाद! ····क्यों? किसलिए? लेकिन यही सब तो उसे लिखना है। ····हाँ, आज ही लिखनेका आरम्भ कर देना चाहिए, अब ज़्यादा समय ही कहाँ बचा है?····सिर्फ़ दो ही दिन····वह खिड़कीसे हटा और अपनी मेज़के पास पहुँचा।

काँचका पेपरवेट उठाकर उसके नीचे रखे काग़ज़ उसने हाथमें उठा लिये। उन्हें तरतीबसे मेज़पर रखा, दावात खोली, फ़ाउण्टेनपेनमें स्याही भर ली। लिखनेके लिए वह नीचे झुका····

लेकिन लिखनेका प्रारम्भ करनेके बजाय, फ़ाउण्टेनपेन हाथमें पकड़े, उसकी नोककी ओर वह देखता ही रहा····

उसके मस्तिष्कमें विचारोंकी रेल-पेल-सी मच गयी थी। किस विचारसे होकर कौन-से नये विचारका उद्‌गम हो रहा है, यही उसकी समझमें नहीं आ रहा था। दिलकी तमाम बातें लिखनी हों तो कौन-सी बात पहले लिखनी चाहिए, और कौन-सी बादमें, इसका निश्चय करना उसके लिए अत्यन्त दुष्कर हो गया था। जिस दास्तानको वह अथसे लेकर इति तक लिपिबद्ध करना चाहता था, वह कई सालोंकी एक बड़ी लम्बी कहानी थी। उसमें छोटी-बड़ी कई घटनाएँ एक दूसरेमें उलझ गयी थीं, और उनमें-से किस घटनाका ज़िक्र पहले किया जाये इसका निश्चय करना बड़ा ही कठिन था। वासुदेव सिद्धहस्त लेखक नहीं था। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि लिखते हुए इस दास्तानका आरम्भ कैसे किया जाये। शुरूसे लेकर आज तककी घटी तमाम घटनाएँ उसकी आँखोंके सामने खड़ी थीं। वे उसे स्पष्ट रूपसे याद थीं। अनगिनत बार उन घटनाओंको उसने दिल-ही-दिलमें दोहराया था, और इसीसे नीलकण्ठ-की हत्या करनेका उसका विचार प्रतिपल दृढ़ होता गया था। लेकिन शायद बार-बार दोहरानेके कारण ही वर्षोंकी उन अनगिनत घटनाओंका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब एक तरहका संकलित सारांश उसके मनमें तैयार हो गया था। देर तक औटते रहनेके कारण किसी द्रव पदार्थका केवल अर्क ही बचता है, वही उन स्मृतियोंका हो चुका था। जब भी वे वासुदेवके दिलमें आतीं, पल-भरमें तमाम एक साथ आ जातीं। वह चंचल हो उठता और दिल-ही-दिलमें कहता, 'मुझे यह काम करना ही होगा।' शुरू-शुरूमें वह एक-एक घटनाका क्रमसे स्मरण करता लेकिन अब ऐसा करना उसके लिए असम्भव-सा बन गया था। तमाम स्मृतियाँ एक-दूसरीमें उलझ गयी थीं, और उनका एक लघु-पुंज-सा बन गया था। एक-एक स्मृतिकी विभिन्नता अब शेष नहीं रही थी⋯और इसीसे अब लिखने बैठनेपर एक घटनाको दूसरी घटनासे सुलझाकर, उसपर सोच-विचार करना वासुदेवके लिए सर्वथा असम्भव हो गया था। उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि कौन-सी घटना सर्वप्रथम काग़ज़पर लिखी जाये।

नीलकण्ठके जीवनका अन्त कर देनेका निश्चय उसने किसलिए किया इस विषयमें वह विस्तारपूर्वक लिखना चाहता था⋯निश्चय किसलिए किया? इस क्षण वह सिर्फ़ इतना ही बता सकता था कि अब और अधिक समय चुपचाप बैठना उसके लिए असम्भव हो गया था इसलिए वह नीलकण्ठको जानसे मार डालना चाहता था! खुली आँखोंसे इन बातोंको बरदाश्त करना अब असम्भव था इसलिए बिम्बाको उपदेशके पाठ पढ़ाकर वह हार गया था! नीलकण्ठको उसकी भलाईके बारेमें कई बार उसने कहा था, डाँटा-डपटा भी था। बिम्बाका पति डॉक्टर भूषण — वह तो शायद देवताका अवतार था। किसो बातपर जो उसे क्रोध आता हो। उनके दिलमें किसी तरहका क्रोध या उग्र भाव पैदा ही न होता। उसकी क्षमाशीलता तनिक भी नहीं डिगती थी। उसकी पत्नी बिम्बा दुराचारके मार्गपर चाहे कितनी भी आगे बढ़ जाये, पर अन्तमें एक-न-एक दिन वह सन्मार्गकी ओर लौटेगी ही — इस बारेमें जैसे उसे तनिक भी सन्देह नहीं था। वासुदेवके दिलमें कई बार आता कि भूषणके जैसा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रेमी, सीधा-सादा, सरलहृदयी पति पानेके कारण ही बिम्बा पतनके मार्गकी ओर तेज़ीसे अग्रसर होती गयी। उसके प्रथम दुराचारकी भनक पड़ते ही यदि भूषण उसके मुँहपर कसकर एक ही तमाचा जड़ देता तो शायद आगे चलकर वह अनीतिके मार्गका सदाके लिए त्याग कर देती। वासुदेवके दिलमें आता, बिम्बाका अपराध एक गुना तो उसे बिगाड़नेवाले नीलकण्ठका दस गुना और उसे एक शब्द तक न कहनेवाले भूषणका सौ गुना भयानक है! दुनियामें भूषण-जैसे पति भी हो सकते हैं, इसपर वासुदेव हैरान था। वह भूषणसे कहता, 'जिसे तुम प्यारका बरताव कहते हो वह प्यार नहीं, सरासर बेवक़ूफ़ी है! तुम्हारी शान्ति केवल कायरता है! तुम्हें क्रोध कैसे नहीं आता? मारे कोड़ोंके तुम बिम्बाकी खाल क्यों नहीं उधेड़ देते? भूषण उससे कहता, "मार-पीट या अत्याचारसे मनुष्यका हृदय परिवर्तन नहीं होता।" वह पूछता, "तब पापी मनुष्यमें सुधार कैसे सम्भव है?" भूषण हमेशाका निश्चित उत्तर देता, "क्षमासे, शान्ति-से, प्रेमसे!" भूषणकी यह विचार-प्रणाली सुनकर वासुदेवको उसपर तरस आता। भूषणकी क्षमाशीलतासे उसका जी ऊब गया था। उसे उसपर अब क्रोध आने लगा था। सुकुमार फूल-जैसी, बिम्बाकी नन्हीं-सी लड़की कुसुम! — उसकी ओर देखनेपर भूषणकी मूर्खता, बिम्बाका बेहूदा वाहियातपन और नीलकण्ठकी दुष्टता वासुदेवकी आँखोंको सहस्र गुना भीषण रूपमें दिखाई देतीं। उसे लगता, समाजमें प्रतिदिन बढ़नेवाली दुराचारकी प्रवृत्तियोंका चित्र सहसा महान् रूप धारण कर उसकी आँखोंके सामने नग्न रूपमें खड़ा हो गया है। आख़िर कुसुम तो ठहरी एक नन्हीं-सी निष्पाप बालिका! बिम्बाके दुराचारका उसे कैसे बोध होता! वह तो सिर्फ़ इतना ही जानती थी कि बिम्बा उसकी माँ है। लेकिन अन्य माताओं-जैसी उसकी माँ नहीं है। वह उसे नहीं चाहती, इस बातको उसने मानो बालकोंकी स्वाभाविक बुद्धिसे जान लिया था। उससे पूछनेपर कि, "तुम्हें तुम्हारी माँ अच्छी लगती है?" भौंहें तानकर,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिर हिलाकर वह कहती, "छी: मुझे माँ अच्छी नहीं लगती !" क्यों ?' ऐसा प्रश्न पूछनेपर वह और भी नाराज़ीका चेहरा बनाकर जवाब देती, "वह बहुत बुरी है !" उस अनजान बालिकाका यह कथन सुनकर वासुदेवका कलेजा मुँहको आ जाता, आत्मा हाहाकार कर उठती। किसी-की भी आँखें क्योंकर नहीं खुलतीं ? उसका दिल घृणासे भर जाता, क्रोधसे वह उन्मत्त हो उठता !

लगातार कई दिन उसने यह सब देखा था। बरदाश्त किया था, प्रतीक्षा की थी, और अब अधिक प्रतीक्षा करना उसके लिए असम्भव-सा हो गया था। इसका इलाज करना ही होगा। और उसकी दृढ़ धारणा हो चुकी थी कि अब इसका इलाज करनेवाला, बिना उसके और कोई हो नहीं सकता…

अब, इस क्षण वह इतना ही लिख सकता था कि "इसका इलाज करना ही होगा, और वह बिना मेरे और कोई नहीं कर सकता, इसका मुझे विश्वास हो चुका है, इसलिए –" बस ! तमाम क़िस्सेका यही सारांश था, और इसके अतिरिक्त इस समय वह और कुछ लिख नहीं सकता था।

लेकिन अदालतके सामने जो लिखित बयान पेश किया जायेगा उसमें क्या इतना ही लिख लेनेसे काम चल सकता है ? नहीं। यह पर्याप्त न होगा। वह चाहता था कि अदालत और दुनियापर यह क़िस्सा सम्पूर्ण रूपसे ज़ाहिर हो जाये। बिम्बा, भूषण और नीलकण्ठके चरित्रका एक-एक पहलू दुनियाके सामने स्पष्ट रूपसे आ जाये। बिम्बाके अध:पतनमें समाज भी किस तरह और कितनी मात्रामें दोषी है यह प्रकट हो जाये। इसी एक कामनासे तो दुनियाके सामने उन तमाम घटनाओंको वह विवरणके साथ रख देना चाहता है। बिम्बाके प्रति उसके दिलमें कौन-सी भावनाएँ थीं, वह उसे कितनी प्रिय थी और प्रिय होनेके कारण ही उसकी यह स्वैरता उसके लिए किस तरह असहनीय हो गयी थी। नीलकण्ठका और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसका साथ टूट जाये इसके लिए उसने कितनी कोशिशें की थीं, कितनी बार उसकी प्रार्थना-ख़ुशामद की थी, कितनी बार निर्भर्त्सना की थी, ये तमाम बातें वह समाजको बतला देना चाहता था···और इस कामके लिए इस कहानीका प्रारम्भसे लेकर अन्त तक, सिलसिलेवार सुनाना आवश्यक था। लेकिन पिछले कई वर्षोंकी जिन घटनाओंका वह अन्त कर देना चाहता था – नीलकण्ठके प्राण लेकर – उनमें-से किस घटनाको पहली माना जाये यही उसकी समझमें नहीं आ रहा था। जैसे टेढ़े-मेढ़े लपेटे हुए सूतकी पिण्डी सुलझानेके लिए हाथमें पकड़ें और किसी तरह उसका सिरा ही हाथ न आये, यही हाल उसका था। इस कथाका प्रारम्भ कैसे किया जाये इस समस्याने उसे उलझनमें डाल दिया था···फ़ाउण्टेनपेनकी नोककी ओर देखते हुए, देर तक वह निश्चल भावसे बैठा रहा···

एक बार उसने सोचा कि वह कुछ न लिखे। जो करनेका निश्चय किया है, कर डाले, और फाँसीपर लटक जाये। बस, क्या करना है अपनी रामकहानी लिखकर? ज़्यादासे ज़्यादा इतना ही लिख दिया जाये कि, "बिम्बा-जैसी नारी और नीलकण्ठ-जैसे पुरुषका किसी हालतमें समाजमें रहना खतरनाक है, इसीलिए मैंने नीककण्ठकी हत्या की"। सफ़ाईमें इतना ही कहा जाये···इस विचारसे उसने फ़ाउण्टेनपेनकी कैप बन्द कर दी। सामने रखे काग़ज़ एक ओर हटा दिये। लेकिन फिर उसने सोचा, ऐसा करना ठीक न होगा। उसके दिलमें नीलकण्ठको दण्ड देनेकी इच्छा जिस मात्रामें थी, उससे कहीं अधिक प्रबल रूपमें इच्छा थी समाजकी आँखें खोलनेकी। इसके लिए पूरी कहानी दुनियाको सुनाना परम आवश्यक है, और बिना लिखे हुए दुनिया उसे कैसे जान सकती थी? हर बात लिखकर रखनी चाहिए। आदिसे अन्त तक, सिलसिलेवार!···दूर हटाये काग़ज़ उसने अपने सामने खींच लिये। फ़ाउण्टेनपेनकी कैप दोबारा खोली। लिखनेका प्रारम्भ करनेके इरादेसे वह तेज़ीसे सोचने लगा। उसने दिलमें कहा, हाँ, नीलकण्ठ और बिम्बाके प्रथम मिलनको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही इस कहानीका प्रारम्भ कहना चाहिए। उसे जो भी कुछ लिखना है, उसका प्रारम्भ वहींसे किया जाये। लेकिन दोबारा उसने सोचा, छीः इसे वास्तविक प्रारम्भ नहीं कहा जा सकता। बिम्बाका ब्याह भूषण-जैसे व्यक्तिसे न होता तो भविष्यकी घटनाएँ ही क्यों घटतीं? उस ब्याहमें ही भविष्यकी अनर्थकारी घटनाओंका बीज था।''''उस ब्याहमें? या बिम्बाके स्वभावमें? जिस परिस्थितिने बिम्बाके स्वभावका गठन किया, उस परिस्थितिमें यदि बिम्बाके पिता फँसे न रहते तो क्या उसका स्वभाव ऐसा बनता? उसके पिता एक विद्वान्, विख्यात लेकिन निर्धन कीर्तनकार न होते तो? उनकी ममताकी छाँहमें बिम्बा दीर्घ काल रह पाती तो? उनकी जीवन-यात्रा अचानक समाप्त न हो जाती तो?

मालाका एक-एक मनका खींचकर नीचे सरकाया जाये, उसी तरह एक-एक घटनाका स्मरण करते हुए वासुदेव अतीतके चलचित्र देखने लगा, कितनी अनगिनत घटनाएँ कार्य-कारण भावसे एक सूत्रमें गुँथी हुई थीं। उन दृश्योंको देखते हुए वह हैरान रह गया। उसने सोचा, मनुष्यके जीवनमें जितनी भी घटनाएँ घटती हैं, संयोगवश ही घटती हैं। इन विभिन्न संयोगोंमें कोई ख़ास सुसम्बद्धता दिखाई न देनेपर भी उनमें एक क्रम ज़रूर होता है। प्रत्येक घटना किसी अन्य घटनासे निबद्ध होती है। संयोगोंकी एक श्रृंखला तैयार हो जाती है। उसकी हर कड़ीको हम एक-एक व्यक्तिके जीवनके रूपमें पहचानते हैं। अनगिनत व्यक्तियोंके जीवन एक दूसरेके जीवनमें गूँथे जाते हैं। बिम्बा उसकी माँ, उसके पिता, भूषण, नीलकण्ठ – इस तरह कई व्यक्तियोंके जीवनकी कड़ियाँ एक दूसरीमें गूँथी गयी थीं। वासुदेवने दिलमें कहा, इस श्रृंखलामें मेरे जीवनकी भी एक कड़ी है ही। बिम्बाके प्रति मेरे दिलमें कुछ विशिष्ट भावनाएँ विद्यमान थीं और परिवर्तित रूपमें अब भी हैं। इसीलिए न मैं नीलकण्ठकी हत्या करना चाहता हूँ? तब एक दूसरीमें गुँथी इन तमाम कड़ियोंको छुड़ाकर अलग करना होगा। तभी इस कहानीके प्रारम्भका पता चलेगा और वह सब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ बता सकेगा, लिख सकेगा····कौन-सी कड़ी ? कौन-सा प्रारम्भ ? जिस विचित्र, दीर्घ कहानीका अन्त नीलकण्ठकी हत्यामें होनेवाला है उसका वास्तविक प्रारम्भ कहाँपर हुआ ?····कहाँपर ?····कब····कैसे ?····

वासुदेव कुछ देर सोचता रहा और बादमें उसने लिखनेका प्रारम्भ किया। उसने तेज़ीसे तीन-चार काग़ज़ लिख डाले, और बादमें वह कुछ देरके लिए रुक गया। उठकर खिड़कीके निकट गया। हवाकी साँय-साँय अब बन्द हो चुकी थी। वर्षाका ज़ोर भी हलका पड़ गया था। पेड़ोंके पत्तोंसे चूनेवाली बूँदोंके समान, पानीकी बूँदें कुछ अन्तर छोड़कर टपक रही थीं। सड़कोंपर यातायातका परिमाण कम हो चुका था। सामनेवाले ईरानीके होटलमें लोगोंके पैरोंमें लगकर आये कीचड़से तमाम फ़र्श लिप गया था। कुरसियोंपर आदमी नहीं थे। सिर्फ़ एक ही कुरसीपर एक बूढ़ा मुसलमान गाड़ीवान डबल रोटीके टुकड़े चायमें भिगोकर खा रहा था। उसकी गाड़ी बाहर सड़कपर खड़ी थी। गाड़ीका घोड़ा पानीमें भींगकर, नीचे सिर झुकाये खड़ा था। गंडेरीवाला अब उठकर चला गया था। सड़कपर और चारों ओर नीरव शान्ति छा गयी थी। रास्तेपर बने छोटे-मोटे खड्डोंके पानीमें एकाध बूँद भी टपक पड़नेपर हलचल-सी पैदा हो रही थी····वासुदेव कुछ देर खिड़कीके बाहर देखता खड़ा रहा। इसके बाद वह दोबारा मेज़के निकट लौट आया और कुरसीपर बैठ गया। अबतक क्या लिखा है उसे पढ़नेके लिए उसने काग़ज़ हाथमें उठा लिये। वह पढ़ने लगा····

"—नीलकण्ठकी हत्या मैंने किसलिए की इसे मैं विस्तारपूर्वक बताना चाहता हूँ। इसके लिए बिम्बाकी सम्पूर्ण जीवनीका हाल बताना ज़रूरी है। उसका और मेरा प्रथम परिचय हुआ तब उसकी आयु लगभग उन्नीस सालकी थी। उन दिनों उसके पिताका देहान्त हो चुका था। उनकी कई बातें बिम्बा मुझको बताया करती। कभी-कभी मुझे ऐसा प्रतीत होता कि वह अपने पितासे प्रेम नहीं करती थी। लेकिन उससे बातचीत करते हुए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कई बार मुझे ऐसा भी प्रतीत होता कि मेरा वह सन्देह सर्वथा निर्मूल है। जिस ग़रीबीमें पलकर वह छोटीसे बड़ी हुई थी, उस ग़रीबीसे उसे बेहद नफ़रत थी। ग़रीब माता-पिताके बच्चे अपनी पसन्दके कपड़े पहन नहीं सकते; उच्च शिक्षा तो दूर ही रही, ज़्यादा पढ़-लिख भी नहीं पाते। अपने दिलकी कोई उमंग पूरी नहीं कर पाते। उसे लगता, यह कैसा घोर अन्याय है! बिलकुल बचपनमें उसे बात-बातमें अपना मन किस तरह मारना पड़ा इसका वर्णन वह सुनाती। किस चीज़के लिए उसके ज़िद करनेपर उसे मनानेके लिए उसके पिता उससे कहते, "बिम्वा, हम लोग रईस थोड़े ही हैं? हम लोग ग़रीब हैं बिटिया! "वह पूछती, "हम लोग किसलिए रईस नहीं हो सकते? किसने हमें ग़रीब बनाया? उसके इन प्रश्नोंको सुनकर उसके पिता चुप हो जाते और तब वह दिल-ही-दिलमें और भी अधिक झल्ला पड़ती। अपने पिताका ग़रीबीमें ख़ुशी माननेको तैयार हो जाना, और उनका वैसी ही ख़ुशी माननेका उसे उपदेश करना उसकी झल्लाहटको और भी बढ़ा देता। वह क्रोधित हो उठती। पिताके बारेमें कटु शब्दोंका प्रयोग करती। उसकी ये बातें सुनकर मुझे ऐसा प्रतीत होता कि उसने अपने पितासे कभी प्रेम किया ही नहीं। लेकिन ग़रीबीके विषयको छोड़ देनेपर और अपने बाल्य-कालके संस्मरण सुनाने लगनेपर बिम्बा अपने पिताके बारेमें बिलकुल निराले ही ढंगसे बातचीत करती। उनकी प्रगाढ़ विद्वत्ता-के बारेमें उसे कितना आदर था यह उसकी बात-चीतसे स्पष्ट रूपसे प्रकट हो जाता।

उनके कीर्तनोंमें कितना रंग चढ़ता था इसका वह रसीले शब्दोंमें वर्णन सुनाती। उनकी आवाज़में कैसी ग़ज़बकी मिठास थी इसका बयान करते हुए उसकी ज़बान न थकती थी। जब वह छोटी थी तब उसकी माँ उसे अपने साथ लेकर किसी दिन कीर्तन सुनने चली जाती थी। पर तब माँके निकट बैठना छोड़कर वह हारमोनियम बजानेवालेकी गोदमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैठनेको ज़िद करती। बीच ही में उसकी गोदसे उठकर वह पिताके निकट जाती। भजन सुनाते हुए वे आगे-पीछे क़दम बढ़ाते तब उनकी टाँगोंके बीच लड़खड़ाती। उनके पीछे खड़े संगातीसे कहती, "मुझे गोदमें उठा लो! मैं मँजीरें बजाऊँगी" लाख मनानेपर भी वह न मानती, और इसीसे प्रायः उसकी माँ उसे लेकर घरपर ही रहती। इसके बाद वह पिताके घर लौट आनेकी ओर आँखें बिछाये बैठी रहती। पिताके घर लौटनेपर अपनेको मिसरीकी पुड़िया, फूलोंकी माला और गजरे मिलेंगे इस विषयमें उसके दिलमें तनिक भी सन्देह नहीं रहता। पड़ोसमें रहनेवाले परिवारोंमें-से किसी भी छोटी लड़कीको उसके पिताकी ओरसे माला नहीं मिलती। तमाम लड़कियाँ उसके पास आतीं और फूलोंके गजरे बनाकर सिरमें पहननेके लिए उन्हें फूल देते हुए छोटी बिम्बाका हृदय आत्मगौरव तथा अभिमानसे लबालब भर जाता। अपनी ग़रीबीका उस क्षणके लिए उसे जैसे सम्पूर्णतया विस्मरण हो जाता। छोटी बिम्बा घरमें उनकी राह देख रही होगी इसे केशवजी महाराज अच्छी तरह जानते। कीर्तन समाप्त होते ही वे अधीर भावसे घर लौटते। आँगनसे ही 'बिम्बा' कहकर वे आवाज देते। उस आवाज़में उनकी वाणीकी समूची स्वाभाविक मधुरिमा समा जाती। उन्हें बिम्बासे कितना असीम स्नेह था, और वह उन्हें कितनी प्रिय थी इसका शब्दोंमें वर्णन करना सर्वथा असम्भव था। इसका अनुभव करनेके लिए तो उनके मुखसे निकली अतीव माधुरीमें सनी, मृदु पुकार 'बिम्ब्रा' को प्रत्यक्ष रूपसे सुनना ही आवश्यक था 'बिम्बा'!....

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकांकिका

•

आग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आग

[रायबहादुर सावले वकीलकी किसी नामवर वकीलकी कोठी-जैसी सजी-सजायी बैठक। रायबहादुरकी छोटी लड़की अंजनी कमरेके बीचोबीच रखी मेज़की दराज़में किसी चीज़की तलाशमें है। आयुमें लगभग सोलह-सत्रह सालकी। आँखें सुन्दर। एक ओर वह कुछ ढूँढ़ रही है और दूसरी ओर मुँहसे 'नहीं रखनी-नहीं रखनी, सरकार ज़ालिम नहीं रखनी' इन पंक्तियोंको गुनगुनाती है। गीतके तालपर अनजाने ही उसके हाथों मेज़की दराज़ खोली बन्द की जा रही है। इसका विश्वास हो जानेपर कि उसकी इच्छित वस्तु किसी दराज़में नहीं है, मेज़की अन्तिम दराज़ वह कुछ क्रोधसे बन्द करती है और बैठकके कमरेकी बायीं ओर दिखाई दे रहे कमरेके खुले दरवाज़ेकी ओर देखकर अपनी बड़ी बहनको ज़ोरसे आवाज़ देती है।]

अंजनी : दीदी, ओ मीरा दीदी –

मीरा : [भीतरसे] क्या कहती हो ?

अंजनी : यहाँ भी नहीं है।

मीरा : [भीतरसे] तुम तो निरी गँवार हो ! बिलकुल नीचेवाली दराज़में होगी। ठीकसे देखो !

अंजनी : ऊपर-नीचेवाली सभी दराज़ छान मारी ! ना भई, मुझे नहीं मिलती !

मीरा : [भीतरसे] सचमुच तुम गँवार हो !

अंजनी : अच्छा अच्छा, मैं गँवार ही सही। तुम तो बड़ी अक़्लमन्द हो न ? तब भीतरसे यहाँ आकर ज़रा अपनी होशियारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिखलाओ और ढूँढ़ निकालो ! दीदी, सुना नहीं तुमने ? ज़रा आओ न यहाँ ! [यह कहते हुए मेज़से दूर होकर वह कमरेकी ओर जाने लगती है ।]

मीरा : [कमरेसे बाहर आते हुए] मैं तो जानती ही थी कि अन्तमें हमारी अंजनी बहन मुझे बुलाकर ही रहेगी ।

अंजनी : और यह तो मैं भी जानती थी कि अन्तमें मेरे 'नहीं मिल रही है' कहनेपर हमारी मीरा दीदी यह उलाहना देकर ही रहेगी । अब तुम ही देख लो, वह किसी दराज़में है भी ? [मीरा मेज़के निकट जाकर एक-एक दराज़ खोलकर देखती है उसके निकट खड़ी रहकर अंजनी दोबारा 'नहीं रखनी-नहीं रखनी' गुनगुनाने लगती है । उसके मुँहसे यह सुनते ही मीरा भी गानेका मोह टाल नहीं सकती । उनकी खोज जारी ही है, तभी रायसाहबका मुन्शी बापू-जी घबराया-सा प्रवेश करता है । उसके आगमनकी ओर दोनों बहनोंका ध्यान नहीं है । 'मीरा दीदी' 'अंजनी बहन' कहकर उनका ध्यान आकृष्ट करनेकी चेष्टा करने-पर भी वे अपनी ही धुनमें रहती हैं । अन्तमें वह मेज़-के बिलकुल निकट जाकर, तालियाँ बजाकर आवाज़ देता है ।]

अंजनी : कौन ? मुन्शीजी ? मैं तो डर गयी ।

मीरा : ओह, मुन्शीजी ! आप बिलकुल ठीक समयपर आ पहुँचे । देखिए न, कितनी कोशिश की लेकिन हम दोनोंको मिल नहीं रही है । अब आप ही ढूँढ़ दीजिए ।

मुन्शीजी : लेकिन क्या ?

मीरा : अजी, क़ैंची चाहिए हमें क़ैंची !

मुन्शीजी : क़ैंची ? क़ैंची किसलिए ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मीरा : हमें सुनहले काग़ज़के अक्षर काटने हैं। आज दस बजे बीड़ीके कारखानोंमें काम करनेवाली मज़दूर स्त्रियोंका जुलूस हमें निकालना है। जानते हैं न ? यह तमाम औरतें हड़तालपर हैं। 'पूँजीशाही नष्ट कीजिए' ये अक्षर काट-कर हमें लाल कपड़ेपर चिपकाने हैं। पिताजीकी मेज़में हमेशा क़ैंची रहती है इसलिए तमाम दराज़ें छान मारीं, लेकिन कम्बख्त मिल ही नहीं रही है। कहाँ रखी है ? अब दीजिए मुन्शीजी, आप ही ढूँढ़कर !

अंजनी : और मुन्शीजी, अक्षर भी आप ही काट दीजिए। मुन्शीजी, आपकी लिखावट बड़ी सुन्दर है। पिताजी हमेशा कहा करते हैं कि हमारे मुन्शीजीकी लिखावट···

मीरा : हाँ मुन्शीजी, दीजिए न अक्षर काटकर।

मुन्शीजी : मैं ? यह असम्भव है।

मीरा : क्या हमारी इतनी-सी बात भी नहीं मानेंगे ? लाल कपड़ा देकर जिस तरह आपने हमारी ज़रूरत पूरी की, उसी तरह अब····

मुन्शीजी : कैसे लाल कपड़ा ? लाल कपड़ा देकर मैंने आपकी ज़रूरत पूरी की ? कब ? कैसे ?

मीरा : आप नहीं जानते लेकिन सचमुच आपने हमें लाल कपड़ा दिया है। क्यों अंजनी ?

[दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं]

मुन्शीजी : मैंने आपको लाल कपड़ा दिया ? आप क्या कहती हैं ? अंजनी बहन, आप तो बस हँस रही हैं ! कुछ बताइए भी।

अंजनी : मुन्शीजी, आपका लाल साफ़ा है न, मेरा मतलब है, है नहीं, था, पुराना हो जानेपर भी आप उसे बदलना नहीं चाहते थे। उसे काटकर हमने उसका झण्डा बनाया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[दोनों खिलखिलाकर हँसती हैं ।]

सुन्शीजी : मेरा साफ़ा फाड़ डाला? राम, राम! अब तो हद हो गयी। हाय मेरा साफ़ा।

मीरा : इतना दुःख करनेकी कोई ज़रूरत नहीं मुन्शीजी ? आपका साफ़ा तो पेन्शनके क़ाबिल हो चुका था। बेचारेको अच्छी गति मिल गयी।

अंजनी : तभी तो कहती हूँ कि जिस तरह आपने लाल कपड़ेकी हमारी ज़रूरत पूरी कर दी उसी तरह अब क़ैंची लेकर आपको हमें अक्षर काट देने होंगे।

मीरा : और सुनिए मुन्शीजी, अक्षर सुन्दर होने चाहिए और हाँ, 'पूँजीशाही' का 'शा' शकरपारेका 'श' होगा। कहीं षट्कोणका 'ष' मत बनाना, समझे ?

मुन्शीजी : लेकिन मैंने यह कब कहा कि मैं काट दूँगा !

मीरा : नहीं मुन्शीजी, यह काम आपको करना ही होगा।

अंजनी : हम आपकी एक न सुनेंगी !

[दोनों उन्हें दोनों ओरसे पकड़ लेती हैं ।]

मुन्शीजी : यह सब आप लोग क्या कर रही हैं ? क्या आप चाहती हैं कि वकील साहब मुझे नौकरीसे निकाल दें ?

मीरा : लेकिन मुन्शीजी, आपने हमें मदद दी यह पिताजी कैसे जान पायेंगे ? हम उन्हें बतायेंगे थोड़े ही !

अंजनी : पिताजीको बम्बईसे लौटनेमें अभी और चार दिन लगेंगे !

मुन्शीजी : नहीं, देवीजी, नहीं ! यह आपका खयाल ग़लत है ! रायबहादुर तो आज सवेरे ही बम्बईसे लौट आये हैं।

मीरा : एँ ! क्या कहते हैं आप ?

अंजनी : उई माँ ! पिताजी लौट आये ? सचमुच मुन्शीजी ?

मुन्शीजी : झूठ थोड़े ही कह रहा हूँ। नाश्ता कर चुके, हजामत बनायी,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस वक़्त गुसलखानेमें नहा रहे हैं और कुछ ही मिनिटमें यहाँ आ जायेंगे। मैं आप दोनोंके पैरों पड़ता हूँ। आप दोनों ही कुछ देरके लिए उनके सामने न आइए! क्योंकि अभी-अभी एक बात ऐसी हुई है जिसे सुनकर वे बुरी तरह बिगड़ पड़ेंगे।

मीरा : अरे! क्या बात है मुन्शीजी?

मुन्शीजी : बात यह है कि उनकी ख़ास पसन्दकी बीड़ियोंमें-से घरमें एक भी बची नहीं है, न वह बीड़ियाँ आजकल बाज़ारमें कहीं मिल रही हैं। फिर भी मैंने रामूको बाज़ार दौड़ाया है। लेकिन मुझे डर है कि कहीं उसे ख़ाली हाथ न लौटना पड़े।

रामू : [आकर] मुन्शीजी····

मुन्शीजी : क्या ख़बर है? मिल गयी?

रामू : नहीं मुन्शीजी! जान पड़ता है कि अब तो हड़तालका यह मामला ख़ूब रंग जमायेगा। शायद आज भी इन बीड़ीवालियोंका बहुत बड़ा जुलूस निकलनेवाला है। कहिए मुन्शीजी, है न बढ़िया समाचार!

मुन्शीजी : तुम तो बस रामू अक़्लके पीछे लट्ठ लिये दौड़ते हो। मैंने तुम्हें क्या लानेके लिए बाज़ार भेजा था। बढ़िया बीड़ी या बढ़िया समाचार! कमसे कम चार-पाँच सौ तो ले आते!

रामू : चार-पाँच सौ! आप तो चार-पाँच सौकी कह रहे हैं और वहाँ बीड़ीका एक जला टुकड़ा तक नहीं मिल रहा है। तमाम दूकानें छान मारीं।

मुन्शीजी : अच्छा-अच्छा, रहने दो! तुमसे भी कोई काम बन सकता है? जाओ [रामूका प्रस्थान] अब बीड़ी न मिलनेपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वकील साहब आगबबूला हो उठेंगे और तब न जाने क्या-क्या सुनायेंगे ! आज किसीकी खैर नहीं है ! [**मीरा और अंजनी हँस पड़ती हैं**] और जब वे सुनेंगे कि आप दोनों इस हड़तालमें····मैं हाथ जोड़ता हूँ, इस वक़्त आप दोनों यहाँसे चले जायें ।

मीरा : पहले यह बतलाइए कि क़ैंची कहाँ रखी है ?

मुन्शीजी : अरे वहीं मेज़पर तो पड़ी है ! क़ैंची रखी है यहाँ आँखोंके सामने, और आप ढूँढ़ रही हैं मेज़की दराज़में ! मिलती कैसे ?

अंजनी : अरे ! दीदी, देखो न, क़ैंची तो यहीं पड़ी है । भला क़ैंची भी कहीं इस तरह रखी जाती है ? अच्छा, मुन्शीजी धन्यवाद !

[**दोनों हँसती हुई कमरेकी ओर दौड़ पड़ती हैं ।**]

मुन्शीजी : कैसी अजीब लड़कियाँ हैं ! आँखोंके सामने रखी चीज़ तो इन्हें दिखाई नहीं देती और चली हैं मज़दूर स्त्रियोंकी लीडरी करने । [**वकील साहब प्रवेश करते हैं और बीचवाली बड़ी मेज़के सामने कुरसीपर बैठकर आवश्यक काग़ज़ात देखते हैं । उन्हें पढ़ते हुए डिब्बेसे एक बीड़ी निकालकर मुँहमें लेते हैं । उसे सुलगाते हैं और कश लगानेके बाद नाराज़ीकी मुद्रा बनाकर उसे ऐशट्रेमें फेंक देते हैं । मुन्शीजीसे बातचीत करते हुए उनका यही क्रम जारी है ।**]

रायबहादुर : क्यों मुन्शीजी, डायरी देखी, आजकी तारीख़में कितने मुक़दमे हैं ?

मुन्शीजी : चार साहब !

रायबहादुर : कौन-से ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुन्शीजी : पहला तो है नम्बर ३२६ वाला।

रायबहादुर : कौन-सा मुक़दमा हैं ?

मुन्शीजी : वे हमारे नरसप्पा सेठ ! बीड़ीके कारखानेके मालिक –

रायबहादुर : अच्छा !

मुन्शीजी : उन्हींके कारखानेमें काम करनेवाली अम्बू नामकी एक मज़दूर स्त्रीने उनपर मारपीटका मुक़दमा चलाया है। आप मुद्दालेहकी ओरसे मुक़दमा चलायेंगे।

रायबहादुर : बेशक ! हम तो हमेशा मालिकोंके पक्षमें रहते हैं। ये बीड़ी बनानेवाली औरतें वास्तवमें बड़ी बदतमीज़ होती हैं।

मुन्शीजी : होती तो हैं !

रायबहादुर : खैर, इसके बाद दूसरा मुक़दमा किसका है ? लेकिन मुन्शीजी, क्या बात है जो आज बीड़ीमें मज़ा नहीं आ रहा है !

मुन्शीजी : [अपने-आपसे] बाप रे बाप ! अब तो खैर नहीं ! [प्रकट] मज़ा नहीं आ रहा है ? मेरे ख़यालसे तो साहब सफ़रकी थकानकी वजहसे आपके मुँहका ज़ायक़ा कुछ बिगड़ गया है !

रायबहादुर : यह कैसे हो सकता है ? तुम तो उलटी-सीधी हाँकते हो। नहीं, नहीं ! यह हमारी हमेशाकी खास बीड़ी नहीं है।

मुन्शीजी : यह कैसे हो सकता है ? बीड़ी तो वही है जो आप हमेशा पीते हैं।

रायबहादुर : नहीं मुन्शीजी नहीं ! दूसरा बण्डल निकालो।

मुन्शीजी : बण्डल तो साहब एक भी नहीं बचा है।

रायबहादुर : नहीं बचा ? तब रामूको झट्से भेज दो। अरे ! तुम अब-तक यहीं खड़े हो ? देरी न करो मुन्शीजी ? पहले रामूको भेज दो। वरना तुम भूल जाओगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुन्शीजी : भूलूँगा कैसे साहब ? लेकिन बात यह है कि•• मेरा मतलब-बात यह है कि····

रायबहादुर : तुम्हारे मतलबसे हमें कोई मतलब नहीं। हम इसी वक़्त अपनी हमेशाकी खास बीड़ी चाहते हैं। कहाँसे उठा लायी यह बीड़ियाँ ? इन्हें उठाकर चूल्हेमें झोंको।

मुन्शीजी : जो हुक़्म। लेकिन मैं कहना चाहता था साहब, कि जब-तक बाज़ारसे बीड़ी नहीं आती, तबतक आप सिगरेटके एक दो कश लगायें। कल ही पम्पू सेठ आपके लिए सिगरेट-का यह डिब्बा दे गये हैं। [मेज़की दराज़से एक डिब्बा निकालकर रायबहादुर साहबके सामने रखते हैं।] पम्पू सेठ इन सिगरेटोंकी बड़ी तारीफ़ कर रहे थे। कहते थे बढ़ियासे बढ़िया सिगरेटोंमें-से ये सिगरेट हैं।

रायबहादुर : कितना भी बढ़िया रहे, सिगरेट हमारे किस कामकी !

मुन्शीजी : लेकिन क्या साहब आप हमेशाकी, बीड़ी चाहते हैं ?

रायबहादुर : हाँ, वही, हमेशाकी खास बीड़ी !

मुन्शीजी : तब तो आपको प्रतीक्षा करनी होगी।

रायबहादुर : कितनी देर ? पाँच मिनिट !

मुन्शीजी : भगवान् जाने ! शायद पाँच दिन भी लग जायें।

रायबहादुर : रामूको भेजकर बाज़ारसे बीड़ी मँगवानेमें पाँच दिन लग सकते हैं ? मुन्शीजी, क्या बकते हो ?

मुन्शीजी : बक नहीं रहा हूँ साहब !

रायबहादुर : तब क्या बात है ?

मुन्शीजी : हड़ताल !

रायबहादुर : कैसी हड़ताल ?

मुन्शीजी : बीड़ी बनानेवाली मज़दूर औरतोंकी !

राय० : क्या कहते हो !

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुन्शीजी : जी ! बीड़ी बनानेवाली औरतोंने कामपर जाना बन्द कर दिया है ! कारखानोंपर ताले पड़ गये हैं । बाज़ारमें पुराना माल खत्म हो चुका है । किसी भी क़िस्मकी बीड़ी, किसी दामपर कहीं मिल नहीं रही है ।

राय० : तब यह क्यों नहीं कहते कि प्रलयकाल ही आ चुका है । कोई भला आदमी बीड़ी तक न पी पाये इससे बढ़कर समाजका घोर पतन और क्या हो सकता है ? औरतें हड़तालपर गयीं ? एक-एक औरतकी खाल उधेड़कर उन्हें कामपर क्यों नहीं लाया जाता !

मुन्शी० : कितनोंकी खाल उधेड़ी जाये साहब ! दस पाँच होतीं तो बात और थी । ये तो हैं पूरी डेढ़ हज़ार ।

राय० : तो क्या हुआ ! आखिर हैं तो औरतें ही ! ये कारखानोंके मालिक भी कैसे मर्द हैं । ये औरतें हड़ताल करती हैं और मर्द हाथोंमें चूड़ियाँ पहने चुपचाप उन्हें हड़ताल करते देख रहे हैं ? ये लोग क्यों नहीं आगे बढ़ते ?

रामू : [**भीतर आकर**] आपसे मिलना चाहते हैं ?

राय० : कौन हैं ?

रामू : नरसाप्पा सेठ ! बीड़ीके कारख़ानेके मालिक ।

राय० : [**रामूके पीछे ही नरसाप्पा सेठको आते देख उनकी ओर देखकर**] आइए, आइए सेठजी ! अभी-अभी हम आप ही को याद कर रहे थे । लेकिन बात क्या है सेठजी ? किसी बूढ़े-जैसे छड़ी टेककर आप कबसे चलने लगे ?

नरसाप्पा : हम लोगोंकी तो कमर ही टूट गयी रायबहादुर साहब ! इन हड़तालोंने सचमुच हमारी कमर ही तोड़ डाली । हे भगवान् [**हिम्मत-हारे-जैसे कुरसीपर बैठ जाते हैं ।**]

राय० : आप तो इतने घबड़ा गये हैं कि मानो आपपर आसमान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टूट पड़ा हो। इन गँवार औरतोंकी हड़तालके आगे आप इतने बड़े कारख़ानेके मालिक हार मान गये ?

नर० : सचमुच मैं तो हार मान गया। भले-बुरे सभी उपाय किये लेकिन कोई फ़ायदा नहीं। अब तो बिना इन औरतोंकी माँग पूरी किये –

राय० : आख़िर इनकी माँगें क्या हैं ?

नर० : ये औरतें तो हमें बरबाद कर देनेपर तुल गयी हैं। कहती हैं कि हज़ार बीड़ीकी सात आने मज़दूरी दी जाये।

राय० : अभी आप क्या देते हैं ?

नर० : पाँच आने ! पूरे बीस पैसे !

राय० : ओह ! तब तो काफ़ी है। अर्थशास्त्रका तो यह कहना है कि हर भारतीय मज़दूरका रोज़का खर्च छह पैसेसे ज़्यादा नहीं होना चाहिए।

नर० : अब आप ही इन्साफ़ कीजिए रायबहादुर ! उनकी एक माँग और है। वह यह कि मज़दूर स्त्रीके जच्चापनमें उसे घर बैठे भत्ता दिया जाये। सुना आपने ? किसकी करनी और किसकी भरनी !

राय० : अरे ! कैसी उद्दण्ड और निर्लज्ज हो गयी हैं ये औरतें। और क्या कहती हैं ?

नर० : कहती हैं कि धर्मादाके नामपर पाई-पैसा जो कुछ भी उनकी मज़दूरीसे काट लिया जाता है, अबसे न काटा जाये। सच बात तो यह है रायसाहब, कि धर्मपर लोगों-की श्रद्धा ही न रही। घोर कलजुग आ गया।

राय० : हाँ ! सच ही घोर कलजुग आ गया है। धर्म नष्ट हो चुका लेकिन मेरी समझमें नहीं आ रहा है कि आपने इन मज़दूर औरतोंकी हिम्मत इतनी कैसे होने दी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नर० : नहीं रायबहादुर, हमने उनकी हिम्मत नहीं होने दी। उन्हें बहकानेवाले और लोग जो हैं !

राय० : कौन हैं ये लोग ?

नर० : दूरके नहीं, ये लोग तो अपने ही घरके लोग हैं। लेकिन अब आपसे किसलिए छिपाऊँ। इस हड़तालकी नेतागिरी करनेवाले लोग आप ही के घरके लोग हैं।

राय० : मेरे घरके लोग ? कौन है वह कम्बख़्त ? कहीं हमारा नौकर रामू तो नहीं ? या कहीं हमारे मुन्शीजी ? ओह ! मुन्शीजी···

मुन्शी० : [**हाथ जोड़कर**] यह तो मुझपर सरासर ज़ुल्म हो रहा है साहब ! इन वाहियात कामोंमें मैं क्योंकर पड़ने लगा ? क्यों सेठजी ? मुझ ग़रीबपर यह तोहमत····

नर० : नहीं नहीं साहब ! मेरा मतलब न तो मुन्शीजीसे था और न ही रामूसे।

राय० : तब कौन लोग ? बतलाइए !

नर० : आपकी दोनों सुपुत्रियाँ। मीरा बहन और अंजनी देवी।

राय० : [**विस्मय तथा क्रोधसे**] क्या कहते हैं आप सेठजी ? हमारी मीरा और अंजनी ? असम्भव !

नर० : अब आपको कैसे यक़ीन दिलाऊँ। पिछले हफ़्ते आप यहाँ नहीं थे वरना रोज़ निकलनेवाले हड़ताली मज़दूर औरतोंके जुलूसके आगे 'पूँजीशाही नष्ट कीजिए' का नारा लगाते उन्हें जाते आप अपनी आँखोंसे देख सके होते।

राय० : लेकिन यह कैसे सम्भव है ?

नर० : मेरी समझमें नहीं आ रहा है कि किस बातको सम्भव कहा जाये और किसे असम्भव। रायबहादुर, दुनिया जल रही है। धधक रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[रायसाहब पोकलेका आगमन]

पोकले : आग लग रही है रायबहादुर आग लग रही है। जैसे ही सुना कि आप बम्बईसे लौट आये, मुझसे रहा नहीं गया। उठा, और सीधे यहाँ दौड़ पड़ा। घरमें आग लग रही है और आप उसे देख नहीं पाते ?

राय० : क्या कहते हैं रायसाहब ? हमारे घरमें आग लग रही है ? कहाँ ? दूसरी मंज़िलपर या तीसरी ? मुन्शीजी; अरे दौड़ो-दौड़ो ! खड़े क्या हो ? फ़ायर ब्रिगेडवालोंको फ़ोन करो। वरना तुम ही दौड़ते ही जाओ और उन्हें नींदसे उठाओ। रामूको बुलाओ। रामू, ओ रामूके बच्चे ! मुन्शीजी, दौड़ो दौड़ो।

[मुन्शीजीका प्रस्थान]

पोकले : रायबहादुर, सुनिए तो ! मेरा मतलब सचमुचकी आगसे नहीं है।

राय० : ऐं ? तब कैसी आग ? आपने तो मुझे डरा दिया। अरे, मुन्शीजी, सुनो तो ! दमकलवालोंको मत बुलाना।

पोकले : रायबहादुर जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ उसे ज़रा ग़ौरसे सुनिए। आपकी दोनों लड़कियाँ इस हड़तालमें शामिल हैं।

नर० : मैं भी यही कहनेके लिए यहाँ आया था। रायबहादुरसे मैंने कहा भी कि रोज़ शाम-सवेरे इन औरतोंके जुलूसमें मीरादेवी और अंजनी बहन हाथमें झण्डा लिये····

पोकले : रायबहादुर, इसीसे तो मैंने कहा कि आग आपके घरमें लग रही है।

राय० : आग ! सचमुच आग ! [कमरेकी ओर देखकर] मीरा ओ मीरा····

मीरा : [भीतरसे] जी पिताजी !

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राय० : बाहर आओ !

मीरा : [भीतरसे] क्या बात है पिताजी ? क्या आपको क़ैंचीकी ज़रूरत है ?

राय० : अब क़ैंची किसलिए ला रही हो ? तुमने तो मेरे गलेपर छुरी चला दी है। पहले बाहर आओ। मीरा, सुना तुमने ? पहले बाहर आओ।

मीरा : जी, आ रही हूँ पिताजी ! [कहकर प्रवेश करते हुए] जी, पिताजी, क्या बात है ?

राय० : क्या बात है ? आप दोनों तुम्हारे बारेमें क्या कह रहे हैं, सुना नहीं तुमने ?

मीरा : कैसे सुनती ? मैं तो भीतरवाले कमरेमें थी। और 'आप दोनों' से मतलब…

राय० : तुम नहीं जानती ? आप हैं रायसाहब पोकलेजी। लगातार दस साल तक हमारी म्युनिसिपैलिटीके प्रेसिडेण्ट थे। एक बीड़ीमिलके डाइरेक्टर, एक बैंकके उपाध्यक्ष, चार-पाँच संस्थाओंके खज़ांची। बहुत बड़े आदमी हैं। और आप हैं सेठ नरसाप्पा। चार-छह लाखके मालिक ! स्कूलों, अस्पतालोंकी सहायतामें दो हज़ारसे कम चन्दा नहीं देते। क्या तुमने पहचाना नहीं इन्हें ?

मीरा : मैं आप दोनोंको अच्छी तरह पहचानती हूँ। लेकिन पिताजी, मेरे खयालसे आपने इनका जो वर्णन किया है उसमें कुछ ग़लती है। आपने यह नहीं बतलाया कि अब काँग्रेसका राज शुरू होनेके बाद और म्युनिसिपैलिटीका शासन जनताके हाथमें चले जानेपर रायसाहब पोकलेजी-की दाल वहाँ नहीं गलती। चुनाव जीतकर नहीं, बल्कि सरकारकी सहायतासे, पिछले दरवाज़ेसे ये म्युनिसिपैलिटी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में प्रवेश कर पाते हैं ।

राय० : मीरा, मीरा ! यह क्या कह रही हो ?

मीरा : [पिताके कहनेकी ओर तनिक ध्यान न देकर] और नरसाप्पा सेठका वर्णन तो बिलकुल ही ग़लत है । पिताजी, सेठजीकी उदारता, त्याग और मनुष्यताकी वास्तविकताका रूप क्या आप देखना चाहते हैं ? देखिए, हमारे इस बैठकके कमरेसे कुछ ही बड़ा वह स्थान है जहाँ टीनका छप्पर है । जहाँ न तो काफ़ी उजियाला है न हवा ! गरमीके दिनोंमें टीनकी चादरें गरम होकर उस स्थानको भट्टी-जैसा बना देती हैं । उसी कमरेमें बैठकर दो-ढाई सौ औरतें बीड़ी बनाती हैं । एक दूसरीसे बिलकुल सटकर उन्हें बैठना पड़ता है । किसी स्त्रीके छोटा बच्चा होनेपर सोचिए तो, उसकी दशा क्या होती होगी ? वहाँपर न तो औरतोंके लिए पानीका प्रबन्ध है न पेशावघरका और सुख-सुविधाओंसे युक्त इस स्थानका किराया हरेकसे चार आने महीना वसूल किया जाता है । मानो वे औरतें अपने निजी कामके लिए ही वहाँ आकर बैठती हों । सिर्फ़ चार-छह आनोंके लिए घरवार, बाल-बच्चोंको छोड़कर ! कभी भूखे पेटसे तो कभी पीनेके लिए बिलखनेवाले शिशुको दूर हटाकर लगातार दस-दस घण्टे पसीना बहाकर जिस गन्दे और दुर्गन्धियुक्त, अँधेरे, भट्टी-जैसे स्थानपर दो-ढांई सौ औरतें अपना खून-पसीना एक करती हैं उस स्थानका नाम है नरसाप्पा सेठका बीड़ी कारख़ाना । इसे तो वास्तवमें कारख़ाना नहीं, बूचड़ख़ाना कहना चाहिए ।

नर० : बाप रे बाप !

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पोकले : सुन रहे हैं न रायबहादुर ! तभी तो मैंने कहा था कि आग लग रही है घरमें, विद्रोहकी आग !!

राय० : मीरा, मीरा, क्या तुम मेरी लड़की मीरा ही हो ? मैंने भूलकर भी यह नहीं सोचा था कि तुम यहाँतक बढ़ सकती हो। मेरा ख़याल था कि तुम दोनों अपनी पढ़ाईमें पूरी तरह व्यस्त हो और इसीलिए तुम्हारी अन्य हरकतोंकी ओर मैंने कभी ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। मगर यह सब ज्ञान तुम्हें किसने पढ़ाया ?

मीरा : पिताजी, समयके साथ-ही-साथ युवक-युवतियोंको इन बातोंका ज्ञान हो जाता है।

राय० : अच्छा ! तो अब तुम्हारी ज़बान भी चलने लगी। लेकिन तुम्हारे होश ठिकाने लाते मुझे देर नहीं लगेगी। वे सब गन्दी, अनपढ़, गँवार औरतें और तुम उनकी हिमायती बनती हो ? उनसे मेल-जोल बढ़ाती हो ? उनके जुलूसों-के आगे नाचती हो। मूर्ख ! आवारा ! उपद्रवी !

मीरा : उपद्रवी ! पिताजी फिर एक बार कहिए। उपद्रवी ! पिताजी, आपने मुझे उपद्रवी कहकर गाली दी, लेकिन मेरे लिए यह शब्द कितने गौरवका है ! उपद्रवी ! दुःख सिर्फ़ इसीका है कि जिस प्रचण्ड रूपमें सुविचारका उपद्रव मैं मचाना चाहती हूँ, उतनी ताक़त मुझमें नहीं है। कोल्हूमें जुते जानवरोंकी अपेक्षा जिनकी दशा अधिक दयनीय है, उन औरतोंके भूखे पेटकी आगका दर्शन मैं दुनियाको करा नहीं सकती। इन औरतोंपर होनेवाले अत्याचारोंको देख, अन्यायकी चीढ़से सारा समाज हड़-बड़ाकर जाग उठे ऐसी सत्यकी भयानक आग अबतक प्रज्वलित नहीं हो रही है। सेठजी, ये औरतें न तो आपकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विशाल अट्टालिकामें रहना चाहती हैं न उन्हें आपकी सेठानीके जवाहरात चाहिए और न वे पक्वान्नोंसे भरी आपकी थालीकी ओर ललचायी निगाहोंसे देखती हैं। वे तो सिर्फ़ चाहती हैं कि उन्हें ग़ुलामी और दरिद्रतासे मुक्त किया जाये ! आप उनसे कसकर काम लेते हैं, वे उसकी उचित मज़दूरी चाहती हैं। बस यही है उनकी माँग। पहले आप हज़ार बीड़ीकी मज़दूरी सात आने देते थे अब भी उतनी ही मिल जाये। पाँच आनेमें वे गुज़र नहीं कर सकतीं। बस यही उनकी माँग है। यह तुच्छ माँग क्या आप स्वीकार नहीं कर सकते ? कहिए सेठजी, कुछ तो जवाब दीजिए।

नर० : क्या जवाब दूँ ? जवाब तो दे सकता हूँ पर वह आपको ठीक न जँचेगा। इन औरतोंको हज़ार बीड़ीपर सात ही नहीं, नौ आने भी दिये जायें पर इनकी ग़रीबी कभी दूर नहीं हो सकती। रोज़ चार आने ज़्यादा मिलनेपर इनके मर्द ताड़ीमें रोज़ चवन्नी उड़ा देंगे। हम लोग कितनी भी मज़दूरी दें, फिर भी ये नालायक़ तो आख़िर नालायक़ ही रहेंगे। क्यों रायसाहब, ठीक है न ?

पोकले : बिलकुल ठीक ! परसों ही किसी मन्त्रीजीने किसानोंको यही उपदेश दिया है कि साहूकारको गालियाँ देना फ़िज़ूल है। पहले आप लोग अपनी बुरी आदतें छोड़िए तब आप लोगोंकी दरिद्रताका अनायास ही अन्त हो जायेगा।

राय० : वाह, वाह !! क्या पतेकी बात कही है। मीरा, सुनो, अगर तुम मज़दूरोंकी हालत सुधारना चाहती हो तो इन हड़तालोंके फेरमें न पड़कर शराबबन्दीका उपदेश किया करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नर० : हाँ, मीरा बहन, गान्धीजी भी कहते हैं कि किसानों और मज़दूरोंकी दरिद्रता दूर करनेका शराबबन्दी ही एकमात्र उपाय है।

मीरा : क्या खूब ! शैतानके मुँहसे गीताका पाठ !

राय० : मीरा, मीरा, राय साहबका अपमान कर रही हो ? चुप रहो ! ज़बान सँभालो !

मीरा : डेढ़ हज़ार औरतोंको वर्षोंसे अपमानित कर, इन कारखानदारोंने मनुष्यताका अपमान किया है। उस ओर आपका ध्यान जाये इसलिए मुझे सच कहना पड़ रहा है पिताजी! और सच तो कड़आ होता ही है। मज़दूरोंकी दरिद्रताका वास्तविक कारण शराब नहीं है सेठजी ! उनका शोषण करनेवाली आप-जैसे कारखानदारोंकी पूँजीशाही ही उन्हें ग़रीब बनाती है। बिना इस पूँजीशाहीको नष्ट किये –

['पूँजीशाही नष्ट कीजिए'का नारा लगाते और यह वाक्य जिस काग़ज़के अक्षरोंसे लिखा गया है उस झण्डेको हाथमें लिये अंजनी कमरेसे बाहर आती है।]

राय० : कौन ? अंजनी ? तुम ?

नर० : देखिए रायबहादुर ! अपनी आँखोंसे देख लीजिए।

पोकळे : यही है वह आग रायबहादुर ! जिसका मैंने आपसे जिक्र किया था।

अंजनी : [उनकी बातकी ओर तनिक भी ध्यान न देकर, मीरा-से] दीदी, कैसी बनी है हमारी झण्डी ?

मीरा : बहुत खूब [झण्डेपर लिखे अक्षरोंको पढ़ते हुए दोनों भी 'पूँजीशाही नष्ट कीजिए'का नारा लगाती हैं उसी समय मैदानमें इकट्ठा स्त्रियोंके नारे सुनाई देते हैं 'पूँजीशाही नष्ट कीजिए' 'काले क़ानून रद्द कीजिए' रायसाहब, राय-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहादुर, और सेठजी एक दूसरोंकी ओर देखते हैं।]

अंजनी : अरे ! औरतें तो आ गयीं ! चलो दीदी, चलें ! कहीं हमें देरी न हो जाये !

मीरा : हाँ चलो चलें !....

राय० : [चीखकर] मीरा, अंजनी ! ठहरो ! जा कहाँ रही हो तुम दोनों ?

मीरा : हमारे कामपर !

राय० : ख़बरदार जो घरके बाहर क़दम रखा। यह घर मेरा है। यहाँ मेरा राज चलता है। यहाँ मेरे क़ानून चलते हैं।

अंजनी : काले क़ानून रद कीजिए।

मीरा : सुन लिया पिताजी !

राय० : हाँ, सुन लिया ! ख़ूब अच्छी तरह सुन लिया। रामूसे कहकर मकानके दरवाज़ेमें ताला लगवा देता हूँ और तब देखता हूँ कि....[मैदानकी ओरसे नारे सुनाई देते हैं 'पूँजी-शाही नष्ट कीजिए' 'काले क़ानून रद कीजिए']

अंजनी : दीदी, चलो न ! देरी हो गयी !

मीरा : हाँ, सच ही देरी हो गयी ! चलो !

राय० : अंजनी, मीरा, जा कहाँ रही हो ? पीछे लौटो।

मीरा : नहीं पिताजी ! हमें जाना ही होगा।

राय० : अच्छा, तो ख़बरदार ! फिरसे मेरे घरमें लौटकर न आना।

मीरा : घर अकेले आपका नहीं है पिताजी ! इस घरपर हमारा भी अधिकार है। औरतों, बच्चोंपर क़ब्ज़ा जमाये रखनेके दिन अब बीत चुके। अब हमें यह न भुलाना चाहिए कि तानाशाहीका ज़माना बीत गया है ! अंजनी, चलो, [दोनों हाथमें हाथ मिलाये झण्डा ऊँचा उठाये 'नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रखनी, नहीं रखनी' इन पंक्तियोंको दोहराते हुए चली जाती हैं]

रायo : [जैसे सपना देखकर चौंक उठे हों] क्या ? यह सब घटना मेरे ही घरमें घटी है ? जाते समय मीरा क्या कह गयी ? तानाशाहीका ज़माना बीत गया ?

नरo : क्या अब हमें कोई न पूछेगा ?

पोकले : तभी तो मैंने कहा था रायबहादुर, आग लग रही है ।

[तीनों एक दूसरेकी ओर देखकर माथा ठोक लेते हैं । बाहर गयी मीरा और अंजनीका 'नहीं रखनी-नहीं रखनी' यह गीत रास्तेपर-से सुनाई देता है । मैदानपर एकत्रित सभामें गूँज उठा 'पूँजीशाही नष्ट कीजिए'.....का नारा सुनाई देता है ।]

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ललित निबन्ध

•

सर्कसका खेमा

अलगनीपर सूखनेवाले कपड़े

ताला चाभीऽ !

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर्कसका ख़ेमा

रातके दस बजा चाहते हैं। दिन-भर उमस रही, लेकिन अब ठण्ढी बयार चल रही है। मेरे कमरेकी खिड़कियोंके परदे हवासे झूम रहे हैं। बाहर अँधेरा फैला है। खिड़कीसे दिखाई देनेवाले आसमानकी ओर देखने-पर गहरे काले नीले पटावसे चिपके तारोंके पुंज जगमगाते हुए दिखाई दे रहे हैं। चारों ओर नीरवता फैली है। लेकिन मेरे मकानके पासवाले मैदानकी ओरसे बैण्डके मधुर सुर सुनाई दे रहे हैं। लोगोंके विशाल जम-घटका शोर-ग़ुल सुनाई दे रहा है। बीचमें ही एक गम्भीर गहरी हुँकार उठती है। मैंने लिखना शुरू करनेका विचार किया है, लेकिन मैं अपना विचार कार्य रूपमें परिणत कर सकूँगा या नहीं इसमें सन्देह है। वह हुँकार, वह शोर-ग़ुल, वह बैण्डके सुर मुझे विमोहित किये दे रहे हैं, और इसका निवारण करना मेरे लिए असम्भव है। मैंने बहुत दिनोंसे सर्कस नहीं देखा है। इस वक़्त मुझसे कोई सिनेमा चलनेके लिए कहे तो मैं नहीं जाऊँगा; कोई नाटक देखने जानेका प्रस्ताव करे तो मैं उसे स्वीकार नहीं करूँगा; गानेका निमन्त्रण मिले तो मैं उसे भी किसी बहाने टाल दूँगा, लेकिन बैण्डपर ताल बँधी वह धुन सुनाई पड़ी तभीसे मेरा दिल सर्कसकी ओर आकर्षित हो रहा है। जी करता है कि सब काम छोड़कर सर्कसके खेमेकी ओर चल दूँ। कितने ही दिनोंसे मैं सर्कस देखने नहीं गया हूँ। जाने-को जी करता है।

मैं क्या अब छोटा बच्चा हूँ जो मेरा जी मचले? यह मुझे अखरता ज़रूर है। परन्तु यह भी विचार तुरन्त मनमें उठता है कि ऐसी बात तो होती नहीं कि बचपनमें सर्कस देखनेको जी करे और बड़ा होनेपर नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरा तो खयाल है कि प्रत्येक मनुष्यके दिलके किसी कोनेमें छिपी ही क्यों न हो, एक प्रवृत्ति ऐसी होती है जिसे सर्कस देखनेमें आनन्द आता है, सर्कसके बैण्डकी धुन सुनते ही एक बेचैनी होने लगती है, बेबस करता आकर्षण होता है ! इस प्रवृत्तिको चाहे कोई लड़कपन कहे, लेकिन तब यों कहना पड़ेगा कि मनुष्य आयुमें कितना ही बड़ा क्यों न हो जाये, यह लड़कपन उसमें कहीं-न-कहीं अपना स्थान बनाये ही रखता है। छोटा बच्चा सर्कस रोज़ देखना चाहेगा, बड़ा आदमी उसे रोज़ देखना न चाहेगा, परन्तु बहुत समयके बाद सर्कस देखनेका अवसर आनेपर भी किसी बड़े आदमीको उसे देखनेका मोह न हो तो उसे या तो 'मुक्त' समझना चाहिए या 'पशु'।

मैंने पहले-पहल नाटक देखा, पूनाके पुराने आर्यभूषण थिएटरमें। मैं अपने स्थानपर जा बैठा और तब देखा कि नीचे और ऊपरवाली मंज़िलमें लोगोंकी खासी भीड़ है। सामने एक बड़ा-सा चबूतरा दिखाई दिया। उस पर परदा लटक रहा था ! मैंने सुना था कि कुछ देर बाद यह परदा उठेगा और जिसे देखनेके लिए मैं यहाँ आया था वह 'शारदा' नाटक उस-चबूतरेपर खेला जायेगा। वह खेला भी गया। परन्तु नाटक कोई भव्य वस्तु है ऐसा मुझे 'शारदा' देखकर प्रतीत न हुआ। रंगमंचपर बोलने और बीच-बीचमें गानेवाले लोग साधारण मनुष्य ही थे और उनके आसपासका सारा वातावरण भी साधारण ही था। नाटक देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई, उसे बार-बार देखनेका चसका भी लगा, लेकिन कुछ भव्य और अद्भुत देखनेकी मेरी लालसा तृप्त न हुई। इसके विपरीत जब मैंने पहले-पहल सर्कस देखा तब मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो मेरी उस लालसाकी सहसा तुष्टि हो गयी हो। कुछ भव्य, अद्भुत, अमानुषीय, आँखें चौंधियानेवाली दिव्य सृष्टिका पाससे दर्शन करनेकी खुशी मुझे उस वक़्त हुई। वास्तवमें खेमेमें प्रवेश कर, चार आनावाले तख्तेपर बैठकर मैं सर्कसका खेल देख पाया इसके कितने ही दिन पहले मुझे विश्वास हो गया था कि खेमेके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भीतर बैण्डकी सुन्दर तालपर जो कुछ होता है वह अवश्य ही अद्‌भुत होगा। हवाके झोंकोंके साथ खेमेके दरवाज़ेके परदे हिलते तब बीचकी दरारसे या खेमेकी क़नात और ज़मीनके नीचेकी झिरीसे भीतरकी सृष्टिका धुँधला-सा दृश्य दिखाई देनेपर मैं पुलकित हो उठता।

वह साँझका समय होता। पूनामें मार्केटके पीछेवाले मैदानमें (तब वहाँ पक्के फ़र्शवाले चबूतरे बने हुए नहीं थे) छत्रेजीके सर्कसका खेमा लगता। भीतर हँसी गूँजती और तालियाँ बजतीं। वायुमण्डलमें बैण्डके मादक सुर तरंगित होते। खेमेका कपड़ा मोटा होता, फिर भी भीतर खेल दिखानेवाले खिलाड़ियों और ज़ानवरोंकी अस्पष्ट आकृतियाँ हमें बाहरसे भी दिखाई देतीं और वे चिलमन-से दिखाई देनेवाली जनानखानेकी स्त्रियों-जैसी मोहक और आकर्षक प्रतीत होतीं। बीचमें ही मुख्य प्रवेशद्वारके बाहर छरहरे बदनका लम्बे क़दवाला काला सूट और हाथोंमें सोनेके कड़े पहने, सिरपर बढ़िया रेशमी साफ़ा बाँधे एक व्यक्ति दिखाई देता। 'ये ही सर्कसके मालिक छत्रेजी हैं, — इस तरहकी कानाफूसी होती। 'शेरपर सवार होनेवाली मिस आवड़ा खास इन्हींकी....' — इस तरहकी कानाकानी भी सुनाई पड़ती। यह सब देखते-सुनते हुए मैं सोचता, कैसी अजीब दुनिया है यह! खेमेके बाहर-ही-बाहर क्यों न हो, लेकिन उस दुनियाके आस-पास काफ़ी-काफ़ी देर घूमते-फिरते रहनेपर भी जी न भरता; रात घिर आनेपर निरुपायता होती और हम पाठशालाके छोटे-छोटे बच्चे अपने-अपने घरका रास्ता पकड़ते। पैर घरकी ओर मुड़ते लेकिन दिल पीछे छूट रहता। आठ आनेका टिकिट खरीदकर सर्कस देखा नहीं जा सकता था इसका बहुत दुःख होता।

परन्तु उस दिन अकस्मात् खुशख़बरी मिली। पाठशालामें अध्यापकजीने ही हमें सुनायी। पाठशालाके छात्रोंके लिए आधे दामपर सर्कसका खेल शामको होने जा रहा था। तब पढ़ाई कैसे हो सकती थी? हम सब सिरपर पैर रखकर घरकी ओर भागे। चार-चार आने लिये और सर्कसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खेमेकी ओर दौड़ चले। बैण्डके सुर कानोंमें पड़ते ही तो हम उसकी तालपर दौड़ने लगे — आखिर ऐसा तो है नहीं कि सर्कसके सजे-सधे घोड़े ही बेतहाशा दौड़ सकते हैं! भीड़में-से तीरकी तरह रास्ता बनाया और जिस गेटके बाहर इतने दिन मँडराये थे वहाँ हाथमें छपा हुआ टिकिटका पुरज़ा लिये हुए पहुँचे। पुरज़ा दिखाते ही सूट-बूटमें सजे बिच्छूके डंक-जैसी मूछोंवाले एक काले-कलूटे साहबने परदा हटा दिया और हम भीतर जाकर तख्तेपर बैठ गये। जिस दुनियाको अबतक चलती-फिरती छात्राओंके रूपमें देखा था उसे सचमुच ही देखनेका अवसर आ गया था। मेरा दिल धड़-धड़ कर रहा था जिधर आँख गयी सब अद्भुत ही नज़र आया। कितना बड़ा खेमा! बिलकुल जैसे छतसे लगी हुई गैसकी बत्तियाँ लटकते हुए झूले, और जालीके नीचे बना हुआ मण्डलाकार सुन्दर खुला स्थान। मिट्टी-की भीगी-भीगी सौंधी गन्धके नथुनोंमें पहुँचते ही मेरी देहपर एक अजीब-से सन्तोषका रोमांच हो आया! बैण्डपर बज रही धुनमें मुझे नया ही भाव प्रतीत होने लगा। आस-पास हज़ारों लोग थे, कोई-कोई सीटियाँ बजा रहे थे····सहसा घण्टी बजी···एक क्षणके लिए सब स्तब्ध हो गया···· लेकिन तब बैण्डपर एक और ही धुन छिड़ उठी। चम-चम करते सलमा-सितारे टँके साटनके तंग जाँघिये पहने तीन जवान लड़कियाँ एक-दूसरेके हाथ पकड़े हँसती हुई रिंगमें आयीं और विभिन्न ढंगकी कूद-फाँद करने लगीं। मुझे विश्वास न हुआ कि मनुष्यका शरीर इतने चमत्कार कर सकता है! मैंने सोचा वे जवान लड़कियाँ अमानुषीय श्रेणीकी अप्सराएँ हो सकती हैं। अद्भुतके आकर्षणसे कम्पित होनेवाले मेरे दिलके तार झंकृत हो रहे थे। वह अनुभव नितान्त अनोखा था।

बचपनका मेरा यह अनुभव मेरे दिलके एक कोनेमें अबतक ज्योंका त्यों बना हुआ है। दूरसे भी सर्कसका बैण्ड सुनाई देनेपर यह अनुभव फिर हरा हो जाता है, और लगता है सर्कस देखने चल दूँ। जिस चकित और मुग्ध वृत्तिसे मैंने प्रथम बार सर्कस देखा वह मेरे अन्दर अब नहीं रह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयी। फिर भी मनोरंजनके अन्य किसी साधनम जो भव्यता और अद्‌भुतता मुझे प्रतीत नहीं होती वह सर्कसके खेलमें मेरी वयस्क दृष्टिको अब भी दिखाई देती है और मैं उससे विमोहित हो जाता हूँ। मसख़रोंके मज़ाक़ देखकर हँसीके मारे मैं अब लोट-पोट न हो सकूँ, लेकिन मुसकराऊँगा ज़रूर, और इसके द्वारा, हँसी और विनोदका उद्‌गम किसमें है यह स्पष्ट हो जायेगा – वह देखिए, मसखरा कन्धेपर बहुत मोटे रस्सेका एक छोर दोनों हाथोंसे पकड़कर झुकता हुआ, बड़ी कठिनाईसे एक-एक क़दम उठता हुआ प्रवेश कर रहा है। देखिए, वह आ गया। दस क़दम, बीस क़दम, अबतक सिर्फ़ रस्सा ही उसके पीछे-पीछे है····वह रिंगमें आ पहुँचा। लेकिन अब भी रस्सेका छोर खेमेसे बाहर ही है, क्योंकि वह पसीनेसे तर हो गया है और लम्बी साँसें ले रहा है। देखकर जान पड़ेगा कि वह किसी विशालकाय हाथीको खींचकर ला रहा है। हजारों लोग उत्सुकता-वश साँस रोके बैठे हैं। बैण्डका बजना भी बन्द हो गया है। और इस प्रकार कुछ क्षण बीतनेके बाद खेमेमें एकाएक सब तरफ़से प्रचण्ड हँसी गूँज उठती है। द्रुतगतिसे बैण्ड बजने लगता है। तालियोंकी कड़कड़ाहट और सीटियोंका कोलाहल होता है। हँसते-हँसते लोगोंके पेटमें बल पड़ जाते हैं। क्योंकि उस मोटे रस्सेके दूसरे छोरसे एक मरियल कुत्तेका पिल्ला बँधा हुआ लोगोंको दिखाई देता है। उनका खयाल था कि बहुत बड़ा हाथी सूँड़ हिलाता हुआ आयेगा। लेकिन आया एक दुम हिलाता मरियल कुत्तेका पिल्ला। पराकाष्ठाको पहुँची गम्भीर जिज्ञासाको जो मुँहकी खानी पड़ी वही तमाम हँसी और विनोदकी जननी है। और इस महान् सिद्धान्त-की सीधी-सादी प्रत्यक्षता जहाँ देखी जा सकती है ऐसा एक ही स्थान है, और वह है सर्कसका खेमा!

मनुष्य अपने शरीरसे क्या चमत्कार कर सकता है, अपनी होशियारी-के बलपर खूँख़ार जानवरोंकी हिंसकता कैसे क़ाबूमें रख सकता है, और जानवरोंमें मनुष्योंके-से गुण कैसे निर्माण कर सकता है – यह देखनेका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक ही स्थान है, और वह है सर्कसका खेमा। सर्कसका खेमा हास्य रससे युक्त, ताल-सुरोंपर नाचनेवाली, बत्तियोंकी जगमगाहटमें दमकनेवाली, अमानुषीय, अद्भुत, भव्य और दिव्य दुनिया है।

एक बार रंगमंच नष्ट हो जाये तो कोई हर्ज नहीं, परन्तु सर्कसकी यह दुनिया नष्ट नहीं होनी चाहिए। जीवट, साहस, विक्रम, आवेश, मस्ती, शृंगार, हँसी इत्यादि इस दुनियाकी आत्माएँ हैं। इस दुनियाका अन्त नहीं होना चाहिए। महाराष्ट्रमें पहला सर्कस कौन-से सन्में स्थापित हुआ यह मैं ठीकसे न बता सकूँगा। परन्तु साँगलीमें नाट्यकलाकी शत-संवत्सरी मनायी गयी उसी प्रकार सर्कसका सुवर्ण-महोत्सव बड़े परिमाणमें मनाया जाना चाहिए। सर्कसका मनोरंजन समाजके सब तरहके लोगोंको कितना प्रिय है, और उसकी रक्षा करना कितना जरूरी है, इस ओर, जाने कोई ध्यान क्यों नहीं देता ?

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अलगनीपर सूखनेवाले कपड़े

नदी-किनारेकी सुन्दरता बढ़ानेवाली चीज़ोंमें आप जाने किसको प्राथमिकता देंगे, पर यदि कोई मुझसे पूछे तो मैं धोबीके सुखाये सफ़ेद कपड़ोंका ही उल्लेख करूँगा। हमारे कवि नदी-तटका चित्र आँकनेवाली रचनाओंमें इन कपड़ोंका उल्लेख तक नहीं करते, इसपर मुझे सचमुच आश्चर्य है। धूपमें चमकनेवाले, बगुलोंके पंखोंसे होड़ लेनेवाले, और हवाके झोकोंसे फड़फड़ानेवाले कपड़ोंका दृश्य मुझे बड़ा मनोहर प्रतीत होता है।

नदीके पाटका पानी, किनारेपर उगे झाड़-झंखाड़, चरईपर आये हुए जानवर, पानीमें डुबकियाँ लगानेवाले बालक और भीगे कपड़ोंकी ओटसे दिखते अंगोंवाली कपड़े धोनेको आयी हुई स्त्रियाँ – इन सबके कारण नदीका किनारा हमारी आँखोंको सुख देनेवाला एक अत्यन्त रमणीक स्थल होता है। लेकिन उस रमणीकताको पूर्णता यदि किसीसे मिलती है तो किनारेपर सूखनेके लिए फैलाये गये सफ़ेद कपड़ोंसे। नदी-किनारेकी दूसरी चीज़ोंके हरे, पीले और नीले रंगोंकी सुन्दरता हवामें लहरानेवाले कपड़ोंके स्फटिक-जैसे सफ़ेद रंगके कारण और भी अधिक रंगीन हो जाती है। किसी भी चित्रके रंगोंमें सफ़ेद रंगका कितना महत्त्व है यह किसी चित्रकारसे पूछिए! चित्रमें सफ़ेद रंग उचित परिमाणमें मिलाना कितना कठिन है यह भी उन्हींसे पूछिए। तब आप समझ सकेंगे कि नदी-किनारे-का सारा दृश्य वहाँ सुखाये जानेवाले कपड़ोंके दमकते सफ़ेद रंगके कारण ही सुखकर लगता है। उस चित्रमें सफ़ेद रंग न हो तो उसकी सुन्दरतामें सच ही एक अभाव दिखेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नदी-तटका सौन्दर्य बढ़ानेवाला, सूखनेवाले कपड़ोंका यह दृश्य दूसरी जगहोंमें भी कई बार दिखाई देता है। जब कभी मैंने उसे देखा, मुझे वह सुन्दर ही प्रतीत हुआ। आसपास कोई और दृश्य भी क्यों न हो, धूपमें सूखनेवाले सफ़ेद कपड़ोंकी लम्बी क़तारें वहाँ बहुत अच्छी लगती हैं। कभी-कभी तो यह दृश्य बिलकुल अचानक और अजनबी जगहपर भी दिखाई देता है। एक बार मैं सफ़रमें था, तभी मेरी आँखोंके सामनेसे हरियालीसे लदी और बीच-बीचमें झाड़-झंखाड़ोंसे भरी एक पहाड़ी खिसक रही थी। बीचमें ही मुझे भेड़ोंका एक खेड़ दिखाई पड़ा। अनन्तर पाँच-छह मकानोंके लाल छप्पर दिखाई दिये, और एकाएक धूपमें सूखनेवाले सफ़ेद कपड़े नज़र आये। पहले तो नदी नहीं दिखी, और न ही कोई नाला या तलैया। कपड़े धो रहे धोबी भी दिखाई नहीं पड़े थे। रेलगाड़ी-से नज़र न आनेवाली झाड़-झंखाड़ोंके पीछे छिपी हुई धोनेकी जगह कहीं अवश्य रही ही होगी, लेकिन मुझे वह नज़र न आयी। इसलिए एकाएक दिखाई पड़ी कपड़ोंकी वह लम्बी क़तार मुझे ज़्यादा सुन्दर लगी। क्षण-भरके लिए मुझे लगा कि एकाएक सफ़ेद परिधान-वाली अप्सराओंको नृत्य करते हुए स्वर्गसे उतरते मैं देख रहा हूँ। आँख भरकर देखने लायक़ वह दृश्य डेढ़-दो मिनिट ही देखा जा सका और तुरन्त गाड़ी मुड़ जानेके बाद खो गया। लेकिन अनायास देखे उस दृश्यकी सुन्दरताको मैं अबतक नहीं भूल सका हूँ!

इसी तरहकी एक और स्मृति मेरे मनमें जमी हुई जाने कितने वर्ष पहलेकी घटना है, लेकिन मोटरमें सवार होकर मैं किसीके साथ गिरगाँव होता हुआ दादरकी ओर जा रहा था। सात रास्तोंवाला विस्तीर्ण चौराहा पार कर, कार आगे सीधे रास्तेसे जा रही थी और तभी अकस्मात् बायीं ओर सुखाये जानेवाले कपड़ोंकी कितनी ही क़तारें मुझे दिखाई पड़ीं। इस जगह न तो नदीका किनारा था, न झाड़-झंखाड़ थे, न ही हरियाली थी। गलेमें बँधी हुई बजती घण्टियोंवाली गाय-भैंसें भी नहीं थीं। विपरीत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके चारों ओर धुएँसे भरी हुई चालें थीं और थे खुले मैदानमें जगह-जगह कूड़े करकटके ढेर। किन्तु उस रूखे गन्दे स्थानमें भी अलगनीपर लटकनेवाले कपड़ोंकी वे क़तारें मुझे बहुत भायीं। मुझे विश्वास हो गया कि इस दृश्यकी सुन्दरता अन्य बातोंपर निर्भर नहीं है, वह तो अपने-आपमें पूर्ण है।

और उसके बाद दादर जाते या उधरसे लौटते हुए हर दिन उस दृश्यको देखनेके लिए मैं पहलेसे तैयार हो जाता। जिस स्थानपर कपड़े सुखानेकी लम्बी रस्सियाँ दोनों सिरोंपर बाँसकी लग्गियाँ खड़ी कर तानी गयी थीं; वह निकट आते ही मन-ही-मन मैं प्रफुल्ल हो उठता और मोटरमें साथ बैठे अपने दोस्तोंसे होते वार्तालापको एकाएक बन्द कर गाड़ीके बाहर आतुरतासे कुछ झुककर उस स्थानके आनेकी प्रतीक्षा करता। उस निश्चित स्थानके आते ही ढेरों सफ़ेद कपड़े सूखते हुए मुझे दिखाई देते। उस दृश्यको देखकर रास्तेमें खड़े मोटे-लम्बे बाँसोंके सहारे तने रस्सेपर कसरत करते नटकी याद मुझे सहसा ही आ जाती। उस नट-जैसे वे तमाम कपड़े भी हवाके झोंकेके साथ नाचते। मैं सोचता, जी-भर धूप और हवा खानेवाले वे कपड़े अपनी ही आर्द्रता छोड़ बेहोश होकर पागलों-जैसे झूम रहे हैं। फ़र्क़ बस इतना ही था कि नट-जैसे वे तेज़ आवाज़में चीखते-चिल्लाते न थे!

और एक दिन धूपमें चमकनेवाले उन सैकड़ों कपड़ोंकी फड़फड़ाहट देखते हुए मैंने सोचा, ये कपड़े तेज़ आवाज़में बोलते तो नहीं, लेकिन आपसमें तो बतियाते ही होंगे। चोंचमें चोंच डाले पंछियोंकी तरह एक-दूसरेसे रगड़ खानेवाली ये क़मीज़ें, ये पाजामें, ये चादरें, ये साड़ियाँ ज़रूर कुछ तो बातचीत करती होंगी! उनकी वह फड़फड़ाहट ही उनकी बोली होगी। बोली यदि मैं भी जान लूँ तो उनकी आपसकी बातचीत भी शायद मैं समझ सकूँगा।

न जाने कितने स्थानोंसे ये कपड़े यहाँपर इकट्ठा हुए थे – कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बँगलोंके, कुछ कटरेवाले मकानोंके, और कुछ चालवाली खोलियों (कमरों) के। इन कपड़ोंको कितने प्रकारके स्त्री-पुरुषोंने पहना होगा। धनवान्, ग़रीब, सज्जन, दुराचारी, सदाचारी, व्यसनी, बुद्धिमान्, मूर्ख आदि सैकड़ों तरहके व्यक्तियोंकी देहपर ये कपड़े पहने गये होंगे। कितने ही प्रकारके जीवन इन्होंने देखे होंगे! कितने ही सुन्दर और कुरूप लोगोंके शरीर इन कपड़ोंने छुए होंगे! कितने ही लोगोंके दोष इन्होंने छिपाये होंगे! कितनीकी निर्लज्जता इन्हें देखनी पड़ी होगी। अब इस जगह इकट्ठा होनेपर क्यों ये कपड़े आपसमें बातचीत न करते होंगे? इन्होंने जो कुछ देखा या सुना होगा उसे क्या एक-दूसरेसे ये न कहते हों, यह कैसे हो सकता है? जिस तरह विभिन्न स्थानोंके अपरिचित लोगोंका तीसरे दरज़ेके डिब्बेमें मिलनेपर किसी-न-किसी बहाने एक-दूसरेसे परिचय कर बातचीत करना आरम्भ होता है, धोबीकी अलगनीपर एकत्रित हुए ये कपड़े भी वैसे ही आपसमें मज़ेदार बातें करते होंगे।

एक-दूसरेके नज़दीक अलगनीपर लटकनेवाले ये पाँच पचीस दस्ती रूमाल आपसमें क्या कुछ न कहते होंगे? ये तरह-तरहके सफ़ेद और रंगीन चारखानेवाले सूती-रेशमी, मोटे-महीन और मुलायम दस्ती रूमाल दो ही दिन पहले विभिन्न स्थानोंमें थे, विभिन्न व्यक्तियोंके हाथोंमें थे। बिलकुल अलग-अलग तरहसे उनका उपयोग किया गया था। यह सादा, मोटा दस्ती रूमाल साधारण मनुष्यके माथेका पसीना पोंछनेके काम आया होगा। पसीना पोंछते हुए हर बार. ईमानदारीसे मेहनत कर, थके हुए उस साधारण मनुष्यने कहा होगा, 'इस संसारमें सचाईकी क़द्र नहीं होती। बार-बार सुनी हुई यह बात क्या यह रूमाल दूसरे रूमालोंसे न कहता होगा? लेकिन तभी यह महीन लाल रेशमी रूमाल और ही बातें सुनाता होगा। हो सकता है लखपतीके आलसी और व्यसनी लड़केके हाथमें यह रहा हो, और बड़ी दावतके बाद इससे उसका मुँह पोंछा गया हो। इसने हमेशा ही तरह-तरहकी बातें सुनी होंगी। इनमें-से किसी रूमाल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
ने किसी छैल-छबीले आदमीके बुशकोटकी ऊपरवाली जेबसे झाँककर दुनिया देखी होगी। दूसरेने हमेशा ही मसालेदार पान चबानेवाले आदमीके होंठोंपर चूनेवाली पीक ही पोंछी होगी। और यह रूमाल जुआड़ीके साथ शहरके जुएके तमाम अड्डे घूम आया होगा, वह रूमाल किसी जौहरीकी जेबमें रहकर कितनी ही बार मूल्यवान् और आबदार मोतियोंका भी साथ पाया होगा। हो सकता है कोई रूमाल किसी मर्द शिकारीकी जेबमें रह पानेके कारण ख़ूँख़ार जानवरोंके रोमांचकारी वर्णन सुना सकता हो। किसीका मालिक गानेवाला होगा इसलिए उसे कितने ही गीत कण्ठस्थ होंगे। यह रूमाल किसीने किसीको भेंट दिया होगा और वह किसी मन मोह लेनेवाली प्रेम-कथासे परिचित होगा। इस दूसरे रूमालने किसी रूपगर्विताकी आँखोंका काजल पोंछा होगा। इस तीसरेने किसी असफल प्रेमिकाके आँसू पोंछे होंगे। संक्षेपमें अलगनीपर एक साथ सूख रहे ये दस्ती रूमाल एक-दूसरेसे क्या-क्या कहते होंगे, इस सम्बन्धमें कितनी ही कल्पनाएँ सहज ही की जा सकती हैं।

यह विचार जिस समय मेरे मनमें पहले-पहल उठा, धूपमें सुखाये जाने-वाले उन कपड़ोंकी सुन्दरता मुझे अधिक ही बढ़ती हुई लगी; लेकिन दूसरे ही दिन मेरी परेशानी बढ़ गयी। धुलने देनेके लिए जब मैं अपने कपड़े-जमा करने लगा, मेरे मनमें विचार उठा कि ये कपड़े जहाँ सुखाये जायेंगे वहाँ जाने उनकी किस-किसके कपड़ोंसे मुलाक़ात होगी; और जाने ये मेरे बारेमें दूसरे कपड़ोंसे क्या कहेंगे !····देह ढाँकनेके लिए हम इन्हें पहनते हैं मगर इससे इन कमबख़्तोंको हमारे भीतरका पता चल जाता है। शरीरसे भी ज्यादा हम अपने भीतरको दुनियासे छिपाये रखते हैं, अपने अनेक अनुभव हम गुप्त रखते हैं, अपनी कितनी ही इच्छाएँ परदेमें की होती हैं; लेकिन हमारे कपड़े हमारे ही एकान्तकी बातोंके साक्षी होते हैं! और मेरे एकान्तकी बातें अलगनीपर सूखते समय मेरे ही कपड़े अन्य लोगोंके कपड़ोंके सामने खोलकर कह दें तो······?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और तभी एक क्षणके लिए मैंने सोचा कि कपड़े धुलनेके लिए ही न दिये जायें !

लेकिन तुरत एक उलटी बात भी मेरे मनमें आयी – वह यह कि जिन कपड़ोंके साथ मेरे कपड़े कानाफूसी करेंगे वे कपड़े भी अपने मालिकके सामने उसे न कह सकेंगे। कपड़े आपसमें चाहे जितनी बातें करें हम आप उनकी बातचीत नहीं समझ सकते। हमारे कपड़े एक साथ सूखें और आपसमें कितनी ही बातें करें, मगर उनकी सहायतासे आपकी गुप्त बातें न मैं जान पाऊँगा और न ही मेरी बातें आप तक पहुँच पायेंगी। कपड़ोंकी बातचीत आदमी भी जान-समझ सके, इसके लिए कोई आविष्कार जबतक कल्पक शास्त्रज्ञ नहीं कर पाता, कपड़े धोबीके पास धुलनेके लिए देनेमें कोई आपत्ति नहीं हैं। वे जिस स्थानपर सुखाये जायेंगे उस स्थानको सुन्दरता प्रदान करनेके अतिरिक्त वे और कर ही क्या सकते हैं?

और तब मैंने अपने कपड़े धुलनेके लिए भेज दिये !

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ताला चाभीऽ !

मैंने उससे पूछा, 'तुम्हारा कामकाज कैसा चलता है?' लोहेके एक मोटे चिमटेमें चाभीका एक सिरा दबाकर उसका दूसरा सिरा रेतीसे घिसनेमें वह व्यस्त था। उसने मेरी ओर देखनेके लिए गरदन नहीं उठायी, लेकिन मुँहमें पकड़ी हुई बीड़ी एक बार निकाल और फिर पकड़कर दम मार उसने झुके हुए ही कहा, पेटके लायक़ कमा लेता हूँ साहब !'

मैंने पूछा, 'पेटके लायक़ – यानी कितना? हर रोज़ आठ-बारह आने? रुपया?'

'हाँ, रुपया-डेढ़ रुपया कमा लेता हूँ 'डेली'। किसी दिन अच्छी बोहनी हो जाती तो तीन-चार भी मिल जाते हैं।'

मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। खयाल ही नहीं था कि टूटे तालोंकी मरम्मत करने और खोयी हुई चाभियोंके बदले नयी चाभियाँ बनानेके उसके धन्धेमें वह चालीस-पैंतालीस रुपये हर महीने कमाता होगा। मैं समझता था कि उसे हर महीने ज्यादासे ज्यादा दस-बीस रुपये मिलते होंगे।

मैंने उससे फिर पूछा, 'क्या तुम्हारे धन्धेमें कभी मन्दी नहीं होती?'

यह प्रश्न सुनते हुए उसने गरदन उठाकर मेरी ओर देखा, और हँसकर कहा, 'कभी नहीं'। और तब फिर उसी तरह गरदन झुकाकर रेतीसे चाभीका सिरा घिसते हुए वह कहता रहा, 'हमारे धन्धेके लिए हमेशा माँग रहती ही है जैसे लोगोंके जूते हमेशा टूटेंगे वैसे ही ताले भी हमेशा बिगड़ेंगे और चाभियाँ भी खोती रहेंगी, यह निश्चित ही है। लोग यदि चाभियाँ न खोयें तो हमारा आधा धन्धा कम हो जायेगा। लेकिन ऐसा होता नहीं। इधर तो मैं देख रहा हूँ कि लोग भुलक्कड़ अधिक हुए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हैं। हमेशा चाभियाँ खोते हैं....'

उसकी इस बातको कि लोगोंका भुलक्कड़पन इन दिनों बढ़ रहा है, शास्त्रीय नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह कथन था गलेमें औजारोंसे भरा हुआ लकड़ीका छोटा-सा सन्दूक़ और हाथमें छोटी-बड़ी चाभियोंका गुच्छा लटकाये सड़कोंपर 'तालाऽ चाभीऽ' चिल्लाते जानेवाले एक साधारण कारीगरका! फिर भी उसकी बातसे सहसा ही मैं प्रभावित हुआ। पिछले चार महीनोंमें मैंने चार बार चाभियाँ खोयी थीं और हर बार चाभी खो जानेसे मैं काफ़ी परेशानीमें पड़ गया था। नयी चाभी बनानेवाले कारीगरकी मुझे शरण लेनी पड़ती थी।

बाज़ार जाकर नया ताला-चाभी खरीदना कितना आसान है! मगर इसकी तुलनामें ताला बन्द हो और चाभी पास न हो, ऐसी मुसीबतमें कोई उपाय सोचना कितना मुश्किल है। ऐसे समय दूकानमें मिलनेवाले नये ताले-चाभियोंका उपयोग बहुत ही कम हो सकता है। क्योंकि तालोंमें भी स्वभाव वैचित्र्य होता है। एक ताला दूसरे तालेकी चाभीसे कभी खोला नहीं जा सकता। हाँ, ऐसे कारनामे तो चोर दिखा सकते हैं। किसी पुस्तकमें एक चोरकी यह बात मैंने पढ़ी थी कि ऐसा ताला अभीतक बना ही नहीं जो खोला न जा सके। परन्तु चोरोंकी इस चतुराईका हमें क्या फल? अपने सन्दूक़के तालेकी चाभी न मिलनेपर किसी चोरको तो निमन्त्रण हम दे नहीं सकते। और जिस किसी पैसेवालेके यहाँ चाभियाँ हमेशा खोती रहती हैं वह भी इस कामके लिए किसी चोरको तो अपने यहाँ बुलायेगा नहीं। और इसीसे, अपनी चाभी खो जानेपर रास्तेपर हम अधीर भावसे 'ताला चाभीऽ' की आवाज़की बाट देखते हैं। और हमारी आवश्यकतापर, प्रतीक्षाके बावजूद, हमारी आँखों आगे ही ताला खोलनेवाला ही कारीगर उस समय नहीं दिखाई देता।

इसीलिए, अपनी चाभी खो जानेपर पहले तो हम खूब ढूँढ़-ढाँढ़ करते हैं। परेशानीके बावजूद वह किसी तरह कहीं भी नहीं मिलती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और तब हम घरके सभी लोगोंपर नाराज होते हैं। पड़ोसियोंकी भी तमाम चाभियाँ मँगा लेते हैं, लेकिन उनमें-से एक भी काम नहीं देती! हमारे सामने पचासों चाभियाँ इकट्ठा हो जाती हैं पर किसीका भी उपयोग हम नहीं कर पाते। वास्तवमें जब हमने ताला खरीदा था हमें दो चाभियाँ मिली थीं। उनमें-से एक काममें लेकर दूसरी कहीं सहेजकर रख छोड़ी थी। किन्तु ऐसे ज़रूरत पड़नेपर दूसरी चाभी भी न मिलेगी यह हमारी आपकी एक बड़ी मुसीबत है और ऐसी मुसीबतके समय यज्ञोपवीतके उपयोग और उसके लाभकी बात मनमें उठती है। परन्तु यज्ञोपवीत न पहननेकी अपनी भूल मैं स्वीकार नहीं करता। मेरे एक मित्रने तो एक ही नहीं बल्कि तमाम चाभियों-सहित यज्ञोपवीत ही खो दिया था। उस प्रसंगको भी मैं नहीं भुला सकता। कहनेका आशय यही है कि यह सब सोचकर मैं मनको सन्तोष देता हूँ कि चाभियाँ तो हमेशा खोयेंगी ही। और तब सन्दूक़में पड़े बन्द तालेकी ओर असहाय होकर मैं देखता रह जाता हूँ। तभी एकाएक किसी समय 'ताला चाभीऽ' की आवाज़ सुनाई देती है, और उस समय मुझे भगवान् मिल जाने-जैसी खुशी होती है।

बिना चाभीके बन्द होनेवाले ताले तो और भी अधिक धोखेबाज़ होते हैं। धोखा देनेका उनका अपना एक खास ढंग होता है। हम अपने सूटकेसमें सामान रखकर ताला बन्द कर देते हैं, और उसी क्षण हमें ध्यान आता है कि तालेकी चाभी तो सूटकेसके भीतर ही रह गयी। उस समयकी परेशानी देखते बनती है? एक बार मैं व्याख्यान देने इन्दौर जा रहा था। रातमें गाड़ी चलनेसे पहले पढ़नेके लिए कुछ पुस्तकें निकालीं और टूथ पेस्ट, ब्रश, साबुन, पानदान आदि चीज़ें सूटकेसमें रख दीं और ताला बन्द कर लेट गया। उसी समय एकाएक मुझे ध्यान आया कि चाभी तो सूटकेसमें ही रह गयी। घरके लोगोंपर बिगड़ नहीं सकता था। पास-पड़ोसवालोंको चाभियाँ भी जमा नहीं की जा सकती थीं। लाचार हो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बिस्तरपर लेट रहा। उस समय व्याख्यानके बारेमें कुछ सोचनेके बजाय चाभीके सम्बन्धमें और इन्दौर पहुँचनेपर क्या होगा, इस सम्बन्धमें बातें मनमें आ रही थीं। जब कि इन्दौर स्टेशन आनेसे पहले ही अच्छे कपड़े पहननेको मैंने सोच रखा था। कपड़े भी सूटकेसमें बिलकुल ऊपर ही रखे थे। लेकिन अब क्या किया जा सकता था ? हाथ-मुँह पोंछनेका तौलिया और बाल सँवारनेका ब्रश भी सूटकेसमें ही था। और इन्दौर भी पहुँच गया। रह-रहकर वहाँ यही बात मनमें हो आ रही थी मेरे स्वागतमें मालाएँ लेकर आये लोगोंने मुझे देखकर जाने क्या-क्या सोचा होगा ? चाय पीनेके बाद मुझसे नहीं रहा गया और मैंने अपनी कठिनाई साफ़-साफ़ लोगोंसे बतलायी। गेस्टहाउसका चपरासी मेरा सूटकेस सरकारी गाड़ीमें बाज़ारके 'ताला चाभीऽ' वालेके पास ले गया और ताला खुलवाकर वापस ले आया; तब कहीं मेरी परेशानी दूर हुई।

तब कहें, इस 'ताला चाभीऽ' वालेका कहना ठीक ही था। आजकल लोगोंका भुलक्कड़पन वास्तवमें बढ़ रहा है या नहीं, और यदि वह बढ़ रहा है तो उसका दूसरे महायुद्धसे कोई सम्बन्ध है या नहीं, आदि प्रश्नोंका अन्वेषण समाजविज्ञानके ज्ञाता करें। लेकिन यह सच है कि हम लोग जैसे हमेशा ताले खरीदते आये हैं वैसे ही हम हमेशा चाभियाँ भी खोते रहे हैं, और इसीलिए 'ताला चाभीऽ'वाला हमारे जीवनका एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। नये ताले बनानेके कारखाने बन्द हो जायें फिर भी हमारा काम अधिक न रुकेगा, किन्तु खोयी हुई चाभीके बदले दूसरी चाभी बनाकर ताला खोल देनेवाले इस कारीगरके बिना कई बार हमारा काम रुक सकता है !

तालेसे हम इतने सम्पृक्त हैं कि हमारे मनमें यह विचार ही नहीं आता कि किसी समय मानव जीवनकी ऐसी भी अवस्था रही होगी जब ताले नहीं बने थे, चाभियाँ नहीं बनी थीं। हम कभी अनुमान भी नहीं कर सकते कि बिना ताला-चाभीके मनुष्यका काम चल सका होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन थोड़ा ही सोचनेके बाद यह विश्वास हो जायेगा कि कोई ज़माना अवश्य ही ऐसा रहा होगा जब लोग तालेका उपयोग नहीं करते थे। यही नहीं, बल्कि समाजका रहन-सहन किसी ज़मानेमें ज़रूर ऐसा रहा होगा जब लोगोंके घरोंमें दरवाजे ही नहीं रहे होंगे, और दरवाज़े रहे भी होंगे तो उनमें साँकल न रही होगी। जापान हो आये मेरे एक मित्रने कहा था कि जिस होटलमें वे ठहरे थे उसके कमरोंके दरवाज़ोंमें साँकल नहीं थी। वे जबतक जापानमें रहे उन्होंने अपने कमरेका दरवाज़ा बाहरसे कभी नहीं बन्द किया; और न ही उनकी कोई चीज़ या एक पैसा भी चोरी हुआ। मैं यह नहीं बता सकता कि उनकी यह बात कहाँ-तक विश्वसनीय है। यदि उनकी बात सही हो तो जापानमें ताले-चाभियोंका क्रय-विक्रय बिलकुल ही न होता होगा या होता होगा भी तो बहुत कम और हमारे यहाँकी तरह 'ताला चाभीऽ'वाला तो वहाँ नहीं ही होगा। यह कहना तो अनुचित लग सकता है कि विदेश-यात्रासे लौटे हुए लोग गप्पें हाँकते हैं, इसलिए हम इतना ही कहेंगे कि उन लोगोंके कहनेमें अत्युक्ति तो होती ही है। जापानमें बिना साँकलके दरवाज़े होनेकी बात सम्भवतः मेरे मित्रकी कल्पना ही हो सकती है। पर, यह सच है कि प्राचीन कालमें बिना दरवाज़ेके मकान थे, बिना साँकलके दरवाज़े थे; और ताला क्या चीज़ होती है, यह लोग जानते ही न थे। मानव संस्कृतिके विकासको बताने-समझानेके लिए तो मैं यह कहूँगा कि किसी समय आदमीने आग जलाना सीखा, उसके बाद उसको यह भी जिज्ञासा हुई कि हथियार कैसे बनाने चाहिए। उसे कभी मकान बनाने और शरीरको ढँकनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई, और किसी वक़्त उसे यह भी ध्यान आया कि ताला कैसे बनाया जाये। वास्तवमें अपने-परायेकी बात जंगली अवस्थामें आदमीके दिमाग़में उठते ही न थे। ज्यों-ज्यों वह सभ्य होने लगा वह यह भी सोचने लगा कि यह घर मेरा है, यह धन मेरा है। इस प्रकार जब वह यह सोचने लगा कि मेरी किसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चीज़को कोई दूसरा न लेने पाये तभी उसने तालेका आविष्कार किया। ताला मानव-सभ्यताके इतिहासकी ही एक उपलब्धि है। इसका आविष्कार किस महात्माने किया, यह हम नहीं जानते! किन्तु मानव जीवनमें तालेका प्रवेश होते ही कितनी बड़ी क्रान्ति हुई, इसे हम सहज ही अनुमान कर सकते हैं। अपनी निजी चीज़ोंकी रक्षाके लिए आदमीने पहले ताला बनाया। ताला बननेके बाद परिणाम यह हुआ कि अपने धनकी रक्षा करनेकी लालसा मानवमें अधिक बढ़ गयी, उसकी स्वाभाविक उदारता कम होने लगी, कृपणतामें भी वृद्धि हुई, व्ययकी अपेक्षा संचयकी अभिलाषा बढ़ी। और इससे भी अधिक महत्त्वका परिणाम यह हुआ कि दूसरेका धन लूटकर छिपानेकी युक्ति उसे ज्ञात हुई। ताला कितनी तुच्छ चीज़ है लेकिन उसने मानवकी वृत्तिमें महान् परिवर्तन कर दिया। इसने मानवकी निष्कपटता और सरलताका विनाश किया। उसका स्वार्थ, उसकी असत्यवादिता, दूसरेकी चीज़ें अपहरण करनेकी उसकी लालसा आदि दुर्गुणोंमें एक छोटे-से तालेने वृद्धि की।

परन्तु अब मानव-जीवनसे तालेको अलग करना असम्भव है। इसके लिए कोई उपाय नहीं है। या यों कहें कि ताला वह संस्था है जो आधुनिक मानव-जीवनको विशिष्ट आकार प्रदान करती है। उसके परिणाम जितने अच्छे हैं बुरे भी उतने ही हो सकते हैं। परन्तु कुछ पहलुओंसे, जैसे विवाहकी पद्धति चाहे कितनी ही अनिष्टकर प्रतीत क्यों न होती हो, किन्तु जिस प्रकार वह नहीं नष्ट की जा सकती, उसी प्रकार तालेकी पद्धति अब चिरस्थायी हो चुकी है।

तालोंके अनेकों प्रकार हमें दिखाई देते हैं। बिलकुल चिएँके आकारसे लेकर एक मन वज़न तकके बहुत बड़े ताले बनते हैं। चपटे, गोल, चौकोर, लम्बे, चद्दरके, ताँबेके, पीतलके, फ़ौलादके! हज़ार ढंग हैं। तालोंके सम्बन्धमें मानवने अपनी कलात्मक रुचिकी तृप्ति कर ली है, और उसी परिमाणमें अपनी बुद्धिकी क्रीड़ाका भी प्रदर्शन किया है। कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
विशिष्ट अक्षर क़तारमें जोड़नेपर खुलने और बन्द होनेवाले तालेको देखकर उसे बनानेवाले कारीगरकी क्या आप सराहना नहीं करते ? प्रत्येक घण्टेकी घण्टी बजते समय मधुर स्वर गुंजानेवाली घड़ीकी तरह ही बन्द होते और खुलते समय मधुर स्वर देनेवाले ताले क्या आपने देखे हैं ? बैंकोंकी तिजोरियों या तहखानोंके ताले कितनी पेचीदा बनावटके होते हैं। सच ही ताला मानवकी बुद्धि-चातुरी और विज्ञानकी उन्नतिका मापदण्ड है।

लेकिन मज़ेकी बात एक यह है कि मानवने अनेक प्रकारके ताले बनानेमें कितनी ही उन्नति क्यों न की हो, फिर भी अपने धनकी रक्षा करनेकी उसकी जिस कामनाने तालेको पहले-पहल जन्म दिया उस कामनाकी पूरी सन्तुष्टि अबतक हो नहीं पायी है। कभी हो भी न पायेगी। बिना मालिकके, जो किसी चाभीसे न बन्द हो सके और न खुल सके— ऐसी बनावटका ताला बनाया जाना असम्भव है। नयी बनावटका ताला बनते ही उसे चोरीसे खोलनेका ढंग भी लोग ढूँढ़ ही लेते हैं। जो ताले खोले नहीं जा सकते उन्हें बिजली-द्वारा किस प्रकार जलाना चाहिए यह भी उनकी समझमें आ जाता है। संक्षेपमें, शत प्रतिशत रक्षा करनेवाला ताला बन ही नहीं सकता। किसी अपराधको रोकनेके लिए सरकारी क़ानून बनते ही लोग उससे बचकर अपराध करनेके मार्ग भी ढूँढ़ लेते हैं। इसी प्रकार नयी बनावटका ताला बनते ही चोर उसकी चाभी भी ढूँढ़ लेते हैं। 'जहाँ आग है वहाँ धुआँ होना ही चाहिए' इस उक्तिके अनुसार तालेके साथ चाभीका होना भी अनिवार्य है। और उसे जिस तरह मालिक खरीद सकता है, चोर भी उसी तरह उसे बना सकता है! ताले और भगवान्पर विश्वास करना एक-सा ही है। दरवाज़ेपर लगाया गया ताला मात्र चोरको दिलायी शपथके समान है।

लेकिन इस दार्शनिक बातपर विश्वास कौन कर सकता है ? और विश्वास करनेपर भी उसे कार्यरूपमें परिणत कौन कर सकता है ? केवल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है, यह सिद्धान्त हम कितनी ही बार क्यों न सुनें फिर भी आहार, निद्रा आदि व्यवहार हमें करने ही पड़ते हैं। यही नियम तालोंके लिए भी लागू है। हम ताले खरीदते रहेंगे और चाभियाँ खोते ही रहेंगे; और तब यह भी निश्चित है कि 'ताला चाभीऽ' की आवाज़ लगानेवाले कारीगरकी राह हमें देखनी ही पड़ेगी।

रेतकर बनायी चाभीसे मेरा ताला खोलकर मुझे थमाते हुए उसने कहा, "लीजिए साहब !"

दो बार ताला बन्द करने और खोलनेके बाद मैंने उसकी ओर देखा और हँसकर उससे कहा, "तुम्हारा कहना ठीक है। तुम्हारे धन्धेमें कभी मन्दी नहीं हो सकती।"

मेरे दिये दाम उसने जॉकेटकी जेबमें रखे, नयी बीड़ी सुलगाकर मुँहमें दबायी, सन्दूकका तस्मा गलेमें अटकाया, चाभियोंका गुच्छा उठाया और अपना रास्ता पकड़ लिया। दूरसे उसकी आवाज़ मुझे सुनाई पड़ी "ताला चाभी ऽ?"

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शब्दचित्र

•

सिक्सरोंके बादशाह : सी० के०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिक्सरोंके बादशाह : सी० के०

भारतीय क्रिकेटके पिछले चालीस वर्षके इतिहासमें क्रिकेटके खेलके मैदानपर घटी अद्‌भुत, सनसनीखेज़, और संस्मरणीय घटनाएँ याद करता हूँ, तब सन् १९२६ में बम्बईके खेलके मैदानमें खेले गये एक अद्‌भुत मैंचका मुझे स्मरण हो आता है।

गिलिगनके नेतृत्वमें भारतके दौरेपर आयी एम० सी० सी० टीमके विरुद्ध भारतीय टीमने यह मैच खेला था। एम० सी० सी० टीममें मॉरिस टेट, जॉर्ज गिअरी, मर्सर, बॉइस, अस्टिल-जैसे विख्यात बोलर थे। इन सबकी बोलिंगको पीटकर तूफ़ानकी तेज़ीसे १५३ रन बनानेका अद्‌भुत विक्रम सी० के० नायडूने किया, जिसे देखकर एम० सी० सी० टीमके बड़े-बड़े निपुण गोरे खिलाड़ी हैरान रह गये, खेलके मैदानमें एकत्रित हज़ारों दर्शक मारे ख़ुशीके उन्मत्त हो उठे, और सी० के० नायडूकी ख्याति भारतकी सीमा पार कर दूर विदेशों तक जा पहुँची।

इन एक सौ तिरपन रनोंमें स्वयं दौड़कर बनाये इक्के-दुक्के रनोंकी संख्या कुल इकतीस थी, चार रनवाले हिट ग्यारह थे, और छह रनवाले गगनस्पर्शी हिट थे तेरह। टूरपर आयी एम० सी० सी० टीमने इस टूरमें कितने मैच जीते और कितने हारे यह सवाल टूर खतम होनेपर किसीने उठाया ही नहीं। लोगोंको सिर्फ़ बम्बईमें खेले गये इस मैच और इसमें भी सी० के० नायडूके निडर और प्रमत्त खेलका ही स्मरण रहा। ख्यात-नाम विदेशी बोलरों और फ़ील्डिंग करनेवालोंके अंजर-पंजर ढीले करनेका विक्रम कर सी० के० नायडूने रणजीकी परम्परा बनाये रखी, और एम० सी० सी० टीमको ऐसे नाकों चने चबवाये जो उन्हें उम्र-भर याद रहेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इसपर भारतीय क्रिकेटके पक्षपाती लोग फूले न समाये। इंग्लैण्ड और ऑस्ट्रेलियाके क्रिकेट क्षेत्रीय लोग एक-दूसरेसे पूछने लगे : यह सी० के० नायडू है कौन ? नायडूको अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करा देनेवाले इस मैचमें तेरह ओव्हर बौण्डरियाँ मारते वक़्त सी० के० नायडूमें जो वीरताका प्रादुर्भाव हुआ था उसका, और एकसे बढ़कर एक निर्दोष और गगनस्पर्शी सिक्सरोंकी उनकी हिटें देखते वक़्त दर्शक जिस तरह प्रसन्नतासे झूम रहे थे और नायडूकी तारीफ़ोंके पुल बाँध रहे थे उसका चित्र मेरी आँखोंके आगे आज भी बिलकुल स्पष्ट आ जाता है।

आँखें चौंधियानेवाला बैट

रणजी, दिलीपसिंग, नवाब पटौड़ी, निसार, अमरसिंह आदि नामोंके साथ ही कर्नल नायडूका नाम भी दुनियामें जहाँ-जहाँ क्रिकेटका खेल खेला जाता है वहाँ विख्यात हो गया है। सब लोग उन्हें सिर्फ़ 'सी० के०' नाम-से जानते हैं, और जिन लोगोंने उनका प्रभावी खेल देखा है या उस खेलके समाचार सुने हैं उनकी दृष्टिमें 'सी० के०' अर्थात् 'सिक्सर'का एक समी-करण ही बन गया है! 'सी० के०'का अपनी जवानीमें खेला गया यह खेल ऐसा था जो अनजानों और जानकारोंको एक समान विमोहित करता। जानकार उस खेलकी निर्दोषितापर खुश होते, और अनजान उसकी चमक-दमक देखकर प्रसन्नतासे पागल हो उठते। वास्तवमें क्रिकेटके खेलमें विगत चालीस वर्षोंमें जनसाधारणने 'हीरो'के नाते जिसे निरन्तर मान-सम्मान दिया ऐसा व्यक्ति एक ही है – और वह है सी० के०! नायडू बैटिंग करने खड़े हुए कि सारी जनताके कण्ठसे एक ही पुकार उठती : कम ऑन सी० के०! और सामने बोलर चाहे टेट हो या ग्रिमेट, सी०के० का बैट बिजली-सा चमकने लगता और लोगोंको सिर उठानेपर लाल गेंद आसमानमें ऊँची उठती हुई नज़र आती। लोग पागल हुए तालियाँ पीटते, सीटियाँ बजा-बजाकर चारों दिशाएँ गुँजा देते और पटाखे तक छोड़ते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किसी भी मैचमें सी० के० खेलते तब यह सब अवश्य होता। हज़ारों मुखोंसे उठनेवाली 'कम आॅन सी० के०' की गूँज मुझे अब भी सुनाई देती है। गिलिगनकी एम० सी० सी० टीमसे खेले गये मैचमें सी० के० खेले तब उनकी आयु ३१ वर्षकी थी। इससे पहले ही वे क्रिकेटके शौक़ीनोंके गलेका हार बन चुके थे जब २१ वर्षकी आयुमें सन् १९१६ की बम्बई क्वाड्रैंग्युलर मैचोंमें वह खेले। बड़ी मैचोंमें खेलनेका यह उनका पहला मौक़ा था, और विशेषता तो यह कि यह शुरूआत भी उन्होंने 'सिक्सरों'-से की !

स्वर्ण-अक्षरोंमें लिखा गया नाम

सन् १९१६से १९३६ तक भारत, सीलोन और इंग्लैण्डमें क्वाड्रैंग्युलर, पेण्टैंग्युलर, विभिन्न नगरोंके विभिन्न समारोह और स्पर्द्धा मैचोंमें नायडू निरन्तर बीस वर्ष तक खेलते रहे ! भारतमें क्रिकेट खेलनेका एक भी ऐसा मैदान नहीं है जिसपर नायडू न खेले हों, ऐसा एक भी बड़ा नगर न होगा जहाँके क्रिकेट-प्रेमियोंने नायडूका आँखें चौंधियानेवाला खेल न देखा हो, ऐसा एक भी नरेश या गवर्नर न होगा जिसकी टीममें नायडू न खेले हों। भारतमें ऐसे लाखों युवक होंगे जिनकी नोटबुकोंमें नायडूने स्वयं अपने हस्ताक्षर किये हैं। इंग्लैण्डके भी हज़ारों छात्रोंकी नोटबुकोंमें नायडूके हस्ताक्षर बड़े गौरव तथा प्रेमके साथ सुरक्षित रखे गये हैं।

सी० के० नायडूके जीवनके प्रारम्भिक पाँच-छह वर्षोंका समय छोड़कर आगेके पूरे ५७ वर्ष शिकार, पोलो, हॉकी, टेनिस और ख़ासकर क्रिकेट-जैसे मर्दानगीके खेलोंमें ही व्यतीत हुए। जो भी खेल उन्होंने खेला, उसमें प्रथम श्रेणीका स्थान पाया। और हर खेलमें तूफ़ानी आवेश उनकी विशेषता रही। जब वे छह वर्षके थे तब उन्होंने क्रिकेटका बैट और बोल हाथमें लिया। उनका परिवार वास्तवमें मद्रासका है, परन्तु बादमें वह नागपुरमें स्थायी हो गया। सी० के० के पिता और चाचा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दोनों ही रणजीके मित्र थे, इसीलिए उन्हें क्रिकेटका चसका भी था। उनका अपना निजी 'नायडू जिमखाना' था जिसपर नायडू बन्धु प्रतिवर्ष बारह हज़ार रुपये खर्च करते थे और जिसके तमाम खिलाड़ी नायडू नामके थे। इस प्रकारकी पाँच टीमें नागपुरमें थीं। किसीके पूछनेपर कि "आप क्रिकेट कबसे खेलने लगे?" नायडू हँसकर कहते, "यह भी कोई पूछनेकी बात है? माँके दूधके साथ ही मैंने क्रिकेटकी शिक्षा पायी है।" प्रारम्भिक दिनोंमें नायडू अत्यन्त सतर्कताके साथ और हाथ रोककर बैटिंग किया करते थे। परन्तु उनके पिताने उनसे कहा, "बेटा, नामवरी प्राप्त करनी हो तो दो बातोंकी ओर ध्यान दो। पहली यह कि धूप और बारिशमें जी भरकर घूमो-फिरो जिससे तुम्हारा शरीर मज़बूत हो और दूसरी यह कि किसी भी मैदानमें खेलो और चाहे कोई बोलर हो मगर हर गेंद हिट किया करो। पिताका यह मन्त्र सी० के० ने गाँठ बाँधा और फिर तो उनके प्रशंसकोंको ही नहीं बल्कि निष्पक्ष इतिहासकारको भी अब स्वीकार करना पड़ता है कि सी० के०-जैसा निपुण तूफ़ानी वेगसे खेलनेवाला खिलाड़ी दूसरा बिरले ही देखनेमें आयेगा।

वह साफ़-साफ़ अपमान

सन् १९३७-'३८ में लॉर्ड टेनिसनकी टीम टूरपर आयी। इस टीमसे जो मैचें हुई उनमें-से केवल एक साधारण मैचमें सी० के० खेले। बम्बईमें पहला टेस्ट मैच हुआ, उसमें खेलनेके लिए सी० के० का चुनाव हो चुका था। वे इन्दौरसे बम्बई आये भी थे, परन्तु ठीक वक़्तपर उन्हें टीमसे अलग कर दिया गया। समूचे हिन्दुस्तानमें एक हलचल-सी मचा देनेवाली इस घटनाकी जड़में एक दुःखदायी इतिहास था। सी० के० इस अपमानको कैसे बरदाश्त कर सके यह वे ही जानें। सन् १९३६ में इंग्लैण्ड गयी भारतीय टीममें सी० के० गये थे, वहाँ जो टेस्ट मैचें वे खेले वही उनके आखिरी टैस्ट मैच प्रमाणित हुए। इस टूरके समय सी० के० का विक्रम-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूर्य पश्चिमकी ओर गतिमान था, फिर भी दर्शकगण सी० के० का तूफ़ानी वेग पर्याप्त मात्रामें देख सके। इस बारमें सी० के० ने कुल ११०२ रन बनाये और ५७ विकेट् लिये। कैनिंगटनमें खेले गये तीसरे टेस्टमें उन्होंने ८१ रन बनाये और लिव्हरपूलमें लंकाशायरके विरुद्ध हुए मैचमें छह विकेट् लेकर कैपट्नका उत्तरदायित्व निबाहकर मैच जीता। इस टूरके मैचोंका वर्णन लिखनेवाले अँगरेज़ आलोचकोंने बार-बार यही लिखा कि पहलेवाले सी० के० अब नहीं रहे, फिर भी सी० के० तो सी० के० ही हैं; और इसका पर्याप्त प्रमाण दर्शकोंने उनकी बैटिंग और बोलिंगमें पाया!

सी० के० अब ७० के आस-पास हैं, फिर भी उनके खेलमें चित्त आकर्षित करनेका गुण अब भी वर्तमान है। जिज्ञासु पाठक पूछ सकते हैं कि नायडूका विक्रम-सूर्य किस समय मध्याह्नमें था, तो इसके उत्तरमें सन् १९३२-'३३ का ही निर्देश करना होगा। सन् १९३३-'३४में जार्डीनकी टीम भारत आयी थी, तब भारतीय टीमके नायकके नाते सी० के० तीन टेस्ट मैचोंमें खेले। बम्बईके मैचमें अमरनाथने सौ रन बनाकर जो अपनी धाक जमायी वह सी० के० ही के नेतृत्वमें, और ये रन बनाते समय उनके सी० के० ही सहयोगी भी थे। इसी टूरमें कलकत्ता खेले गये दूसरे टेस्ट मैचमें इंग्लैण्डको मिलती हुई विजयको 'अनिर्णीत मैच' में बदल देनेका अद्‌भुत विक्रम नायडूने किया और दर्शकोंको विस्मित कर दिया। जो नायडू कभी सत्रह मिनिटमें सत्तर रन या सत्तर मिनिटमें एक सौ बीस रन बनानेका विक्रम करते आये थे, उन्होंने ही अवसर पहचानकर इस मैचमें प्रतिस्पर्धी टीमको प्राप्त होनेवाली विजयकी भ्रूणहत्या करनेकी इच्छासे रन बनानेकी अपेक्षा समय व्यतीत करनेके लिए क्या किया यह जानते हैं आप? सबका परिचित अपना तूफ़ानी खेल वे खेले ही नहीं, रनोंको महत्त्व न देकर उन्होंने विकेट बनाये रखनेका ढंग अपनाया। बाउण्ड्री हिटके लिए फड़कनेवाले हाथों और बोलिंग चीरनेके लिए आगे बढ़ उठने-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वाले क़दमोंपर रोक लगा दी। डेढ़ घण्टे डटे रहकर उन्होंने केवल नॉट आउट अड़तीस रन बनाये। मैच अनिर्णीत रहा, प्रतिस्पर्द्धी टीमको विजय प्राप्त न होने दी, अपने लिए और अपनी टीमके लिए नीति-युक्त विजय प्राप्त की। यानी सन् १९३३-'३४ में भी नायडूका विक्रम पर्याप्त मात्रामें बना हुआ था। फिर भी कहना पड़ेगा कि सी० के० के कर्तृत्व और ऐश्वर्यकी वसन्तश्री संसारको सन् १९३२-'३३ में ही दिखाई दी।

अद्वितीय पाँचोंमें

इस वर्ष जिस विभवमें सी० के० दृष्टिगोचर हुए वैसा विभव दोबारा उन्हें प्राप्त न हुआ। इस वर्ष अधिकृत भारतीय टीम इंग्लैण्डके टूरपर पहली बार गयी। सी० के० उस टीममें थे। टूर भारतकी दृष्टिसे कीर्तिकर प्रमाणित नहीं हुआ, परन्तु आश्चर्य यह कि भारतीय टीमने जो इस वर्ष कर दिखाया उसकी बराबरी बादको इंग्लैण्ड गयी भारतीय टीमें न कर पायीं! जानकार लोग यही कहते हैं कि १९३२-'३३ में जो भारतीय टीम इंग्लैण्डमें खेली वही सबसे प्रबल और चमकदार थी। भारतीय टीमने इस बार भारी कीर्ति प्राप्त की, परन्तु विक्रम ऐसा रहा कि यह टूर सी० के० का व्यक्तिगत टूर ही प्रमाणित हुआ। इस टूरमें केवल एक टेस्ट मैच लॉर्ड्‌ज़के मैदानमें खेला गया। टीमके नायक सी० के० थे। उनके अपने इस मैचमें सौ रन बने। समूचे टूरमें उनके अठारह सौ बयालीस रन थे, छत्तीस छक्के उन्होंने लगाये, और विपक्षियोंके पैंसठ विकेट् लिये। इंग्लैण्ड में प्रति वर्ष वर्षके पांच श्रेष्ठतम खिलाड़ियोंका बड़े गौरवसे उल्लेख किया जाता है। सन् १९३२-'३३ के श्रेष्ठतम पाँचमें सी० के० का नाम भी आदरके साथ सम्मिलित किया गया है। उस अवसरपर 'विसडन'में सी० के० का वर्णन इन शब्दोंमें प्रकाशित किया गया था –

"साधारण लम्बाई, छरहरी देह और चपल अंगोंवाले नायडूको देखते ही लगता है कि प्रकृतिने उन्हें क्रिकेटके लिए ही जन्म दिया है। उनका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खेल स्वयं देखनेपर लोगोंको विश्वास हो गया कि अबतक उनके खेलकी अद्भुतता और रमणीकताकी जो ख्याति सुनी थी वह सच थी। आगे बढ़-कर दाहिने और बायें दोनों तरफ़ सच्चे साफ़ हिट लगानेमें वे अत्यन्त निपुण हैं। लम्बाईके कारण उनका झपट्टा तेज़ होता है और उसका वे पूरा फ़ायदा उठाते हैं। 'ड्राइव'का हिट लगाते समय उन्हें निर्णय करनेमें कुछ देर लगती है, ऐसा सन्देह होता है। मनमें पहले विचार उठेगा कि ऐसे प्रथम श्रेणीके खिलाड़ीमें यह दीर्घसूत्रताका दोष क्यों? परन्तु नायडूका खेल कई बार देखनेके बाद समझमें आ जाता है कि उनमें यह दोष नहीं बल्कि एक विशेष गुण है। उनकी चपलता, उनकी चीलकी जैसी दृष्टि, और फ़ौलादकी छड़ों-जैसी कलाइयाँ आदि सब मिलकर उनकी एक अद्भुत शक्ति बन गयी हैं और जब भी वे ऊँचा हिट लगाते हैं, जो बेहद तेज़ होता है, तब ऐसा जान पड़ता है कि मानो उन्होंने आकाश ही भेदने-के लिए लगाया हो। उनकी हिटबाज़ी विकेटके चारों ओर एक समान सफ़ाईसे चलती है। दाहिने आतेसे बायीं ओर मुड़नेवाले गेंदको विपरीत दिशामें तेज़ीसे टाल देना ठीक नहीं होता, मगर इस करामातमें ही उनके निडर खेलका रहस्य छिपा है। तेज़ हिट लगानेके समय 'बैट हमेशा सीधा पकड़ना चाहिए' इस किताबी नियमकी वे तनिक भी परवाह नहीं करते, और आड़े बैटसे हिट लगाते हैं। परन्तु उनकी हिटें अन्धी नहीं होतीं इसका विश्वास हो जाता है। उनमें नियमों और अनियमोंका बड़ा मनोहर संगम है! गेंदके गति-वेग और हाथके बैटकी हरक़त, इन दोनोंमें सच्चा और अचूक मेल साध लेनेकी करामात पूरे आत्मविश्वास और देहकी फ़ौलादी ताक़तके बिना सम्भव नहीं। हमें भारतीय खिलाड़ियोंका खेल उसकी अवर्णनीय जगमगाहटके कारण बहुत प्रिय है। यह पूर्वीय जगमगा-हट नायडूमें चरम सीमाको पहुँच गयी है। इसलिए उनका खेल कितनी ही बार देखनेपर भी मन तृप्त नहीं होता। इंग्लैण्डके मैदानमें जिन्होंने एकसे एक बढ़कर रिकॉर्ड स्थापित किये और तोड़े ऐसे अनेक पक्के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
खिलाड़ी खेल चुके हैं। सी० के० नायडू उनमें-से किसी विशिष्ट खिलाड़ी-जैसे हैं यह कहना तो निरर्थक है। लेकिन यह सच है कि दर्शकोंको थर्रानेवाला खेल केवल वे ही खेल सकते हैं। अपने प्रकारके वे अकेले हैं।"

संयमित और निष्पक्ष यह मूल्यांकन 'विसडन' में प्रकाशित हुआ था, १९३२-'३३ ई० के सीज़नमें 'वायगॉल', 'किलबन', 'फ्रॉय'-जैसे समाचार-पत्रोंके लेखकोंने नायडूकी जिस ढंगसे स्तुति की है वह कितनी उपमाओं और अलंकारोंसे सजी हुई होगी, इसका अनुमान अँगरेज़ आलोचकोंमें अग्रगण्य-नेव्हिल– कार्डसके इस वक्तव्यसे किया जा सकता है। सी० के०के सम्बन्धमें उन्होंने लिखा है कि, 'हमारी टीमके बोलर बड़े बहादुर और प्रभावशाली प्रतीत हुए, लेकिन कबतक ? जबतक उन्हें नायडूका मुक़ाबला नहीं करना पड़ा था। नायडूके बैटिंग आरम्भ करते ही उनका प्रभाव खत्म हो गया। किसी बोलरका आवेग, किसी बोलरका 'स्विंग' किसीका 'स्पिन' आदि तमाम हथियार नायडूके बैटके साथ टक्कर होते ही दब गये। मैं तो यह कहूँगा कि नायडू स्वयं तो ऊँची श्रेणीके खिलाड़ी हैं ही, उनके संसर्गसे प्रतिस्पर्द्धी भी कलाकार बन जाते हैं। हमारी टीमके खिलाड़ियोंकी बैटिंग सदाकी अपेक्षा अधिक दर्शनीय हुई हो तो उसका वास्तविक कारण यही है कि तूफ़ानी खेल खेलनेवाले नायडूके विशाल माथेपर पसीनेकी बूँदें देखकर उन्हें एक नयी ही स्फूर्ति प्राप्त हुई।

स्वदेशकी यथार्थ सेवा

सन् १९२६ में बम्बईके मैदानमें गिलिगनकी टीमके विरुद्ध खेलते वक़्त नायडूने १५३ रन बनाये और छह रनोंके हिट मारे। तबसे लेकर सन् '३६ तक लगातार दस वर्ष नायडूने अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति पायी, और उन दस वर्षोंके कालमें सारा विश्व भारतीय क्रिकेटकी श्रेष्ठताका मूल्यांकन उनके नामसे करता था। उनके इन्दौरके निवासस्थानमें अनगिनत कप,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
तमगे, उपहार, मुक़ाबलोंकी स्मृतियोंके नाते लूटे हुए स्टम्प्स, गेंद, बैट्स आदि आलमारियोंमें रखे हुए हैं। आजीवन लूटी हुई सम्पत्तिकी ओर देखनेवाले महमूद गज़नवी-जैसा आनन्द अपनी इस लूटकी ओर देख नायडू उठाना चाहें तो उसे क्षम्य ही समझना चाहिए। परन्तु सी० के० के उदार स्वभावमें इस प्रकारके अहंको स्थान नहीं है। सच्चे खिलाड़ी वृत्तिसे वे कहते हैं, 'मैंने कितने रेकॉर्ड स्थापित किये और कितने तोड़े, इस माप-दण्डसे लोगोंको मेरे कार्यका मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। भारतीय क्रिकेटका झण्डा ऊँचा फहराता रहे इसलिए जिस मनोयोगसे मैंने खेला, उसीकी स्मृतिमें लोगोंको मेरी याद करना चाहिए। भारतीय खिलाड़ी, उसी मनोयोगकी वृद्धि करनेमें निरन्तर प्रयत्नशील रहें, यही मैं चाहता हूँ।

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यात्रा

•

कथाकलीके नैहरमें

सारनाथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कथाकलीके नैहरमें

केरलके भीतरी भागमें प्रवेश करनेके लिए मद्रास-कोचीन एक्सप्रेससे कोचीनके बन्दरगाह तक जाना पड़ता है। कोचीनसे आगे दो रास्ते हैं — तिरुवल्ला नामके छोटे-से शहर तक तारकोलकी बनी अच्छी सड़क है। सामर्थ्य हो तो टैक्सीसे अन्यथा स्टेट-ट्रान्स्पोर्टकी बससे तिरुवल्ला तककी यात्रा कर, आगे जल-मार्गसे जाया जाये या कोचीनसे ॲलेप्पे बन्दरगाह तक, और वहाँसे आगे भी जलयानसे यात्रा की जा सकती है। मैंने तो वापसी यात्रा पहले मार्गसे की थी, गया था दूसरे रास्तेसे। यह दूसरा रास्ता मुझे अधिक रमणीक लगा।

मैंने ॲलेप्पेके आग्नेय दिक्कोणमें स्थित 'तलवड़ी' नामक गाँव दो कारणोंसे जाना निश्चित किया था : एक तो मैं केरलके किसी छोटे-से गाँवमें रहना चाहता था, क्योंकि मैंने अनुभव किया है कि किसी प्रान्तके नैसर्गिक सौन्दर्यके वास्तविक अनुभवके लिए वहाँके विशाल नगर देखनेकी अपेक्षा छोटे-छोटे गाँव देखना अधिक अच्छा होता है। दूसरी बात यह रही कि कथाकली नृत्यकी दृष्टिसे तलवड़ी एक विख्यात और केन्द्रस्थान है। अपने अमेरिका-प्रवासमें कीर्ति अर्जित करनेके बाद विख्यात नर्तक उदयशंकरजीको प्रतीत हुआ कि नृत्यकी शास्त्रोक्त शिक्षा प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है। उन्होंने यह भी महसूस किया कि अमेरिकी जनता-को अपनी जिस पूँजीके आधारपर मुग्ध कर सके, वह अत्यल्प थी, और उसे बढ़ाना बहुत आवश्यक भी था। उदयशंकरजीकी यह इच्छा ज्ञात होते ही त्रावणकोरके महाराजने अपने दरबारके एक नृत्यकारको उन्हें नृत्यकी शिक्षा देनेके लिए भेज दिया। उनका नाम था शंकरन नम्बुद्रि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वे तलवड़ीमें रहते थे । फर्नान हॉलकी लिखी 'ॲन ऐनाटॅमी ऑव बैले' नामक पुस्तकमें कुछ जगद्विख्यात भारतीय नृत्यकारोंकी कलाकी खासी चर्चा है; उसीमें कृष्णन् कुटीका उल्लेख भी बड़े ही गौरवपूर्ण शब्दोंमें किया गया है । कृष्णन् कुटीकी ससुराल तलवड़ीमें ही है, और यदा-कदा आनेपर यहाँ वे बहुत दिनों तक ठहरते भी हैं । इन दिनों कृष्णन् कुटीका मुक़ाम तलवड़ीमें था और मैं उन्हींके यहाँ ठहरने जा रहा था ।

केरलमें प्रवेश करनेसे बहुत पहले ही दक्षिणभारतके विशिष्ट प्राकृतिक सौन्दर्यका दर्शन होने लगता है । मद्रास-कोचीन एक्स्प्रेससे साँझको लगभग साढ़े सात बजे हम आर्कोणम् जंक्शन पहुँचे और भोजनादिसे निवृत्त हो सुखकी नींद सो गये । सवेरे छह बजे उठा और खिड़की खोलकर देखा तो बाहर बिलकुल बदला हुआ दिखा मगर बहुत सुन्दर पानीसे लबालब भरे धानके छोटे-छोटे खेतोंसे सारी भूमि घिरी हुई थी । चारों ओर ऊँचे नारियलके पेड़ोंकी क़तारें, कुछ ही फ़ासलेपर झाड़ियोंसे ढँका पहाड़ । उस पूरे दृश्यपर एक गहरे नीले रंगकी छाया-सी दिखाई दे रही थी । धानके खेतोंमें काम करनेवाले मर्द-औरतोंका रंग बिलकुल काला, मगर कमरमें बँधी लुंगियों और पहने कुरतोंका रंग एकदम सफ़ेद । सभी हृष्ट-पुष्ट और मस्त । घने और कजरारे बालोंवाली स्त्रियाँ । घुटने तक पानीमें झुककर खड़े स्त्री-पुरुषोंकी क़तारें बड़ी सुहावनी लगती थीं । हमारी गाड़ी तेज़ीसे आगे भागी जा रही थी । कभी धानके खेत आँखोंसे ओझल हो जाते और बीचमें ही घने नारिकेल वन बिलकुल नज़दीक-से होते दिखते । छोटे-छोटे गाँव कभी दूर तो कभी बिलकुल क़रीब नज़र आते । नारियलके पेड़ोंके पत्तोंसे ढँके मकान, छोटे मगर साफ़ रास्ते, एकाध मन्दिर या चर्च, पनघटकी ओर जानेवाले स्त्री-पुरुष और मवेशी, कहीं-कहीं जल-धारामें तैरती इक्की-दुक्की नाव, और वहीं मछली पकड़नेके लिए खड़ी धीवर-कन्याएँ – यह साराका सारा दृश्य बड़ा मनोहारी लग रहा था ।

तलवड़ी जानेके लिए हम अॅलेप्पे बन्दरगाहसे दोपहरके बारह बजे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
रवाना हुए । साढ़े पाँच घण्टेकी नौका-यात्राका किराया एक आदमीके लिए सिर्फ़ सात आने देना पड़ा । हमारा मार्ग 'बैक वॉटर्स' का नहीं बल्कि नदीका था । इस गहरी और चौड़े पाटकी नदीका नाम पम्पा है । मलयाली भाषामें नदीको 'आर' कहते हैं ! 'पम्प्यार' यानी पम्पा नदी ! यहाँ भी नैसर्गिक सुषमा वही दिखी जो अबतक देखता आ रहा था । चारों ओर भरपूर बिछी शान्ति जैसे बता रही थी कि हम शहरी जीवनसे दूर जा रहे हैं । जगह-जगह दायीं-बायीं ओर मुख्य जलमार्गसे निकले छोटे-छोटे जलमार्ग भी दिखाई देने लगे । बीच-बीचमें नौका किसी छोटे मार्गमें घुसती और एक छोटे-से गाँवके पास पाँच मिनिट ठहरकर फिर मुख्य जलमार्गकी ओर मुड़ जाती । जहाँ-तहाँ पानी और नारियलके पेड़ोंकी घनी झाड़ी । घण्टों बीते किन्तु इस दृश्यमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा । जीमें आया, इस पानीका कहीं अन्त है या नहीं ? इस दृश्यका भी कहीं अन्त है या नहीं ? बीचमें ही दायें या बायें किनारेके गाँवोंके सुन्दर मकान दिखाई देते जिनके ओसारेसे नदीका गहरा पाट सटा हुआ है । कहीं-कहीं नदीमें तैरनेवाले लड़के और स्नान करनेवाली स्त्रियाँ दिखाई देतीं । बाल खोलकर नहाती उन स्त्रियोंको उनके सामनेसे नाव गुज़रनेपर हमने तनिक भी शरमाते नहीं देखा ।

कृष्णन् कुटीके मकानपर पहुँचते ही बारिश शुरू हो गयी । थोड़ी ही देरमें मूसलाधार बारिश बन्द हो गयी । आकाश साफ़ हो गया और चटक चाँदनी खिल आयी । घरके आँगनमें सफ़ेद बालू थी, इसलिए मूसलाधार बारिश होनेपर भी कीचड़का कहीं पता तक नहीं था, सारा पानी सोखकर बालू केवल गीली-भर हुई थी । भोजनके बाद आँगनमें पड़ी खाटपर लेटे-लेटे कृष्णन् कुटीसे खूब बातें हुईं । बात-चीत और विषयोंपर भी हुई किन्तु मुख्य रूपसे कथाकली नृत्यके बारेमें ही । अन्तमें आधी रात बीतनेपर कृष्णन्जी बोले, 'अब अन्दर जाकर आराम कीजिए ।' लेकिन मैंने कहा कि "मैं तो यहीं आँगनमें ही सोना चाहता हूँ, बड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अच्छी चाँदनी खिली है।"

कृष्णन्‌जी बोले, "अभी तो चाँदनीका मजा आ रहा है, किन्तु न जाने कब बादल घिर आयें और बारिश होने लगे; तब तो अन्दर जानेके लिए आपको दौड़-धूप करनी ही पड़ेगी।"

उनके भविष्य-कथनका प्रमाण मुझे सवेरे मिला, मगर मेरी इच्छा चाँदनी और खुलेमें सोनेकी थी और वह मैंने पूरी की। कृष्णन् अन्दर गये। मैं खाटपर लेटा रहा। स्वच्छ आकाशमें चाँद चमक रहा था। नजदीक ही बहती पम्पाकी कल-कल आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। जानेवाली किसी नौकाकी घण्टी भी बीच-बीचमें सुनाई दे जाती। नारियलके पेड़ोंकी उत्तुंग आकृतियाँ चारों ओर दिखाई दे रही थीं। दूर-दूर तक सब कहीं शान्ति! निःस्तब्ध! कथाकलीका नैहर चाँदनी रातके वैभवसे सजकर प्रगाढ़ निद्रामें लीन था।

किसी ज़मानेमें बीस-पचीस रुपये ख़र्चकर कथाकलीका आयोजन कराया जा सकता था। वह ज़माना अब नहीं रहा। लेकिन हमारे भाग्यसे इंजिनियरिंग विभागके एक बड़े अफ़सरके यहाँ पुत्र जनमा था, उस प्रसन्नताके अवसरपर उन्होंने कथाकलीका सार्वजनिक आयोजन किया था। मगर यह समारोह तलवड़ी नहीं, तिरुवल्ला शहरमें होने जा रहा था। लेकिन हम तो विशेष कथाकलीका प्रयोग देखने उत्तरी ध्रुवपर भी जानेको तैयार थे, फिर पासके तिरुवल्ला जानेकी बातपर भला क्या अड़चन पड़ती? और हम कुटीजीके साथ तिरुवल्ला गये।

एक विशाल विष्णु-मन्दिरके सभा-मण्डपमें रातके नौ बजे कार्यक्रम प्रारम्भ होनेको था। हम जान-बूझकर जल्दी गये, क्योंकि हम देखना चाहते थे कि नृत्यमें सम्मिलित होनेवाले पात्रोंका मेकअप किस तरह किया जाता है। मन्दिरके एक बड़े ओसारेमें पात्रोंके मेकअपका प्रबन्ध किया गया था। बिजलीकी रोशनी नहीं थी। मिट्टीके तेलकी दो-तीन साधारण-सी बत्तियाँ जल रही थीं। कुछ पात्र बैठे-बैठे मेकअप कर रहे थे। मगर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो पात्र लेटे थे और मेकअप करनेवाले उनकी मुखमुद्राएँ रँग रहे थे। कथाकलीकी रंगभूषा एक विचित्र कला है जिसमें घण्टों लगते हैं। आँखों-की पुतलियोंको छोड़कर चेहरेपर तिल बराबर जगह भी बाक़ी नहीं रहती जहाँ अनेक प्रकारके रंग न लगाये जाते हों! नृत्यनाटकके तीन प्रकार बताये गये हैं: सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी। कथाकलीका शास्त्रसंकेत है कि सतोगुणी पात्रके चेहरेपर हरे रंगकी, रजोगुणी पात्रके चेहरेपर नीले रंगकी और तमोगुणी पात्रके चेहरेपर लाल और काले रंगोंकी प्रधानता होनी चाहिए। इसी संकेतके अनुसार ही पात्रोंके चेहरे रँगे जा रहे थे। खल पात्रोंका चेहरा रँगना बड़ा ही कठिन काम है। इस कार्यके लिए मुख-लेपनके प्रवीणोंको बड़ा पुरस्कार देना पड़ता है।

रातके नौ बजे कथाकलीका कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। अलग और ऊँचा रंगमंच नहीं था, परदे आदि भी नहीं थे। ओसारेकी लगभग दस-पन्द्रह फ़ीट चौड़ी जगह छोड़कर दर्शकोंके बैठनेका प्रबन्ध था। देव-दैत्योंके रँगे पात्र भीड़में-से अपना मार्ग बनाकर रंगमंचपर प्रवेश करते थे। बिजली या गैसकी बत्तियोंके लिए मनाही थी। दर्शकोंकी पहली पंक्तिके पास ही पाँच-फ़ीट ऊँची एक दीवट रखी थी और उसमें बड़ी बत्तियाँ जल रही थीं। रोशनीका केवल यही एक प्रबन्ध था। इसके पीछे एक कारण यह भी था कि सैकड़ों वर्ष पहले जिस प्रकार प्रकाश-संयोजन किया जाता था आज भी उसी रूपमें उसकी प्रस्तुति हो तभी कथाकलीका कार्यक्रम वास्तवमें सफल कहा जा सकता है।

कार्यक्रममें सबसे पहले एक नंगे बदनवाले पखावजीने खूब बड़ी पखावज गलेमें लटकाकर बजाना प्रारम्भ किया। उसकी बायीं ओर एक झाँझ बजानेवाला था, और दायीं ओर झंगटवाला था। मलयालीमें पखावजको 'मद्धम,' झाँझको 'टायमणी', और झंगटको 'चेंगला' कहते हैं। लगभग पन्द्रह मिनिट तीनोंने ही बड़े आवेशसे अपने-अपने बाजे बजाये। इसे प्रारम्भिक 'ऑर्केस्ट्रा' भी कह सकते हैं। बाद इसके दो आदमियोंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लगभग सात फ़ीट लम्बा-चौड़ा एक परदा तान दिया। परदेके पीछेसे गायक एक गीत गाने लगे; इसे रंग-पूजा कहते हैं जिसके दो विभाग 'तोड़ायम्' और 'पुरप्याद' हैं। गाये जानेवाले गीतका अर्थ इस प्रकार है, "कन्याकुमारीके समुद्र-तटपर कवि खड़ा है और कथाकली-लेखनके निमित्त स्फूर्ति प्रदानके लिए भगवान्से प्रार्थना करता है।" परदेकी ओटकी रंगपूजाके बाद परदेके आगेकी रंगपूजा शुरू हुई; इसे 'मजुंथरा' कहते हैं। रंगपूजाके समय पखावजपर तेज़ीसे ध्रुपद-धमार बजाया जा रहा था, साथ ही झाँझ और झंगट भी बज रहे थे। रंगपूजामें लगभग पौन घण्टा लगा और उसके बाद कार्यक्रमकी कार्यवाही शुरू हुई।

पहला आख्यान था 'पूतना-वध'। कथाकलीमें बिलकुल मूक अभिनयकी पद्धति एक अतिरिक्त विशेषता है। तालकी लयमें नृत्य करते समय सम्भाषण अथवा स्वगत भाषणोंका प्रदर्शन केवल निश्चित शास्त्रोक्त सांकेतिक मुद्राओं-द्वारा करना पड़ता है। गीतकार विषय, पात्रोंके संवाद, स्वगत विचार और मनके भाव दरसानेके लिए किये जानेवाले अभिनय आदिका क्रमबद्ध वर्णन प्रस्तुत करनेवाला गीत रचता है और एक गायक उसे गाता है। गीत-बद्ध आख्यानोंकी रचना मलयाली भाषामें की गयी थी। वास्तवमें इन्हें समझ सकनेवाले दर्शक ही कथाकलीका सच्चा रसानुभव करते हैं। कथाकलीमें पद-लालित्यका महत्त्व बहुत थोड़े परिमाणमें है। यद्यपि इसे नृत्यका एक प्रकार माना गया है फिर भी इसमें नृत्य ही प्रधान नहीं होता। महत्त्व होता है गायन-द्वारा गाये जानेवाले गीत और उसमें वर्णित पात्रों-द्वारा किये जानेवाले अभिनयका। मेरे मनमें प्रश्न उठता था कि कथाकलीको 'नृत्य नाटच' कहनेकी अपेक्षा 'मूकनाटच' क्यों न कहा जाये? बहरहाल मुझे तो कथाकलीमें उजड्डपन ही अधिक दिखा; किन्तु यह सही है कि इसमें अभिनयकी कुशलता ग़ज़बकी होती है।

कथाकलीका संकेत है कि स्त्रियोंकी भूमिका पुरुष ही करें। उस रातके कार्यक्रममें पूतनाकी भूमिकाके लिए कोड्मालूरके विख्यात नर्तक करुणा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
करनजीको निमन्त्रण दिया गया था, और उन्हींके लिए भीड़ भी जमा हुई थी। घण्टे-भरके इस आख्यानमें केवल पूतनाका ही काम अधिक था। आख्यानका आशय इस प्रकार था : "कंसकी भेजी पूतना राक्षसी मथुरा नगरीमें प्रविष्ट हुई। नन्हें भगवान् श्रीकृष्ण खेल रहे थे। वहाँ वह गयी। श्रीकृष्णजीको दुलारकर गोदमें लेते हुए उन्हें वह स्तनपान कराने लगी और...उसका वास्तविक रूप पहचानकर श्रीकृष्णने जीवन-रस चूसकर उसे मार डाला।" करुणाकरन्‌जीने पूतनाकी भूमिका निःस्सन्देह बड़ी सफलतासे निभायी। उनका नृत्य देखकर कत्थक नृत्यके विभिन्न तालोंके प्रकारोंसे परिचित होनेके कारण मेरी दृष्टि एक बार भी विस्मित नहीं हुई, किन्तु विभिन्न प्रसंगोंमें विभिन्न भावोंका प्रदर्शन करनेका उनका अभिनय अवश्य सराहनीय था। विशेषकर मथुरा नगरीकी सुन्दरतासे चकित, भगवान् श्रीकृष्णके रूपसे विमोहित, कृष्ण-जैसे सुन्दर बालकको मारनेके प्रयत्नमें कच्ची खानेवाली, लेकिन कंसकी आज्ञाके आतंकसे भयभीत हो विभिन्न लाड़ले बोल बोलकर भगवान् कृष्णको पास बुलाकर स्तनपान करानेवाली पूतनाकी प्रतिच्छवियाँ उन्होंने बड़ी कुशलतासे प्रस्तुत कीं। इसी प्रकार और आगेके प्रसंगोंमें – जैसे नन्हें कृष्णके स्तनपान करते हुए प्राण हरण करते समय उन्हें दूर हटानेके लिए किया गया प्रयत्न, बादकी उसकी असहनीय यन्त्रणाएँ और अन्तमें प्रकट किया गया उसका अपना राक्षसी रूप तथा प्राणान्तके समयकी छटपटाहट-का प्रदर्शन करते समय उन्होंने कमाल ही कर दिया। अन्तिम बीस मिनिटोंमें गायक स्तब्ध हो गया था। अत्यन्त द्रुत लयमें केवल पखावज बजाया जा रहा था। इसका पारिभाषिक नाम 'इला की आटम्' है। और अन्तमें पीड़ासे छटपटाती हुई पूतना जब अचेत हो गयी उसी क्षण पखावजका बजाना भी बन्द हो गया। सब शान्त हुआ, और एक बड़ी पौराणिक घटना स्वयं अपनी आँखों देखनेकी गम्भीर प्रतीतिसे सभी दर्शकोंकी तरह मैं भी चकित विमुग्ध-सा रह गया था!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके बादका आख्यान 'उत्तरा स्वयंवरम्' था। उसकी विशेषता यही थी कि चंगनूरके विख्यात पचहत्तर वर्षकी आयुके वृद्ध नर्तक रामन् पिल्लेने उसमें दुर्योधनकी भूमिका निभायी थी।

इसके अनन्तर और भी कुछ आख्यानोंका प्रदर्शन किया गया और भोरमें साढ़े पाँच बजे नृत्यका वह कार्यक्रम समाप्त हुआ। लगातार तेज़ीसे बजनेवाले पखावज, झाँझ, झंगट और मलयाली भाषा तथा तीखी आवाज़ोंमें गाये गीत सुनते-सुनते मैं थक गया था। किन्तु साथ ही मनमें अजीब प्रसन्नता और तुष्टि थी कि अनेक वर्षोंकी इच्छा पूरी हुई थी। आजके विख्यात कलाकारोंमें-से प्रथम श्रेणीके दो कलाकार मैंने देखे थे, और कथाकलीके उद्गम स्थानमें जाकर परम्परागत शुद्ध प्राचीन रूपमें कथाकलीका प्रयोग देखनेका अवसर भी मुझे मिला था। यद्यपि कथाकलीके नृत्यसे मुझे अधिक सन्तोष नहीं हुआ फिर भी कलाके प्रकारोंमें किस बातकी प्रशंसा करनी चाहिए यह जानकारी तो मिली ही थी। और सबसे बड़ी प्रसन्नताकी बात तो यह थी कि केरलके बिलकुल अन्तरंगमें जाकर वहाँकी नैसर्गिक सुषमाका साक्षात्कार मैंने किया था। कश्मीरकी प्राकृतिक सुन्दरता उत्तुंग और भव्य है, मगर केरलकी सुन्दरताकी बात निराली है; वह अति रमणीक अथाह और उदात्त है, जिसकी स्मृति मेरे भीतरसे कभी मिट नहीं सकेगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सारनाथ

[सारनाथसे श्रीमती कमला फड़केके नाम लिखे पत्रका अंश]

रेलवे लाईन पार कर कुछ ही आगे जानेके बाद बनारस नगरकी सीमा समाप्त हो चुकी। रास्तेके दोनों ओर खेत, धरती और कहीं-कहीं पर किसानोंकी झोंपड़ियाँ दिखने लगीं, और अन्तमें एक लटकी हुई तख्ती दिखी, जिसपर लिखा था – 'सारनाथकी ओर'....। हमारी बसें उस ओर मुड़ गयीं और कुछ ही देर बाद हमने सारनाथकी सीमामें प्रवेश किया।

यहाँपर प्राचीन विहारोंके अवशेष, अशोकका भग्न स्तम्भ, काफ़ी अच्छी हालतमें दिखाई देनेवाला स्तूप, और बुद्धका प्रधान मन्दिर आदि सभी स्थान आधे पौन मीलकी परिधिमें स्थित हैं। बौद्धोंके निवास-स्थानको विहार कहते हैं। यहाँपर बीचो-बीच बड़ी दालान बनी है, उसकी दोनों ओर इन विहारोंका निर्माण किया गया है। ये सबके सब पत्थरोंसे बने हुए हैं। किसी युगमें यहाँ परमार्थ विद्याका अध्ययन और अध्यापनकी व्यवस्था थी। जिस तरह आज काशी विश्वविद्यालय है, उसी तरह छठी शताब्दीमें यह भी एक विश्वविद्यालय था। अशोकके भग्न स्तम्भके दो खण्ड इसी शिविरकी दालानमें ही रखे गये हैं। इस स्तम्भका बिलकुल ऊपरवाला शिखरका अंश संग्रहालयमें सुरक्षित रखा है जिसे हमने बादमें देखा। इसी शिखरकी अनुकृति अब डाकके टिकिटों-पर तुम देख सकोगी। उस आकृतिमें पीठसे पीठ लगाये चार शेर बैठे हैं। इस स्तम्भकी विशालता देख दर्शक प्रभावित हो जाते हैं। लेकिन हमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सबसे अधिक विस्मय इस स्तम्भका पॉलिश देख कर हुआ। यह स्तम्भ इतना चिकना है कि मोमके चित्रमें भी इससे अधिक चिकनाहट नहीं पायी जाती। शिलाओंपर ऐसी अनुपम और सुन्दर पॉलिश करनेकी उस युगकी कला अब विनष्ट हो चुकी है।

इस विहारसे कुछ ही दूरीपर 'धामेख' स्तूप दिखाई देता है। बुद्धके युगमें इस स्थानपर कुल तीन स्तूपोंका निर्माण हुआ, उनमें-से आज यही एक अच्छी दशामें है। तुम पूछोगी, आखिर यह 'स्तूप' क्या है? पूनाके शनिवारवाड़ाके बुर्ज़ तुमने देखे हैं न? उन बुर्ज़ों-जैसे ही ये स्तूप होते हैं। किसी विशाल प्रासाद या शिल्पके द्वारा अपनी स्मृतिको स्थायित्व देना शायद बौद्धों और प्राचीन हिन्दुओंका व्यसन था। इन विशाल स्तूपोंका भीतरी हिस्सा ईंटोंका बना होता है और उनके चारों ओर पाषाण-वेष्टनियाँ होती हैं। दूरसे देखते हुए इन स्तूपोंकी भव्यताका अनुमान हम नहीं कर सकते, लेकिन उनके निकट जाकर देखनेपर उनकी सुविशालता देख हम विस्मित हो जाते हैं। अगर मैं तुमसे बताऊँ कि 'धामेख' 'धर्म मुख' का अपभ्रंश है तो इस नामका औचित्य सहज ही तुम्हारी समझमें आ जायेगा।

बुद्धके मन्दिरोंमें-से चीनियों-द्वारा निर्मित मन्दिर हमने पहले देखा। यह मन्दिर एक प्रशस्त बड़ा कमरा है जिसके बीचमें एक चबूतरेपर बुद्धकी संगमरमरी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। चारों ओरकी दीवारोंपर बुद्धके जीवनकी प्रमुख घटनाओंको रेखांकित करनेवाले चित्र लगे हैं। बुद्धकी प्रतिमा ध्यान-मुद्रामें लीन है। चीनी कारीगरों-द्वारा इसका निर्माण होनेके कारण मूर्तिकी नाक तथा आँखें छोटी-छोटी दिखाई गयी हैं।

दीवारोंपर बने चित्रोंकी ओर जैसे ही मैं देखने लगा अपनी हँसी मैं रोक न पाया! इनमें-से प्रत्येक चित्रमें बुद्धचरितका कौन-सा दृश्य अंकित किया गया है इसका विवरण अँगरेज़ीमें लिखा ज़रूर गया है,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लेकिन प्रत्यक्ष चित्रोंमें बुद्ध, उनकी माता, मौसी और भार्या आदिको ठीकसे पहचानना बहुत मुश्किल है। इन सभी व्यक्तियोंकी नाक, आँखें और उनके शरीरकी गठन रोमन लोगों-जैसी है। उनके वस्त्र, उनकी वेषभूषा आदि भी बिलकुल रोमन ढंगकी हैं। इन चित्रोंका निर्माता युरॅपियन था, शायद इसीलिए उसने बुद्ध तथा उसके सम्बन्धियोंको रोमन बना डाला। यह सोचकर कि यदि राम-लक्ष्मण सीता या राधा कृष्णके चित्र भी बिलकुल रोमन ढंगसे बनाकर हमारे मन्दिरोंमें प्रदर्शित किये जायें तो उन्हें देख हमारे मनको कितना आघात पहुँचेगा; वहाँकी 'विज़िटर्स बुक' में बड़े-बड़े अक्षरोंमें मैंने लिख दिया – 'इस मन्दिरमें लगाये गये तमाम चित्र दीवारसे निकालकर उन्हें फाड़कर नष्ट कर दिया जाये।'

इन चित्रोंमें बुद्धके जीवनके जिन प्रसंगोंको किसी युरॅपियन चित्रकारने अंकित किया है, वे ही दृश्य कुछ दिनों पहले सारनाथके प्रधान मन्दिरमें 'कोसेत्सु नोत्सु' नामक एक जापानी चित्रकार-द्वारा सभा-मण्डपके चारों ओर दीवारोंपर अंकित किये गये हैं। कितने असाधारण सुन्दर हैं ये चित्र! विमुग्ध-सा होकर दीवारपर लगे इन चित्रोंकी ओर न जाने कबतक मैं देखता रहा था। इन चित्रोंमें अंकित कुछ दृश्य शरीर-विज्ञानके विशेषज्ञोंको न रुचेंगे। उदाहरणके लिए माता मायावतीकी गर्भावस्थाका एक चित्र यहाँपर अंकित किया गया है। इस चित्रमें मायावती आँखें मूँदकर शय्यापर लेटी हैं और उनके उदरमें एक शुभ्र धवल हाथीको प्रवेश करते दिखलाया गया है [हाथीको ज्ञानका प्रतीक माना जाता है।] और एक चित्रमें बुद्धका जन्म स्वाभाविक रीतिसे न होकर माताकी दायीं गोदको चीरकर बाहर होते दिखाया गया है। और यह भी कि जन्म होते ही बुद्धका स्वरूप पाँच वर्षीय बालक-जैसा था और वे तीन पग चल भी पड़े।.... मेरे विचारसे ऐसी फूहड़ कथाएँ महापुरुषोंके जीवनसे जान-बूझकर जोड़ दी जाती हैं। कृष्णके भी चरितमें इसी तरहकी कई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कथाएँ पायी जाती हैं। और इसीसे इन चित्रोंमें चमत्कारोंसे युक्त जितने भी चित्र थे उनकी ओर ऐतिहासिक सत्यकी दृष्टिसे मैं देख नहीं रहा था। परन्तु कलाकी दृष्टिसे ये चित्र मुझे बहुत सुन्दर लगे। बुद्धके पत्नीको त्याग कर जाते समयका दृश्य अंकित करनेवाला चित्र तो कलाका असाधारण सुन्दर नमूना है। बुद्ध एक अत्यन्त सुन्दर राजपुरुष थे, इस बातको चित्रकारने पल-भरके लिए भी विस्मृत नहीं होने दिया है। इन चित्रोंमें जापानी पद्धति अपनायी गयी है लेकिन सिर्फ़ रेखा खींचने और रंगोंके प्रयोगमें ही। इस मुख्य मन्दिरका नाम 'मूलगन्धकुटी' है। गन्धकुटी नाम बुद्धके शिष्योंके कई निवास-स्थानोंको दिया गया है; तब इन सब गन्धोंका मूलस्थान जो बुद्धका है, उसे मूलगन्धकुटी नाम देनेमें औचित्य अवश्य ही है। यह मन्दिर एक छोटे-से टीलेपर बना हैं। मन्दिरका भवन सुविशाल न होनेपर भी काफ़ी भव्य है और अत्यन्त मनोरम तो निःसन्देह है। अपने अनुपम सौन्दर्यसे भावुक दर्शक-मनको बाँधनेमें सक्षम है वह। मन्दिरकी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पहुँचनेके बाद सभा-मण्डपके इस ओर लम्बी सँकरी-सी गली-जैसे दिखनेवाले स्थानमें एक बहुत बड़ा घण्टा है। घण्टेकी विशेषता यह है कि उसे बजानेके लिए उसमें किसी धातुका बना लंगर नहीं है, बल्कि एक मोटे बाँसके डण्डेको अच्छी तरह रंग कर घण्टेके सामने इस ढंगसे लटकाया गया है कि उसे ज़ोरसे घण्टेकी ओर ठेल देनेपर घण्टेके बीचोबीच आघात हो जाये। इस तरह आघात होते ही घण्टेसे 'टन्न-टन्न' की नहीं वरन् 'धाँऽ-धाँऽ' की गम्भीर और सुरीली आवाज़ निकलती है। उसे सुनते ही मनमें यह विचार अवश्य उठता है कि नित्यके हिन्दू मन्दिरोंके वातावरणसे किसी विभिन्न ही वातावरणमें हमने प्रवेश किया है। सभा-मण्डप काफ़ी विशाल है और चारों ओरकी दीवारोंपर लगे चित्रोंके कारण उसे एक अनूठी रमणीकता प्राप्त हुई है। अन्तिम सिरेपर सभा-मण्डपके गर्भ-द्वार-जैसा स्थान है वहीं संगमरमरकी चौकीपर बुद्धकी मूर्ति स्थापित है। यह मूर्ति है तो संगमरमरकी, लेकिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
ऊपरसे उसे रँग दिया गया है। मूर्ति भव्य और सुन्दर है, और धर्म प्रवर्तन चक्र मुद्रामें आसीन है। इस मुद्रामें बुद्धके हाथोंकी उँगलियाँ कैसी हैं इसका विवरण वहाँ आनेपर मैं तुम्हें सुनाऊँगा। अपने नृत्यमें इस मुद्राका अन्तर्भाव तुम अवश्य करना! बहुत ही सुन्दर मुद्रा है। बुद्धकी मूर्तिके नीचे चबूतरेकी जो पट्टी है उसपर हिरनोंकी आकृतियाँ और उनके बीचोबीच चक्र दिखाया गया है। ये शिल्प चित्र भी अत्यन्त मनोहारी हैं। सम्भवत: हिरनका बौद्ध धर्ममें महत्त्वपूर्ण स्थान है। बौद्धकालीन राजमुद्राओं तथा सिक्कोंपर भी यह चित्र पाया जाता है। आजकल तिब्बतमें लामाओंके शस्त्रादिपर भी यही चित्र पाया जाता है।

कहते हैं कि इस मन्दिरमें बुद्धकी प्रतिमा जिस चौतरेपर स्थापित की गयी है, उसके नीचे बुद्धका अवशेष भी सुरक्षित रखा है। यह जानकारी सुनते और मन्दिरमें खड़े हो दीवारोंपर उन अंकित चित्रों तथा बुद्धकी प्रतिमाकी ओर देखते हुए यह सोचनेको मैं विवश हुआ कि केवल बड़े-बड़े साम्राज्य ही नहीं कालके गर्भमें नष्ट हो जाते हैं, वरन् धर्मके साम्राज्योंको भी कालके क्रूर हाथों नष्ट होना पड़ता है। इस सारनाथको आजतक इतिहासकी न जाने कितनी लहरोंमें डूबना-उतराना पड़ा होगा। चौदहवीं शताब्दीमें यहाँ कितना अनूठा और अद्वितीय वैभव था। सिर्फ़ एक ही शताब्दीके अनन्तर हूणोंके दुष्ट अत्याचारोंने उस वैभवको छिन्न-भिन्न कर दिया। इसके बाद तो कई शताब्दियाँ ऐसे बीतीं कि किसीका ध्यान भी इसकी ओर न गया। और बादमें, बीसवीं शताब्दीके आरम्भमें, ब्रिटिश शासनने भूमिके गर्भमें विलुप्त इन अवशेषोंको बाहर निकाला, इस स्थानका उद्धार किया और अन्तमें महाबोधि सोसायटीने लाखों रुपये एकत्रित कर, जापानी सरकारकी सहायतासे सन् १९३६में वर्तमान बुद्ध-मन्दिरका निर्माण कराया। स्पष्ट है कि विशाल साम्राज्यों और धर्मोंको भी इस तरह चक्रनेमिक्रमका शिकार होना पड़ता है। नश्वरता वस्तु-मात्रका धर्म है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारी बसें जब चल पड़ीं तब इन्हीं विचारों डूबा हुआ था। लेकिन कुछ ही देर बाद एक ऐसी घटना घटी जिसके कारण मैं एक दूसरे प्रकारके विचारमें उलझ गया। घटना भी बड़ी ही मज़ेदार थी।

एक बस आगे बढ़ी नहीं कि दूसरी आकर उसका पीछा करती और तुरत ही तीसरी सर्राटेसे आकर बढ़नेवाली बसको पीछे छोड़ देती। इस तरह बसोंमें होड़-सी शुरू हो गयी और भीतर बैठे सभी लोग अबोध बालकोंकी तरह एक-दूसरेको नीचा दिखानेके लिए ज़ोर-ज़ोरसे-चीखने-चिल्लाने और शोर-गुल मचाने लगे।

इस होड़में हमारी बस सबसे पीछे रह गयी। अन्य दो बसें काफ़ी आगे निकल गयी थीं, उनका पीछा करनेके लिए अपनी बसके ड्राइवरको भी रफ़्तार बेहद बढ़ाते देख हमने उससे कहा, कि हम लोग मोक्षप्राप्तिके लिए ज़्यादा उत्सुक नहीं हैं। इतनी तेज़ रफ़्तारकी कोई आवश्यकता नहीं! और हमारी बात उसने मान ली। बस अपनी स्वाभाविक रफ़्तारमें चलने लगी। लेकिन तभी हमने देखा कि आगे निकल जानेवाली गाड़ियोंमें-से एक पंक्चर होकर रास्तेके एक ओर खड़ी है और उसमें बैठे सभी यात्री नीचे उतरकर सड़कके किनारे खड़े हैं। उस ड्राइवरके पास अतिरिक्त टायर नहीं था। इस आशामें कि शायद हमारे ड्राइवरके पास टायर मिल जाये, वह हमारी बसकी प्रतीक्षा कर रहा था। भाग्यसे हमारे ड्राइवरके पास एक अतिरिक्त टायर था। इसीसे उस गाड़ीके साथ-ही-साथ हमारी भी गाड़ी रास्तेके किनारे खड़ी कर दी गयी और गाड़ीमें टायर बिठानेके काममें दोनों ड्राइवर जुट गये। हमें गाड़ीसे नीचे उतरनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। भीतर अपने स्थानपर बैठे-बैठे ही आस-पासके दृश्योंमें खो गया।

दस-बारह गज़की दूरीपर ही चार-छह मकान दिखाई दे रहे थे। वे ईंट-की दीवारोंवाले मिट्टीसे पुते मामूली ही मकान थे। लेकिन शायद ये मकान किसानोंके नहीं बल्कि मध्यवर्गीय लोगोंके थे। उस समय घरके पुरुष नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दीख रहे थे। केवल स्त्रियाँ ही थीं और वे सब अपना काम छोड़कर एक मकानके बहुत साफ़ सामनेवाले आँगनमें इकट्ठा हुई थीं। एक भिखारी उन्हें कोई गीत सुना रहा था। अपने टूटे-फूटे एकतारेपर रोज़-रोज़ वही गीत गाकर सुनानेवाले हमारे यहाँके भिखारियों-जैसा ही यह भिखारी था। गेरुए रंगकी बनायी एक छोटी-सी कछनी, गेरुए रंगकी ही 'पहरन' और सिरपर पगड़ी—यही उसका परिधान था। उसकी ओर मैं कुछ ग़ौरसे देखने लगा, तभी मेरे निकट बैठे प्रो० पाण्डे अपनी आदतके अनुसार कहने लगे, "शायद आपका ख़याल होगा कि यह भिखारी हिन्दू है, लेकिन यह हिन्दू नहीं मुसलमान है। गाने गाते हुए, दर-दर घूमनेवाले इन लोगोंकी पूरी जातिको ही किसी ज़मानेमें मुसलमानोंने भ्रष्ट कर दिया था। तभीसे आजतक जन-गणनाके समय ये लोग अपने-आपको मुसलमान बताते हैं। लेकिन वास्तवमें इनका खान-पान और रहन-सहन ठीक हिन्दुओं-जैसा ही है। ये लोग भी भीख हिन्दुओंके मुहल्लोंमें माँगते हैं। गाने भी गाते हैं हिन्दू देवी-देवताओं और राजाओंके! यहाँपर इन्हें गुसाईं नामसे पहचाना जाता है। इन्हें दोबारा हिन्दू बना लेनेके लिए हिन्दू धर्म तैयार नहीं है। देखिए कैसी अजीब बात है यह! कहा जाता है कि हमारे देशमें आठ करोड़ मुसलमान हैं लेकिन उसमें-से भ्रष्ट किये गये और पुनः हिन्दू धर्म स्वीकार करनेवालोंकी संख्या घटा देनेपर शेष मुसलमानोंकी संख्या दो करोड़ भी होगी या नहीं, इसमें मुझे सन्देह है। ज़रा सोचिए तो!...."

वास्तवमें उनकी बातकी ओर मेरा ध्यान नहीं था और न ही जिस बातपर वे मुझे सोचनेके लिए कह रहे थे उसपर सोच-विचार करनेकी मुझमें उत्सुकता थी। मेरी आँखें उस भिखारीकी ओर ही गड़-सी गयी थीं। जिस घरके सामने वह खड़ा था वहाँकी स्त्रियोंकी ओरसे दो-दो मुट्ठी भीख मिलते ही अपनी झोली उठाकर वहाँसे चल दिया। आवाज़ देकर मैंने उसे अपने निकट बुलाया तो गाड़ीके पास आकर वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खड़ा हो गया। आवाज़ देकर मेरे बुलानेसे वह कुछ सहमा-सहमा-सा दिखाई दे रहा था। मैंने उससे कहा, 'अभी-अभी जो गीत तुम गा रहे थे उसे मैं दोबारा सुनना चाहता हूँ।' उसने मुझे सलाम किया और हँस दिया। जब वह हँस पड़ा तब मैंने देखा कि उसके प्रायः सभी दाँत गिर चुके हैं और जो बचे भी हैं उनपर मैलकी एक मोटी परत जमी है। उसने अपना एकतारा सँभाला और गाने लगा! टूटा-फूटा साज़ और उसके साथ मुश्किलसे मिलाया गया गायकका श्रान्त स्वर! वह गीत न जाने किस भाषाका था। लेकिन कई बार ठुमरियाँ आदि सुननेके कारण मैं 'मेरे मनवा', 'पिया', 'परदेसवा' जैसे कुछ शब्दोंसे परिचित हो चुका था जो उसके गीतमें भी सुनाई दे रहे थे। उसका गीत मैं और ध्यानसे सुनने लगा। इसके बाद अपने मित्र प्रो० पाण्डेजीकी सहायतासे उसका सारांश मैंने पूछा। गीतकी प्रारम्भिक पंक्तियोंमें राजा भर्तृहरिकी रानीका विलाप था। गीतमें वह कह रही थी – मेरे प्रिय मुझे छोड़कर परदेश चले गये। उनके वियोगमें छटपटानेवाले अपने इस मनको अब मैं कैसे सान्त्वना दूँ? कैसे धीरज बँधाऊँ?....और अन्तिम पंक्तियोंमें वापस लौटकर राजा भर्तृहरि उसे मनानेको कोशिश करते हुए कह रहे थे – 'हमने कई साल तक गृहस्थ जीवन व्यतीत किया। सुखोंका उपभोग किया। लेकिन भाग्यके फेरसे मुझको वैराग्य धारण करना पड़ा। तुम्हें अपने मनको क़ाबूमें रखना होगा और शोकका त्याग करना होगा...' इसके बाद गीतकी प्रथम पंक्ति बार-बार दोहरायी जा रही थी जिसमें रानी कह रही थी, 'अब इस मनको मैं कैसे सान्त्वना दूँ? कैसे धीरज बँधाऊँ?'

इन्हीं पंक्तियोंको वह बार-बार दोहरा रहा था। यह सोचकर कि जबतक हम उसे मना नहीं करेंगे यही गीत वह गाता ही रहेगा; मैंने उसे गानेसे रोका और तब खड़े-खड़े ही होती उस गोष्ठीकी समाप्ति कर अपना एकतारा और झोली सँभालते, बार-बार सलाम करते हुए वहाँसे वह चल दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
देर तक रुकी हमारी बसें भी चल दीं। मेरे मनमें रह-रहकर उस भिखारी गायककी सूरत और उस गीतके भाव कौंध रहे थे। सोच रहा था – कहाँ राजा भर्तृहरि और कहाँ दर-दरकी खाक़ छाननेवाला यह गुसाईं। इसे तो इस बातका पता तक न होगा कि भर्तृहरि कौन थे ? फिर उस राजाके गीतोंके सहारे यह अपनी जीविका चला रहा है। लगभग दश शताब्दियाँ बीत चुकनेपर भी भर्तृहरिका चरित्र और उनके विचार इस भिखारी गायकके माध्यमसे अबतक अस्तित्वमें हैं ! सारनाथका मन्दिर देखते हुए मेरे मनमें आया था कि नश्वरता ही वस्तु-मात्रका नियम है ! लेकिन अब रास्तेके किनारे यूँ ही कुछ देर रुक जानेपर जिस अनुभव-की प्रतीति मैंने की वह यही कि महापुरुषोंके चरित्र और उनके विचार शताब्दियाँ बीत जानेपर भी किसी-न-किसी रूपमें स्थायी रहते हैं ! स्थायी रहना, अमरता प्राप्त करना ही वस्तु-मात्रका धर्म है !

■

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रबन्ध

●

प्रतिभा साधना

कहानी लेखन : मन्त्र और तन्त्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतिभा साधना

१ : प्रतिभा साधना

प्रतिभा साधना ! कैसी विचित्र कल्पना है ! 'वदतो व्याघात' का इससे बड़ा और दृष्टान्त क्या कहीं मिल सकेगा ? क्या इतने असंगत शब्दोंके समासका किसीने प्रयोग किया होगा ? प्रतिभाकी साधना ! गधेके सींगकी कल्पना भी इसके आगे कम असंगत प्रतीत होगी। यदि प्रतिभा-साधना सम्भव है तो चन्द्रमाकी किरणोंसे उष्णता उत्पन्न करनेकी भी कल्पना क्यों न की जाये ? या फिर प्रज्वलित ज्वालामुखीकी शीत-लताका वर्णन क्यों न किया जाये ? प्रतिभा क्या कोई ऐसी सामान्य शक्ति है जो अध्ययन अथवा परिश्रमसे प्राप्त की जा सकती है ! प्रस्तुत विषयका नाम सुनते ही इस प्रकारकी बातें यदि किसीके मुँहसे निकलें तो क्या आश्चर्य ? वास्तवमें देखा जाये तो प्रतिभा-साधनासे परे है।

प्रश्न उठता है कि प्रतिभा क्या है ? क्या कल्पनाशक्तिको हम प्रतिभा कह सकते हैं ? कदापि नहीं ! कल्पना तो मनकी साधारण शक्तियोंमें-से एक है। कल्पनाको मुक्त छोड़ देनेपर प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न कल्पनाओंकी सृष्टि कर सकता है। जैसे हम नन्दनवनके दिव्य फलोंका सेवन कर रहे हैं, या हम किसी स्वर्ण-मन्दिरमें निवास कर रहे हैं, अथवा मालती-पुष्पोंकी सुकुमार शय्यापर शयन कर रहे हैं – आदि कल्पनाओंकी ऊँची उड़ानें हम भर सकते हैं। लेकिन क्या कल्पनाके इस विलासको हम प्रतिभाका विलास कह सकते हैं ? या प्रत्येक व्यक्तिमें जो कल्पना-शक्ति स्थित है उसे सौगुना कर देनेपर क्या यह समझा जा सकेगा कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कला चतुरकी प्रतिभा बन सकती है ! नहीं ! ये दोनों बातें सम्भव नहीं है। आसवकी मधुरता चाहे जितनी बढ़ जाये पर उससे अमृतकी मधुरताकी कल्पना तो नहीं की जा सकती। अमृत अमृत ही है और प्रतिभा प्रतिभा ही !

मान लीजिए कि हम भीषण आँधीमें फँस गये हैं। वायुके प्रचण्ड झोंके ऐसे आवेगसे चल रहे हैं, मानो समूची सृष्टिको पतंग बना डालनेकी सनक उनपर सवार है। भीमकाय वृक्षोंकी अवस्था प्रभंजनने झुनझुनेकी-सी बना डाली है। धूलके बवण्डरोंसे दसों दिशाएँ भरी हुई हैं। भयसे ही निश्चेष्ट होकर पंछी अपने घोंसलोंसे नीचे गिर रहे हैं। आकाशमें काली घटाएँ ऐसी छायी हैं मानो सूर्यको खग्रास ग्रहण लगा हो। मेघोंकी भयानक गड़गड़ाहटसे लगता है – सम्पूर्ण विनाशकारी शक्तियाँ सृष्टि-संहारका अमंगल संकेत दे रही हैं। तभी, वह भीषण गर्जन बन्द हो जाये, कानोंके परदोंको चीर डालनेवाली हज़ारों तोपोंके एक साथ दागे जानेकी गड़गड़ाहटके साथ बादलोंसे एक दीप्तिमान पुंज नीचे उतरकर अपनी दिव्य प्रभासे समूची सृष्टिको पल-भर चौंधियाकर धरतीके गर्भमें खो जाये....

घर लौटनेपर यदि हम कहें कि आज हमने विद्युल्लता देखी, और यदि हम चाहें कि उसके वास्तविक रूपसे औरोंको परिचित करा दें, तो उसका वर्णन हम किस तरह करेंगे ? हम तो यही कहेंगे कि उस सौदामिनीके यथार्थ रूपकी स्पष्ट कल्पना देना असम्भव है। मान लीजिए, इसपर कोई पूछे कि 'हमारे घरमें बत्ती जलानेके लिए जो बिजली है क्या वह उस-जैसी ही थी ?....' तब हम जवाबमें क्या कहेंगे ? यही न, कि जी नहीं, यह तो बिजली है और वह है विद्युल्लता। यह और वह कभी एक नहीं हो सकती, और इसे चाहे जितना बढ़ाया जाये तो भी उसका रूप उसे प्राप्त होना असम्भव है। उसमें एक विलक्षण दिव्यता है !

दिव्यता ! दिव्यता ही प्रतिभाकी विशेषता है। जिस-जिस वस्तु या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषयमें प्रतिभाका स्पर्श हो जाता है, उस-उस विषयमें दिव्यताकी झलक अवश्य प्राप्त हो जाती है। और उस वस्तु या विषयका अवलोकन करनेवालोंको प्रतिभाकी उस झलककी अनुभूति होकर अनिर्वचनीय आनन्दकी प्राप्ति होती है। इस अकथनीय आनन्दका निर्माण करना ही समस्त कलाओंका प्रधान उद्देश्य है। अतएव, कला-चतुरमें प्रतिभाका होना अत्यन्त आवश्यक है! संगीत, नृत्य, चित्रकलाके समान ही ललित-साहित्य भी कलाका एक प्रकार है। अर्थात् ललित साहित्य-लेखकमें प्रतिभाका होना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु प्रतिभा यदि दिव्यशक्ति है तो उसे साध्य करनेकी यहाँ आरम्भ की गयी चर्चा क्या व्यर्थ नहीं है? यदि प्रतिभा प्राकृतिक या स्वाभाविक देन है तो दुर्भाग्यवश जिन्हें वह प्राप्त नहीं है उन अभागोंके लिए दुःखी होकर मौन रहनेके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग भी नहीं है। प्रकृतिने जिन्हें सौन्दर्य नहीं दिया, वे लोग क्या ठण्डी आहें भरते हुए चुपचाप नियतिका आघात नहीं सहते?

इस बातमें सचाई पर्याप्त है। परन्तु हमें दो बातें नहीं भूलनी चाहिए: पहली बात तो यही है कि प्रतिभा वह शक्ति है जो प्रतिभावान् व्यक्तिको जन्मसे ही प्राप्त हो सकती है। उसमें संस्कारके लिए बहुत बड़ा स्थान रहता है। मधुर कण्ठकी देन जन्मसे मिलनेपर भी यदि निरन्तर परिश्रम एवं नियमित अध्ययनके संस्कारकी कमी रह जाये, तो अलौकिक गायकका निर्माण होना असम्भव है। केवल परिश्रमके बलपर किसी कलाकारका निर्माण नहीं होता – यह कहते समय उद्यम और परिश्रमके महत्त्वको सर्वथा भुला देनेकी भूल हमसे नहीं होनी चाहिए। कोयलेपर चाहे जितने संस्कार किये जायें उससे हीरा नहीं बन सकता! किन्तु यदि हीरा भी ऐसा मान ले कि खानमें-से निकलते ही वह आभूषण बनकर लोगोंके शरीरको अलंकृत कर सकता है तो उसकी यह धारणा क्या अनुचित न होगी? इसी प्रकार प्रतिभाका जन्मसिद्ध होना आवश्यक है लेकिन उसका तेज प्रस्फुटित करनेके लिए उसे परिश्रमसे पहलदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनाना अत्यावश्यक है। यही नहीं, इस सम्बन्धमें गम्भीरतापूर्वक विचार करनेपर यह भी स्पष्ट रूपसे दिखाई देगा कि वास्तवमें प्रतिभाको पूर्ण रूपसे विकसित करनेके लिए अखण्ड परिश्रमोंकी आवश्यकता होती है। किसी ग्रन्थकारका तो यह कहना है कि जिसे हम स्फूर्ति कहते हैं उसमें दस प्रतिशत अंश प्राकृतिक देन और नब्बे प्रतिशत अंश परिश्रमका होता है। यदि यह सच है तो प्रतिभाके संस्करणके अर्थमें उसकी साधनाका विषय क्या विचारणीय नहीं है?

अतिरिक्त इसके एक और विचार भी कुछ कम महत्त्वका नहीं है। प्रतिभाविहीन कला-वस्तुमें सजीवता नहीं आ सकती और प्रतिभा प्राकृतिक देन है – ये दोनों बातें हम स्वीकारते हैं; किन्तु इसका अर्थ यह तो नहीं कि जिनके पास प्रतिभा नहीं है वे कलाकी उपासना ही न करें। हज़ारों तन्तुकारोंमें कोई एक ही प्रतिभाशाली तन्तुकार बनता है। परन्तु प्रतिभाके, दिव्य अंशको छोड़कर, कलाका जो विस्तार यथाशक्ति करना सम्भव है उसे अलौकिकतासे प्रस्तुत करनेवाले अन्य कुछ तन्तुकार क्या नहीं होते हैं? प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तिकी उँगलियोंसे स्वरोंका लालित्य सहज ही प्रकट होता है। उसका भला-बुरा अनुकरण ही क्यों न हो, अध्ययन और परिश्रमके फलस्वरूप कुछ कलाकारों-द्वारा प्रकट होगा ही। इसी प्रकार हम यह क्यों न मानें कि प्रतिभाशाली लेखक सहजतासे साहित्यकी जिस सुन्दरताका सृजन कर सकता है, उसकी झलक आंशिक रूपमें क्यों न हो साधारण लेखककी रचनामें, कुछ परिश्रम करने-पर अवश्य प्रकट हो सकती है!

यदि हमें यह भी स्वीकार न हो तो एक और बात ध्यानमें रखनी चाहिए, वह यह कि प्रतिभा-सम्पन्न लेखक जैसी कलाकृतिका निर्माण कर सकता है वैसी कृतिका निर्माण करना वास्तवमें अन्य लेखकके लिए असम्भव होनेपर भी जो कलाकृति निर्मित होगी उसकी सुन्दरताका आनन्द उठानेकी महदाकांक्षा और लोग करें तो इसमें अनुचित क्या है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इस महदाकांक्षाकी पूर्तिके लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य उस कलाके विविध पहलुओंका अध्ययन करे। यह ठीक है कि मधुर गीत कण्ठसे निकालना बहुत कठिन है, और हज़ारों श्रोताओंको विमुग्ध कर उनके साथ नाद-ब्रह्मके हिंडोलेपर उन्मत्त होकर झूमनेवाला गायक बिना प्रतिभाके नहीं होता। किन्तु ऐसे गायककी क़द्र करने-जितनी मार्मिकता हममें होनी चाहिए और इसके लिए दीर्घ साधना अपेक्षित होती है। इस अर्थमें अन्य कलाओंकी तरह ललित साहित्यके क्षेत्रमें भी 'प्रतिभा-साधना' चरचाका विषय बन सकती है। सम्भव है कि वागीश्वरी मन्दिरके गर्भ-गृहमें बैठ उसके चरणोंपर दिव्य सौरभयुक्त सुमन अर्पित करनेका अधिकार साहित्यके उपासकोंके लिए भले ही सुरक्षित रखा गया हो, किन्तु वागीश्वरीके ये प्रतिभाशाली उपासक किस भाँति उसकी अर्चना करते हैं यह देख-कर उसका आनन्द उठानेके लिए सरस्वती मन्दिरके प्रांगणमें ही क्यों न हो, खड़े रहनेकी तो सुविधा होनी चाहिए। लेकिन उस सुविधाकी प्राप्तिके लिए भी शुचिताकी आवश्यकता होती है। मन्दिरके गर्भ-द्वारमें प्रवेश पानेके लिए प्रयत्नशील होनेपर कहीं सरस्वती मन्दिरके संरक्षक कमसे कम मन्दिर सभा-मण्डपमें खड़े रहनेकी अनुज्ञा देंगे। जिसने स्वयं आलाप भरकर कभी गाना गाया हो, वही मर्मज्ञ श्रोता बन सकता है। जिसने स्वयं तूलिका पकड़कर छाया-प्रकाशके इन्द्रजालका प्रयोग किया हो, वही व्यक्ति चित्रकारकी कृतिका वास्तविक आस्वादन कर सकता है। इसी प्रकार स्वयं लिखनेकी परिश्रमपूर्वक चेष्टा करनेपर ही ललित लेखनमें बिखरे हुए सुन्दर स्थल परिलक्षित हो सकेंगे और स्थान-स्थानपर बिखरे हुए प्रतिभाके रसका आस्वादन किया जा सकेगा। प्रतिभाका लक्षण 'नवनवोन्मेषशालिनी' बताया गया है। परन्तु प्रतिक्षण नवीन तेजस्वी सौन्दर्य प्रस्फुटित करनेवाली प्रतिभाकी उस मनोहर क्रीड़ाको परखने और सम्मानित करनेवाला भी तो कोई होना चाहिए। यह सत्य होनेपर भी कि कलाकार स्तुति अथवा निन्दाकी चिन्ता नहीं करता किन्तु जिस प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हंस मोती चुगकर निर्वाह करता है, उसी तरह रसिकोंकी प्रशंसाके बलपर ही कलाकार अपनी धुनमें मस्त रहता है। 'मेरी कृतिका कोई सम्मान करे या न करे, मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं' – यह कहनेवाले भवभूतिको भी विवश होकर कहना पड़ा था कि 'काल अनन्त है और पृथ्वी विपुल है; अतः कभी-न-कभी और कहीं तो मेरी सराहना अवश्य की जायेगी !'

सारांश यही कि कलाकारोंके साथ ही आस्वादकोंका भी महत्त्व है। जिन्हें प्रकृतिने प्रतिभाका वरदान नहीं दिया है, वे लोग यदि स्वयंमें प्रतिभाका निर्माण करनेके लिए अपेक्षित परिश्रम करें तो हानि ही क्या है। कर्णकी इस उक्तिमें कि 'दैवायत्तं कुले जन्म, मदायत्तं तु पौरुषम्' ! कुछ परिवर्तन कर, हम क्यों न कहें कि प्रतिभाशाली 'दैवायत्त' होनेपर भी, ललित साहित्यका रसास्वादन करनेकी शक्ति हर किसीके वसकी बात है। और केवल इसी दृष्टिसे ललित साहित्यकी श्रेष्ठता क्यों मानी जानी चाहिए, उसका प्रधान उद्देश्य क्या है, विना प्रतिभाके उस प्रयोजन-की पूर्ति क्यों नहीं हो पाती; प्रतिभाके कार्य किस तरह चलते हैं, प्रतिभाके साथ परिश्रमका योग क्यों और किस तरह किया जाये, ललित लेखनके साधारण नियम कौन-से हैं, आदि प्रश्नोंकी चर्चा क्या मनोरंजक तथा उपयोगी न होगी ? इसी प्रयोजनसे प्रस्तुत विषयका आरम्भ किया गया है।

२ : ललित साहित्यका रूप एवं कार्य

ललित साहित्यके रूप तथा कार्यका ज्ञान प्राप्त करना हो तो सबसे पहले इसपर विचार करना आवश्यक है कि ललित लेखक साहित्यका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सृजन किसलिए करता है ? यही प्रश्न कुछ भिन्न ढंगसे प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रतिभा-सम्पन्न लेखक किसलिए लिखता है ? यह प्रश्न उपस्थित करनेकी बजाय, यह प्रश्न पूछना अधिक समीचीन है कि हम ललित साहित्य किसलिए पढ़ते हैं ? पाठक ललित साहित्यपर इतने आसक्त क्यों हैं ? युरॅप तथा अमेरिकामें प्रति सप्ताह सैकड़ों नये उपन्यास प्रकाशित होते हैं और बिकते हैं। सैकड़ों भले-बुरे कहानीलेखक लगातार कहानियाँ लिखनेमें व्यस्त रहते हैं। पुस्तकोंकी दूकानोंमें अनेकों आलमारियाँ उपन्यासोंसे भरी दिखाई देती हैं। – इसका कारण क्या हो सकता है ? हमारे देशकी जनतामें अभीतक पढ़नेकी रुचि अधिक नहीं है। और मूल्य देकर पुस्तक पढ़नेके लिए यहाँके पाठक अभ्यस्त नहीं हैं; फिर भी क्या कारण है कि हिन्दी भाषामें उपन्यासों तथा कहानियोंकी वृद्धि तेज़ीसे हो रही है ! लोग ललित साहित्यके पीछे इतने पागल क्यों हैं ? ललित साहित्यमें क्या आकर्षण है ? पाठकोंका हृदय कल्पित कहानियोंकी ओर किसलिए आकर्षित होता है ?

इसका उत्तर यह है कि संसारमें मानवके लिए सफलताका सन्तोष अत्यन्त दुर्लभ है, अतएव वह ललित साहित्य पढ़ता है। मानवकी इच्छा, आकांक्षा और वासना तृप्त नहीं होती, इस कारण उसे ललित साहित्य पढ़नेको लालसा हो जाती है। बौद्धिक एवं शारीरिक पराक्रम करनेकी चाह हममें-से प्रत्येकमें स्वभावसे ही होती है। हममें-से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह ज्ञानसम्पन्न हो, धन अर्जित करे, युद्धमें विजय प्राप्त करे और कीर्ति तथा वैभवके शिखरपर पहुँचकर सम्मानित हो। ख्यातनाम राजनीतिज्ञ, योद्धा, सफल लेखक तथा नाटककार, और विख्यात अभिनेता बननेके सुनहरे सपने कौन नहीं देखता ? परन्तु संसार इतनी विषमतासे पूर्ण है कि मनुष्यकी ये आकांक्षाएँ कदाचित् ही पूर्ण होती हैं। ख्यातनाम राजनीतिज्ञ बननेके सपने देखनेवाला पुरुष अन्तमें कहींपर मुन्शी बन जाता है। अपने अद्वितीय नाटकोंसे संसारको मुग्ध करनेकी लालसा रखनेवाला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्यक्ति अधिकसे अधिक किसी नाटकगृहके द्वारपर टिकिट जाँचनेका काम करता है और अलौकिक योद्धा बननेकी आकांक्षा रखनेवाले व्यक्तिको बजाज़की दूकानपर नौकरी कर, कपड़ा नापने-फाड़नेमें ही सन्तुष्ट होना पड़ता है। संसारमें सुखकी अपेक्षा दुःख ही अधिक है! सफलताकी अपेक्षा अधिकतर असफलताका ही उसे शिकार बनना पड़ता है। तृप्तिकी अपेक्षा मानवको अतृप्तिकी ठण्डी आहें ही अधिक भरनी पड़ती हैं!

परन्तु मानव अत्यन्त चतुर प्राणी है। इस विषमतामें भी वह सन्तोष-का मार्ग खोज निकालता है। अपनी आकांक्षाएँ विफल हो जानेपर वह उन स्त्री-पुरुषोंकी कहानियाँ पढ़ता है जिनकी अभिलाषाएँ प्रयत्नके फलस्वरूप सफल हुई हैं; और इस प्रकार उनसे क्षणिक तादात्म्यका अनुभव कर, एक नये ही आनन्दका वह अनुभव करता है। अपनी मातृभूमिका उद्धार जो स्वयं नहीं कर सकता वह छत्रपति शिवाजी-जैसे स्वराज्यकी स्थापना करने-वालेकी कोई कल्पित कथा पढ़कर अपनी असफलताकी पीड़ाको भुला देता है। जो स्वयं विख्यात क्रीड़ापटु नहीं बन पाया, वह प्रिन्स रणजीत-सिंहकी क्रीड़ा-निपुणताकी रोचक कहानी पढ़ता है। प्रणयके उन्मादक अनुभवसे जो वंचित रह गया है वह उस नायककी कहानी पढ़नेमें लीन हो जाता है, जिसने अपने प्रणय एवं पराक्रमके बलपर रति-जैसी सुन्दरी ललनाको प्राप्त कर लिया हो।

सारांश यही कि कुछ क्षणोंके लिए काल्पनिक संसारका सृजन करनेके लिए हम ललित साहित्य पढ़ते हैं। उसे पढ़ते समय हम यह अनुभव करते हैं कि उसमें वर्णित संसार हमारा ही संसार है। शकुन्तला पढ़ते समय एक विशेष तन्मयताकी स्थितिमें हम अपनेको दुष्यन्त समझ सकते हैं। उसी प्रकार दरिद्रतामें भी उदारताका त्याग न करनेवाला, वसन्तसेनाके प्रति अपने प्रेमके कारण तनिक सिटपिटाया हुआ-सा और ऋणका बोझ सिरपर लेकर दीनता स्वीकार करनेकी अपेक्षा, मृत्युदण्ड स्वीकार करने-वाला चारुदत्त कोई अन्य व्यक्ति नहीं, वरन् हमारे ही भावोंकी वह परि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ष्कृत प्रतिमूर्ति है, ऐसी प्रतीति होती है। और इसीसे मृच्छकटिक बार-बार पढ़नेकी लालसा हमारे दिलमें प्रबल होती है। उसमें वर्णित करुण प्रसंगोंको पढ़ते समय हमारी आँखें गीली हो जाती हैं, मन भारी हो जाता है, फिर भी इस अकथनीय सुखको बार-बार भोगनेको जी चाहता है। इसी प्रकारकी तन्मयताकी स्थितियोंमें हम वास्तविक दुःखमय लोकसे अलग होकर कुछ क्षणोंके लिए दिव्य काल्पनिक लोकमें जी लेते हैं।

हमारे इस वास्तविक संसारमें सत्यको विपत्तियोंका सामना करना पड़ता है, परोपकारका उपहास किया जाता है, साधुताको सूलीपर चढ़ना पड़ता है, दारिद्र्यका धिक्कार किया जाता है, सुन्दरताकी विडम्बना होती है और प्रेमको तड़पना पड़ता है। ऐसे संसारमें जीवन व्यतीत करते हुए मनुष्यका हृदय क्लान्त हो जाता है और ऐसे श्रान्त मनको ललित साहित्यके रमणीक कल्पना-जगत्में खो जानेपर सुख और शान्तिकी अनुभूति होती है। कहते हैं कि कालका प्रवाह किसीके लिए कभी अवरुद्ध नहीं होता। परन्तु ललित साहित्य पढ़नेमें जब कोई लीन हो जाता है, तब यही कहना पड़ेगा कि उस व्यक्तिके लिए उतनी अवधि तक कालका प्रवाह रुक जाता है। कोई सुन्दर उपन्यास जब हम पढ़ने लगते हैं, तब आस-पासका परिवेश बिलकुल बदला हुआ हो जाता है। उस उपन्यासके पात्रों-से एकरूप हो उनके सुख-दुःखोंकी धारामें अचेत हम बहते चले जाते हैं। और उसे पूरा पढ़कर एक ओर रख देनेपर, जैसे घड़ी-भरके लिए अवरुद्ध हुआ हमारे जीवनका प्रवाह पुनः तीव्र गतिसे प्रवाहित होता है। किसी स्थानपर रुकी घड़ीकी सुइयाँ मानो दोबारा घूमने लगती हैं!

जिस प्रकार छोटे बालक पाठशालासे ऊबकर छुट्टी पानेके लिए अधीर हो उठते हैं, उसी प्रकार थोड़ी देरके लिए सब-कुछ भूलकर हम राहत पाना चाहते हैं। इस संसारकी पाठशालामें व्यवहार नामका एक कठोर अध्यापक है। नाकपर चढ़ायी देहाती ऐनकमें से बिगड़ैल भैंसेकी तरह घूरता और अपनी हाथकी लम्बी छड़ीको लपलपाता हुआ हमारी क़तारों-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में-से वह घूमता रहता है । वह क्रुद्ध दृष्टिसे इस बातकी कड़ी निगरानी करता है कि पुराने नीति-नियमोंके संकेतोंका पालन करनेसे कौन जी चुरा रहा है, प्रगतिशील विचारोंका मुँहसे उच्चारण करनेका साहस कौन कर रहा है, और प्राप्त अंकोंसे अधिक अंकोंकी माँग प्रस्तुत कर असन्तोषका बीज कौन बो रहा है ! उसके इस कटु व्यवहारसे हमारा जी ऊब जाता है और हम इस अवसरकी ताकमें रहते हैं कि कब दस मिनिटकी छुट्टी मिले और कब उछलते-कूदते कल्पना सृष्टिके खुले प्रांगणमें जाकर उमंगके साथ हम यह नारा लगायें कि सौन्दर्य, सत्य और स्वतन्त्र विचारोंकी जय हो ! जय हो ! ललित साहित्यसे हमारी यह लालसा तृप्त हो जाती है ।

अतएव यह आवश्यक है कि ललित साहित्यको कलाका एक अंग माना जाये । सांसारिक बन्धनोंसे जकड़े हुए तथा निराशा एवं असफलता-के आघात झेलकर थके मानवको अपने पंखोंपर बैठाकर एक ही उड़ानमें रमणीक कल्पना-जगत्में पहुँचा देना ही समस्त कलाओंका प्रधान हेतु है । प्रत्यक्षके परे जो अन्तिम सत्य है, वहाँतक मानवको पहुँचानेका कार्य विज्ञान एवं कलाके द्वारा किया जाता है । लेकिन उन दोनोंकी कार्य-प्रणाली भिन्न है । मानवको अन्तिम अनन्तकी अनुभूति भावनाओंके द्वारा करानेकी सुखद चेष्टा कला करती रहती है । विज्ञान इस विषयमें प्रयत्न-शील रहता है कि जो अन्तिम है, अनन्त है, उसे मनुष्य जाने । इसके विपरित कलाका विलास इसीलिए होता है कि मनुष्य उस अन्तिम सत्यका, अनन्तका, उपभोग करे । विज्ञान एवं दर्शन अपनी भारी आवाज़में यह बतानेकी चेष्टा करते हैं कि ब्रह्म—परम तत्त्व—निराकार, निर्लिप्त एवं निर्गुण है । किन्तु इसके विपरीत उस परमतत्त्वकी मनोहरताके रसमें विभोर कर उसे मधुर स्वरों, रंगों या शब्दोंके द्वारा साकार बनानेकी क्षमता कलामें होती है ।

मानव इसलिए व्याकुल रहता है कि विषमतापूर्ण ऐहिकताके इस जंजालसे छुटकारा पाकर पल-भरके लिए क्यों न हो, अनन्तका अनुभव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करे। ऐहिक दुःखकी ज्वालाओंमें जितना मानवको झुलसना पड़ता है, उतना प्राणि-मात्रके किसी वर्गको नहीं। अतः अन्य प्राणियोंमें यह विचार नहीं आ सकता कि इस संसारके परे भी कुछ है। किन्तु वह 'जो कुछ' संसारके परे है, उसका निमिष-मात्र क्यों न हो, अनुभव करे, इसलिए मनुष्य निरन्तर छटपटाता रहता है। सारी जीव-सृष्टिमें मनुष्यको ही विपुल वेदना तथा असीम आपत्तियोंका भार उठाना पड़ा है। दुःखके इस भारसे वह इतना जर्जर हो गया कि उसे भुलानेके लिए उसने हास्यका आविष्कार कर लिया। जिस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए हास्यका निर्माण हुआ, उसीके लिए समस्त कलाओंका जन्म हुआ।

मानव-मात्रमें अनन्तत्वका अंश है। मनुष्यका मनुष्यत्व उसके अमानुषत्वमें, उसकी दिव्यतामें, उसके अनन्तत्वमें है। पर मानवकी इस अनन्तताके अंशपर व्यावहारिक दुःख-क्लेशों एवं क्षुद्र भावनाओंके पटल छाये हुए होते हैं और इसीसे वह उदास हो, मन मारकर किसी कोनेमें बैठा रहता है। इन पटलोंको दूर कर अनन्तताके साथ उसका परिचय करा देनेसे उसकी समस्त वेदनाएँ नष्ट हो जाती हैं। अप्रसन्नता दूर हो जाती है। क्लेशोंकी समाप्ति हो जाती है। वेदनाओंका परिहार होकर, उसके आघात उसे मिथ्या प्रतीत होने लगते हैं, और किसी अकथनीय उल्लासके मदमें वह स्वयंको महान् समझने लगता है। इस प्रकारके उल्लास-से वंचित रह जानेपर मानवका जीवन रूखा और भारस्वरूप बन जायेगा। इसी आनन्दका अनुभव बार-बार करानेके लिए ललित साहित्य तथा अन्य कलाएँ व्यस्त रहती हैं और इसीसे हमें जीवन सहनीय और रमणीक प्रतीत होता है।

अतः हम यह कह सकते हैं कि ललित साहित्यका रूप अत्यन्त उज्ज्वल है और उसका अभिप्रेत अत्यन्त महान् भी है। संक्षेपमें कहें तो मनुष्यके जीवनकी सफलताके लिए ललित साहित्य अत्यावश्यक है। यह एक ऐसा विधान है जिसके बिना राष्ट्रका जीवन अधूरा रह जायेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रके लिए धार्मिक विधान, सेना, विद्यापीठों, उद्यानों, बैंकों तथा औषधालयोंकी जिस प्रकार आवश्यकता होती है, उसी प्रकार जीवित राष्ट्रके लिए ललित साहित्यकी भी अत्यन्त आवश्यकता होती है। ललित साहित्य-द्वारा संसारको जिस वस्तुका लाभ होता है उसका मूल्यांकन सोने-चाँदीके सिक्कोंसे नहीं किया जा सकता; वह वस्तु है निरामय आनन्द, जिसका वर्णन उपर्युक्त पंक्तियोंमें भिन्न-भिन्न प्रकारसे किया गया है।

३ : प्रतिभा विलासकी अग्रिम साधना

प्रतिभाशाली लेखक क्यों लिखता है इस प्रश्नपर सोचते हुए ललित साहित्यके प्रयोजन तथा रूपका परिचय हमने कर लिया। इसके बाद प्रतिभाशाली लेखककी रचना-प्रक्रियापर भी विचार करना उचित होगा। मसलन यही कि प्रतिभायुक्त ललित साहित्यका निर्माण करते समय लेखककी अन्तरंग स्थिति क्या होती है? उसकी प्रतिभा किस रूपमें कार्य करती है? वह जब अपनी प्रतिभाको अपनी रचनाओंमें ढालता है, तो वास्तवमें वह क्या करता है या साहित्य निर्माणके कालमें लेखकके मनो-व्यापार किस प्रकारके होते हैं?

साहित्य सृजनके समय लेखकको अपने मनोव्यापारोंका भान होता है या नहीं, इसमें सन्देहकी स्थिति है। साहित्य सृजनकी धारामें वह इस तरह बहता चला जाता है कि वह धारा कहाँसे और कैसे निर्मित हुई, आदि विश्लेषणात्मक विचार उसके मस्तिष्कमें उठ ही नहीं सकते। उस क्षण उसके मनमें आत्मनिरीक्षणका यह विचार उठ ही नहीं सकता कि जो कुछ वह लिख रहा है, उसका सृजन उसके हाथों कैसे हो पाया। वह तो उस समय एक अनिर्वचनीय तल्लीनताका अनुभव करता है। उसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किसी बातका भान नहीं रहता। वह इसलिए लिखता है कि बिना लिखे उससे रहा नहीं जाता। ऐसी दशामें उससे 'तुम क्यों लिखते हो ?' प्रश्न पूछना ऐसा ही है जैसा कि अपने नयनाभिराम पंखोंको फुलाकर हर्ष-विभोर हो नृत्य करनेवाले मेघमोहित मयूरसे उसके नृत्यका कारण पूछा जाये। सृजनके क्षणोंमें कलाकार निःसन्देह प्रसव-कालमें होनेवाली मनःस्थिति-में रहता है; क्योंकि यह एक प्रकारसे नियम-जैसा है। कलावस्तुके जन्मके विषयमें तो यह नियम और भी सही साबित होता है। साहित्य निर्माणके क्षणमें अन्य कलाकारोंकी तरह ललित लेखक भी बेसुध-सा बन जाता है। सौन्दर्यके विभिन्न रूप उसके अन्तःचक्षुओंके सम्मुख एकत्रित हो जाते हैं। उन्हें भाषासे बाँधकर, मूर्तरूप देनेके प्रयासमें वह व्यस्त रहता है। इसी अर्थमें कहा जाता है कि प्रतिभाका कार्य निर्हेतुक होता है।

परन्तु प्रत्यक्ष सृजनका यह ज्वार उतर जानेपर साहित्यकार यदि पीछे मुड़कर आत्मनिरीक्षण करे, तो सृजनके क्षणोंमें क्या हुआ और कैसे हुआ, यह समझ पाना उसके लिए पूर्णतया असम्भव नहीं है। यह सही है कि आत्यन्तिक हर्ष, भय या शोकके समय हम अपनी भावनाओंके साथ समरस हो जाते हैं और अपने-आपका स्वरूप भी एक प्रकारसे भूल जाता है। पर भावनाओंका वह आवेग कुछ शिथिल पड़ जानेपर, सिंहाव-लोकन करनेसे उस समयकी मनःस्थितिका, कुछ अंशमें ही सही, विश्लेषण हम कर सकते हैं। इसी प्रकार अपनी आन्तरिक प्रक्रियाको प्रतिभा-विलासके ठीक अवसरपर नहीं, बल्कि कुछ समय बाद अन्तर्दृष्टिके द्वारा समझ लेना ललित लेखकके लिए कुछ अंश तक सम्भव होता है।

पहले हम यह देखें कि ललित लेखकमें प्रतिभाका आविष्कार होता है, तब यथार्थमें क्या होता है ? प्रतिभा क्या प्रेरणापर अवलम्बित, एका-एक प्रकट होनेवाली कोई शक्ति है ? क्या उसके संचारके लिए कोई नियम ही नहीं है ? या उसके सम्बन्धमें प्रचलित सामान्य धारणाएँ भ्रामक हैं और उसकी अभिव्यक्तिमें कुछ निश्चित सिद्धान्त पाये जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस सम्बन्धमें तनिक गहराईसे सोचें तो हमें ज्ञात होगा कि प्रतिभा दिव्य रूपसे युक्त तो है ही, साथ ही उसके संचारमें भी विशेष नियम पाये जाते हैं। प्रतिभाशाली लेखक सामान्यतया सनकी ही समझे जाते हैं। कलाकारको देखते ही उसे 'अतिरिक्त विशेषणों'से सम्मानित करनेकी एक दुनियावी प्रथा प्राचीन समयसे रही है! सुन्दरताकी अभिव्यक्तिमें लीन कलाकारकी बुद्धिको संसारके साधारण आचार-विचारोंकी परवाह नहीं होती है। कभी-कभी तो उन आचार-विचारोंकी शृंखलाएँ उसे दुःखदायी भी प्रतीत होने लगती हैं और उनसे मुक्त होनेके लिए वह प्राण-पणसे चेष्टा करनेमें जुट जाता है, विद्रोह कर बैठता है। और इस अर्थमें, संसारकी दृष्टिमें कलाकार पागल समझा जाये तो यह स्वाभाविक ही है। लेकिन कलाकारके इस पागलपनमें भी एक विशेष ढंग होता है। शेक्सपीयरकी विख्यात कलाकृति, 'हैमलैट' नाटकके नायक राजकुमार हैमलैटके चरित्रका सूक्ष्म अध्ययन करनेपर पोलोनिअसने कहा था, 'यह पागलपन अवश्य है, पर इसमें कुछ अनुशासन है।' लेखककी प्रतिभाके सम्बन्धमें ठीकसे सोचनेपर यह बात हमारे मुँहसे भी निकल सकती है।

क्योंकि प्रतिभाका संचार लेखकके मनमें यूँ ही अकारण नहीं होता। इसके लिए अपूर्व अग्रिम साधना आवश्यक होती है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रतिभा तो लेखककी कल्पना-शक्तिके द्वारा ही प्रकट होती है, परन्तु प्रकट होनेके पूर्व उस कल्पनाको निरन्तर परिष्कृत करना भी आवश्यक होता है; जैसे अवतार होनेके पूर्व अवतार-भूमिको सुयोग्य बनाना आवश्यक होता है। प्रतिभाके साथ भी यही नियम लागू हो सकता है। छेनीके आघात सहनेके बाद ही देवत्वकी प्रतिष्ठा होती है। इसी प्रकार लेखककी कल्पना दीर्घ परिश्रमकी भट्टीमें अच्छी तरह तपनेके बाद ही उसमें-से उचित अवसरपर, प्रतिभाके दिव्य स्फुलिंग प्रकट होते हैं। इसके पूर्व हमने प्रतिभाको आँधीमें दमकनेवाली विद्युल्लतासे उपमा दी थी। उस उपमाको लेकर यह कहा जा सकता है कि विद्युल्लताका वह विलास होने-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
के पूर्व सृष्टिमें प्रचण्ड परिवर्तनोंका होना अनिवार्य है। उसी प्रकार प्रतिभा विलासकी साधनाके तौरपर लेखककी कल्पनाका अनेक संस्कारोंसे परिष्कृत होना परम आवश्यक है।

कल्पनाको यह सिद्धता किस प्रकार की जाये, इसे समझनेसे पहले हम यह देखें कि कल्पना क्या है? इसके लिए यह परिभाषा की जा सकती है कि पंचेन्द्रियोंके द्वारा वास्तविक रूपमें हम जिसका अवलोकन नहीं कर पाते, उसे अपनी भीतरी आँखके सामने प्रस्तुत कर देनेकी शक्ति ही कल्पना-शक्ति है। किन्तु इस परिभाषाका अर्थ यह नहीं है कि प्रत्यक्ष अनुभूतिके साथ कल्पनाका कोई सम्बन्ध ही नहीं है। कामधेनुको कभी किसीने देखा नहीं है। स्वर्ण-मेरु हमने कभी आँखोंसे नहीं देखा है और अमृतका स्वाद कभी किसीने नहीं जाना है। फिर भी कल्पना-जगत्में इन सबका अस्तित्व हम स्वीकार करते हैं। अतः सहज ही कोई यह अनुमान कर सकता है कि कल्पना और अनुभूतिका कोई परस्पर सम्बन्ध नहीं है।

किन्तु क्या यह धारणा ठीक है? कवि जब स्वर्णमेरुकी कल्पना करता है तब वह क्या करता है? उसने स्वर्ण देखा होता है। मेरुसे भी वह अपरिचित नहीं होता है। अतः प्रत्यक्ष अनुभूतिकी विभिन्न वस्तुओं-को मिलाकर ही तो स्वर्ण-मेरु नामक एक काल्पनिक वस्तुका वह विश्वास करने लगता है।

हम बालकोंको अद्भुत कहानियाँ सुनाते हैं। उनमें हीरोंके महल होते हैं, ऐसे विचित्र वृक्ष होते हैं जिनके तने कंचनके होते हैं और जिनमें मरकत मणिके हरीतिमायुक्त सुकुमार कोंपल फूटते हैं। जिनपर फूल रत्नोंके लगते हैं और जहाँ सैकड़ों फ़ीट लम्बे दानव यत्र-तत्र विहार करते हैं। कल्पनाकी विचित्र सृष्टिका यह एक विशेष उदाहरण है। किन्तु इसमें वर्णित विचित्र वस्तुएँ कल्पनाके द्वारा अनुभूतिके भाण्डारसे निकाली हुई हैं। सिंहकी कृश कटि, गजकी गौरवयुक्त मन्थर गति, स्वर्ण केतकका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्निग्ध मनोहर वर्ण, कमलोंकी कमनीयता, और प्रफुल्लता आदि जो अनेक वस्तुएँ हमें सुन्दर प्रतीत होती हैं, उन सबका पहले हम अन्य गुणोंसे अलगाव कर लेते हैं। और बाद इसके विभिन्न स्थानोंसे संचित समस्त लक्षणोंको संकलित कर कल्पना-जगत्की आदर्श सुन्दर स्त्रीका निर्माण करते हैं। कल्पनाजनित समस्त वस्तुओंके लिए यही नियम चरितार्थ होता है। अतः यह स्पष्ट है कि कल्पना और अनुभूतिका परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है, यह धारणा सर्वथा भ्रामक है। इन दोनोंका सम्बन्ध अवश्य है और साथ ही यह भी सुगमतासे प्रमाणित किया जा सकता है कि कल्पना-द्वारा निर्मित प्रत्येक वस्तुकी जड़ें अनुभूतिमें होती हैं। कल्पना-वृक्षका परिवार अत्यन्त विशाल होता है। उसकी अनेक शाखाएँ और उनपर खिले रंग-बिरंगे सुगन्धित फूलोंको देख हृदय इस प्रकार विमुग्ध हो उठता है कि जिस भूमिके गर्भसे उस वृक्षका इतना विस्तार हुआ, उसकी ओर हमारा तनिक ध्यान जाता ही नहीं। किन्तु उस ओर हमारा ध्यान न जानेसे उस विस्तार और भूमिका सम्बन्ध नष्ट नहीं होता। अनुभूतिके ठोस आधारपर ही कल्पना-सृष्टिका सम्पूर्ण विस्तार अधिष्ठित होता है।

लेखक हो अथवा कलाकार, दोनों ही प्रत्यक्ष अनुभूतिके द्वारा ही सौन्दर्य-जगत्का निर्माण करते हैं। हो सकता है कि प्रत्यक्ष अनुभूतिका स्वरूप रज-कणोंके समान रूपरंग-विहीन होता हो, और इसे भी हम स्वीकार करते हैं कि कलाकारोंकी प्रतिभासे अलंकृत कल्पनाके स्पर्शसे ही वह धूलसे दीप्तिमय स्वर्णमें परिवर्तित हो पाती हो। परन्तु हमें कभी भूलना नहीं चाहिए कि कला-विलासकी इस कीमियागीरीमें, अनुभूतिके रज-कणोंकी सहायताके बिना हमें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। यह पूर्ण रूपसे सत्य नहीं है कि कल्पनामें सर्वथा नवीन सृष्टि निर्माण करनेकी सामर्थ्य होती है। महाराष्ट्रके विख्यात कवि श्री समर्थ रामदास स्वामीजीने कविको शब्द-सृष्टिका ईश्वर कहा है। वर्तमान युगमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किसी भी कलाकारको प्रतिविधाता माननेकी एक प्रथा-सी हो गयी है। परन्तु इसमें लक्षणार्थसे अधिक सत्यांश नहीं है। लेखक नवीन सृष्टिका निर्माण नहीं करता। वह तो प्रत्यक्ष संसारमें विभिन्न स्थानोंपर बिखरी हुई सौन्दर्यराशिको संचित कर लेता है और उन्हें एकत्रित कर, एक नयी मनोरम और आह्लादकारी सृष्टिका सृजन करता है। प्रत्यक्षका अलगाव और पुनः संकलन करना ही कल्पनाका सही स्वरूप है। अनुभूतिके भद्दे खुरदरे वस्त्रको फाड़कर उसका प्रत्येक रेशा अलग कर, फिरसे उन धागोंसे सुन्दर, मुलायम वस्त्र बुनना ही कल्पना-शक्तिका विशिष्ट कार्य है। कल्पनाको सृजन-शक्ति माननेकी अपेक्षा उसे अलग करने तथा संकलन करनेकी शक्ति मानना ही अधिक उचित होगा। परन्तु ध्यान रहे कि कल्पना अनुभूतिसे विभक्त नहीं रह सकती, अनुभूति एवं कल्पनाका घनिष्ठ सम्बन्ध चिरकालसे बना हुआ है।

यही नहीं, वरन् प्रतिभा-विलासके लिए कल्पनाकी उपरोक्त विवेचित साधनाका अर्थ सम्भवतः यही है कि जिस अनुभूति-कोषकी पूँजीके बलपर कल्पनाकी मायावी सृष्टिका निर्माण किया जाता है उस कोषको अत्यन्त समृद्ध एवं व्यवस्थित बनाना ही कल्पना-शक्तिको अधिक प्रभावशालिनी बनानेकी पहली सीढ़ी है। लेखककी अनुभूति जितनी विस्तृत, सम्पन्न, व्यवस्थित, अगम्य एवं भावनाओंसे पूर्ण होगी उतनी ही मात्रामें उसकी कल्पना-शक्ति तेजस्वी और बलिष्ठ होगी, और प्रतिभा-विलासको उतना ही अधिक अवसर मिलेगा।

०

४ : लेखककी अन्तरंग निर्माणशाला

अबतकके विवेचनसे यह स्पष्ट हो गया है कि प्रतिभा-विलासके लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुकूलता रहे इसके लिए आवश्यक है कि कल्पनाशक्तिकी सामर्थ्यमें वृद्धि की जाये; और उस सामर्थ्यकी वृद्धिके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्यक्ष अनुभूतिके कोषको अधिकाधिक समृद्ध एवं व्यवस्थित बनाया जाये।

इस विषयपर गम्भीरतासे विचार करना अधिक उपयुक्त होगा। अपने जीवनमें हम विविध अनुभूतियोंका संग्रह करते रहते हैं। प्रश्न उठता है कि इस संचय या संग्रहको हम रखते कहाँ हैं? उत्तरमें कोई भी यही कहेगा कि हम उसे अपने मनमें रखते हैं। और इसपर कोई फिर पूछ बैठे कि मनुष्यके कितने मन होते हैं? तो क्या जवाब मिलेगा? सम्भवतः इस प्रकारके प्रश्न पूछनेवालेको मूर्ख समझा जायेगा। क्या किसीने हिन्दू-नारीसे यह पूछा है कि तुम्हारे कितने पति हैं? मनुष्यके कितने मन होते हैं ऐसा पूछना भी मूर्खतापूर्ण है।

'मेरा मन प्रसन्नतासे झूम उठा', 'किसीका मन दुखाना ठीक नहीं' जैसे वाक्योंका प्रयोग हम अपने प्रतिदिनके व्यवहारमें करते हैं, तब हमारे कहने-का अर्थ यही होता हैं कि प्रत्येक मनुष्यके अन्दर एक ही मन होता है। किन्तु नित्य व्यवहारमें हमारी कई धारणाएँ ऐसी होती हैं कि विज्ञानके प्रखर प्रकाशमें उनकी छानबीन करनेपर उनका भद्दा अपंग रूप हमें स्पष्ट ही दिखाई पड़ता है। और तब, स्थिति यह बनती है कि जबतक हम उन्हें त्यागें नहीं हमें शान्ति नहीं मिलती। हमारी यह धारणा कि मनुष्यके एक ही मन होता है, उन्हीं भ्रान्तिपूर्ण धारणाओंमें-से एक है।

किन्तु हमें यह आशंका भी नहीं होती कि हमारी यह धारणा भ्रान्तिपूर्ण है। इसका कारण यह है कि हमारा ध्यान उसी मनपर पूर्णरूपेण लगा हुआ होता है जो नित्यके व्यवहारमें प्रकट होता है। यह विचार हमें छू तक नहीं जाता कि उसके अतिरिक्त भी कुछ अन्य मनोव्यापार चलते होंगे। हम लिखते हैं, अध्ययन करते हैं, बातचीत करते हैं, खेलते हैं, गाते हैं। जागृति एवं निद्राके बीच इस प्रकारके अनेकों सहेतुक व्यापार हमसे होते हैं। इन व्यापारोंका संचालन-कर्तृत्व जिस मनके अधीन होता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
केवल वही एक मन प्रत्येक मनुष्यमें विद्यमान है, ऐसा हम मानते हैं। साथ ही हमारी यह भी धारणा होती है कि मनुष्यके निद्राधीन हो जानेपर उसके सहेतुक कार्य-कलापोंकी समाप्ति हो जाती है। उसका मन भी निद्रित हो जाता है।

परन्तु यह धारणा कितनी भ्रामक भी है। मनकी निद्रित दशामें हमारे अन्तस्थ, मानसिक व्यापारोंकी निर्माणशाला यदि पूरी तरहसे बन्द हो जाये तो कितना अनर्थ होगा। हमारी शारीरिक क्रियाएँ सहसा ही रुक जायेंगी। और तो और – सर्वाधिक आपत्तिजनक स्थिति यह होगी कि निद्राके पूर्व और निद्राके बादकी अवस्थाओंका अन्योन्य सम्बन्ध तुरन्त नष्ट हो जायेगा और रोज़ानेकी ज़िन्दगीमें एक बहुत बड़ा व्यवधान उपस्थित होगा।

पर ऐसी बात नहीं है। सोनेके पहले जो विचार हमारे मनमें आते रहते हैं जागनेके बाद भी वे अक्षुण्ण ही रहते और पुनः सुसूत्र रूपसे आगे बढ़ते हैं। यही नहीं, कभी-कभी निद्रित दशामें उन विचारोंमें-से किसी कष्टदायक विचारकी उलझन न जाने कैसे अनायास ही सुलझ जाती है और विचारकी धारा अबाधित रूपसे प्रवाहित होने लगती है। इसका अर्थ निःसंशय यही है कि हमारा नित्यका 'प्रकट' मन जिस कालावधिमें विश्राम करता है उस अवधिमें हमारे अन्तरंगकी मनोव्यापारोंकी उद्योगशालाका कार्य भी होता रहता है; और उस उद्योगशालापर किसी अन्य मनका नियन्त्रण रहता है। इस प्रकारके अन्य कई रोचक प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं, लेकिन यह हमारा उद्देश्य नहीं है। प्रस्तुत विषयकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण बात यही है कि मनुष्यके भीतर एक नहीं बल्कि दो मन होते हैं।

इन दो मनोंको हम 'प्रकट मन' एवं 'अप्रकट मन' कह सकते हैं। प्रतिदिनके व्यवहारमें हम जिसे मन कहते हैं वह हमारा प्रकट मन है। परन्तु इस मनके कार्यके सम्बन्धमें अधिक विश्लेषण अपेक्षित नहीं है। परन्तु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अप्रकट मनका स्वरूप क्या होता है और हमारे विषयकी दृष्टिसे इस मनके व्यापारका महत्त्व क्या है, आदि बातें विस्तारमें जान लेना आवश्यक है।

इस अप्रकट मनकी प्रथम विशेषता यह है कि इसका कार्य आठों पहर अविराम जारी रहता है। वह कभी विश्राम करना जानता ही नहीं। निद्रित दशामें जब मनुष्यका प्रकट मन निष्क्रिय एवं स्तब्ध हो जाता है, तब तो इस अप्रकट मनकी सहायता नितान्त आवश्यक होती है। किन्तु जाग्रत दशामें जब प्रकट मनके विविध कार्य होते रहते हैं तब भी अप्रकट मनको अपने कार्यमें व्यस्त रहना पड़ता है। प्रकट मनकी सहायतासे जब मनुष्य अध्ययन, बातचीत, आहार-विहार आदि कार्योंमें व्यस्त रहता है, तब उक्त कार्योंके अतिरिक्त अन्य सभी विषयोंके प्रति उसका मन यदि विमुख हो जाये तो कितना अनर्थ होगा। अध्ययनमें लगे रहते हाथकी पुस्तकके अतिरिक्त मनुष्यको अन्य अनुभूतियोंका ज्ञान यदि न हो तो वह यह न समझ पायेगा कि अध्ययनकी समाप्ति कब की जाये। यही नहीं, निश्चित रूपसे तब वह भी कहना कठिन है कि पढ़नेके उस आनन्दका उपभोग वह कर पायेगा या नहीं। भ्रमणके समय यदि हमारा प्रकट मन केवल उचित मार्गपर ही ध्यान रखनेमें व्यस्त रहे और अन्य चेतनाओंकी अनुभूति वह न करे तो उस भ्रमणमें हमें क्या आनन्द प्राप्त हो सकता है? विहारके समय जो सुरम्य दृश्य हमें दिखाई देते हैं, जिस भाँति-भाँतिकी उन्मादक सुगन्धिका अनुभव हम करते हैं और अनेक प्रकारके पंछियोंका मधुर कलरव हमारे कानोंको सुनाई देता है, इन्हींके कारण तो विहारका यथार्थ आनन्द हम उठा सकते हैं। अतः इन समकालीन चेतनाओंका स्वागत कर, उन्हें अन्तरंगके मन्दिरमें स्थान देनेवाले एक और ही, निरन्तर कार्यशील रहनेवाले मनका अस्तित्व हम स्वीकार करें तो आपत्ति ही क्या है?

उदाहरणके लिए किसी सफल वक्ताके भाषण देते समय उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकट मनकी समस्त शक्तियोंका उस भाषणके विषय और उसकी शैलीपर तथा श्रोताओंपर एकाग्र होना आवश्यक है। क्योंकि इसके अभावमें उसका भाषण लोगोंको विशेष रूपसे प्रभावित नहीं कर सकता। फिर भी अपने बोलनेके प्रवाहमें सहस्रों श्रोताओंको मनमाने ढंगसे, तेज़ीसे खींचकर ले जानेवाले उस प्रभावशाली वक्ताको भी उस क्षण इन्द्रियोंके द्वारा अन्य कई चेतनाओंका स्पष्ट रूपसे भान होता है। ये सारी चेतनाएँ उसकी अनुभूतिके भाण्डारमें संगृहीत होती हैं और आगे चलकर, उचित अवसरपर उन चेतनाओंकी स्पष्ट स्मृति भी उसे अवश्य हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि प्रकट मन चाहे निद्रित दशामें रहे या कार्यरत, अनुभूतिके एक द्वारको निरन्तर खुला रखनेवाला एक और अप्रकट मन प्रत्येक व्यक्तिमें होता है।

किन्तु चमत्कार यह है कि निरन्तर परिश्रममें व्यस्त इस मनका मनुष्यके अन्तरंगके धरातलपर साधारण रूपसे दर्शन कभी नहीं होता। भीतर-ही-भीतर रहकर वह चुपचाप अपने कार्यमें व्यस्त रहता है। इसीलिए हम उसे अप्रकट मन कहते हैं। उसका कार्य कभी रुक नहीं सकता। फिर भी प्रकट मनके कन्धेसे कन्धा लगाकर प्रकट रूपसे अपनी मर्यादाका उल्लंघन वह कभी नहीं करता। वाद-विवाद करना, तर्कोंके द्वारा विभिन्न मतोंकी काट-छाँट करना, झूठ-सचके फैसले करना, नये सिद्धान्तोंको तर्कयुक्त ढंगसे लोगोंके सामने प्रस्तुत करना, आदि समस्त कार्य अप्रकट मनने प्रकट मनको सौंप दिये हैं। पराक्रम करना इस अप्रकट मनका गुण नहीं है। उसका कार्य केवल यही है कि चेतनाओं एवं अनुभूतियोंका संग्रह करे और प्रकट मनकी आवश्यकताओंके अनुसार उस संग्रहमें-से आवश्यक अनुभूतियोंकी स्मृति उसके सामने प्रस्तुत करे!

बम्बई-जैसे बड़े-बड़े नगरोंमें सॉलिसिटरोंके दफ़्तरोंमें कामकाजका बँटवारा कर दिया जाता है। कामके साझीदारोंमें-से एक अदालतमें जाकर अपनी वक्तृताके बलपर मुक़दमे चलाता रहता है। दूसरा साझीदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दफ़्तरमें ही बैठकर उन मुक़दमोंके आवश्यक कागज़ात तैयार करनेके काममें व्यस्त रहता है। अदालतमें जाकर पैरवी करनेवाला वकील लोगोंकी आँखोंको दिखाई देता है। लेकिन दफ़्तरमें बैठ घण्टों सबूतकी छान बीनकर, विभिन्न जानकारियाँ जुटाकर, मुक़दमेकी ठोस तैयारी करनेवालेको लोग नहीं देख पाते। प्रकट और अप्रकट मनका सम्बन्ध ठीक इसी प्रकारका है।

अर्थात् प्रकट मनका कार्य सुचारु रूपसे चले इसलिए यह आवश्यक है कि उसमें और अप्रकट मनमें उचित सहयोग हो। अदालतमें काम करनेवाले और दफ़्तरमें क़ानूनी लेखा तैयार करनेवाले वकीलमें यदि अच्छा सहयोग न हो तो कम्पनीका कारोबार ठप होते देर न लगेगी। और यह सहयोग-भावना जितनी अधिक मात्रामें रहेगी कम्पनीकी उन्नति निरन्तर अधिकाधिक होती जायेगी। उसी प्रकार अप्रकट मनका कार्य जितने अधिक सहयोगसे होगा और विभिन्न अनुभूतियोंका जितना विशाल कोश अप्रकट मन अपने पास सुव्यवस्थित ढंगसे रखेगा, उसी मात्रामें प्रकट मनकी कार्यशीलतामें वृद्धि होगी। ऐसा होनेपर जाग्रतावस्थामें चलनेवाली समस्त मानसिक शक्तियाँ और भी अधिक समृद्ध होंगी जिससे कल्पनाशक्तिका कार्य अधिक तेजस्वी होगा। मनुष्यकी कल्पनाशक्ति एवं अप्रकट मनके सम्बन्धकी बात यहीं स्पष्ट होती है।

कल्पना-शक्ति सृजनकी शक्ति नहीं है, वह तो पृथक्करण और संकलनकी शक्ति है। अतः जिस अनुभूतिपर उसकी दोहरी कारीगरी होती है उनकी सम्पन्नता एवं व्यवस्थापर ही उसका प्रभाव निर्भर है; जिसकी चर्चा इसके पहले हम कर चुके हैं। प्रकट मन निरन्तर प्रत्यक्ष व्यवहारके कार्यमें व्यस्त रहता है और अनुभूतियोंके कोशकी रक्षा करने और उसे संगठित रखनेका कार्य अप्रकट मन करता है। अतः अप्रकट मनकी कार्यशीलतापर ही कल्पनाका प्रभाव निर्भर होता है। अनुभूतियोंकी खदानोंसे भाँति-भाँतिका कच्चा माल निकालकर उससे विभिन्न सुन्दर वस्तुओंका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निर्माण कर एक समृद्ध पैठ लगाना ही कल्पनाका प्रधान कार्य है। अतः अनुभूतियोंकी खदानकी रक्षा एवं उसके विकासका उत्तरदायित्व यदि अप्रकट मनपर है तो यह मानना पड़ेगा कि कल्पनाके साथ उसका बहुत ही नज़दीकी सम्बन्ध है।

पाठकोंके मनमें इस विषयमें तनिक भी सन्देह नहीं रहना चाहिए कि विभिन्न अनुभूतियोंके संचयका उत्तरदायित्व एवं कार्यभार अप्रकट मनपर ही सौंपा गया है। अतः इस सम्बन्धमें अधिक सोचनेपर हमें दिखाई देगा कि जाग्रत दशामें हमारा प्रकट मन भाँति-भाँतिके अनुभव प्राप्त करता रहता है। पंचेन्द्रियोंके द्वारा हज़ारों चेतनाओंकी लहरें आकर प्रकट मनसे टकराती हैं। केवल दृष्टिकी ही बात लें तो प्रतिपल चार दृश्योंका प्रकट मनको अनुभव करना पड़ता है – और इस हिसाबसे देखा जाये तो प्रकट मनको प्रति वर्ष पाँच करोड़ दृश्योंका अनुभव प्राप्त होता रहता है। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियोंके द्वारा प्राप्त होनेवाली अनुभूतियोंका हिसाब लगाया जाये, तो प्रकट मनकी अनुभूतियोंका विस्तार कितना विशाल होता है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। अनुभूतियोंके निरन्तर समृद्ध होनेवाले प्रचण्ड भारको अपने कन्धेपर वहन करनेका उत्तरदायित्व यदि प्रकट मनपर होता तो नित्यके व्यवहारमें छोटी-बड़ी बातें सुचारु रूपसे सम्पन्न करनेकी सामर्थ्य ही प्रकट मनमें शेष न रहती। इसीको देखते प्रकट मनके द्वारा एकत्रित भारका वहन करनेवाले अप्रकट मनका निर्माण प्रकृतिने किया है। प्रकट मनको न्यूनाधिक मात्रामें प्रभावित करनेवाली जो अनन्त अनुभूतियाँ हमें प्राप्त होती रहती हैं, उनका भार यदि निरन्तर प्रकट मनके सिरपर रहे तो उसके नीचे दबकर उसकी गतिशीलता अविलम्ब ही नष्ट हो जायेगी, इसीसे वह भार अप्रकट मन अपने ऊपर उठा लेता है और प्रकट मनको पराक्रम तथा अधिकाधिक व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करनेके लिए मुक्त छोड़ देता है। सेनापति जब कोई देश जीत लेता है, तब उसे स्थायी रूपसे अपने अधीन रखनेके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हेतु किसी सूबेदारके हाथों सौंप देता है और स्वयं अगली विजयके लिए आगे बढ़ता है। यही बात प्रकट एवं अप्रकट मनके सम्बन्धमें चरितार्थ हो सकती है। प्रकट मन हज़ारों बातें देखता, सुनता और उनका अनुभव करता रहता है। कुछ क्षणोंके लिए उन सुख-दुःखोंका अनुभव कर, उन्हें तुरत ही यह कहकर अप्रकट मनके हाथों सौंप देता है कि, 'देखो, ये सारी चीज़ें तुम अपने पास रखना और बादमें जब मुझे इनमें-से किसी चीज़की आवश्यकता पड़े, निकालकर मुझे दे देना।'

अर्थात्, हम कह सकते हैं कि प्रकट मन पुरुषके और अप्रकट मन स्त्रीके समान होता है। पुरुष जो कुछ अर्जित करता है, उसका संचय स्त्री करती है और पुरुषकी आवश्यकताके अनुसार उस संचयमें-से वह अपेक्षित उसे देती है। प्रकट एवं अप्रकट मनका सम्बन्ध ठीक ऐसा ही होता है। यही नहीं, स्त्री जिस प्रकार घरके भीतर रहकर गृहस्थीका सारा प्रबन्ध सुचारु रूपसे कर, पुरुषके पराक्रममें हाथ बँटाती है उसी प्रकार यह दूसरा मन अप्रकट रहकर भी प्रकट मनकी सहायता करता रहता है। अवलोकन एवं तर्कके दो साधनों-द्वारा प्रकट मन अपनी अनुभूतियोंमें निरन्तर व्यस्त रहता है। इन दोनों साधनोंसे वंचित रह जानेपर नित्य नूतन अर्जित करनेका कार्य अप्रकट मनके द्वारा होना सम्भव नहीं है। परन्तु प्रकट मनके अर्जितके संग्रह करनेके कार्यमें अप्रकट मन पूर्ण रूपसे निपुण होता है और इस संग्रहको सुरक्षित रखने और उसमें-से अपेक्षितको यथासमय प्रकट मनके उपयोगके लिए प्रस्तुत करनेके कार्यमें वह निरन्तर सतर्क रहता है।

प्रकट एवं अप्रकट मनके स्वरूप एवं कार्यके सम्बन्धमें इससे अधिक विस्तारपूर्वक चर्चाकी कोई आवश्यकता नहीं है। यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन मनोंके विविध व्यापारों तथा परस्पर सम्बन्धोंकी विस्तृत चर्चा बड़ी ही मनोरंजक होगी। परन्तु वह हमारा उद्देश्य नहीं है। हमने यह देखा कि प्रतिभाका विलास कल्पना-शक्तिसे ही सम्भव है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और इसलिए प्रतिभाकी साधनाके लिए कल्पना-शक्तिका परिमार्जित एवं तेजस्वी बनना परमावश्यक है। इसके अन्तर कल्पना-शक्तिके स्वरूपका अवलोकन करते हुए हमने देखा कि वह सर्वथा अनुभूतिपर निर्भर होती है, और अनुभूतियोंके सम्बन्धमें सोचनेपर यह बात स्पष्ट हो गयी कि उनका सम्पादन या उन्हें प्राप्त करनेका कार्य प्रकट मन करता है और अप्रकट मन उनका संग्रह करता है। अर्थात् प्रतिभाकी साधनाका सम्बन्ध इन दो मनोंका कितनी कुशलतासे उपयोग कर लेता है और महदाकांक्षी लेखक इसके द्वारा कौन-सी शिक्षा ग्रहण कर सकता है इसपर चरचा हम आगे कर रहे हैं।

५ : सारथी और घोड़े

इस तथ्यको और अधिक विस्तार देनेकी आवश्यकता नहीं है कि अनुभूतिकी भूमिमें कल्पनाके वृक्षकी जड़ें जब खूब गहरी चली जाती हैं, तभी उस वृक्षका प्रचण्ड विस्तार हो पाता है। साधारण लेखकोंकी रचनाएँ नीरस, छिछली एवं निर्जीव-सी लगती हैं, इसका कारण यही है कि उनकी कल्पनामें वह शक्ति नहीं होती जिससे वह प्रतिभाकी दिव्यता-को छू सके। उनकी इस असमर्थताका कारण यही है कि अनुभूतिकी भूमि ही दोषपूर्ण होती है। इसके विपरीत प्रतिभाशाली लेखककी रचनाओंमें कल्पनाका आश्चर्यजनक विस्तार प्रतीत होता है। इसका कारण यही है कि उसकी कल्पना गहन एवं विस्तृत अनुभूतियोंमें पूर्णतया पकी हुई होती है। बिना कल्पनाके परिमार्जित एवं परिपक्व हुए, प्रतिभाका वास्तविक फल सम्भव नहीं है। और जहाँ वह है वहीं एक सत्य यह भी कि अनुभूतिकी व्यापकता और गहनताके बिना कल्पनाका परिपक्व होना सम्भव नहीं है। अर्थात् प्रतिभाशाली लेखककी कलाका रहस्य अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुभूतियोंको अत्यन्त विस्तृति देनेके लिए किये गये उसके ठोस प्रयत्नोंमें है ।

इन ठोस प्रयत्नोंका स्वरूप समझमें आनेके लिए प्रकट एवं अप्रकट मनोंके परस्पर सम्बन्धोंको भी ध्यानमें रखना आवश्यक है । अनुभूतियोंके नित्य वृद्धि होनेवाले संग्रहको सुरक्षित रखनेका कार्य अप्रकट मन करता है । किन्तु उस संग्रहका निर्माण और उसे वृद्धि करनेका कार्य प्रकट मन करता है । अर्थात् इस कल्पना-शक्तिको प्रभावशाली बनानेके लिए प्रतिभाशाली लेखक जो लम्बे और ठोस प्रयत्न करता है वह दोहरे ढंगका होना चाहिए । अनुभूतिके कोषको काफ़ी व्यवस्थित रखने और उचित अवसरपर उसमें-से अपेक्षितको प्रस्तुत करनेकी शिक्षा अप्रकट मनको दी जाना आवश्यक है । पर सबसे महत्त्वकी बात यह है कि नित्य नयी अनुभूतियोंको प्राप्त कर, अनुभूतिका कोष समृद्ध बनानेकी आदत अप्रकट मनमें होनी चाहिए ।

सम्भवत: यह आदत ही ख्यातनाम लेखककी महत्त्वपूर्ण विशेषता प्रमाणित होगी । ललित लेखनके लिए सर्वाधिक महत्त्वकी बात यह है कि लेखककी आँखोंपर अवलोकनकी दूरबीन हमेशा लगी रहनी चाहिए । अनुभूतिके विस्तारके लिए अवलोकन-जैसा अन्य कोई साधन नहीं है । प्रकृति और व्यवहारके दो अथाह महासागर मानवके सामने फैले पड़े हैं । सूक्ष्म अवलोकनके माध्यमसे इनमें-से जितना भी ले लिया जा सके, ले लेना चाहिए । जिन्हें ललित लेखनमें सफलता नहीं प्राप्त होती है, उनमें क्या दोष होता है, इस प्रश्नका उत्तर यह नहीं है कि उनकी कल्पना-शक्ति बलिष्ठ नहीं होती या दुर्भाग्यसे प्रकृतिने उन्हें प्रतिभासे वंचित रखा है । बल्कि उत्तर यह होगा कि उनका 'अवलोकन' ही दोषपूर्ण है । उनमें वह सामर्थ्य ही नहीं है कि विशाल सृष्टि और संसारके बीचसे नित्य नयी अनुभूतियोंका संग्रह वे कर सकें ।

कोई पूछ सकता है कि लेखकको अपना अवलोकन बढ़ाना चाहिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसका क्या अर्थ है ? क्या इसके लिए उसे अपना सब-कुछ त्याग कर संसार भरमें भ्रमण करना होगा ? यदि इस प्रश्नके उत्तरमें हम 'हाँ' कहें, तो कुछ अजीब-सा लगेगा। परन्तु सचाई यह है कि उत्तरमें हाँ ही कहना पड़ेगा। अनगिनत व्यक्ति, विभिन्न स्थान एवं भाँति-भाँतिके दृश्य लेखक-के अवलोकनमें आने चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ललित लेखक प्रत्यक्ष संसारको एक नया ही मनोहर रूप दे उसकी सुचारु रूपसे रचना करनेवाला एक कुशल कारीगर है। सौन्दर्यकी अभिव्यक्ति करना ही उसका एक निश्चित कार्य है और वैचित्र्य तथा वैविध्य तो सौन्दर्यका एक मुख्य अंग है। ललित लेखककी सृष्टिमें स्त्री-पुरुषों, सज्जनों-दुर्जनों, पिता-पुत्रों, रमणी-वल्लभों, स्थानों तथा प्रसंगोंके विभिन्न चरित्र दिखाई देनेपर ही यह सृष्टि मनोरम प्रतीत हो सकती है। यदि किसीकी यह धारणा हो कि जब लेखक किसी रति-जैसी सुन्दरी स्त्रीका वर्णन करता है तभी उसकी रचनामें सौन्दर्य आ सकता है, या नन्दनवन-जैसे किसी स्थानके वर्णनमें ही सौन्दर्यकी निष्पत्ति हो सकती है; तो मैं कहूँगा उसकी यह धारणा सर्वथा भ्रान्तिपूर्ण है। यह बात नहीं है कि लेखक जिस चरित्र-का निर्माण करता है उसके सुन्दर होनेपर ही वह चरित्र सुन्दर होगा ! यह बात नहीं है कि शकुन्तला परम रूपवती थी, इसीसे कालिदास-द्वारा अंकित उसकी शाब्दिक प्रतिमा इतनी मनोज्ञ बन पायी। कण्व ऋषीके मांगल्यपूर्ण और मनोहर तपोवनका कालिदास-कृत वर्णन तथा किसी कुशल उपन्यासकार-द्वारा मदिरायल-जैसे किसी गन्दे स्थानका वर्णन – दोनों ही मनको विमुग्ध कर सकते हैं। इसीसे हम यह सहज ही समझ सकते हैं कि कला-द्वारा प्रकट होनेवाला आह्लादक अंश केवल दृश्य सौन्दर्यपर निर्भर नहीं होता है। कलाकृतिके द्वारा प्राप्त होनेवाले आनन्दका वास्तविक कारण उसके दृश्य सौन्दर्यकी अपेक्षा उसकी यथातथ्यतापर ही निर्भर रहता है और इसीसे कहा जाता है कि सत्य ही सौन्दर्य है। इस दृष्टिसे, विविधता एवं यथातथ्यताके लिए ललित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेखक जितना अधिक परिश्रम करेगा, उतनी ही मात्रामें उसकी रचनाओं-में सौन्दर्यकी वृद्धि होगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

अतः ललित लेखकको चाहिए कि वह तरह-तरहके व्यक्तियों एवं स्थानोंका अवलोकन करे। सज्जनोंकी तरह दुर्जनोंके भी विभिन्न चरित्रोंका अवलोकन करना उसके लिए आवश्यक है। राजाओंके प्रासादोंके समान ही, जंगलमें बने झोंपड़े भी उसके अवलोकनमें आने चाहिए। मनुष्य-स्वभावोंके हज़ारों चरित्रोंका संग्रह उसके मस्तिष्कमें रहे और उनके उदात्त प्रसंगोंके साथ ही हज़ारों गन्दे दृश्योंकी भी जानकारी उसे रहे। लेखकके अवलोकनका केन्द्र यदि संकीर्ण हुआ तो उसकी रचनाओंमें विविधता नहीं आ पाती और उसे पढ़ते हुए पाठकोंकी तबीयत भी उकता जाती है। महान् लेखकोंकी कल्पनाकी छलाँग शेरकी छलाँग-जैसी लम्बी होती है, इसका कारण यही है कि उनके अवलोकनका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत होता है।

इसीलिए ललित लेखकको चाहिए कि वह शूर, उदार महात्माओंको भी देखे, कायर कृपण नरपिशाचोंको भी देखे, और उन्हें देखनेके लिए किसी भी स्थानमें जानेका साहस करे। केवल कल्पनाके बलपर शौर्य अथवा क्रूरताके पुतलोंका निर्माण हम कर सकते हैं, प्रतिभासम्पन्न लोगोंके मुँहसे निकली इस प्रकारकी उक्ति तो हास्यास्पद लगती ही है, फिर उन साधारण लोगोंकी तो बात ही क्या? जुआड़ियोंके अड्डोंपर मानवीयता किन-किन बीभत्स, क्रूर और घिनौने रूपोंमें नृत्य करती है इसकी जानकारी बिना वहाँ प्रत्यक्ष जाकर देखे मात्र कल्पनासे करना वास्तविक नहीं होगा। मसलन् कौरव-पाण्डवोंके बीच हुए जुएका प्रसंग राजाओंके बीचका होनेके कारण कुछ ऐश्वर्यपूर्ण और रोबदार भले ही रहा होगा, लेकिन वहाँपर भी उसके घिनौने नशेमें डूबनेके बाद कौरवोंके शब्द, उनकी मुख-मुद्राएँ और उनके कृत्य कितने भयानक हुए होंगे, इसकी केवल कल्पना करना व्यर्थ है। नाटक खेलते हुए इस दृश्यकी भयानकता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और घिनौनेपनका प्रदर्शन रंगमंचपर हू-ब-हू नहीं किया जा सकता। इसका कारण यही है कि इस विषयमें लेखकोंने केवल कल्पनाका ही सहारा लिया है, आँखों देखा नहीं। वास्तवमें हम भारतीय उपन्यासकार अवलोकनका महत्त्व अबतक जान ही नहीं पाये, यह दुर्भाग्यकी बात है। अँगरेज़ लेखकोंकी तुलनामें हमारा अवलोकन नहींके बराबर है। पश्चिमी लेखक अनेक देश देखते हैं, विभिन्न समाजोंका दर्शन करते हैं, और भाँति-भाँतिके प्रसंगोंमें जान-बूझकर कूद पड़ते हैं। कुछ ही वर्षों पहले दिवंगत हुए श्री कॉनन डॉयल देश-देश कितना घूमे थे इसका वर्णन 'स्ट्रैण्ड' मासिक पत्रिकामें प्रकाशित उनकी आत्मकथामें बहुतोंने पढ़ा होगा। उनके दो मानस पुत्र शॅरलॉक होम्स और डॉ० वॉट्सन् अँगरेज़ी साहित्यमें चिरंजीवी हो गये हैं, इसका कारण यही है।

संक्षेपमें, इस दिशामें लम्बे प्रयत्नका पहला सोपान यह है कि लेखक अपने अवलोकनमें वृद्धि करनेके लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। वह भूलकर भी यह न सोचे कि किसी एक विषयके साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। ललित लेखकोंका मज़ाक़ उड़ाते हुए प्लेटोने अपनी 'रिपब्लिक' पुस्तकमें लिखा है कि 'ये महाशय सेनाध्यक्षसे लेकर चमार तकके वर्णन इस ढंगसे करते हैं कि मानो इन्हें युद्धकलासे लेकर जूते बनानेकी कला तक सभी शास्त्र एवं कलाओंली पूरी-पूरी जानकारी है।' माना कि प्लेटोका यह कथन व्यंग्यपूर्ण है, फिर भी इसमें ललित-लेखनका एक बड़ा रहस्य छिपा हुआ है। एक क्षणके लिए धोखा देकर संसारको चकित कर देना सभी ललित कलाओंका कार्य है। ललित-लेखनका भी यही कार्य है। परन्तु पाठकोंको पल-भर विस्मित करनेके पूर्व लेखकको कितने घोर परिश्रम करने पड़ते हैं, यह हमें नहीं भूलना चाहिए। चमारों या सेनाध्यक्षोंकी बातचीत और रहन-सहनके ढंगको हू-ब-हू आँककर पाठकोंके मनमें अपनो सर्वज्ञताका आभास करानेके लिए लेखकको कठोर परिश्रम करने पड़ते हैं। न तो वास्तविक तलवार चलानेकी बहादुरी वह दिखा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सकता है, न ही सुतारी पकड़कर जूते सीनेके कष्ट वह उठाता है। हाँ, अपनी दृष्टिको वह हमेशा तीक्ष्ण बनाये रखता है। उसकी दृष्टि-क्षेत्रका विस्तार जितना भी हो सके, होना चाहिए। यही नहीं, अत्युक्ति-दोषको स्वीकारते हुए, यह भी कहा जा सकता है कि जो सिद्धहस्त लेखक बनना चाहता हो, वह लिखे कम और देखे अधिक! लेखकको चाहिए कि लेखनीकी अपेक्षा वह देखनेमें ही अधिक व्यस्त रहे।

सहज ही इसपर कोई यह भी पूछ सकता है कि आखिर यह 'अवलोकन' क्या बला है? और उसके लिए परिश्रम या ठोस और लम्बे प्रयत्नोंकी बातका क्या अर्थ? प्रत्येक व्यक्ति हर रोज़ हज़ारों दृश्य देखता ही रहता है, उसमें लेखकके परिश्रमका सवाल ही कहाँ उठता है? हमारे चारों ओर नित्य विभिन्न घटनाएँ घटती रहती हैं। सैकड़ों प्रकारके व्यक्ति हमें दिखाई देते हैं और अनायास ही हमारा थोड़ा-बहुत ध्यान उनकी ओर जाता ही है, तब लेखक-द्वारा विशेष परिश्रम किये जानेका क्या आशय है?

उपरले स्तरपर ये प्रश्न भले ही ठीक लगें पर अधिक सोचनेपर इनकी भ्रममूलकता भी हमें प्रतीत होगी। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि साधारण रूपसे हमें अपने चारों ओर विभिन्न प्रकारके व्यक्ति दिखाई देते हैं, परन्तु क्या हम यह कह सकते हैं कि उनका अवलोकन हम करते हैं? केवल आँखें खुली रखना ही अवलोकन नहीं है। जाग्रत-दशामें हमारी पंचेन्द्रियाँ खुली होती हैं। परन्तु क्या इन पंचेन्द्रियोंके द्वारा सभी लोग अवलोकन किया करते हैं? अधिकतर लोगोंकी दशा तो आँखके अन्धों-जैसी होती है। हमारे सामने वस्तुएँ होती हैं लेकिन हम इन्हें उस रूपमें नहीं देखते जैसा कि हमें देखना चाहिए। हँसने और रोनेवाले लोग क्या हमें कम दिखाई देते हैं? परन्तु उनका अवलोकन हमारे लिए कठिन होता है। सूर्योदय एवं सूर्यास्तके दृश्य प्रतिदिन लाखों लोग देखते हैं, परन्तु उनका अवलोकन करनेकी शक्ति, किसी एक-आध व्यक्तिमें ही,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास-द्वारा आती है। साधारण दर्शककी आँखों और प्रवीण लेखककी आँखोंमें बड़ा अन्तर होता है। लेखक इसलिए नहीं देखता कि उसे केवल कुछ दिखाई देता है। बल्कि वह इसलिए देखता है कि उसे देखना है। कहना न होगा कि यह देखना सरल नहीं होता, इसके लिए विशेष रूपसे अध्ययन करनेकी आवश्यकता होती है।

इस अध्ययनकी पहली विशेषता यह है कि हमारी दृष्टिमें संचयन-शक्तिका होना आवश्यक है। यहाँ यह भी स्पष्ट करना ज़रूरी है कि जो कुछ दिखाई दे उसे देखना, और जो कुछ सुनाई दे उसे सुनना ही अवलोकन नहीं है। सम्भवतः समदृष्टिका परमार्थ साधनामें काफ़ी महत्त्वपूर्ण स्थान हो। परन्तु प्रतिभाकी साधनाके कार्यमें उसका कोई महत्त्व नहीं है। जो भी दिखाई दे, उसमें-से सारतत्त्वको ग्रहण कर उसे अंकित करनेकी प्रवृत्ति प्रकट मनमें होनी चाहिए। स्थानका वर्णन हो या स्वभावका, उसे संक्षेपमें और प्रभावशाली ढंगसे प्रस्तुत करनेकी शैलीका कितना महत्त्व है, इसका विवरण हम आगे करेंगे। परन्तु इसे ध्यानमें रखना आवश्यक है कि उस शैलीका उद्‌गम विशेष रूपसे किये गये अवलोकनमें ही है। साधारण लोग बहुत सारा रंग खर्च करके भी जिस दृश्यको नहीं अंकित कर पाते, उसी दृश्यको तूलिकाके दो-चार स्पर्शोंसे ही कुशल चितेरा मूर्त रूप दे सकता है। इसी तरह अन्य लोग दस-बीस पृष्ठ लिखकर भी जिस बातकी प्रस्तुति प्रभावशाली ढंगसे नहीं कर सकते, उसे प्रतिभाशाली साहित्यकार सहज ही थोड़े-से वाक्योंमें कर सकता है। उसकी इस सामर्थ्यका कारण उसकी भाषाप्रभुतामें नहीं, वरन उसके अवलोकनमें ही छिपा होता है। प्रत्येक स्थान या व्यक्तिकी उसकी अपनी विशेषता होती है। ठीक इस विशेषता-को चुन लेनेमें ही लेखकके अवलोकनका समस्त कौशल है। नीच प्रकृतिके किसी व्यक्तिकी एक नाक और दो आँखें देखना कोई अवलोकन नहीं है। लोगोंकी ओर देखते समय किसीकी आँखोंमें कोई विशेष भाव परिलक्षित होता हो, तो उसे ध्यानमें रखना ही सच्चा अवलोकन है। हमारे कहनेका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आशय यही है कि लेखककी वास्तविक दृष्टि अन्तस्थपर लगी रहनी चाहिए और उस अन्तस्थकी विशिष्ट बाहरी बातोंकी ओर उसे अन्वेषण-पूर्ण दृष्टिसे देखना चाहिए।

लेकिन अन्तस्थ तक जा पहुँचनेकी दृष्टिकी ऐसी सूक्ष्मता सुगमतासे नहीं प्राप्त हो सकती। इसके लिए लेखकको बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ता है। अवलोकनके समय लेखक अपना पूरा ध्यान जब उस ओर लगा देगा तभी उस वस्तुकी तह तक वह पहुँच सकता है। किसी भी व्यक्तिको देखते समय देखनेवाला उसके साथ जितनी मात्रामें एकरस होगा, उतना ही उसका अवलोकन स्वाभाविक होगा। किसी तैल-चित्रको निकटसे देखनेकी अपेक्षा कुछ अन्तरसे देखनेपर ही वह अधिक सुन्दर दिखाई देता है। परन्तु मानवीय स्वभावके जो विभिन्न चित्र इस संसारकी प्रदर्शनीमें रखे गये हैं, उन्हें यथार्थ रूपसे देखनेके लिए उनके साथ एकरस होना आवश्यक है। क्योंकि सुष्ट हों या दुष्ट, उसके अन्तरंगमें प्रवेश करनेपर ही उसके सधे स्वभावसे हम परिचित हो पाते हैं। जीवित मानवोंकी तो बात ही छोड़िए लेकिन निर्जीव स्थलोंके लिए भी यही नियम चरितार्थ होता है। जो व्यक्ति अपने हृदयको उनमें उड़ेलकर, उनकी ओर देखेगा वही उनके मर्मको जान सकेगा। सहानुभूति स्वर्णके समान होती है। जिस अवलोकनमें इसका अभाव होगा, वह ललित साहित्यके क्षेत्रमें असफल साबित होगा।

एक बात और, अवलोकनमें यदि अन्वेषकता या मर्मज्ञता न हुई तो वह किसी कामकी न होगी, और लेखक-मनमें यदि सहानुभूति न हुई तो उसके अवलोकनमें मर्मज्ञताका होना भी कदापि सम्भव नहीं है। किसी भी व्यक्तिके स्वभाव या किसी भी दृश्यके मर्मको तत्काल और सही ढंगसे समझनेके लिए यह आवश्यक है कि सह अनुभवका प्रखर प्रकाश लेखक उसपर डाले। किसी व्यक्तिके अवलोकनका अर्थ केवल उसे देखना नहीं है, अपितु उसे देखकर समझ लेना है। अतुल ऐश्वर्यशाली किसी करोड़-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पतीकी पत्नीको एकान्तमें आँसू बहाते देख चतुर लेखक केवल उसके आँसू देख चुपचाप नहीं बैठता। वह उन आँसुओंके कारण तक जा पहुँचता है। इसे वह मुख्य रूपसे ध्यानमें रखता है कि सन्तानहीनताके कारण उस स्त्रीके हृदयकी, वत्सलताकी भूख तृप्त नहीं हो पायी है; और इसीसे अन्य सुख-प्रसाधनोंका रस उसका क्षुधित हृदय नहीं ले सकता। सह-अनुभवकी सहायतासे उसकी इस कारुणिक मनःस्थितिके साथ यथासम्भव एकरूप होनेकी वह चेष्टा करता है, और ऐसा करनेपर ही उसका अवलोकन यथार्थ होता है। आगे चलकर उसमें एक ऐसी सामर्थ्य प्रकट हो जाती है कि जिसे पढ़ते हुए स्त्रियोंकी ही नहीं पुरुषोंकी भी आँखें गीली हो जाती हैं। राजा और रंक, साधु और वधिक, पटरानी और वारयोषिता – जिस किसी चरित्रका अवलोकन करना हो, लेखकका उसके साथ तद्रूप होना आवश्यक है। ललित साहित्य पढ़नेवाला पाठक जब उसमें वर्णित व्यक्ति एवं दृश्योंसे तद्रूप हो जाता है तभी उसे एक अनिर्वचनीय आनन्दकी प्राप्ति होती है। परन्तु पाठकको इस तद्रूपताकी अनुभूति हो, इसलिए यह आवश्यक है कि लेखक पहले अवलोकनके समय और इसके बाद उसे लिपिबद्ध करते समय, वर्ण्य विषयके साथ एकरूप हो जाये। जिस प्रकार बबूलमें चम्पाके फूल नहीं लग सकते, उसी तरह छिछले अवलोकनमें तन्मयताके, उल्लासके फूल कदापि नहीं लग सकते। यदि अवलोकनके समय लेखक अपना हृदय दे देगा तभी वह पाठकोंके हृदयपर भी शासन कर सकेगा। लेखक जबतक अपने स्वत्वका त्याग कर सह-अनुभवके बलपर दूसरोंके साथ तद्रूप नहीं हो पाता तबतक उसके अवलोकनमें दिव्यत्वका दर्शन होना असम्भव है।

संक्षेपमें, प्रकट मनकी सहायतासे अनुभूतियोंके कोषको समृद्ध करना हो तो अवलोकन और सह-अनुभवका महत्त्व जानकर लेखकको कठोर परिश्रम करना चाहिए। साधारण लेखककी रचनाओंका ठेला चाहे जितने मधुर विषयोंसे क्यों न चले, पाठकको हिचकोले खाने ही पड़ते हैं; और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषयका आकलन भी वह ठीकसे नहीं कर पाता। इसके विपरीत चतुर लेखक अपना रथ चाहे जैसे ऊबड़-खाबड़ रास्तेसे ले जाये, पाठकको फिर भी अपने पठनकी यात्रामें विश्राम और सुख-शान्ति अवश्य प्राप्त होती है। और उन विषयोंसे सम्बद्ध समस्त बातोंका उसे अविलम्ब ही ज्ञान हो जाता है। यही नहीं, बल्कि स्पष्ट रूपसे वह अनुभव करता है कि समूचा विषय-क्षेत्र अत्यन्त रम्य है। इसका कारण यही है कि प्रवीण लेखककी कल्पना सारथ्य कलामें अत्यन्त निपुण होती है – और साथ ही वह अवलोकन और सह-अनुभव नामक जिन दो अश्वोंकी बाग अपने हाथमें थामे होती है वे अश्व भी इस कार्यमें अभ्यस्त और निपुण होते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कहानी-लेखन
मन्त्र और तन्त्र

१ : कहानीकी शिल्प-विधि

मानवकी एक-एक स्वाभाविक प्रेरणाके द्वारा एक-एक कलाका निर्माण होता है। हर्ष, दुःख तथा विस्मय होनेपर अथवा भयसे आक्रान्त होनेपर उस भावनाके अनुरूप मुद्रा और हाव-भावकी अभिव्यंजना करनेकी सहज प्रवृत्ति मानवमें विद्यमान है। इसी सहज प्रवृत्तिमें नाट्य तथा नृत्यकला-के बीज निहित हैं। जिस प्रकार गीत गानेकी इच्छा मनुष्यमें स्वभावतः पायी जाती है उसी प्रकार जो भी दिखाई देगा उसे व्यक्त करनेके लिए रेखाएँ खींचनेकी उसमें स्वाभाविक लालसा होती है। इन्हीं दो प्रेरणाओंके द्वारा संगीत तथा चित्रकलाका निर्माण हुआ। जो कुछ देखा, अवलोकन किया, उसका उद्घाटन स्वयंके या अन्य लोगोंके लिए करनेका स्वाभाविक आकर्षण मनुष्यमें होता है। मानव नित्य समाजमें रहना चाहता है। आहार, विहार आदि समस्त व्यवहार किसीके साथ करनेकी मनुष्यमें अभिलाषा होती है। सहभोजन, सह-विहार, सहविचारकी क्षुधा मनुष्यमें निरन्तर पायी जाती है। जिन वस्तुओंका दर्शन या श्रवण किया है, तथा जिन सुख-दुखोंका अनुभव किया है उनका वर्णन किसीको सुनाये बिना मनुष्यको कल नहीं पड़ता। यह वर्णन विभिन्न ढंगोंसे किया जा सकता है। स्वयंका हर्ष दूसरेपर प्रकट करनेके लिए मनुष्य खिलखिलाकर हँस पड़ता है, तालियाँ पीटता है अथवा उछल पड़ता है। अर्थात्, केवल अभिनय या नृत्यके द्वारा अपना हर्ष वह दूसरोंपर प्रकट कर पाता है। अथवा जिस दृश्यके देखनेसे वह उल्लसित हुआ हो, उस दृश्यका चित्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
खींचकर औरोंको वह दिखा सकता है। ऐसा करनेपर भी, अपने उद्देश्यमें स्वयंको असफल देख, शब्दोंकी सहायतासे वह अपने हर्षके कारणोंकी प्रस्तुति कर सकता है।

चित्र, संगीत, मुद्रा, हावविभाव, शब्द आदि स्वयंकी भावनाओं तथा अनुभूतियोंकी अभिव्यक्तिके विभिन्न साधन हैं। इन साधनोंको उपयोगमें लेकर जीवनमें मित्र-बन्धु बनानेकी स्वाभाविक प्रेरणा मनुष्यमें पायी जाती है। इनमें-से एक-एक साधनके द्वारा शनैः-शनैः एक-एक कलाका निर्माण होता है। रेखा तथा रंगोंका प्रयोग करनेकी मनुष्यकी स्वाभाविक प्रवृत्तिमें चित्रकलाका बीज निहित है। नाट्य तथा नृत्यके बीज भी मानवकी ऐसी ही किसी अन्य प्रवृत्तिमें निहित हैं। कहानी-कलाके लिए भी यही नियम प्रयुक्त हो सकता है। कहानी सुनानेकी स्वाभाविक प्रेरणा तो मनुष्यमें होती ही है। इसीके द्वारा कहानीका जन्म होता है तथा इस स्वाभाविक प्रेरणापर भाँति-भाँतिके संस्कार होनेके अनन्तर सुनायी जानेवाली कहानी मनोज्ञ एवं सौन्दर्ययुक्त हो, इस उद्देश्यसे जब कुछ निश्चित तत्त्व बन जाते हैं, तब धीरे-धीरे कहानी सुनानेकी स्वाभाविक प्रेरणाको कलाका रूप प्राप्त हो जाता है।

जिस प्रकार यह सत्य है कि प्रत्येक मनुष्य जन्मतः चित्रकार, गायक, अभिनेता और नर्तक होता है, उसी प्रकार यह भी सत्य है कि चित्र, गायन, नाट्य तथा नृत्यकलामें जिसे निपुणता प्राप्त करनी हो, उसके लिए सुन्दरताके नियमोंका अध्ययन करना परम आवश्यक है। कण्ठ तो प्रत्येक मनुष्यके होता है किन्तु गायनकलामें अध्ययनके बिना प्रवीणता प्राप्त नहीं की जा सकती। टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ खींचनेका ज्ञान यों तो प्रत्येक व्यक्तिको होता है किन्तु बिना अध्ययन किये कोई चित्रकार नहीं बन सकता। कहानी सुनानेकी प्रवृत्ति प्रत्येक व्यक्तिमें होती है किन्तु बिना अध्ययन किये किसीका कहानीकार बनना सम्भव नहीं है। 'कोई भी व्यक्ति कहानी लिख सकता है' और 'बिना अध्ययन किये किसीका कहानीकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनना सम्भव नहीं है — ये दोनों ही बातें अपने-आपमें बिलकुल सही हैं।

आप पूछेंगे कि अध्ययन किस बातका किया जाये? इसके उत्तरमें एक महत्त्वपूर्ण विचार मैं आपके सामने प्रस्तुत करूँगा। किसी बालकके हाथमें काग़ज़ तथा पेन्सिल थमा दीजिए और उसे कुत्ते, बिल्ली, पंछी, गाड़ी या अन्य किसीका चित्र बनानेको कहिए। वह बालक टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ खींचकर, आकृति निकालकर और यदि सुविधा हुई तो चित्रमें रंग भरकर हमें दिखलाते हुए कहेगा, देखिए, यह है कुत्ता, यह है बिल्ली, यह पंछी है, यह गाड़ी है! उस बालकके प्रयासोंकी आप प्रशंसा करेंगे। उसे शाबाशी अवश्य देंगे। पर उसके द्वारा काग़ज़पर रेखाबद्ध की गयी आकृतिको ज्योंकी त्यों सुन्दर चित्रके रूपमें कदापि स्वीकार न करेंगे! इसका कारण क्या हो सकता है? अर्थात् यही कि जो भी वस्तु सामने दिखाई दे, उसका चित्र निकालनेकी प्रेरणा उस बालकमें पायी जानेपर भी, वह प्रेरणा अभीतक अपरिपक्व है। रेखा खींचनेकी प्रेरणा जो चित्रकलाका एक साधन है, उस बालकमें भी है पर यह साधन अध्ययन और सौन्दर्यशास्त्रके नानाविध संस्कारोंके द्वारा अबतक परिष्कृत नहीं हो पाया है। वह संस्कार कौन-से हैं और स्वयंकी स्वाभाविक प्रवृत्तिको उन संस्कारोंके द्वारा परिष्कृत कैसे किया जाये — इसका ज्ञान उस बालकको नहीं है।

यह सच है कि अत्यन्त प्रसन्न होनेपर उछल पड़नेकी प्रेरणा मनुष्य-में स्वाभाविक रूपसे पायी जाती है। किन्तु उस टेढ़ी-मेढ़ी उछल-कूदको नृत्यकला नहीं कहा जा सकता। उसमें नृत्यकलाका बीज निहित होने-पर भी उसे नृत्यकला नहीं कहा जा सकता। उसी टेढ़ी-मेढ़ी उछल-कूदको कलात्मक सौन्दर्य प्राप्त होता है सौन्दर्यशास्त्रके अध्ययनके बलपर। एक अन्य उदाहरण लीजिए। भोजन बनानेको पाक-विज्ञान नहीं कहा जा सकता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रुचि, स्वाद आदिकी दृष्टिसे बनाये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
गये पदार्थोंको सुन्दर रूप देनेकी कलाका निर्माण वास्तवमें साधारण मानवीय प्रवृत्तिके द्वारा होता है। फिर भी उस मूल प्रवृत्तिको पाक-विज्ञान नहीं कहा जा सकता। उस प्रवृत्तिपर विभिन्न संस्कारोंके बाद जब वह परिपक्व हो जाती है, तभी उसे कलाका रूप प्राप्त हो जाता है।

अतः यह कहना उचित होगा कि मनुष्यमें पायी जानेवाली कोई स्वाभाविक प्रेरणा जब सुन्दरताके नियमोंके अनुसार कार्य करनेमें जुट जाती है तभी कलाका निर्माण होता है। शीत आदिसे रक्षा करनेके लिए घर-धर्मशाले बनानेकी प्रवृत्ति मनुष्यमें स्वाभाविक ही होती है। परन्तु वन्य जातियोंके द्वारा निर्मित कुटियोंको हम सुन्दर भवन तो नहीं कह सकते। किस भवनको सुन्दर कहें इसकी जानकारी भिन्न-भिन्न प्रयोगों और अनुभवोंके बाद मनुष्य धीरे-धीरे कर लेता है। वास्तु-विज्ञानके नियम बन जाते हैं। और बादमें जो व्यक्ति इन नियमोंका अध्ययन करता है, उसे सुन्दर भवन निर्माण-कलाका ज्ञान होता है।

मनुष्य स्वभावसे ही गा सकता है, किन्तु कण्ठसे प्रस्फुटित होनेवाली किस ध्वनिमें रंजकता आ सकती है, किस स्वरका किस स्वरके साथ वाद-संवाद है, कौन-से स्वर-समुदाय कर्ण-प्रिय हो सकते हैं, कौन-से स्वर-समुदाय-द्वारा अन्यथा प्रभाव पड़ता है – आदिके नियम अनुभूति एवं प्रयोगके द्वारा ही निर्धारित किये जाते हैं। इन्हें स्वीकार कर लेनेके बाद ही गायन-कलाका रूप निर्धारित होता है और उन नियमोंके अनुसार मनुष्य जब अपने कण्ठका प्रयोग करता है तभी संगीत-कला प्रकट होती है। हीरोंकी खानमें पाये जानेवाले प्रत्येक प्रस्तरखण्डमें हीरा प्रमाणित होनेकी सम्भावना होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं। फिर भी, जिस रूपमें वह खानसे बाहर निकाला गया है उसी रूपमें जौहरियोंकी दूकानोंमें रखकर मूल्यवान् हीरेके रूपमें उसे नहीं बेचा जा सकता। इसी प्रकार मनुष्यमें पायी जानेवाली स्वाभाविक प्रेरणाके द्वारा जिस रचनाका निर्माण होता है, वह वस्तुतः सुन्दर नहीं होती। उसे सुन्दर रूप देना पड़ता है। हमने जो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ देखा, सुना, अथवा अनुभव किया, उसका वर्णन अन्य लोगोंको सुनाने-की लालसा बालकसे लेकर वृद्ध तक हर किसीमें पायी जाती है। परन्तु उन वर्णनोंको सुन्दर कहानी नहीं कहा जा सकता। यह सच है कि उनके द्वारा सुन्दर कहानियाँ रची जा सकती हैं किन्तु ये किस प्रकार रची जानी चाहिए, इसके सम्बन्धमें अनुभवके द्वारा कुछ नियम निर्धारित किये गये हैं। कहानी कलामें निपुणता प्राप्त करनी हो तो इन नियमोंका अध्ययन करना परमावश्यक है।

ये नियम किसीके द्वारा कृत्रिम रूप या बलके प्रयोगसे निर्धारित नहीं किये जाते। अनायास ही मूल प्रेरणासे इनका निर्माण हो जाता है। कहानी सुनानेकी मनुष्यकी स्वाभाविक लालसाका ही फल है कि मनोरंजन, शिक्षा, उपदेश, प्रचार आदि लक्ष्योंमें आगे चलकर सफलता प्राप्त हो पाती हो। किन्तु उस इच्छाका सर्वप्रथम और निर्विवाद लक्ष्य यही होना चाहिए कि जो कहानी सुनायी जा रही है, उसे श्रोता विमुग्ध होकर सुने। सुननेवालेका मन वह मोह सके। और यह बात तो ललित साहित्यकी लगभग सभी विधाओंके लिए कही जा सकती है। दर्शक देख सके इसलिए नाटक लिखा जाता है, पाठक पढ़ सके इसलिए उपन्यास लिखा जाता है, और श्रोतागण विमुग्ध होकर सुन सकें इसलिए कहानी सुनायी जाती है। नाटक, उपन्यास और कहानीके द्वारा प्रचार, शिक्षा, जागरण आदि उद्देश्योंकी पूर्ति हो पाती है अथवा नहीं, अथवा इन उद्देश्योंकी पूर्ति होना आवश्यक है या नहीं आदि प्रश्नोंपर हमें यहाँ विचार नहीं करना है। जिस प्रकार दर्शनीयता नाटकका प्रधान गुण तथा पठनीयता उपन्यासकी प्रधान कसौटी है, उसी प्रकार श्रवणीयता कहानीका प्राणदायक तत्त्व है। कहानी सुनानेवाला व्यक्ति जब कोई कहानी सुनाता है तब वह यह चाहता है कि सुननेवाले उसे उत्सुकता एवं चावके साथ सुनें। कहें तो आकर्षकता एवं रंजकता ललित साहित्यकी आत्मा है। कहानी सुनानेवाले-का सर्वप्रथम उद्देश्य यही होता है कि जिन्हें कहानी सुनायी जा रही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
है वे मुग्ध होकर उसे सुनें। अतः अपनी कहानीमें रंजकता और आकर्षकता अधिकसे अधिक मात्रामें किस तरह आये इसके लिए वह नित्य नये प्रयोग करनेमें व्यस्त रहता है। आगे चलकर इन्हीं प्रयोगोंकी सहायतासे कहानीके निश्चित तत्त्वोंका निर्माण शनैः शनैः होने लगता है।

कहानीका विषय कौन-सा हो सकता है, उसका प्रारम्भ कैसे किया जाये, उसकी समाप्ति कैसे की जा सकती है, कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन आदि कैसे प्रभावशाली बनें आदिके सम्बन्धमें नियम शनैः शनैः प्रकट होते तथा स्वीकृत किये जाते हैं। इसका कारण यह है कि कहानी सुनानेवालेको निरन्तर यही चिन्ता लगी रहती है कि उसकी कहानी, आरम्भसे लेकर अन्त तक सुननेवालोंका ध्यान किस तरह आकृष्ट कर सकेगी? वह रोचक कैसे होगी! प्रभावी कैसे होगी? कहानी सुनानेकी प्रेरणा तो प्रत्येक व्यक्तिमें स्वाभाविक ही होती है, किन्तु आरम्भमें यह प्रेरणा चक्षुविहीन होती है। कोई व्यक्ति जैसे-जैसे कहानी सुनाता है वैसे-वैसे श्रोताओंपर होनेवाले उसके प्रभावोंकी ओर वह ध्यान देने लगता है। कहानी सुनते हुए किस स्थलपर सुननेवालोंकी तबीयत ऊब उठती है, किस स्थलको वे एकाग्रतासे सुनते हैं, और किस स्थलपर वे अधीर हो उठते हैं, आदिकी ओर जब कथाकार ध्यान देता है तब धीरे-धीरे उसे बोध होता है कि उसे कहानी किस ढंगसे सुनानी होगी। उसी बातको हम इस तरह भी कहेंगे कि आकर्षकता चरम सीमाको पहुँचे इसलिए कहानी किस ढंगसे सुनायी जाये, इस समस्याको वह सुगमतासे सुलझा पाता है। और तभी कहानीके नियम और उसके तत्त्वोंका निर्माण होने लगता है। कहानी सुनानेवाला ही भाँति-भाँतिके प्रयोगों-द्वारा इस कलाके तत्त्व निर्धारित करता है। और शनैः-शनैः कहानी सुनानेकी प्राकृतिक चक्षुविहीन प्रवृत्तिको दिव्य चक्षुओंकी प्राप्ति होती है। उसमें रसिकता तथा चतुरता आती है।

कहानीमें रंजकताका निर्माण किन तत्त्वोंसे किया जाये, उनकी खोज

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
भाँति-भाँतिकी कहानियाँ [illegible] ही सकते हैं । कहानी-कलाके तत्त्व न तो किसी अनभिज्ञ व्यक्ति-द्वारा निर्मित वह रुकावटें हैं, जो कहानी सुनानेकी प्रधान मानवीय प्रेरणाके स्रोतको अवरुद्ध कर डाले, अथवा न ही वे कोई कृत्रिम बन्धन हैं जो उस प्रेरणाका गला घोंट दें । वास्तवमें उन अनेक सहायक उपकरणोंको ही कहानीके तत्त्व मानना उचित होगा जो कहानीकी नींवमें स्थित स्वाभाविक प्रेरणाको अधिक कार्यशील बनानेके लिए प्रयुक्त किये गये हों । ये तत्त्व कहानी सुनानेवाले स्वयं ही निर्धारित करते हैं, क्योंकि इनकी उपयोगिताके विषयमें उन्हें विश्वास हो जाता है । और इस प्रकार इन तत्त्वोंको स्थायी रूप प्राप्त हो जाता है ।

कहानी सुनाते हुए ही सुनानेवालेको कहानीके तत्त्वोंका ज्ञान हो जाता है, इसके समर्थनमें यहाँपर एक उदाहरण प्रस्तुत करना अनुचित न होगा । मान लीजिए कि दस-बारह वर्षका एक बालक अपनी ही आयुके दस-बारह साथियोंके साथ, पेड़से आम चुराकर खानेकी इच्छासे किसी अमराईमें गया । उसके साथियोंने चुपकेसे अमराईमें प्रवेश कर कुछ आम तोड़कर खाये । तभी अमराईका रखवाला हाथमें एक बड़ा-सा डण्डा लिये – 'कौन आम तोड़ रहा है बे ?' – कहकर, चीखता हुआ वहाँपर आ धमका । उसे देखकर उस लड़के और उसके मित्रोंकी बड़ी ही दयनीय दशा हुई । सिरपर पैर रखकर वे वहाँसे भाग निकले । किन्तु उनमें-से तीन-चारको रखवालेने पकड़ ही लिया । तब किसीको तमाचा, झापड़ खाना पड़ा तो किसीको घूंसा । किसीकी टोपी रखवालेने छीन ली, किसीके जूते वहीं छूट गये, खो गये, और अन्तमें सब लड़के घर लौट आये !

यह भी मान लीजिए कि रातको भोजनके बाद नानीकी गोदमें घुसकर उस लड़केने वह कहानी सुनानी चाही तो वह अपनी कहानीका प्रारम्भ कैसे करेगा ? सम्भवतः वह कहेगा – 'नानी माँ, आज हम राय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
साहबके बगीचेमें गये थे पेड़से आम गिराकर खानेके लिए। सब मिलकर हम लोग सात-आठ लड़के थे। मैं, हमारे पड़ोसमें रहनेवाला कल्लू, पटवारीका टल्लू, शर्माजीका किसनू, वर्माजीका रामलोचन…' सम्भवतः ऐसे ही किसी ढंगसे आरम्भ कर अपने साहसकी कथा वह अपनी नानीको सुनायेगा।

किन्तु यह कहानी किसीको केवल एक बार ही सुनानेसे उस लड़केको सन्तोष न होगा। अनेक श्रोताओंको अनेक बार यह कहानी वह सुनायेगा और इस प्रकारसे सुनाते हुए किसी दिन अपनी कहानीका आरम्भ वह कुछ अलग ढंगसे करेगा—

'उस दिन सायंकाल बड़ा मज़ा आया। आज यह कहानी सुनाते हुए मैं कह रहा हूँ कि बड़ा मज़ा आया, पर वास्तवमें उस दिन मज़ा नहीं आया था। घबराहटके मारे हम सबका इतना बुरा हाल था कि हमने सोचा, आज हमारे प्राण नहीं बचेंगे। और उस दिन मैंने क़सम खा ली कि अब जीवनमें फिर कभी चुराकर आम खाने न जाऊँगा….।'

इस तरह किसी नये ही ढंगसे अपनी कहानी सुनानेके बाद उसे ज्ञात होगा कि कहानीका यह नया आरम्भ सुननेवालेका ध्यान सहसा आकर्षित कर सकता है। इस ढंगसे आरम्भ करनेसे सुननेवालेका कुतूहल सहसा जाग जाता है। कहानी अधिक प्रभावोत्पादक प्रमाणित होती है।

कहनेका तात्पर्य यही कि सुननेवाला कहानी ध्यानसे सुने, यह उद्देश्य अच्छी तरह साध्य हो जाता है। कहानीकी शिल्प-विधिके एक महत्त्वपूर्ण अंगका ज्ञान उस लड़केको हो चुका है। यह ज्ञान उसे किसीने सिखाया नहीं। इसकी खोज स्वयं उसीने की है। कहानीका आरम्भ इस ढंगसे किया जाना चाहिए कि जिससे सुननेवालेका कुतूहल सहसा जाग उठे, इस महत्त्वपूर्ण तत्त्वसे वह परिचित हो चुका है। और उसे इस तत्त्वकी परिचिति निरन्तर कहानी सुनाते रहनेके कारण हुई।

कहानी-लेखनके जितने भी तत्त्व हैं उन सबके लिए यही नियम प्रयुक्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो सकता है । कहानियाँ लिखते हुए लिखनेवालोंने ही इन तत्त्वोंका आविष्कार किया है । भाषाका व्याकरण भाषा बोलते तथा लिखते हुए बन जाता है । वही नियम इस तत्त्वके सम्बन्धमें प्रयुक्त किया जा सकता है । यह बात नहीं कि भाषाका व्याकरण पहले निर्धारित किया गया, और बाद इसके लोग भाषाका व्यवहार करने लगे । बल्कि जिस प्रकार लोग पहले भाषा बोलने, लिखने लगे और बादमें व्याकरणके नियम निर्धारित होते गये, उसी प्रकार, कहानी लेखक पहले कहानियाँ लिखते गये; और किन उपायोंसे कहानीको अधिक आकर्षक एवं प्रभावी बनाया जा सकता है, इसका ज्ञान कहानी लिखते समय ही उन्हें हो गया । यह बात नहीं कि कहानीका रचना-विधान किसीने पहले निश्चित किया और बादमें उच्च कोटिकी कहानियाँ उसके अनुसार लिखी जाने लगीं; बल्कि सच्चाई यह है कि कहानीको आकर्षक बनानेके लिए साहित्यकारोंने भाँति-भाँतिके प्रयोग किये, कहानीकी आकर्षकता किन तत्त्वोंपर निर्भर है इसका उन्हें ज्ञान होने लगा । जो कहानी आरम्भसे लेकर अन्त तक सुननेवालोंका ध्यान आकृष्ट कर सकती है, उसके भेद-विभेद निर्धारित किये गये और उन्हें ही कहानीके तत्त्वोंके रूपमें स्वीकृत कर लिया गया । कहानीके तत्त्वोंका निर्माण कृत्रिमताके द्वारा नहीं हुआ । कहानी लिखनेके प्रयासोंके द्वारा ही धीरे-धीरे उसका रूप विकसित हो पाया है । कहानी सुनानेवाला चाहता है कि श्रोताओंको कहानी सुननेमें आनन्द आये, उनका ध्यान कहानीकी ओर बराबर लगा रहे, और कहानी समाप्त होनेपर उनकी मुखमुद्रा विस्मय, उल्लास एवं कृतज्ञतासे खिल उठे । इस इच्छाके विकासको ही कहानी-कलाके तत्त्व मानना अनुचित न होगा ।

लड़केकी कहानीका उदाहरण दोबारा लीजिए । अपनी कहानीका आरम्भ वह कैसे करे, इसका ज्ञान जिस प्रकार बार-बार कहानी सुनाते हुए उसे किसी समय हो जायेगा, उसी प्रकार अन्य युक्तियोंका ज्ञान भी धीरे-धीरे उसे हो जायेगा । उदाहरणके लिए उसे एक दिन इस बातका ज्ञान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हो जायेगा कि राय साहबके बगीचेका जो रखवाला उसे तथा उसके साथियोंको पीटनेके लिए अचानक डण्डा लिये दौड़ पड़ा, उसका तनिक विस्तारपूर्वक वर्णन करनेपर उसकी कहानी अधिक रोचक हो सकती है। धीरे-धीरे वह रखवाला ही उसकी कहानीका प्रधान चरित्र बन जायेगा। यही नहीं, बल्कि रखवालेका चित्र कहानी सुननेवालोंकी आँखोंके सामने आकर्षक ढंगसे प्रस्तुत करनेका प्रयत्न जैसे-जैसे वह अधिक करेगा, वैसे-वैसे वह यथार्थके साथ कल्पनाके प्रयोगमें भी सफल होता जायेगा। श्रोताओंको कहानी किस प्रकार अधिक प्रभावित कर सकती है, उन तत्त्वोंसे वह परिचित हो जायेगा। अर्थात् कहानीका आरम्भ किस प्रकार किया जाये, उसमें किसी एक पात्रको महत्त्वपूर्ण स्थान कैसे प्रदान किया जाये, उसका चरित्र किस प्रकार चित्रित किया जाये, सत्यके साथ कल्पित-का भी वर्णन किस ढंगसे किया जाये आदि, कहानीकी शिल्प-विधिके विभेदोंका उसे अनायास ही ज्ञान हो जायेगा। और तब अपने जीवनकी किसी घटनाका वर्णन किसीको सुनानेका अवसर प्राप्त होनेपर, इसी कौशलका वह प्रयोग करेगा। उसकी कहानियोंमें रोचकता आ जायेगी। कुशल कहानी सुनानेवालेके रूपमें वह सब ओर पहचाना जायेगा।

कहानी सुनानेवाला हर व्यक्ति यही चाहता है कि सुननेवाला उसकी कहानी सावधानीसे सुने। इसीलिए मनुष्य अपनी कहानी अधिकसे अधिक रोचक बनानेमें निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। इन प्रयासोंके द्वारा ही कहानीके रचना-विधानका निर्माण होता है। कहानीके रचना-विधानके सम्बन्धमें हम कह सकते हैं कि हमारी कहानीमें अधिकसे अधिक रोचकता किस प्रकार आ सकती है इसपर निरन्तर सोचते रहनेसे इसका ज्ञान अनायास ही हमें हो जाता है।

वास्तवमें यह बात ठीक है। किन्तु व्यावहारिक दृष्टिसे इसे उचित नहीं माना जा सकता। क्योंकि ज्ञान-सम्पादनका कार्य यदि प्रत्येक व्यक्ति-पर सौंप दिया जाये तो ऐसा करनेमें उस व्यक्तिके समय तथा श्रमका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
क्या व्यर्थ ही व्यय न होगा ? गिरगाँवके चौराहेसे लेकर धोबी तालावका चौराहा किस दिशाकी ओर, कितनी दूर है, इसकी खोज यदि प्रत्येक व्यक्ति करना चाहे तो ऐसा करना असम्भव नहीं है। परन्तु इसमें उस व्यक्तिका समय क्या व्यर्थ ही नष्ट न होगा ? किस नदीका उद्गम किस स्थानपर है और अन्तमें वह कौन-से सागरसे जा मिलती है – इसकी खोज प्रत्येक व्यक्ति यात्राके द्वारा कर सकता है। किन्तु यदि इस प्रकार अपना-अपना ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति स्वयं प्राप्त करनेका प्रयास करे तो उन व्यक्तियोंकी स्थिति बड़ी दारुण हो जायेगी। यह उचित नहीं है, अतः प्रत्येक पीढ़ी अपने ज्ञानका उत्तराधिकार अगली पीढ़ीको सौंप देती है। इसी ज्ञानके सहारे अगली पीढ़ी अपने कार्यमें जुट जाती है जिससे मानवके परिश्रम एवं समयकी बचत होती है।

यही नियम कहानी लिखनेके सम्बन्धमें प्रयुक्त किया जा सकता है। 'कहानी लिखते हुए ही लेखकोंको इस कलाके विभेदोंका ज्ञान हो चुका' तथा उदीयमान कहानीकारके लिए भी, कहानी लिखते हुए इस कलाके विभिन्न तत्त्वोंकी खोज करना सम्भव है' ये दोनों कथन सत्य हैं। किन्तु यदि हम कहें कि प्रत्येक कहानीकारको चाहिए कि कहानीके रचना-विधानकी खोज स्वयं करे, तो ऐसा करनेमें उस व्यक्तिका बहुत समय नष्ट हो जायेगा। ऐसा होना उचित नहीं है। आज तक सैकड़ों वर्षोंसे विभिन्न भाषाओंके सफल साहित्यकारोंने एकसे बढ़कर एक उच्च कोटिकी कहानियाँ लिखी हैं। अधिकतर उनकी सुन्दर कहानियोंके द्वारा ही कहानीके रचना-विधानका निर्माण हो पाया है। यह कहनेकी अपेक्षा कि इस रचना-विधानका निर्माण प्रत्येक लेखकको स्वयं ही आरम्भ-से करना चाहिए, बने-बनाये विधानसे उन्हें परिचित करा देना क्या अधिक लाभदायी न होगा ? प्रत्येक उदीयमान लेखकसे यह कहनेकी अपेक्षा कि कहानी कलाके तत्त्वोंकी खोज तुम्हें स्वयं करनी चाहिए उससे यह कहना क्या अधिक उचित न होगा कि 'यह है कहानीका निश्चित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रचना-विधान ! इसका तुम्हें निरन्तर अध्ययन करना होगा ! क्योंकि लिखनेके लिए अध्ययनकी परम आवश्यकता होती है।'....इस विषयमें उदीयमान लेखकोंको विशेष रूपसे सतर्क रहना चाहिए। सम्भवतः उनकी यह धारणा हो चुकी है कि इस क्षेत्रमें प्रवेश पाकर कोई भी व्यक्ति यहाँ अपना स्वामित्व स्थापित कर सकता है। आज हिन्दीमें कई श्रेष्ठ मासिक तथा साप्ताहिक पत्रिकाएँ निकलती हैं। उनमें प्रतिवर्ष हज़ारसे अधिक कहानियाँ प्रकाशित होती हैं। किन्तु उनमें उच्च कोटिकी और मौलिक कहानियाँ बहुत ही कम होती हैं। मासिक एवं साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओंमें प्रकाशनके लिए स्वीकृत की जानेवाली कहानियोंके साथ ही यदि सम्पादकोंकी ओरसे 'सधन्यवाद अस्वीकृत'की जानेवाली कहानियोंका हिसाब लगाया जाये तो दिखाई देगा कि प्रतिवर्ष हिन्दीमें लिखी जानेवाली कहानियोंकी संख्या बहुत विशाल है। परन्तु इनमें-से इनी-गिनी ही कहानियोंको उच्चकोटिकी कहा जा सकता है। अन्य हज़ारों कहानियाँ वास्तवमें अस्वीकृत करने या जैसे-तैसे पत्रिकाके रिक्त स्थानको पूर्ति करनेकी योग्यताकी होती हैं।

इसका कारण एक ही है। कहानियाँ लिखनेवाले सैकड़ों नहीं, हज़ारों हैं। किन्तु कहानीकी शिल्प-विधिका अध्ययन करनेवाले लेखक बहुत कम हैं। उदीयमान लेखक इस बातका तीव्रतासे अनुभव नहीं करते कि कहानी लिखनेके लिए विशाल अध्ययनकी आवश्यकता होती है। कहानी लिखनेके पूर्व अमुक बातोंके सम्बन्धमें अमुक परिमाणमें अध्ययन होना आवश्यक है — इसके सम्बन्धमें कोई प्रतिबन्ध नहीं है। लगभग सभी व्यवसाय ऐसे हैं जिनमें प्रवेश करनेसे पूर्व उचित प्रमाण-पत्र भेजने या अन्य प्रकारकी योग्यता प्रमाणित करनेके लिए किसी परीक्षामें उत्तीर्ण होना आवश्यक होता है। पर लेखनके क्षेत्रमें मुक्त-व्यापार है। कोई भी लेखक अपना माल सम्पादकके पास भेज सकता है। सिफ़ारिश तथा अन्य विभिन्न कारणोंसे कहानी छप जानेपर लेखक मान बैठता है कि वह सफल कहानी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार बन गया है, तथा सम्पादककी ओरसे कहानी लौटायी जानेपर इसे स्वीकार करनेकी अपेक्षा कि उसकी कहानी श्रेष्ठ नहीं है, उसमें कुछ त्रुटियाँ हैं, उस विषयमें उसके लिए अधिक अध्ययनकी आवश्यकता है — वह सम्पादकका ही दोष देखने लगता है। वह कह देता है कि बिना सिफ़ारिशके कहानियाँ छप नहीं सकतीं, और कहानियाँ लिखनेका अपना क्रम वह धड़ल्लेसे जारी रखता है। आजकल यह एक प्रथा-सी हो गयी है।

कहानियाँ लिखनेके लिए उसकी शिल्पविधिका अध्ययन करना नितान्त आवश्यक है, इस बातको अधिकतर लेखक स्वीकार नहीं करते। जो स्वीकार करते हैं उन्हें उचित पथप्रदर्शन उपलब्ध नहीं है। मासिक पत्रिकाओं एवं समाचारपत्रोंने कहानियोंकी वृद्धिमें सहायता अवश्य प्रदान की है किन्तु इस विषयमें लेखकोंका मार्गदर्शन करनेकी चेष्टा उन्होंने नहीं की है। सम्भव है इस कार्यके लिए उनके पास समय नहीं हो। यह भी हो सकता है कि उनकी यह धारणा हो कि यह उत्तरदायित्व उनका नहीं है, अथवा स्पष्ट शब्दोंमें यह भी कहा जा सकता है कि उनमें उतनी क्षमता नहीं है। किन्तु जिस प्रकार यह सत्य है कि लेखक कहानीके रचना-विधानका सुचारु रूपसे अध्ययन नहीं करना चाहते, उसी प्रकार यह भी सत्य है कि अध्ययन करना चाहनेवाले लेखकका व्यवस्थित पथ-प्रदर्शन करने योग्य सामग्री हिन्दीमें बहुत ही कम मात्रामें उपलब्ध है।

इन दोनों त्रुटियोंकी पूर्ति करना आवश्यक है। कहानीके रचना-विधानके अध्ययनकी अनिवार्यता नवोदित लेखकोंके मनपर अंकित करना ज़रूरी है। जो लोग इसका अध्ययन करना चाहें उनके लिए उचित सामग्री जुटायी जानी चाहिए।

यहाँ कहानीकी शिल्प-विधिका विवेचन करनेकी एक नवीन विशेष पद्धतिको मैं स्वीकार करने जा रहा हूँ। मेरे मतसे कहानियाँ लिखते हुए ही कहानीकारों-द्वारा कहानी-कलाके विभिन्न तत्त्व निर्धारित किये गये। कहानी लिखनेके प्रधान उद्देश्यके द्वारा ही इन तत्त्वोंकी अभिव्यंजना हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अतः इसीके अनुसार कहानी-लेखनके निश्चित तत्त्वोंको स्पष्ट रूपसे विशद करनेकी एक विशेष पद्धति मेरी दृष्टिमें इस प्रकार है :

किसी शास्त्र या कलाकी विवेचना दो प्रणालियों-द्वारा की जा सकती है। पहली तो यह कि आरम्भमें उसके साधारण तत्त्व स्पष्ट किये जायें। बादमें उनमें-से एक-एक तत्त्वोंका विवेचन किया जाये, और उसके समर्थनमें कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जायें। इसीको अँगरेज़ीमें 'डिडेक्टिव मेथड' कहते हैं। इसके विपरीत दूसरी प्रणाली यह है कि आरम्भमें उदाहरण प्रस्तुत किये जायें तथा उनके द्वारा कौन-से साधारण तत्त्व किस प्रकार सम्पन्न होते हैं, यह बतलाया जाये। इस प्रणालीको अँगरेज़ीमें 'इण्डेक्टिव मेथड' कहते हैं। इन दोनोंमें-से मैं दूसरी प्रणालीको स्वीकार करना चाहता हूँ। कहानी-कलाके सभी प्रधान तत्त्व मैं सामने प्रस्तुत करूँगा।

इसमें सन्देह नहीं कि कहानी-कलापर लिखी गयी पुस्तकोंमें निरूपणका आरम्भ कहानीकी परिभाषासे किया जाना चाहिए। साहित्यकी किसी विधा-से किसीको परिचित कराते समय उसके रूपका निश्चित ज्ञान करानेके लिए उसकी स्पष्ट परिभाषा देना परमापेक्षित है। किन्तु कहानीके विषयमें हमें यह कहना पड़ता है कि कहानीकी निश्चित परिभाषा देना अत्यन्त कठिन कार्य है। अतः सम्भवतः इसे ही कहानीकी सर्वश्रेष्ठ परिभाषा कहना उचित होगा। कहानीकी उत्पत्ति पश्चिमीय भाषाओंमें कब हुई ? उसका विकास फ़्रान्स, रूस, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि देशोंमें किस प्रकार हुआ, हिन्दी कहानीका जन्म कब हुआ – आदि प्रश्नोंकी ऐतिहासिक चर्चा विस्तारपूर्वक मैं आपके सामने प्रस्तुत नहीं करना चाहता क्योंकि अभीष्ट कहानीके इतिहासपर नहीं, कहानीके रचना-विधानपर लिखना है। इस दृष्टिसे कहानीके इतिहासके दो मुख्य पहलू हैं। पहला यह कि कहानी लिखनेका प्रयास अनगिनत लेखकोंके द्वारा कितने ही वर्षोंसे किये जानेके कारण साहित्यकी इस विधाको अब इतना अपूर्व वैचित्र्य प्राप्त हुआ है कि उसे देखकर साधारण पाठक पल-भरके लिए सकपका जाता है। दूसरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
यह कि इस असीम वैचित्र्यमें भी कहानीके प्रधान तत्वमें कोई परिवर्तन नहीं हो पाया है। विभिन्न विषयोंपर कहानियाँ लिखी गयी हैं। कहानियाँ लिखनेकी विभिन्न नवीन शैलियोंका लेखकोंने प्रचलन किया है। समयके अनुसार कहानीका आकार, उसका स्वरूप, उसकी गठन, उसके अलंकार आदिके सम्बन्धमें सफल लेखकों-द्वारा कई प्रयोग किये गये तथा अपने लेखनकी सामर्थ्यसे प्रतिभाशाली लेखकोंने अपने-अपने पाठकोंकी अभिरुचि-में आमूल परिवर्तन कर दिया है। उन्नीसवीं सदीके आरम्भमें साहित्य-सृजन करनेवाले सर वॉल्टर स्काट यदि आज विलयम सारोयानकी कोई कहानी पढ़ें, तो अवश्य ही विस्मित होकर कहेंगे, जिसका न तो आरम्भ है न ही अन्त ऐसे लेखनको क्या आप कहानी कहना चाहते हैं? यह तो सरासर अन्याय है। इसके विपरीत, वॉल्टर स्काटकी 'द टू डॉवर्स', वॉशिंग्टन आयर्विंगकी 'रिप वॉन विंकल', बालज़ककी 'ला ग्रान्द्रे ब्रातेचे' तथा पोपकी 'दी गोल्ड बग'-जैसी अपने-अपने ज़मानेमें काफ़ी चर्चित कहानियोंको वर्तमान अमेरिकी पत्रिकाओंका पाठक उच्च कोटिकी कहानियाँ कदापि न मानेगा। कहानीके स्वरूपमें हुआ परिवर्तन देख उन्नीसवीं सदीके पाश्चात्य लेखक अवश्य विस्मित हो जायेंगे। आधुनिक हिन्दी कहानीकी आयु लगभग पैंसठ सालकी मानी जा सकती है। हिन्दी कहानीका इतिहास कुछ ही वर्षोंका होनेपर भी उसमें शीघ्रतासे पर्याप्त परिवर्तन हो चुके हैं। आजकी किसी मासिक पत्रिकामें प्रकाशित कोई कहानी यदि हिन्दीके प्रारम्भिक कहानीकारों या सम्पादकोंको दिखलायी जाये तो अवश्य ही वे कहेंगे 'हम तो अपनी पत्रिकामें ऐसी रचनाको कदापि स्थान न देते। न तो हम इस प्रकारके साहित्यका सृजन करते थे, न ही हमारे पाठकोंको इस ढंगकी रचना पसन्द आती थी।'

संक्षेपमें, कहानीका स्वरूप अब पहले-जैसा नहीं रहा है। पाश्चात्य-भाषाओंमें उसका इतिहास लगभग तीन शताब्दियोंका है। हिन्दीमें उसका इतिहास बहुत ही कम वर्षोंका है। किन्तु परिवर्तनोंके बारेमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दोनोंके इतिहासोंमें समानता है । अतः मैं आपसे यह कहूँगा कि कहानीकी परिवर्तनशीलताकी ओर आप अवश्य ध्यान दें और उसके इस विशिष्ट गुणकी उपपत्तिकी खोज करें। कहानी साहित्यकी वह विधा है जिसका स्थिर रहना नहीं निरन्तर प्रवाहित रहना स्वाभाविक रूपसे आवश्यक होता है। जिस प्रकार संख्याकी वृद्धिके लिए उसका स्वरूप अनुकूल है उसी प्रकार उसकी परिवर्तनशीलता भी अनिवार्य है। साहित्य-की यह एक ऐसी विधा है जिसमें वृद्धि तथा परिवर्तनकी सहज अनुकूलता है।

हमें यह भी विश्वास नहीं होना चाहिए कि अनेक परिवर्तनोंके बाद भी कहानी कहानी ही रही है। आज तक जितने भी परिवर्तन हुए हैं वे कहानीके स्वरूपमें उसके आकारमें हुए हैं, उसके विषयोंके ढंगमें हुए हैं प्रस्तुतीकरणकी पद्धतिमें हुए हैं, उसके अलंकारोंमें हुए हैं फिर भी उसके प्रधान तत्त्वमें कोई परिवर्तन नहीं हो पाया है। वह अबतक अक्षुण्ण ही है। प्राचीन और वर्तमान कहानियोंका सूक्ष्म अध्ययन करनेपर हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि कहानीका वह गुण अबतक अचल ही रहा है। सभी अवस्थाओंमें इस प्रधान तत्त्वमें कोई परिवर्तन नहीं हो पाया है। यदि आप कहानी-कलाका अध्ययन करना चाहते हैं तो सबसे पहले उसके इस प्रधान तत्त्वसे परिचित होना आपके लिए आवश्यक है।

इस प्रधान तत्त्वसे आपको परिचित करानेके लिए मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहता हूँ। लगभग सौ सालसे यह कहानी एक आदर्श कहानी मानी गयी है। यद्यपि हम इसे सोलहो आने आदर्श कहानी नहीं कह सकते, फिर भी इसका लेखक कहानीके एक प्रधान सम्प्रदायका जनक माना जाता है। उसकी शैलीसे अँगरेज़ी तथा अमेरिकी कहानियाँ प्रभावित हो चुकी हैं। यह कहानी इस लेखककी एक विशेष ख्याति-प्राप्त कहानी है। अन्तरराष्ट्रीय कहानियोंका ऐसा कोई संग्रह आपको दिखाई न देगा जिसमें यह कहानी समाविष्ट न की गयी हो। इस मूल फ्रेंच कहानीका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अँगरेज़ी नाम 'द नेकलेस' है और इसके लेखकका नाम है गाय द मोपाँ सा !

२ : कहानीका शाश्वत तत्त्व

मोपाँसाकी 'कण्ठहार' कहानी संक्षेपमें इस प्रकार है :

विधाताकी भूलके कारण साधारण श्रमिकोंके परिवारमें जन्मनेवाली स्त्रियाँ अकसर सुन्दर होती हैं। उन्हींमें-से वह एक थी। उस-जैसी ग़रीब-की कन्याको उच्च श्रेणीवाले समाजमें सम्मिलित होनेका अवसर कैसे मिल सकता था ? सुन्दर पुरुषोंसे उसका मिलना-जुलना कैसे हो सकता था। स्नेह, सहानुभूति और प्यारकी प्राप्ति उसे कैसे हो सकती थी। उसे सुयोग्य पतिकी प्राप्ति करा देनेके लिए भरसक दहेज देनेकी उसके पितामें सामर्थ्य नहीं थी। उसने भूलकर भी यह न सोचा था कि उसे सुन्दर, धनवान् और विद्वान् पतिकी प्राप्ति हो सकती है। सरकारी शिक्षा विभागके एक साधारण क्लर्कसे ब्याह करनेके लिए वह राज़ी हो गयी और गृहिणीके नाते उसकी गृहस्थी चलाने लगी।

अबतक ग़रीबीमें जीवन व्यतीत करनेके कारण उसकी रुचि साधारण ही थी। फिर भी गृहस्थी चलाते हुए, रह-रहकर उसे लगता कि उसे उसके अनुरूप पतिकी प्राप्ति नहीं हुई। स्त्रियाँ यह क़तई नहीं मानतीं कि उच्च परिवारमें जन्म लेने या सम्पत्तिके बलपर ही उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। उनकी दृढ़ धारणा होती है कि सौन्दर्य ही स्त्रीकी योग्यता निश्चित करनेका एकमात्र साधन होता है। सौन्दर्य जिसे प्राप्त है, वह स्त्री चाहे किसी मज़दूरके झोंपड़ेमें क्यों न पैदा हुई हो, उसकी योग्यता राजपरिवारकी किसी कन्यासे कम न मानी जानी चाहिए !

यह भावना मनमें तीव्रतासे उठनेके कारण कि उसकी सुन्दरता इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तरहकी है कि संसारके समस्त भोग-विलासोंकी प्राप्ति उसे होनी चाहिए, क्लर्क पतिके साथ गृहस्थी चलाते हुए वह निरन्तर ठण्डी आहें भरती रही। किसी झोंपड़ी-जैसा रहनेका स्थान, कमरेकी बेरंग दीवारें, पुरानी कुरसियाँ और खिड़कियोंमें लगे गन्दे परदे आदिकी ओर देखनेपर उसका दिल छटपटाने लगता। सम्भवत: इन बातोंकी ओर और किसी लड़कीका ध्यान भी न जाता। पर उसे इस बातकी लज्जा-सी लगती। उसका दिल तड़प उठता। रहनेका वह छोटा-सा कमरा और घरका काम करने आनेवाली – अधेड़ आयु एवं कठोर मुख-मुद्रावाली नौकरानीको देख वह बहुत दु:खी होती। टूटे सपने उसके दिलको झुलसाने लगते। सुखी गृहस्थीके सुरम्य कल्पना-चित्र उसकी आँखोंके सामने खड़े हो जाते। सुविशाल शान्त प्रासाद, बढ़िया क़ालीन, मुलायम मख़मलके लहरानेवाले परदे, छतमें लगे बिल्लौरी काँचके रोशनदान, बढ़िया पोशाक पहनकर शानसे यहाँ-वहाँ टहलनेवाले ख़िदमतगार, धनवान मित्रोंकी विशाल अट्टालिकाएँ, सुन्दर विख्यात पुरुषोंके अनुनय एवं प्रणयालाप, उनकी शृंगार चेष्टाएँ – विलासी जीवनके विभिन्न कल्पना-चित्रोंके कारण उसके मनमें दिन-रात एक टीस-सी उठती।

प्रत्यक्ष जीवनमें नित्यका सादा भोजन मेज़पर सजाया जानेपर उसका पति उससे कहता, 'भई, ख़ूब! आजकी तरकारी तो बहुत बढ़िया बनी है'....पर पतिकी बातकी ओर जैसे उसका ध्यान ही न रहता। वह किसी निराले ही कल्पना-जगत्के चित्र देखनेमें लीन रहती। स्वादिष्ट मसालेदार खाद्य-सामग्रीसे भरे चाँदीके थाल, नक़्क़ाशीदार काँटे-चम्मच, दोनों ओर बैठे शानदार ख़ूबसूरत युवा पुरुष, हँसी-मज़ाक़से भरी उनकी बातें और उनके द्वारा कानोंमें सुनायी गयी मधुर प्रेम-प्रार्थना! बढ़िया वस्त्र, हीरे मोतियोंके अलंकार शरीरपर धारण करना तो कहीं रहा, उन्हें आँखोंसे देखना तक उसे नसीब नहीं हुआ था। फिर भी इनके अतिरिक्त उसका मन और कहीं आकृष्ट नहीं हो सकता था। वह सोचती कि इस तरहके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
श्रृंगारका उपभोग करनेके लिए ही उसने जन्म पाया है। उसके दिलमें लालसा प्रबल हो उठती कि बढ़िया वस्त्र पहने, भाँति-भाँतिके अलंकारोंसे अपनी देह सजाये, और अपने मादक सौन्दर्यके प्रभावसे पुरुषोंको पागल बनाये। जब वह स्कूलमें पढ़ती थी, उन दिनोंकी उसकी एक सम्पन्न सहेली थी। उससे भेंट करने उसके यहाँ जाना वह अकसर टालती थी; क्योंकि उसके यहाँसे लौट आनेपर उसका मन निराशा और दुःखसे और अधिक भारी हो जाता। तब तकियेमें मुँह छिपाकर वह दिन-रात रोती रहती और कितने ही आँसू बहानेपर उसके हृदयकी निराशा, झल्लाहट, पछतावा और उद्वेग कम न होता।

एक दिन सन्ध्या समय उसका पति अत्यन्त उल्लसित मनसे घर लौटा। जैसे कि कोई बहुत बड़ी सफलता उसे मिली हो, इस ढंगसे एक मोटा-सा लिफ़ाफ़ा उसे दिखाकर उसने कहा, 'पहचानो इसमें क्या है।'

उसने लिफ़ाफ़ा खोला और भीतरसे काग़ज़ निकालकर उसे पढ़ा। वह एक निमन्त्रणपत्र था :

"सोमवार तारीख १८ जनवरीको, सन्ध्या समय, माननीय शिक्षा-मन्त्री और उनकी श्रीमतीजी एक विशाल प्रीति-भोजका आयोजन करना चाहते हैं। यदि मॉंअिस और मादाम लॉ एसेल इस प्रीति-भोजमें उपस्थित रह सकें तो...."

उसके पतिने सोचा था कि खुशीके मारे वह उछल पड़ेगी पर निमन्त्रण पत्र एक ओर फेंककर वह बुदबुदायी, "क्या लाभ है इस निमन्त्रणका ?"

उसके पतिने कहा, "अरे! मैंने तो सोचा था कि तुम्हें बेहद खुशी होगी। तुम कभी बाहर नहीं जा पाती और यह नगरके बहुत बड़े लोगोंका प्रीति-भोज है। कितने परिश्रमसे यह निमन्त्रणपत्र मैं प्राप्त कर सका हूँ। वास्तवमें हम-जैसे क्लर्कोंके भाग्यमें ऐसे निमन्त्रणपत्र कहाँ! शहरके चुने हुए प्रतिष्ठित लोगोंके लिए ही यह समारोह आयोजित किया गया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। वहाँपर नगरके विख्यात और प्रतिष्ठित लोगोंसे तुम्हारी भेंट होगी।''

क्रोधसे उसकी ओर देखते हुए, झल्लाकर उसने पूछा, ''इस समारोह-में मुझे किन कपड़ोंसे भेजना चाहते हो ?''

इस पहलूपर उसके पतिने अबतक सोचा नहीं था। धीरेसे उसने कहा, ''किसी समय नाटक देखने जिन कपड़ोंमें तुम जाती हो, वह तुम्हें कितना शोभा देते हैं।''

पर यह कहते हुए सहसा विस्मित होकर वह रुक गया। क्योंकि उसने देखा तो वह सिसक-सिसककर रो रही थी। उसने पूछा, ''क्या बात है ? तुम इस तरह रो क्यों रही हो ?''

सहसा उसने अपनी आँखें पोंछ डालीं। सिसकियाँ रोक लीं और दृढ़ स्वरमें कहा, ''नहीं तो ! मैं रो कहाँ रही हूँ। पर मेरे पास पहननेके लिए बढ़िया कपड़े नहीं हैं और इस समारोहमें मैं जा न सकूँगी। यह निमन्त्रण तुम अपने किसी मित्रको दे दो। हो सकता है कि उसकी स्त्रीके पास पहननेके लिए बढ़िया कपड़े हों। वे लोग इस समारोहमें सम्मिलित हो सकते हैं !''

उसे बेहद दुःख हुआ।

वह बोला, ''मैथिल्ड, ज़रा यहाँ देखो। बढ़िया नयी पोशाक ख़रीदने-के लिए तुम्हें कितने रुपयोंकी ज़रूरत है ?''

वह पल-भर ख़ामोश रही। मन-ही-मन बढ़िया वस्त्रोंके मूल्य उसने अनुमान लिये; जिसे सुन और घबराकर देनेसे पति इनकार न कर दे, ऐसी कौन-सी रक़म बताना उचित होगा – इसपर ठीकसे सोच लिया और इसके बाद हलकी आवाज़में कहा, ''ठीक-ठीक बताना तो मुश्किल है; पर मेरे ख़यालसे चार सौ फ्रैंक काफ़ी होंगे।''

यह सुनते ही उसका चेहरा कुछ पीला पड़ गया क्योंकि अपने लिए एक बन्दूक़ ख़रीदनेके इरादेसे ठीक इतनी ही रक़म इकट्ठा करनेकी पिछले कई दिनोंसे वह बराबर कोशिश कर रहा था। उसके कुछ दोस्त गरमीकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
छुट्टियाँ शिकार खेलनेमें बिताते। कई दिनोंसे वह चाहता था कि उनके साथ जाकर वह भी शिकारका सुख पाये।

पर उसने उससे कहा, "खैर, कोई बात नहीं। मैं तुम्हें चार सौ फ्रैंक दूँगा! देखो, अपने लिए तुम्हें बिलकुल बढ़िया पोशाक बनवानी होगी। एकदम बढ़िया!"

पार्टीका दिन निकट आने लगा। लेकिन मैथिल्ड दुःखी, उदास, चंचल और चिन्तित दिखाई देने लगी। उसकी नयी पोशाक बन चुकी थी पर वह खुश नहीं थी। उसके पतिने एक बार उससे पूछा, "आजकल तुम इस तरह उदास क्यों दिखाई देती हो?"

वह बोली, "गलेमें पहननेके लिए एक मोती तक मेरे पास नहीं है। नंगे गलेसे यदि मैं पार्टीमें उपस्थित रहूँ, तो क्या आँख उठाकर भी कोई मेरी ओर देखेगा? इससे तो मेरा न जाना ही कहीं अच्छा है।"

वह बोला, "यदि तुम फूलोंसे अपनेको सजाओ तो? खूबसूरत बढ़िया गुलाबके दो-चार फूल...."

पर सिर हिलाकर इनकार करती हुई वह बोली, "छोः! फूल पहनकर मैं कैसे जा सकती हूँ! बड़े-बड़े अमीरोंकी स्त्रियोंमें क्या अपनी दरिद्रताका प्रदर्शन करूँ? इससे बढ़कर लज्जाकी बात और क्या हो सकती है?"

कुछ सोचकर सहसा उसके पतिने कहा, "तुम भी कैसी पगली लड़की हो! तुम्हारी सहेली मादाम फॉरेस्तिए जितने भी आभूषणोंकी ज़रूरत हो, तुम्हें दे सकती हैं। तुम दोनोंमें इतनी गहरी दोस्ती ज़रूर है...."

प्रसन्न होकर वह तालियाँ पीटने लगी और बोली, "हाँ, सच है! जाने अबतक यह तरक़ीब मुझे क्यों न सूझी?"

दूसरे दिन वह मादाम फॉरेस्तिएके यहाँ गयी, और अपनी कठिनाई उसने उसे सुनायी। मादाम फॉरेस्तिएने अपने ड्रेसिंग टेबुलकी दराज़ खोली, उसमें-से अलंकारोंका एक बड़ा-सा सन्दूक़ बाहर निकाला और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
उसे खोलकर मैथिल्डके सामने बढ़ाते हुए वह बोली, "इनमें-से जितने भी अलंकारोंकी तुम्हें ज़रूरत हो, ले लो !"

मोतियोंके कंगन, हार, जड़ाऊ लॉकेट आदि अलंकारोंको सिर्फ़ हाथमें लेकर ही नहीं, बल्कि आईनेके सामने खड़ी हो, मैथिल्डने पहनकर देखा। पर कौन-सा अलंकार ले – इसका वह ठीकसे निश्चय नहीं कर पा रही थी। अपनी उस अमीर सहेलीसे वह बार-बार पूछ रही थी, "क्या और कोई चीज़ नहीं है ?"

तभी काली मखमलके बक्समें रखे सुन्दर रत्नहारकी ओर सहसा दृष्टि जाते ही, वह उसकी ओर ठगी-सी देखती ही रही। उसे उठाते हुए उसके हाथ काँप रहे थे। उसे उसने अपने गलेमें पहन लिया और बादमें जब उसने आईनेमें अपनी सूरत देखी तब तो वह अपने-आपको भी भूल-सी गयी। सहमते स्वरमें अपनी सहेलीसे उसने पूछा,

"क्या यह रत्नहार मुझे एक रोज़के लिए दोगी ? मुझे और किसी चीज़की आवश्यकता नहीं। सिर्फ़ यह रत्नहार मुझे दे दो। बस, एक दिनके लिए····"

उसकी सहेली बोली, "अरे तो ले जाओ न !"

मैथिल्ड ख़ुशीके मारे अपनी सहेलीसे लिपट गयी। उस सुन्दर रत्न-हारको लेकर वह अपने घर लौटी।

पार्टीमें मैथिल्डने सबकी आँखें चौंधियाँ दीं। वहाँपर उपस्थित सभी स्त्रियोंमें उसके लावण्य, उसके मधुर भाषण, उसकी मोहक हरकतों तथा उसकी मुसकराहटकी मधुरताने सबको विमुग्ध कर दिया। सभी पुरुष आँखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखते रहे। वह कौन है इस बारेमें हर व्यक्ति पूछ-ताछ कर रहा था। उससे परिचय पाने, उससे बात-चीत करनेका सौभाग्य प्राप्त हो इसलिए हरेक व्यक्ति उत्सुक था। बड़े-बड़े अफ़सरोंने उसके साथ नृत्य किया। स्वयं माननीय शिक्षा-मन्त्रीजीने उसके बारेमें जानकारी की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नृत्य करते और मदिराकी चुस्कियाँ लेते हुए उसकी ख़ुशीका ठिकाना न था। अपने सौन्दर्यके बलपर सभी मर्दोंको उसने विमोहित कर दिया था और उनकी दृष्टिमें झलक रहे अपने प्रति कुतूहल एवं अभिलाषाके भाव देखकर तो उसे लगा था कि जैसे वह मृदुल मेघ-खण्डोंपर तरंगित हो रही हो। सम्पूर्ण यहाँके उन्मादमें उसे अन्य किसी बातका जैसे खयाल ही न रहा।

प्रातः चार बजे वह घर जानेके लिए निकली। उसका पति आधो-रातसे वहीं एक छोटे-से कमरेमें लेटे-लेटे झपकियाँ ले रहा था। उसके अतिरिक्त और भी तीन-चार पुरुष उस कमरेमें लेटे थे। उनकी स्त्रियाँ नृत्यागारमें आनन्दका उपभोग कर रही थीं।

अपने साथ लाये कपड़े उसके पतिने उसके सामने बढ़ा दिये। नृत्यके लिए पहनी पोशाककी तुलनामें उसके ये साधारण वस्त्र कुछ असंगत दिखाई दे रहे थे। अमीरोंकी स्त्रियाँ घर लौटते हुए मूल्यवान फरकोट पहनेंगी और उसके मामूली वस्त्रोंको देखकर उसका मज़ाक़ उड़ायेंगी, इस आशंकासे बिना उन कपड़ोंको पहने मैथिल्ड तेज़ीसे चल पड़ी। उसके पतिने उससे कहा, कहीं तुम्हें सर्दी न लग जाये' तनिक ठहरो; मैं तुम्हारे लिए गाड़ी ले आऊँ!' पर उसकी बातकी ओर बिना ध्यान दिये ही वह तेज़ीसे सीढ़ियाँ उतरने लगी। जब वे लोग रास्तेपर आ पहुँचे वहाँपर कोई सवारी उन्हें दिखाई न दी। नदीकी दिशासे वे दोनों पैदल ही चल पड़े। सर्दीमें ठिठुरते हुए! अन्तमें जैसे-तैसे, अंजर-पंजर ढीले हो चुकी एक पुरानी-सी गाड़ी किरायेपर उन्हें मिल गयी।

घर लौटनेपर मैथिल्डने सोचा, उसकी विजयके उस क्षणिक खेलकी समाप्ति हो गयी। उसका पति मनमें सोच रहा था, कल सवेरे दस बजे दफ़्तरमें उपस्थित रहना होगा। मैथिल्डने सोचा, जिस सौन्दर्यके बलपर पार्टीमें उसने इतनी महान् विजय प्राप्त की, अपने उस लावण्यको एक बार जी भरकर देख सके। वह शीशेके सामने जाकर खड़ी हो गयी....और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसी क्षण ज़ोरोंसे चीख पड़ी। उसने देखा कि उसके गलेका रत्नहार कहीं खो गया है।

उसका पति कपड़े बदल रहा था। उसने पूछा, "क्या बात है ?"

बड़े दुःखके स्वरमें उसने कहा, "मादाम फॉरेस्तिएसे माँगकर लाया रत्नहार मेरे गलेमें नहीं है। वह ग़ायब हो गया। खो गया।"

विस्मय और घबराहटमें वह बोला, "क्या कहती हो ? वह खो कैसे सकता है ?"

उसके कपड़ोंमें, कोटमें, सब ओर रत्नहारकी उन्होंने खोज की। लेकिन वह नहीं मिला।

उसके पतिने उससे पूछा, "हम लोग जब घर आनेके लिए निकले, क्या उस वक़्त तुम्हारे गलेमें हार था ?"

"था कैसे नहीं ? हॉलमें मैंने उसे टटोलकर देखा था। मुझे अच्छी तरह याद है।"

"पर यदि वह रास्तेमें कहींपर गिरता तो उसकी आवाज़ हमें ज़रूर सुनाई देती।"

"हाँ ! क्या तुमने गाड़ीका नम्बर देखा था ?"

"नहीं ! तुमने ?"

"नहीं !"

दोनोंने आँखें फाड़कर एक-दूसरेकी ओर इस तरह देखा मानो उनकी वाक्शक्ति खो चुकी हो।

अन्तमें दोबारा कपड़े पहनते हुए उसके पतिने कहा, "हम लोग जिस रास्तेसे आये हैं उसपर ज़रा मैं ढूँढ़ आऊँ !"

वह चला गया। बिना कपड़े उतारे ही वह एक कुरसीपर बैठी रही। बिस्तरपर लेटने तककी शक्ति उसमें शेष न थी। सवेरे सात बजे उसका पति घर लौटा। खाली हाथ ही ! इसके बाद वह थानेपर गया। किरायेपर गाड़ियाँ देनेवाली कम्पनियोंमें उसने चक्कर काटे। जहाँ भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कहीं आशाकी क्षीण किरण उसे दिखाई दी, वहाँ जाकर तलाश करनेमें उसने कोई कसर न रखी। खोया हुआ रत्नहार प्राप्त कर देने वालेको इनाम देनेकी घोषणा करनेके लिए समाचारपत्रोंके दफ़्तरोंमें भी वह गया। जब वह रात घर लौटा, तब उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

मैथिल्ड्से उसने कहा, "अपनी सहेलीको एक चिट्ठी लिख दो कि कुन्दा टूट जानेसे वह रत्नहार मरम्मतके लिए भेजा गया है। उसकी खोजके लिए उतना ही अवसर हमें मिल जायेगा!"

उसने पत्र लिखवाया, मैथिल्ड्ने पत्र लिखा।

एक हफ़्तेके बाद उन्हें विश्वास हो गया कि अब उस रत्नहारका फिरसे मिलना असम्भव है। उसका पति इन आठ दिनोंमें वृद्ध दिखाई देने लगा था। उसने कहा, "अब हमें बिलकुल वैसा ही दूसरा रत्नहार खरीदना होगा!"

दूसरे दिन उस रत्नहारका बक्स उन्होंने अपने साथ लिया और जिस जौहरीका नाम उसपर था उसकी दूकानपर वे दोनों गये। दूकानदारने अपनी किताबें निकालकर देखा और कहा, "सम्भवत: यह हार हमारी दूकानसे खरीदा नहीं गया है। हो सकता है कि हमने इसकी मरम्मत की हो!

इसके बाद खोये हुए रत्नहार-जैसा रत्नहार और कहीं मिल सकता है या नहीं, इसे देखनेके लिए जौहरियोंकी तमाम दूकानें उन्होंने छान मारी। पश्चात्ताप और दुःखसे उनके दिल टूट गये थे। अन्तमें खोये हुए रत्नहार-जैसा दिखाई देनेवाला एक हार किसी दूकानमें उन्हें दिखाई दिया। उसका मूल्य चालीस हज़ार फ़्रैंक था। दूकानदारने कहा, "आपके लिए मैं इसे छत्तीस हज़ार फ़्रैंकमें बेच सकता हूँ।"

उन्होंने दूकानदारसे प्रार्थना की कि और तीन दिन यह रत्नहार वह और किसीको न बेचे। दूकानदारने उनकी बात मान ली। साथ-ही-साथ यह निश्चित कर लिया गया कि यदि एक महीनेके भीतर खोये हुए रत्न-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हार मिल जाये तो जौहरी यह रत्नहार उनसे चौंतीस हज़ार .फ्रैंकमें ख़रीद लेगा।

मैथिल्ड्के पतिके पास उसके पितासे प्राप्त जायदादके अठारह हज़ार .फ्रैंक थे। और अठारह हजार .फ्रैंकका किसी तरह प्रबन्ध करना आवश्यक था। किसीसे एक हज़ार, किसीसे पाँच सौ इस तरह उसने कर्ज़ा लिया। प्रॉमिसरी नोट लिख दिये। महाजनसे ऋण लेते हुए उसकी तमाम शर्तें स्वीकार कर लीं।..... उसने अपना शेष जीवन ही मानो रेहन रख दिया था। छत्तीस हज़ार .फ्रैंक लेकर वह जौहरीकी दूकानपर गया और वह रत्नहार उसने ख़रीद लिया। मादाम फॉरेस्तिएके यहाँ जाकर जब मैथिल्ड्ने उसे रत्नहार लौटा दिया, तब उसने कहा, "तुमने बड़ी देरी लगा दी। यदि एकाएक मुझे इसकी ज़रूरत पड़ती तो?" मैथिल्ड्का दिल धड़क रहा था कि कहीं फॉरेस्तिए उस बक्सको खोलकर देख न ले। कहीं यह रत्नहार अपना नहीं है इसे वह जान न जाये! कहीं वह उसपर ग़बनका इल्ज़ाम न लगाये! लेकिन उसकी सहेलीने बक्स खोलकर नहीं देखा। मैथिल्ड्ने सन्तोषकी साँस ली।

इसके बादके दिनोंमें भीषण दरिद्रताका शिकार उन्हें होना पड़ा। कर्ज़ अदा करनेके लिए भयंकर कष्टोंका सामना करनेको वह तैयार हो गयी। वैसे भी उनका मकान विशेष सुविधाजनक नहीं था फिर भी वह स्थान उन्होंने छोड़ दिया। किसी इमारतकी आखिरी मंज़िलकी छतपर, एक अडारमें उसने अपनी गृहस्थी सजायी। बरतन माँजते और कपड़े धोनेसे उसके हाथकी नाज़ुक गुलाबी उँगलियाँ घिस गयीं। घरकी सफ़ाई करना, नीचेसे पानी लाना, आदि काम भी वह स्वयं करने लगी। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसकी साँस फूल जाती। प्रत्येक मंज़िलपर साँस लेनेके लिए कुछ देर उसे रुकना पड़ता। फटे-पुराने कपड़े पहन, हाथमें थैली लटकाये वह बाज़ार जाती। एक-एक पैसेकी बचत करनेके लिए पँसारीसे, कुँजड़िन-से बहस करती। उसका पति भी रात-दिन परिश्रममें जुट जाता। दफ़्तरकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
नौकरीके साथ-ही-साथ वह किसी व्यापारीके हिसाब लिखना और प्रति पन्ने दो पैसेकी दरसे काग़ज़ोंकी नक़लें उतारते हुए रातें आँखोंमें काट देता।

इस तरह दस साल बीत गये।

अन्तमें पूरा कर्ज़ अदा हो चुका। लेकिन अब मैथिल्ड् बुढ़िया-सी दिखाई देने लगी थी। दिन-रात गृहस्थीका बोझ ढोनेवाली गृहिणीकी-सी उसकी दशा हो चुकी थी। उसके बालोंमें न कभी तेल लगता न कभी कंघी। उसके बदनपर रोज़ ही मैले वस्त्र दिखाई देते। दिन-रात काम करते हुए उसके हाथोंमें छाले पड़ गये। उसकी आवाज़ कर्कश बन चुकी। वह फ़र्श धोने लगी कि उसके हाथसे पानी दस बार गिर जाता।

लेकिन कभी-कभी दोपहरके समय छतकी खिड़कीके पास अकेले बैठनेपर, दस साल पहले जिस नृत्य-समारोहमें अपनी सुन्दरताके बलपर सभी पुरुषोंको उसने विमुग्ध कर डाला था, उस समारोह वाली रात्रिका उसे स्मरण हो आता।

काश! उस रात वह रत्नहार खो न जाता। तब क्या होता? न जाने तब क्या होता? मानवका यह जीवन कैसा अजीब और चंचल है। उसका सुखी या दुःखी बन जाना कितनी साधारण-सी बातपर निर्भर होता है।

किसी रविवारको जब कि मैथिल्ड् उस नगरके किसी सार्वजनिक पार्क-में गयी थी, वहाँ एक स्त्रीको अपने बालकके साथ टहलते उसने देखा। मैथिल्ड्को उसे पहचानते देरी न लगी। वह मादाम फ़ॉरेस्तिए थी। अब भी युवा! अब भी ख़ूबसूरत! अब भी आकर्षक!

मैथिल्ड्का मन पल-भर चंचल हो उठा। उसने सोचा कि क्या वह उसे अपना परिचय दे? उससे बातचीत करे? अन्तमें उसने निश्चय कर लिया कि अब, जब कि पूरा कर्ज़ अदा हो चुका है, तब इसे सच्ची बात बतानेमें हर्ज़ ही क्या है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह उठकर मादाम फॉरेस्तिएके निकट गयी और बोली, "गुड मार्निंग।"

मादाम फॉरेस्तिएने उसे पहचाना नहीं। एक साधारण स्त्री अपने साथ बातचीत करनेका साहस करे इसपर वह हैरान थी। वह बोली, "लेकिन····मादाम···मेरा आपसे परिचय नहीं है····कहीं आपको धोखा तो नहीं हो गया?"

"क्या मुझे आपने सचमुच नहीं पहचाना? मैं मैथिल्ड् लाएसेल हूँ···"

मुँहसे आश्चर्यका स्वर निकालते हुए मादाम फॉरेस्तिएने कहा···· "अरे! तुम कितनी बदल गयी हो!"

"हाँ! पिछली बार जब मैं तुमसे मिली थी उसके बाद हमारे बड़े बुरे दिन आये। बहुत कष्ट उठाने पड़े। बहुत दुःख सहना पड़ा···और यह सब हुआ सिर्फ़ तुम्हारी ही वजहसे।"

"मेरी वजहसे? क्या कहती हो?····"

"हाँ! तुमने मुझे अपना रत्नहार पहननेको दिया था। याद है तुम्हें?"

"हाँ! याद क्यों नहीं है?"

"मुझसे वह कहीं खो गया?"

"खो गया? कैसी बहकी बातें करती हो? तुमने तो मुझे वह लौटा दिया था।"

"हुबहू उसीके जैसा दूसरा हार खरीदकर मैंने तुम्हें ला दिया था और उसे खरीदनेमें जो कर्ज़ हुआ, पिछले दस सालसे हम उसे अदा करते रहे। वह रत्नहार खरीदना हमारी सामर्थ्यके बाहर था।···फिर भी हमने सब कर्ज़ अदा कर दिया। अब मै ख़ुश हूँ। प्रसन्न हूँ।"

मादाम फॉरेस्तिए विस्मयसे सहसा ठिठक गयीं। बोलीं, "उस खोये हुए रत्नहारके बदले मुझे देनेके लिए क्या तुमने दूसरा रत्नहार खरीदा?"

"हाँ! तुम भो नहीं पहचान पायी न उसे? हूबहू तुम्हारे हार-जैसा ही वह था। यह कहते हुए बड़े गर्व और निष्कपट उल्लाससे मैथिल्ड् मुसकरा पड़ी।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मादाम फॉरेस्तिए गद्गद हो उठीं। मैथिल्ड्के दोनों हाथ उसने अपने हाथमें ले लिये और कहा, "मैथिल्ड्, तुम भी कैसी पागल हो? मेरा वह रत्नहार नक़ली हीरोंका था। और उसका मूल्य अधिकसे अधिक पाँच सौ फ्रैंक हो सकता था।"

ग़ौरसे पढ़ ली न आपने यह कहानी? अगर नहीं तो उसे फिर एक बार पढ़िए। तब उसकी कुछ प्रधान विशेषताएँ आपको दिखाई देंगी।

१. पहली विशेषता यह है कि अधिकसे अधिक पन्द्रह मिनिटमें पूरी कहानी पढ़ी जा सकती है।

२. दूसरी विशेषता यह है कि इस कहानीकी कथावस्तुमें मैथिल्ड्के एक ही चरित्रको प्रधानता दी गयी है। कहानीमें उसका पति और उसकी सम्पन्न सहेली – दो और चरित्र हैं। किन्तु उनका महत्त्व बिलकुल नहीके बराबर है।

३. तीसरी विशेषता यह कि इस कहानीमें घटनाएँ अत्यन्त कम और महत्त्वपूर्ण हैं। मैथिल्ड् अपनी सहेलीसे रत्नहार माँग लाती है। वह खो जाता है। दूसरा रत्नहार खरीदकर वह अपनी सहेलीको लौटा देती है। दस वर्षके अनन्तर उस सम्पन्न सहेलीसे उसकी फिर भेंट होती है। इन्हीं चार घटनाओंसे यह कहानी बनी है।

४. इस कहानीकी बड़ी विशेषता यही है कि सम्पन्नताका झूठा प्रदर्शन करनेकी इच्छासे मैथिल्ड्ने अपने उमंग-भरे जीवनके दस वर्षोंको बरबाद कर डाला। लेखक मुख्य रूपसे हमें यही बताना चाहता है और अपने इस उद्देश्यमें उसे पूरी सफलता प्राप्त हुई है।

इन चारों विशेषताओंसे यदि आप परिचित हो गये हों तो इसके आधारपर कहानीकी एक साधारण परिभाषा आप आसानीसे दे सकते हैं। अपने प्रतिभा-साधना ग्रन्थमें कहानीपर लिखे गये परिच्छेदमें हमने कहानी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की जो परिभाषा दी है, उसमें कुछ परिवर्तन कर, एक नयी परिभाषा यहाँ प्रस्तुत की जा सकती है –

कमसे कम पात्रों तथा घटनाओंके द्वारा अत्यन्त कम समयमें, प्रभावशाली ढंगसे सुनायी गयी और सुननेवालोंके मनपर किसी एक ही तत्त्वका प्रभाव छोड़नेवाली घटनाको कहानी कहते हैं।

पाश्चात्य देशोंमें कहानीकी वृद्धि विपुल मात्रामें हो चुकी है। हमारे देशमें भी कहानियोंका निर्माण तेज़ीसे हो रहा है, भविष्यमें भी होगा। कहानीके विषयोंमें विविधता आ गयी है। कहानी लिखनेके विभिन्न ढंगोंका प्रचलन हो चुका है तथा हो रहा है। शैलीमें विभिन्नता आ गयी है। पाठकोंकी रुचि और उनकी आवश्यकताओंमें प्रतिदिन परिवर्तन हो रहा है। दावेके साथ कहा जा रहा है कि साहित्यकी किसी विशिष्ट विधाको निश्चित रूपसे कहानी कहना बड़ा कठिन है। इस दावेके सहारे कहानीकार अधिकाधिक स्वैर लेखन कर रहे हैं। निश्चित तत्त्वोंकी पाबन्दी मानना लेखकोंके लिए आवश्यक नहीं है, ऐसा करना उसके लिए लज्जाकी बात है – इस मतका प्रचार किया जा रहा है। तत्त्वोंकी पाबन्दीका झंझट ही नहीं रहा, बड़ी प्रसन्नताकी बात है! अब अवलोकन, अध्ययन, अनुशासन आदिकी कोई आवश्यकता ही नहीं रही! जो भी मनमें आये, चाहे जिस ढंगसे लिखे, ऐसा मानकर लेखक हाथमें कलम थामें बैठे हैं। न तो परिभाषाके सम्बन्धमें कोई प्रतिबन्ध रहा, न ही तत्त्वोंके सम्बन्धमें इस धारणाके कारण कहानीके क्षेत्रमें अराजकता आ गयी है। किन्तु अराजकताका यह मात्र आभास है। क्योंकि इस अराजकतामें भी कहानीका प्रधान उद्देश्य तथा उसका प्रधान तत्त्व अबतक अक्षुण्ण है। सुननेवाला विमुग्ध होकर कहानी सुने, इसीलिए कहानी सुनायी जाती है। यही कहानीका प्रधान उद्देश्य है। अतः बाह्य रूपसे प्रतीत होनेवाली अराजकताके कारण इस उद्देश्यमें कोई परिवर्तन नहीं हो पाया है। सुननेवालोंके मनपर एक ही बातका प्रभाव स्पष्ट रूपसे अंकित किया जाये, कहानीके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इस वास्तविक गुणमें अब भी कोई परिवर्तन नहीं हो पाया है। यह सच है कि कहानीके सभी विभेदोंको स्पष्ट कर सके, ऐसी परिभाषा बनाना कहानियोंकी वृद्धि और विविधताके कारण असम्भव है। इसी प्रकार इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि किसीके भी द्वारा, किसी प्रकारकी शैलीमें तथा किसी भी विषयपर लिखी गयी कितनी ही स्वैरतापूर्ण-प्रगतिशील कहानी-यदि वह सफल है तो उसमें दो विशेषताएँ स्पष्ट रूपसे परिलक्षित होंगी, जिनकी सहायतासे कहानीकी स्थूल एवं सर्वव्यापी परिभाषा देना बिलकुल सरल है। प्रत्येक सफल कहानीमें रंजकता तथा संवेदनाकी केन्द्रीयता और एकता इन दो तत्त्वोंकी प्रतिष्ठा अवश्य ही पायी जाती है। अन्य तत्त्वोंके सम्बन्धमें अनगिनत प्रयोग तथा परिवर्तन होते रहेंगे। और ऐसा होना उचित भी है, क्योंकि यह कहानीकी निरन्तर प्रगतिशीलताका चिह्न है। यही साहित्यकी इस विधाका अपूर्व आकर्षण है। किन्तु फिर भी विभिन्न परिवर्तनों और प्रयोगोंके बाद भी इसमें रंजकता तथा संवेदनाकी केन्द्रीयता और एकताके दो तत्त्वोंका सूत्र स्थायी रहा है और निरन्तर स्थायी रहेगा।

यही नहीं, बल्कि यह कहना अनुचित न होगा कि कहानीकी निरन्तर वृद्धि और उसकी विभिन्नता केवल इन्हीं दोनों तत्त्वोंका विस्तार है। कहानी लिखते हुए कहानीकार सोचने और प्रयास करने लगे कि थोड़े समयमें पढ़ी जा सके, पात्र तथा घटनाएँ सीमित रहें, और किसी एक ही उद्देश्यका प्रभाव मनपर अंकित हो सके — इन तमाम बन्धनोंको स्वीकार कर, कहानी सुनानेके कौन-कौन-से चमत्कार दिखाये जा सकते हैं। तब उनकी दृष्टिके सामने हज़ारों विषय खड़े होंगे। रचनाके अनगिनत प्रकार उन्हें दिखाई देंगे; तथा कहानीको सजाने-सँवारनेके अनेक ढंग सूझेंगे, जिससे कहानीकी विविधतामें निरन्तर वृद्धि होगी। तारपर कसरत करनेवाला व्यक्ति आरम्भमें सोचता है कि इस पतले-से तारपर क़दम रखकर स्वयंको सँभालनेसे अधिक मैं कर ही क्या सकता हूँ। पर शनैः-शनैः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तमाम बन्धनोंका पालन कर वह कसरतोंके विभिन्न करिश्मे दिखाने लगता है और उनपर चलने, दौड़ने, अपने-आपको सँभालनेके कई चमत्कार कर दिखाना उसके लिए सम्भव है, यह देख वह स्वयं विस्मित रह जाता है। कहानीके सम्बन्धमें भी यही कहा जा सकता है। संवेदनाकी केन्द्रीयता और एकता तथा रंजक तत्त्व इन दो विशेषताओंके द्वारा ही विविधताके इस विस्तारकी सृष्टि हुई है।

State Museum, Library, Lko.
२६६६
२५.५.६५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक-हितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

•

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन
अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

•

मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५